राजस्थान का स्वाधीनता संग्राम

डॉ० प्रकाश व्यास

पचशील प्रकाशन, जयपुर

आमुख

भारत के राजनतिक रगमच पर राजस्थान की भूमिका सदव अद्वितीय रही है। राजस्थान की मरुभूमि का एक एक कण यहा के स्वाभिमानी, देश भक्त एव अपनी मातृभूमि पर अपने प्राणो को न्यौछावर करने वाले रणबाकुरो के रक्त से रजित है। अत 1857 ई मे भारत के स्वाधीनता सग्राम से राजस्थान की रगभूमि कैसे अछूती रह सकती थी? 1857 ई मे राजस्थान मे भी स्वाधीनता का शखनाद गूज उठा, जिसने यहा के न केवल राजनतिक जीवन को ही प्रभावित किया, अपितु राजस्थानियो के जन जीवन को ही झकझोर कर रख दिया। अत आधुनिक राजस्थान के इतिहास मे राजस्थान का यह स्वाधीनता सग्राम असाधारण महत्व रखता है।

राजस्थान का यह महान् सग्राम इतिहासकारो की ओर से उपेक्षित ही रहा है। यद्यपि महामहिम श्री नाथूराम खड्गावत ने इस महान् सग्राम पर एक अमूल्य ग्रथ लिखा था जो सवथा स्तुत्य है। इस अमूल्य ग्रथ के अतिरिक्त राजस्थान के इस महान सग्राम पर कोई शोधपूण ग्रथ अभी तक उपलब्ध नही हुआ है। फिर, श्री खडगावत जी का ग्रथ भी अब लगभग अप्राप्य ही है। श्री खड्गावत जी का यह ग्रथ जिन परिस्थितियो मे तथा जिस समय लिखा गया था उसम कुछ अपूणताओ का रहना स्वाभाविक है। वैसे कोई भी शोध ग्रथ अपनी पूणता का दावा नही कर सकता। फिर भी श्री खडगावत जी का यह गणमा य ग्रथ मेरे लिये प्रेरणा स्रोत रहा है। मैंने उपलब्ध मूल प्रलेखों व अभिलेखीय सामग्री के आधार पर इस विषय पर नई दृष्टि से अध्ययन करने का प्रयास किया है तथा पूववर्ती इतिहासकारो द्वारा प्रस्तुत कतिपय भ्रात धारणाओ का पुष्ट प्रमाणो के आधार पर खण्डन कर ऐतिहासिक तथ्य का प्रतिपादन किया है। मैं भी अपने इस ग्रथ की पूणता का दावा तो नही करता, लेकिन इतिहास के अध्ययन म मैंने एक नया आयाम विकसित करने का अभिनव प्रयास अवश्य किया है। इस नवीन दिशा म किये गये मेरे प्रयत्न की सफलता का आकलन कर विद्वान इतिहासज्ञ मेरा समुचित माग निर्देश एव उत्साह वद्धन करेंगे, ऐसा विश्वास है।

प्रस्तुत पुस्तक का प्रणयन श्रद्धेय गुरु डॉ रामप्रसाद व्यास की प्रेरणा एव अनवरत प्रोत्साहन का प्रतिफल है अत मैं अपने श्रद्धेय गुरुदेव के प्रति श्रद्धावनत हू। डा कालूराम शर्मा प्रोफेसर एव अध्यक्ष, इतिहास विभाग वनस्थली विद्यापीठ से मिलने वाली स्नेहपूर्ण प्रेरणा के लिये मैं उनके प्रति हृदय से आभारी हू। अपने निजी सग्रह की सामग्री का उपयोग करने की अनुमति देने के लिये डा के एस गुप्ता, इतिहास विभाग, उदयपुर विश्व विद्यालय डा बृजमोहन जावलिया उदयपुर तथा बेदला के कु वर माधोसिह जी क प्रति भी अति कृतज्ञ हू।

राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, साहित्य सस्थान, उदयपुर, सरस्वती भवन पुस्तकालय, उदयपुर, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, शाखा उदयपुर, चौपासनी शोध सस्थान, जोधपुर तथा वनस्थली विद्यापीठ के केन्द्रीय पुस्तकालय के अधिकारियो एव कर्मचारियो स प्राप्त होने वाले सहयोग के लिये मैं उन्हे धन्यवाद देना भी अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता हू।

इस कार्य मे मेरी दोनो पुत्रियो—कुमारी निरुपमा व्यास और कुमारी अर्चना व्यास, का सहयोग भी अविस्मरणीय रहा है। उनके प्रति औपचारिक रूप स कुछ भी कहकर मैं अपने अनौपचारिक स्नेहपूर्ण सम्बधो को औपचारिकता प्रदान नही करना चाहता। मेरी धर्मपत्नी श्रीमती सरिता व्यास के लिये तो इतना ही कि उसकी सहायता एव सहयोग के बिना यह कार्य ही सभव नहीं था।

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रणयन मे जिन विद्वानो के ग्रन्थो स सहायता मिली है, उनके प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करता हू। इन ग्रन्थो की सूची सन्दर्भिका मे दे दी गई है।

मैं पचशील प्रकाशन के श्री मूलचदजी गुप्ता का हृदय से आभारी हू जिन्होने इस ग्रन्थ को प्रकाशित करने की दिशा म अत्यन्त उत्साह के साथ काम किया है।

मुझे विश्वास है कि यह ग्रन्थ इतिहास के गम्भीर मनस्वियो एव इतिहास प्रेमियो के लिये उपयोगी सिद्ध होगा।

डॉ० प्रकाश व्यास

अनुक्रम

राजस्थान पर ब्रिटिश प्रभुसत्ता की स्थापना

औरगजेब की मृत्यु के बाद मुगलो की केन्द्रीय सत्ता पतनोन्मुख हो गयी थी। अत राजस्थानी रियासतो पर नियन्त्रण रखने वाली कोई सर्वोच्च सत्ता नहीं रही जो इन रियासतो की महत्वाकाक्षा और अनाधिकार चेष्टाओ के लिये होने वाले पारस्परिक युद्धो को रोक सकती तथा एक ही राजवश के राजकुमारो के पारस्परिक झगडो को सुलझा सकती। अब तक जो व्यक्तिगत महत्वाकाक्षाए और रियासतो की आपसी प्रतिस्पर्द्धाए रुकी हुई थी, वे बाधा प्राप्त प्रबल स्रोत की तरह फूट पडी। समस्त राजस्थान मे अत्यन्त जघन्य पाशविक प्रवृत्तिया जागृत हो उठी। जमीन और राज्य हथियाने के लिये पिता पुत्र की हत्या कर देता था और पुत्र पिता की हत्या कर देता था[1]। सर्वोच्च घराने की स्त्रिया अपने ही खून के सम्बधियो और विश्वसनीय रिश्तेदारो की हत्या करने मे सकोच नही करती थी[2]। राजपूत चरित्रहीनता के दुर्गुणो मे डूब गये और अपने ही घर मे एक दूसरे पर तलवार खीचकर खडे होने लगे। इन गृह कलहो मे पडौसी रियासतें भी विरोधी पक्षो की सहायता के लिये युद्ध म शामिल होने लगी। लेकिन राजस्थान की य रियासतें पूर्णत निबल हो चुकी थी, अत अपने पारस्परिक झगडो मे उन्होने मराठा को सहायता के लिये आमत्रित किया। फलस्वरूप राजस्थान की राजनीति मे मराठो का प्रवेश हुआ और धीरे-धीरे मराठो ने राजस्थान मे अपना राजनीतिक वचस्व स्थापित कर लिया। अब मराठे और पिंडारी असहाय राजस्थानी राज्यो को लूटने लगे और राजस्थानी राज्य इस लूट खसोट को मूक दशक की भाति देखते रहे। यह दयनीय स्थिति लगभग अस्सी वष तक चलती रही। इस अन्धकारपूण युग मे राजस्थान मे अराजकता, लूट खसोट, आर्थिक विनाश और नतिक पतन का ताण्डव नृत्य सवत्र दृष्टिगोचर हो रहा था। अन्त मे जब राजस्थानी रियासतो ने ब्रिटिश सरक्षण स्वीकार किया, तब कही जाकर शान्ति एव व्यवस्था स्थापित हो सकी। जब घरेलू और विदेशी लडाइया समाप्त हो गई, तब "राजपूताने का सनिक पौरुष अफीम की शान्त निद्रा में डूब गया।"

इस अन्धकारपूर्ण युग मे प्रत्येक राजपूत शासक मे भूमि के स्वामित्व की भूख उत्कट रूप से जाग्रत हो उठी और वह अपने पडौसी राज्यो अथवा उसकी भूमि को हडपने का प्रयास करने लगा। जोधपुर के राजा अभयसिंह ने बीकानेर पर आक्रमण किया तो जयपुर के सवाई जयसिंह ने बूंदी राज्य पर अपनी सत्ता स्थापित करने का प्रयत्न किया[3]। मुगल काल मे केन्द्रीय सत्ता के सहयोग से राजस्थानी नरेशो ने अपने सामन्तों को दबा कर अपनी सर्वोच्चता स्थापित की थी। लेकिन अब केन्द्रीय सत्ता के सहयोग के अभाव मे इन नरेशो को पुन अपने सामन्तों की सहायता और सहयोग पर निर्भर हो जाना पडा। फलस्वरूप सामन्तो की शक्ति एव वर्चस्व मे पुन वृद्धि होने लगी और सामन्त वर्ग शासक के उत्तराधिकार के मामलो मे तथा राज्य की राजनीति मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगा। राजस्थानी नरेशो पर उनके सामन्तों का दबाव दिन प्रतिदिन बढ़ने लगा। अत अपने सामन्तो के आन्तरिक दबाव से मुक्त होने, पारस्परिक संघर्षों को सफलतापूर्वक संचालित करने तथा अपने निरकुश अधिकारो को बनाये रखने के लिये राजस्थानी नरेशो ने मराठो का सैनिक सहयोग प्राप्त किया। इस प्रकार राजस्थान की राजनीति मे मराठो का प्रवेश एक आक्रमणकारी की अपेक्षा भाडत सैनिक सहयोगी के रूप मे हुआ[4]। जयपुर बूंदी संघर्ष मे बूंदी के पराजित एव पदच्युत राजा बुद्धसिंह की रानी ने 1734 ई मे जयपुर के विरुद्ध मल्हारराव होल्कर को अपनी सहायता के लिये आमन्त्रित किया। फलस्वरूप राजस्थान की राजनीति मे मराठो का प्रथम प्रवेश हुआ। इसके उपरान्त तो राजपूत शासक अपने पारस्परिक झगडो मे मराठो से सैनिक सहायता प्राप्त करने के लिये लालायित हो उठे। 1743 ई मे जयपुर के शासक सवाई जयसिंह की मृत्यु के बाद उसके पुत्रों—ईश्वरीसिंह और माधोसिंह के बीच उत्तराधिकार का संघर्ष हुआ। संघर्ष के आरम्भ मे ईश्वरीसिंह ने मराठो से सैनिक सहायता प्राप्त की, किन्तु बाद मे माधोसिंह ने अधिक धन देने का वचन देकर मराठो से सैनिक सहायता प्राप्त करली। जोधपुर के महाराजा अभयसिंह के पुत्र रामसिंह ने अपने चाचा बख्तसिंह और बाद मे चचेरे भाई विजयसिंह के विरुद्ध मराठो की सैनिक सेवाए प्राप्त की। इसी प्रकार मेवाड के महाराणा अरिसिंह और उसके भतीजे रत्नसिंह के बीच हुए उत्तराधिकार संघर्ष मे दोनो ही पक्षो ने मराठो की सैनिक सेवाए प्राप्त की। राजस्थानी नरेशो के इस पारस्परिक संघर्ष मे मराठो द्वारा सैनिक सहायता देने का मुख्य उद्देश्य अधिक से अधिक धन प्राप्त करना था। कभी-कभी तो एक ही मराठा सरदार पहले एक पक्ष का और बाद मे उसके विरोधी पक्ष का समर्थन करने लगता था। क्योंकि मराठो के समक्ष

प्रश्न केवल इतना था कि उनकी सनिक सेवाओं का अधिक से अधिक मूल्य कौन दे सकता था। लेकिन आगे चलकर जब राजस्थानी नरेश वायदे के अनुसार मराठों का धन नही चुका सके, तब मराठा ने सनिक शक्ति द्वारा धन वसूली का मार्ग अपनाया, जिससे राजस्थानी राज्यों का न केवल आर्थिक एव नतिक पतन हुआ, बल्कि इन राज्यो म घोर अराजकता एव अशान्ति व्याप्त हो गयी।

1751 ई तक जसलमेर और बीकानेर राज्यों को छोडकर राजस्थान के प्राय सभी राज्यो म मराठों का प्रवेश हो चुका था। चौथ, टाके अथवा पुराने कर्जे के नाम से वे बहुत-सा धन मेवाड, जयपुर, कोटा, बूदी आदि राज्यों से प्रतिवष वसूल कर लेते थे। वायदे के अनुसार समय-समय पर निश्चित रकम वसूल करने के लिय तथा राजपूत नरेशो की गतिविधियों पर कडी दृष्टि रखने के लिय मराठा ने राजस्थान की विभिन्न राजधानियों, महत्व पूर्ण नगरो या केन्द्रो मे अपने दूत और अधिकारी नियुक्त कर दिये थे। लेकिन प्रान्त म कोई स्थायी मराठा सेना नही थी, अत निश्चित धनराशि वसूल करने के लिये प्रमुख मराठा सेनानायकों को समय-समय पर इन राज्यो पर ससन्य चढ़ाई करना अनिवाय हो जाता था। राजस्थान की भूमि पहले ही अधिक उपजाऊ नही थी और यहा का वाणिज्य-व्यापार भी नगण्य था, अब मराठो के निरन्तर आक्रमणों तथा उनकी लूटमार के कारण आर्थिक स्थिति दिनों दिन बिगडती जा रही थी। मराठा की निरन्तर बढती हुई और कभी समाप्त न होने वाली आर्थिक मागो के कारण राजपूत शासक त्रस्त हो उठे। राजस्थानी राज्य सवथा शक्तिहीन हो चुके थ, अत मराठो को बार बार द्रव्य देकर सतुष्ट करने के अतिरिक्त उनके पास कोई अन्य उपाय नही रह गया था। राजपूत शासकों ने मराठा को वार्षिक खिराज तक देना स्वीकार कर लिया था[5]। लेकिन स्वेच्छा से उन्होंने वार्षिक खिराज की रकम कभी नियमित रूप से अदा नही की। फलस्वरूप मराठा को बार बार सनिक शक्ति और लूटमार का सहारा लेना पडा। ज्यों ज्यों वष बीतते गये राजपूत नरेशो और राजस्थानी समाज के प्रति मराठो का अशिष्ट व्यवहार और तिरस्कारपूण दमन बढता ही गया और राजस्थानी राज्य दिनोदिन बर्बाद होते गय।

राजस्थानी राज्यो मे मराठो के इस हस्तक्षेप के फलस्वरूप यहा के शासको और उनके सामन्ता के आपसी सम्बधों म भी परिवतन आया। राजपूत शासकों द्वारा मुगलों का सरक्षण स्वीकार करने के बाद वे अपने सामन्तों की अवज्ञा कर उनकी परम्परागत शक्ति को कुचल सकते थे क्योंकि वे अपने सामन्तों को दबाने के लिए मुगल सम्राट से सनिक सहायता प्राप्त

कर सकते थे। अतः मुगल संरक्षण-काल में राजपूत राज्यों के सामन्तों की शक्ति क्षीण हुई थी[6]। लेकिन मराठों के हस्तक्षेप के बाद राजपूत सामन्त पुनः शक्तिशाली होने लगे और शासकों और सामन्तों के आपसी सम्बन्धों में तनाव पैदा हो गया, क्योंकि अब सामन्तों को भी आवश्यक मराठा सेना का सहयोग उपलब्ध हो सकता था। 1794 ई. में जोधपुर के शासक भीमसिंह और उसके सामन्त पोकरण ठाकुर सवाईसिंह के बीच तनाव उत्पन्न हुआ तब सवाईसिंह ने मराठा सरदार लकवा दादा को जोधपुर पर सैन्य चढ़ाई करने हेतु आमन्त्रित किया। इस मराठा सेना से छुटकारा पाने के लिए भीमसिंह को भारी रकम मराठों को देनी पड़ी।[7] इसी प्रकार 1788 ई. में मेवाड़ में सलूम्बर के रावत भीमसिंह ने सुवोजी होल्कर से समझौता किया।[8] 1795-96 ई. में जयपुर नरेश और उसके शेखावत सामन्तों में झगड़ा उठ खड़ा हुआ जिसमें शेखावतों ने जार्ज टॉमस का सैनिक सहयोग के लिए आमन्त्रित किया। फरवरी 1798 ई. में जार्ज टॉमस ने जयपुर राज्य की सेनाओं को पूर्णतया पराजित किया तथा जयपुर नरेश को भी मराठा सेना को द्रव्य देकर सन्तुष्ट करना पड़ा। इस अवसर पर बीकानेर के महाराजा सूरतसिंह ने जयपुर राज्य की सहायता की थी। अतः लौटते समय जार्ज टॉमस ने बीकानेर राज्य पर चढ़ाई की और वहां से दो लाख रुपया पाने का वादा करने पर लौटा। लेकिन जब यह रकम प्राप्त नहीं हुई और बीकानेर के उत्तरी भाग में रहने वाले भट्टियों ने बीकानेर के महाराजा के विरुद्ध सहायता मांगी तब 1800 ई. में पुनः जार्ज टॉमस बीकानेर पर चढ़ आया। इस बार जार्ज टॉमस भट्टियों को भटनेर का दुर्ग दिलवाने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सका क्योंकि वहां के प्रतिकूल जलवायु के कारण उसे वापिस लौटना पड़ा।[9]

यदि एक ओर सामन्तों ने मराठों का सैनिक सहयोग क्रय किया तो दूसरी ओर राजपूत शासकों ने भी मराठों का सैनिक सहयोग क्रय करके अपने सामन्तों को कुचलने का प्रयास किया। जयपुर के शासक पृथ्वीसिंह (1768-1778) की अल्पवयस्कता और राजमाता चूंडावतजी के निर्बल शासन के कारण राजावत और नाथावत सरदारों में पारस्परिक संघर्ष अत्यधिक बढ़ गया तथा शेखावत सरदार भी विद्रोही हो गये। अतः राजमाता चूंडावतजी ने सिंधिया के सेनानायक अम्बाजी इंगले की सहायता से इन सामन्तों का दमन करने का प्रयास किया।[10] इसी प्रकार मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह (1778-1828) के निर्बल शासन काल में चूंडावतों और शक्तावतों का पारस्परिक संघर्ष अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया। चूंडावतों ने मेवाड़ राज्य के प्रधान तथा शक्तावतों के पक्षपाती सोमचंद गांधी की हत्या करदी और

चित्तौड के दुग पर अधिकार कर लिया। अत महाराणा भीमसिंह ने चूडावतो का दमन करने के लिये महादजी सिंधिया से समझौता किया। महादजी सिंधिया ने चूडावतो से चित्तौड का दुग खाली करवाया। महाराणा द्वारा मराठो से ली गई सहायता के परिणामस्वरूप मेवाड पर महादजी का प्रभुत्व स्थापित हो गया[11]। महादजी ने अबाजी इगले का अपना प्रतिनिधि बनाकर मेवाड मे नियुक्त किया, लेकिन अबाजी ने वहा शान्ति एव व्यवस्था स्थापित करने का प्रयत्न नही किया, क्योकि अशान्ति और अराजकता की विद्यमानता मे ही मराठा अपना स्वाथ सिद्ध कर सकते थे। राजपूत शासको और सामन्तो को मराठो का सनिक सहयोग तभी मिलता था जबकि वे मराठो को धन देने का वायदा करते थे। वायदे के अनुसार धन न मिलने पर मराठे, राज्या मे लूटमार तथा आतक फैलाकर धन वसूल करने लगते थे। मराठा न इस लूटमार म खालसा क्षेत्र और जागीर क्षेत्र मे कोई भेद नही किया। कई बार ता जब शासक मराठा की वित्तीय माग पूरी नही कर पाते तो वे उन्हे अपने जागीरदारो से धन वसूल करने की स्वीकृति दे देते थे। 1791 ई म मेवाड के महाराणा ने महादजी को चूडावत सरदारो से 64 लाख रुपय वसूल करने की स्वीकृति दी थी[12]। इसी प्रकार 1786 ई मे जयपुर के शासक ने सिंधिया को 63 लाख रुपये देन का वादा किया, इसमे से 22 लाख रुपये जागीरदारो से वसूल करन का अधिकार मराठो को दे दिया। इतना ही नही कई बार तो राजपूत शासक बकाया रकम का भुगतान करने के लिये अनेक परगने मराठो के पास गिरवी रख देते थे। 1769 ई मे मेवाड के महाराणा ने सिंधिया का साढे तरेसठ लाख रुपया देने का वायदा किया। इसमे से 8 लाख रुपये रोकड तथा 17 लाख 75 हजार का सोना, चादी व आभूषण दिय गये और शेष रुपयो के बदले नीमच, जावद, जीरण और मोरवण के परगने इस शत पर सिंधिया के पास गिरवी रखे कि इन परगना की आय प्रतिवष जमा होगी और जब कुल रकम अदा हो जाय तब ये परगने पुन महाराणा को सौंप दिये जायेंगे। किन्तु मराठो ने ये परगने महाराणा को कभी नही लौटाये[13]। इसी प्रकार 1774 ई म महाराणा को रतनगढ खेडी, सिंगोली अरण्या, जाठ, नन्दवाय के परगनो की आय भी मराठों के पास गिरवी रखनी पडी। महाराणा की निबलता का लाभ उठाकर अहिल्याबाई होल्कर ने निम्बाहेडा का परगना ले लिया। 1791 ई मे जोधपुर के शासक विजयसिंह ने सिंधिया को 60 लाख रुपये देने का वायदा किया तथा 20 लाख रुपयो के बदले साभर मारोठ, नावा, परवतसर, मेडता और सोजत की आय मराठा के पास गिरवी रखदी[14]। लेकिन मराठो की कभी शान्त न हाने वाली वित्तीय माँगें ज्यो की त्यो बनी रही।

जब मराठों ने जागीर क्षेत्रों में लूटमार की तो सामन्तों ने खालसा भूमि में लूटमार कर या खालसा क्षेत्र अधिकृत करके अपनी क्षतिपूर्ति करना प्रारम्भ कर दिया। 1769 ई. में मेवाड़ में देवगढ़ के राघवदेव तथा भीडर के मोहकमसिंह ने खालसा क्षेत्रों में लूटमार की। 1791 ई. में देवलिया प्रतापगढ़ के रावत सामन्तसिंह ने खालसा के परगने घरियावाद और डागल पर अधिकार कर लिया। 1793 ई. में जयपुर राज्य के अन्तगत सीकर ठिकाने के राव देवीसिंह ने खालसा के कई गांवों पर अधिकार कर लिया। इतना ही नहीं, उणियारा जैसे बड़े ठिकाने के राव ने तो जयपुर राज्य से सम्बन्ध विच्छेद कर स्वतन्त्र होने का भी प्रयास किया[15]। मराठों की निरन्तर लूटमार तथा सामन्तों की धमाचौकड़ी के फलस्वरूप समस्त प्रदेश बर्बाद होता गया और साधारण नागरिकों का जीवन भी विपादपूर्ण बनता गया। राजस्थानी राज्यों की आर्थिक स्थिति पूर्णतः बिगड़ गई। शासकों के मन में अपने सामन्तों के प्रति कोई प्रेम नहीं रह गया था और न सामन्तों के दिल में अपने शासक के प्रति कोई सम्मान ही रह गया था। ऐसी परिस्थितियों में राजपूत शासकों ने मराठों के नियन्त्रण से मुक्त होने का प्रयास किया।

उस समय भारत में ब्रिटिश शक्ति का अभ्युदय हो रहा था। अतः सर्वप्रथम 1781 ई. में जोधपुर के शासक विजयसिंह ने मराठों के विरुद्ध अंग्रेजों से पत्र व्यवहार किया। इस पर वारेन हेस्टिंग्ज जोधपुर राज्य में संधि करने के लिये अपना प्रतिनिधि भी भेजने को तैयार हो गया था[16]। लेकिन इसके तुरन्त बाद अंग्रेजों और मराठों के बीच सालबाई की संधि हो जाने के कारण वारेन हेस्टिंग्ज ने मामले को आगे नहीं बढ़ाया। 1786 ई. में जयपुर के शासक प्रतापसिंह ने भी मराठों के विरुद्ध अंग्रेजों से सहायता प्राप्त करने का असफल प्रयास किया।[17] 1789 ई. में जोधपुर के विजयसिंह और जयपुर के प्रतापसिंह ने महादजी सिंधिया के विरुद्ध ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सैनिक सहयोग प्राप्त करने का पुनः प्रयास किया किन्तु कम्पनी के तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड कार्नवालिस ने कम्पनी की अहस्तक्षेप की नीति के कारण राजपूतों को सहायता देना उचित नहीं समझा।[18] महादजी सिंधिया की मृत्यु के बाद 1795 ई. में जयपुर और कोटा के शासकों ने मराठों के विरुद्ध अंग्रेजों से सहायता प्राप्त करने का असफल प्रयास किया[19]। 1796 ई. में जोधपुर के भीमसिंह ने मराठों के विरुद्ध अंग्रेजों से सहायता प्राप्त करने का विफल प्रयत्न किया[20]। 1799 ई. में जयपुर के प्रतापसिंह ने लार्ड वेलेजली के दूत कर्नल कालिन्स के द्वारा मराठों के विरुद्ध अंग्रेजों से सहायता प्राप्त करने का एक और प्रयास किया।[21] कम्पनी सरकार को प्रसन्न करने के लिए उसने अपनी

शरण में आये अवध के पदच्युत नवाब वजीरअली को अंग्रेजो को सौंप दिया[22] परन्तु वेलेजली ने सहायता देना स्वीकार नहीं किया।

अगस्त 1803 ई म द्वितीय आग्ल मराठा युद्ध छिड गया, जिसमें मराठे पराजित हुए। सिन्धिया ने अंग्रेजो के साथ सुर्जीअर्जनगाव की सन्धि की, जिसके अनुसार जयपुर और जोधपुर अंग्रेजो के प्रभाव मे दे दिये। मराठो की पराजय ने राजपूत शासको को स्वर्ण अवसर प्रदान कर दिया। अत 29 सितम्बर 1803 को भरतपुर राज्य न अंग्रेजो से सन्धि करली[23]। इसके बाद अलवर राज्य न[24] तथा जयपुर राज्य ने[25] भी अंग्रेजो से सन्धिया करली। जोधपुर राज्य को भी सन्धि का मसविदा स्वीकृति हेतु भेजा गया, लेकिन जोधपुर महाराजा ने अपनी ओर से शर्तें लिख कर सन्धि का मसविदा गवर्नर जनरल लार्ड वेलेजली के पास भेजा, जिसे गवर्नर जनरल ने स्वीकार नहीं किया[26]। उदयपुर और कोटा के शासको ने भी अंग्रेजो से सन्धि करने का प्रयत्न किया, लेकिन वेलेजली को इन राज्यो से सन्धि करने मे कम्पनी का कोई विशेष हित दिखाई नहीं दिया। अत इन राज्यो के साथ सन्धिया करना उचित नहीं समझा गया[27]। अलवर, भरतपुर, जयपुर और जोधपुर के साथ सन्धिया करने मे लार्ड वेलेजली का मुख्य उद्देश्य सिन्धिया के शक्ति-साधनो को कमजोर करना था[28]। लेकिन कम्पनी के सचालक मडल ने वेलेजली की इस नीति को स्वीकार नहीं किया और उसे वापिस इगलैंड बुला लिया गया। तत्पश्चात वेलेजली के उत्तराधिकारी जार्ज बार्लो न नवम्बर 1805 म सिन्धिया से एक नई सन्धि करके राजपूत राज्य पुन सिन्धिया के सरक्षण मे दे दिये[29]। लेकिन अलवर और भरतपुर राज्यो के साथ हुई सन्धियो को कायम रखा गया।

द्वितीय आग्ल मराठा युद्ध के परिणामस्वरूप मराठो की शक्ति काफी क्षीण हो चुकी थी। फिर भी राजपूत राज्यो पर मराठो व पिंडारियो का आतक ज्यों का त्यों बना रहा। होल्कर और सिन्धिया की पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विता मे भी रणक्षेत्र राजस्थान की भूमि बनी। फलस्वरूप राजपूत राज्य अधिकाधिक बर्बाद होते गये। अब तो पिंडारी नेता अमीरखा भी जो कभी होल्कर का सेनानायक था, राजपूत राज्यो मे लूटमार करके आतक पैदा कर दिया। ऐसी परिस्थितियो म मेवाड की राजकुमारी कृष्णाकुमारी के विवाह की एक नई समस्या उठ खडी हुई। मेवाड के महाराणा भीमसिंह की कन्या कृष्णाकुमारी की सगाई 1798 ई मे जोधपुर के महाराजा भीमसिंह स तय हुई थी[30] किन्तु विवाह स पूर्व जोधपुर के महाराजा भीमसिंह का देहान्त हो गया। अत महाराणा ने कृष्णाकुमारी का विवाह जयपुर के शासक सवाई जगतसिंह से करने का प्रस्ताव किया। जगतसिंह ने कृष्णाकुमारी के आकर्षक

सौन्दय और लावण्य की प्रशंसा सुन रखी थी, जिससे वह उसकी ओर प्रेमासक्त हो गया था। अत उसने महाराणा का प्रस्ताव सहष स्वीकार कर लिया।[31] इस पर जोधपुर के शासक मानसिंह ने इसका विरोध किया, क्योंकि कृष्णाकुमारी की सगाई का नारियल पहले जोधपुर राजघराने म आ चुका था, इसलिये मानसिंह स्वय कृष्णाकुमारी से शादी करने को उत्सुक था[32]। महाराणा ने मानसिंह के विरोध पर ध्यान न देकर 1806 ई म कृष्णाकुमारी की सगाई का टीका जयपुर की ओर रवाना कर दिया। इस पर मानसिंह ने क्रुद्ध होकर सेना भेज दी। लेकिन उस समय शाहपुरा के राजा द्वारा बीच बचाव करने पर टीका ले जाने वाला दल पुन उदयपुर लौट आया[33]। कृष्णाकुमारी के आकषक सौन्दय पर जगतसिंह इतना आसक्त हो चुका था, कि वह किसी न किसी तरह उससे शादी करना चाहता था। इधर पोकरण का ठाकुर सवाईसिंह जो मानसिंह का विरोधी था तथा स्वर्गीय महाराजा भीमसिंह के मरणोपरान्त उत्पन्न पुत्र धौकलसिंह को जोधपुर की गद्दी पर बठाना चाहता था के प्रोत्साहन पर सवाई जगतसिंह ने पिंडारी नेता अमीरखा को अपनी ओर मिलाकर जोधपुर पर सैन्य चढाई कर दी। गिंगोली नामक स्थान पर हुए युद्ध मे मानसिंह पराजित होकर भाग खडा हुआ और जोधपुर के दुग म शरण ली[34]। जयपुर की सेनाओ ने जोधपुर का घेरा डाल दिया। इस घेरे के दौरान मानसिंह ने अमीरखा को अपनी ओर मिला लिया।[35] अमीरखा ने जयपुर राज्य म लूटमार आरम्भ करदी। अत सवाई जगतसिंह को जोधपुर का घेरा उठाकर अपने राज्य की ओर लौटना पडा।[36] इधर सिंधिया और उसके नायब सर्जेराव ने मेवाड मे भयकर लूटमार की और उजडते हुए मेवाड के लिये अधिकाधिक कठिन परिस्थितिया उत्पन्न करदी।

इधर विजयी अमीरखा लौटकर जोधपुर आगया जहा महाराजा मानसिंह ने उसका अभूतपूव स्वागत किया और अमीरखा को 'नवाब' की उपाधि से सम्मानित कर उसे अपने साथ मसनद पर बठने का विशेष सम्मान भी प्रदान किया[37]। जून 1809 मे अमीरखा पुन जयपुर की ओर गया और माग मे ग्रामीण क्षेत्रो को लूटकर नष्ट भ्रष्ट कर दिया। जयपुर राज्य क्षेत्र म अमीरखा के विध्वंश से आतंकित होकर सवाई जगतसिंह ने, अमीरखा की लूटमार को समाप्त करने की दृष्टि से अपने वकील को महाराजा मानसिंह के पास शान्ति समझौते के लिये भेजा। फलस्वरूप दोनो पक्षो के बीच संधि हो गयी[38]। इस संधि म मुख्य बात यह थी कि दोनो ही शासक (मानसिंह और जगतसिंह) उदयपुर की राजकुमारी से विवाह करने का विचार त्याग देंगे तथा दोनो राजघरानो के बीच मैत्री सुदृढ करने हेतु सवाई जगतसिंह अपनी बहिन

का विवाह मानसिंह से करेगा तथा मानसिंह अपनी पुत्री का विवाह सवाई जगतसिंह से करेगा। इस सन्धि के बाद भी अमीरखां और मानसिंह को यह आशंका थी कि यदि कृष्णाकुमारी जीवित रही तो जयपुर के साथ हुई मित्रता की सन्धि अस्थायी सिद्ध हो सकती है। अत मानसिंह ने अमीरखां को इस उद्देश्य से उदयपुर भेजा कि वह जयपुर और जोधपुर के सघर्ष के मूल कारण को ही समाप्त करदे। जुलाई 1810 ई म अमीरखां तीस चालीस हजार सेना के साथ उदयपुर की तरफ रवाना हुआ। अमीरखां न मेवाड राज्य मे भयकर लूटमार मचा दी तथा महाराणा से 11 लाख रुपया की माग की। यह रकम न मिलने पर अमीरखा ने एकलिंगजी के मन्दिर को लूटा और महाराणा को कहलवाया कि या तो कृष्णाकुमारी की शादी महाराजा मानसिंह से करदी जाय अथवा कृष्णाकुमारी की जिन्दगी समाप्त करदी जाय, क्योकि जब तक वह जीवित रहेगी, जयपुर और जोधपुर के बीच युद्ध छिड़ने की सभावना बनी रहेगी। महाराणा की निबलता और सामन्तो के पारस्परिक सघर्ष के कारण महाराणा इतना असहाय हो चुका था कि अमीरखां का घृणित प्रस्ताव स्वीकार करने के अतिरिक्त उसके पास अन्य कोई विकल्प नही रह गया था। अत कृष्णाकुमारी को विष दे दिया गया, जिससे 21 जुलाई 1810 को 16 वर्षीय राजकन्या का असामयिक देहान्त हो गया[39]। यह था बप्पा रावल के वशजो का नैतिक पतन सवथा निन्दनीय !

कृष्णाकुमारी की घटना ने राजपूत राज्यो के आन्तरिक खोखलेपन का अनावरण कर दिया। शासको और सामन्तो को अपने तत्कालीन स्वार्थ सिद्धि हेतु बाहरी शक्तियो से सहायता लेने म जरा भी सकोच नही हो रहा था। ये बाहरी शक्तिया कभी शासको और सामन्तो को आपस म लडाती ता कभी सामन्तो को ही आपस मे लडा देती थी। परिणामस्वरूप एक ओर तो शासको और सामन्तो की शक्ति क्षीण हुई तथा सामन्ता पर शासको का नियत्रण समाप्त हा गया और दूसरी ओर वे बाहरी शक्तियो को धन देकर उनकी शक्ति बढात रहे। 1807-1 ई के बीच सिधिया और होल्कर ने जयपुर से भारी रकम वसूल की तथा अमीरखा न भी जयपुर और जोधपुर से धन वसूल किया[40]। इसी प्रकार बापू सिधिया ने मेवाड म हमीरगढ और भीण्डर से भारी रकम वसूल की[41]। इस बर्बादी से मुक्ति पाने के लिए तथा अपने अनियन्त्रित सामन्तो को नियत्रित करने के लिये 1807-15 ई के मध्य राजपूत शासको ने ब्रिटिश सरक्षण के लिए बार-बार प्रयत्न किया, लेकिन कम्पनी के सचालक इसके लिये तयार नही थे क्योकि कम्पनी अभी तक देशी राज्यो के प्रति अहस्तक्षेप की नीति का अवलम्बन कर रही थी,[42] हालाकि अब इस नीति का दृढ़ता से पालन नही हो रहा था।

चार्ल्स मेटकाफ ने जब से दिल्ली के रेजीडेन्ट का पदभार ग्रहण किया था तब से ही राजपूत राज्यों के प्रति ब्रिटिश नीति में परिवर्तन करने पर जोर दे रहा था। 1811 ई में मेटकॉफ ने गवनर जनरल लाड मिण्टो को सुझाव दिया था कि मनु शक्तियों का लूटमार के रास्ता से वंचित रखने के लिए ब्रिटिश संरक्षण में राजपूत राज्यों का एक संघ बना लिया जाय[43]। लेकिन गवनर जनरल अपनी घेरा शासन की नीति से बाहर निकलने को तैयार नहीं हुआ। इसके अतिरिक्त राजपूत राज्य मराठा के प्रभाव क्षेत्र समझे जा रहे थे और मराठा से हुई सन्धि के अनुसार भी राजपूत राज्य मराठा के प्रभाव क्षेत्र स्वीकार किये जा चुके थे। अतः इस समय राजपूत राज्यों को ब्रिटिश संरक्षण में लेना सभव भी नहीं था। फिर भी मेटकाफ का सुझाव इस बात का प्रत्यक्ष संकेत था कि राजपूत राज्यों के प्रति ब्रिटिश नीति में परिवर्तन हो रहा था। 1813 ई के बाद ब्रिटिश नीति में परिवतन आया, क्योंकि इस समय तक देश में पिंडारियों की शक्ति में काफी वृद्धि हो चुकी थी तथा पिंडारियों ने ब्रिटिश क्षेत्रों में भी लूटमार करके आतंक पैदा कर दिया था, जिससे ब्रिटेन के जनमत में भी उल्लेखनीय परिवतन हो चुका था[44]। इसके अतिरिक्त कम्पनी के तत्कालीन गवनर जनरल लाड हेस्टिंग्ज भारत में कम्पनी की सर्वोच्च सत्ता स्थापित करना चाहता था। यह तभी सभव था जबकि होल्कर और सिंधिया को उनके राज्यों की सीमा में सीमित कर दिया जाय तथा पिंडारियों की बढती हुई शक्ति का दमन किया जाय[15]। इसके लिये राजपूत राज्यों को कम्पनी के संरक्षण में लाना आवश्यक था। लाड हेस्टिंग्ज का यह भी मानना था कि राजपूत राज्यों को संरक्षण में लेने से कम्पनी के वित्तीय साधनों में वृद्धि होगी, जिससे कम्पनी की सुरक्षा व्यवस्था मजबूत होगी। लेकिन लाड हेस्टिंग्ज, ब्रिटिश संरक्षण में राजपूत राज्यों का संघ बनाने के सुझाव से सहमत नहीं था, क्योंकि राजपूत राज्यों में पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विता एव द्वेष की भावना के कारण इस व्यवस्था में अनेक अड़चनें पैदा हो सकती थी। इसलिए वह प्रत्येक राजपूत राज्य से अलग अलग सन्धि करके उनसे सीधा सम्पर्क स्थापित करना चाहता था। यद्यपि नवम्बर 1814 ई में चार्ल्स मेटकॉफ ने गवनर जनरल को लिखा था कि, "यदि समय पर विनम्रतापूर्वक माग करने पर भी संरक्षण प्रदान नहीं किया गया तो शायद बाद में, प्रस्तावित संरक्षण भी अमान्य कर दिये जाय[46]।" लेकिन अगले दो वर्ष लाड हेस्टिंग्ज नेपाल युद्ध में व्यस्त होने के कारण इस दिशा में कोई विशेष ध्यान न दे सका। 1817 ई में वह राजपूत राज्यों से सन्धियां करने को तत्पर हुआ और इसके लिये तर्क दिया कि चूंकि मराठे, पिंडारियों की लूटमार को नियंत्रित करने में असफल रहे हैं, अतः उनके साथ की गई सन्धियों के दायित्व को त्यागना

न्यायसगत होगा[47]। इसलिये उसने दिल्ली स्थित ब्रिटिश रेजीडेंट चार्ल्स मेटकाफ को राजपूत शासकों के साथ समझौते सम्पन्न करने का आदेश दे दिया[48]।

गवनर जनरल का आदेश प्राप्त होने के बाद चार्ल्स मेटकाफ ने समस्त राजपूत शासकों के नाम पत्र भेजकर उन्हें अपना प्रतिनिधि भेजकर सधि की बातचीत करने के बारे मे लिखा। राजपूत शासक तो इसके लिए पहले से ही तैयार बैठे थे, क्योंकि इस समय तक राजपूत राज्य मराठो के हाथो पूणत बर्बाद हो चुके थे तथा शासकों की सत्ता इतनी दुबल हो चुकी थी कि वे अपने सामन्तो पर भी नियत्रण स्थापित करने मे असमथ थे। अत चार्ल्स मेटकाफ का निमत्रण मिलते ही एक एक करके सभी राजस्थानी नरेशो ने अपने प्रतिनिधियो को दिल्ली भेजा। 1818 ई के अन्त तक, सिरोही राज्य को छोडकर सभी राज्यो के साथ सधिया सम्पन्न करली गई[49]। चूकि सिरोही राज्य पर जोधपुर राज्य ने अपनी प्रभुसत्ता का दावा किया था, अत उस समय सिरोही राज्य से सधि नहीं की जा सकी। अन्त मे 1823 ई म ब्रिटिश सरकार ने जोधपुर राज्य के दावे को अस्वीकृत कर 11 सितम्बर 1823 ई को सिरोही राज्य से भी सधि करली। राजपूत राज्यो से सम्पन्न हुई सन्धियो की सभी शर्तें लगभग समान थी। सधियो के अन्तगत राजपूत शासकों ने अंग्रेजों की सर्वोच्चता स्वीकार करली तथा अंग्रेजो ने राजपूत राजाओ का वशानुगत राज्याधिकार स्वीकार कर लिया। अंग्रेजो ने प्रत्येक राज्य का बाह्य आक्रमण से सुरक्षा प्रदान करने तथा आन्तरिक शान्ति एव व्यवस्था बनाये रखने मे सहायता देने का आश्वासन दिया। इस ब्रिटिश सरक्षण के बदले राजपूत शासकों को अपनी बाह्य सत्ता (विदेश नीति) अंग्रेजो को सौंपनी पडी और अपने आपसी विवादो को अंग्रेजो की मध्यस्थता तथा निणय हेतु प्रस्तुत करने का वचन देना पडा। आवश्यकता के समय उन्हे अपने राज्यो के समस्त सनिक साधन अंग्रेजो को सुपुर्द करना स्वीकार करना पडा। अंग्रेजो को वार्षिक खिराज देने सम्बधी धारा, सभी राज्यो की सधियो मे अलग अलग थी। अंग्रेजो को दिये जाने वाले खिराज की राशि निर्धारित करने हेतु यह आधार अपनाया गया कि प्रत्येक राज्य जितना खिराज पहले मराठो को देते थे वह खिराज अब कम्पनी सरकार को दिया जाय। जयपुर राज्य की मराठो और पिंडारियो के हाथो हुई बर्बादी को देखते हुए उसे प्रथम वष खिराज से मुक्त रखा गया। दूसरे वष जयपुर से 4 लाख रुपये खिराज के लेना तय किया और प्रतिवष इसमे एक लाख रुपये की बढोतरी करने का प्रावधान रखा गया लेकिन छठे वष के बाद 8 लाख रुपये वार्षिक लेना तय किया जब तक कि

राज्य का राजस्व 40 लाख रुपय वार्षिक से अधिक न हो जाय। राज्य का राजस्व 40 लाख रुपय वार्षिक से अधिक होने पर अतिरिक्त राजस्व (40 लाख रुपय से अधिक राशि का) 5/6 भाग, 8 लाख रुपय वार्षिक के अतिरिक्त दिया जायगा[50]। जोधपुर राज्य से लिये जाने वाले खिराज की राशि एक लाख आठ हजार रुपय वार्षिक निर्धारित की तथा इसके साथ ही जब भी कम्पनी सरकार मांग करे, जोधपुर राज्य को 1500 घुडसवार सेना कम्पनी की सेवा में भेजनी होगी[51]। उदयपुर से लिय जाने वाले खिराज की राशि निश्चित न करके, प्रथम पाच वष तक राज्य के कुल राजस्व का 1/4 भाग लेना तय किया गया तथा पाच वष क बाद कुल राजस्व का 3/8 भाग लेना निश्चित किया गया[52]। कोटा राज्य, चूकि पेशवा, होल्कर, सिधिया और पवार, चारो को खिराज देता था तथा कोटा के अधीन सात कोटडिया और शाहाबाद भी थे, अत काटा से लिया जाने वाले खिराज की राशि कुछ अधिक रही। कोटा के राजस्व मे से 2,44,777 रुपय, सात कोटडिया के राजस्व से 19,997 रुपय तथा शाहाबाद के राजस्व से 25,000 रुपय वार्षिक लेना तय किया[53]। बूदी से 80,000 रुपये वार्षिक लेना तय किया गया[54]। बीकानेर, जसलमेर और किशनगढ़ के राज्य, चूकि मराठो को नियमित खिराज नही देते थे, अत कम्पनी सरकार ने इन्हे खिराज से मुक्त रखा। लेकिन कम्पनी सरकार द्वारा मागन पर य राज्य अपने साधनो के अनुसार कम्पनी को निशुल्क सनिक सहायता देंगे और यदि आवश्यकता पडने पर और इन राज्या द्वारा मागे जाने पर कम्पनी सरकार इन्ह सैनिक सहायता देगी तो उस सेना का खर्च इन राज्यो को वहन करना पडेगा। इस प्रकार इन तीन राज्यो को छोड कर शेष सभी राज्यो ने निर्धारित वार्षिक खिराज देना स्वीकार किया था। कम्पनी के साथ की गई सधियो की धाराओ से स्पष्ट है कि, "राजपूत शासको ने अपनी स्वाधीनता बेचकर सुरक्षा खरीद ली थी।"

राजपूत राज्यो से सधिया करने म लाड हेस्टिग्ज न अपना उद्देश्य "लुटेरी पद्धति के पुनरुत्थान के विरुद्ध अवरोध स्थापित करना तथा मराठो की शक्ति के विस्तार को रोकना बताया था[55]। जॉन मालकम की धारणा थी कि "सनिक कायवाहियो तथा रसद सामग्री दोनो के लिय इन राज्यो के प्रदेशो पर हमारा पूण नियत्रण होना चाहिय अन्यथा य राज्य हमारे शत्रुओ को हम पर आक्रमण करने योग्य साधन उपलब्ध कर देंगे[56]।" अत जान मालकम का मत है कि कम्पनी सरकार पिंडारियो को नष्ट करने तथा मराठा शक्ति के विस्तार का रोकने के लिय राजपूत राज्यो स सधिया करना चाहती थी।

परन्तु तत्कालीन परिस्थितिया उपर्युक्त कथन की पुष्टि नही करती। द्वितीय मराठा युद्ध से पूव पेशवा ने वेलेजली की सहायक सन्धि (बसीन की सन्धि) स्वीकार कर ली थी तथा द्वितीय मराठा युद्ध के फलस्वरूप सिन्धिया और भासले, दोना मराठा सरदारों ने पराजित होकर अंग्रेजो से सन्धिया करली थी, जिसके फलस्वरूप उन्हे अपने विस्तृत प्रदेशो से हाथ धोना पडा था तथा उनके सनिक और आर्थिक साधन काफी सीमित हो चुके थे[57]। तत्पश्चात वेलेजली ने होल्कर की शक्ति पर भी प्रहार करके उसकी शक्ति को भी काफी कमजोर कर दिया था। अत मराठा शक्ति के विस्तार के विरुद्ध राजपूत राज्यो से सहयोग लेने की आवश्यकता ही नही रह गई थी। इसके अतिरिक्त स्वय राजपूत राज्य इतने कमजोर हो चुके थे कि पिंडारियो और मराठो के विरुद्ध अवरोध उत्पन्न करने की उनकी क्षमता ही नही रह गई थी। इसीलिय वे बार बार ब्रिटिश सरक्षण प्राप्त करने हेतु प्रयत्न करते आरहे थे। राजपूत राज्या से की गई सन्धियो मे भी मराठो अथवा पिंडारिया का कही उल्लेख नही किया गया। सन्धिया मे 'बाह्य आक्रमण से सुरक्षा' एक सामान्य धारा थी जिसका उल्लेख वेलेजली के समय से ही देशी राज्यो के साथ सम्पन्न की गई सन्धिया मे किया जाता रहा था। 1800 ई मे हैदराबाद के निजाम के साथ सम्पन्न सन्धि मे कहा गया था कि "ब्रिटिश सरकार श्रीमन्त निजाम के प्रदेशो की बाह्य आक्रमणा से सुरक्षा करेगी[58]।" इसी प्रकार की सन्धिया मैसूर तथा अवध आदि राज्या के साथ भी की गई थी[59]। इतना ही नही पशवा व अन्य मराठा सरदारा के साथ की गई सन्धियो मे 'बाह्य आक्रमण के विरुद्ध सुरक्षा' की बात कही गई थी। 1803 ई मे जयपुर राज्य से की गई सन्धि मे तथा जोधपुर राज्य को भेजी गई प्रस्तावित सन्धि मे भी इस बात का उल्लेख था। राजपूत राज्या से सन्धिया करने के पूव और बाद मे भी अन्य देशी राज्या के साथ सम्पन्न की गई सन्धियो मे इस धारा का समावेश किया जाता रहा था। अत यह कहना कि मराठा और पिंडारियो की शक्ति के विस्तार को रोकने हेतु राजपूत राज्यो से सन्धिया की गई थी, उचित प्रतीत नही होता। सन्धियो मे उल्लिखित 'बाह्य आक्रमण के विरुद्ध सुरक्षा एक सामान्य धारा थी और इसका उल्लेख कम्पनी सरकार की सर्वोच्चता की अभिव्यक्ति का प्रतीक मात्र था[60]। इस धारा को मराठा अथवा पिंडारी विरोधी नही कहा जा सकता।

राजपूत राज्यो से सन्धिया होने से पूव मराठो और पिंडारियो ने इन राज्यो के अनेक प्रदेश हस्तगत कर लिय थे, लेकिन सन्धियो म राजपूत राज्या के उन प्रदेशा को वापस दिलवाने का भी उल्लेख नही मिलता। यहा तक कि

उदयपुर राज्य से संधि की शर्तें तय करते समय जब उदयपुर के प्रतिनिधि ने मांग की कि जिन परगनो पर मराठो ने अधिकार कर लिया है, उन्हें पुन मेवाड को दिलाया जाय,[61] किन्तु मेटकाफ ने इसके लिये कोई निश्चित वादा करने से इन्कार कर दिया। यदि इन संधियो को मराठो व पिंडारियो के विरुद्ध सम्पन्न किया गया होता तो मराठो व पिंडारियो द्वारा छीने गये प्रदेशो का लौटान का निश्चित प्रावधान होना चाहिये था। जयपुर राज्य से संधि की शर्तें तय करते समय अंग्रेजो ने आश्वासन दिया था कि अमीरखा ने जिन टोंक–रामपुरा के 22 गावो पर अधिकार कर लिया है उन 22 गावो को वापिस दिला देंगे लेकिन सन्धि सम्पन्न होते समय मेटकाफ ने इस बात का स्वीकार करने से इन्कार कर दिया[62]। इससे स्पष्ट है कि राजपूत राज्यो के साथ संधिया करने मे अंग्रेजो का उद्देश्य मराठा अथवा पिंडारी विरोधी नही था।

लार्ड हेस्टिंग्ज को भारत मे ब्रिटिश सीमाओ का विस्तार करने के लिये गवनर जनरल बनाकर भेजा गया था और वह कम्पनी को भारत की सर्वोच्च सत्ता बनाना चाहता था[63]। इसके लिये भारत के समस्त देशी राज्यो को कम्पनी के सरक्षण मे लाना आवश्यक था। इसलिये 1817–18 ई म राजपूत राज्यो से की गई संधिया उसकी नीति का अग मात्र थी। लार्ड हेस्टिंग्ज का एक अन्य उद्देश्य कम्पनी के वित्तीय साधनो मे वृद्धि करना भी था। इसके अतिरिक्त बीकानेर और बासवाडा दोनो राज्य महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्गो का नियत्रण करते थे। बीकानेर उत्तर पश्चिमी प्रदेशो के मुख्य माग पर था और बासवाडा गुजरात मालवा माग पर था। ब्रिटिश व्यापार वाणिज्य की वृद्धि के लिये इन राज्यो पर ब्रिटिश नियत्रण आवश्यक था[64]। संधियो के अतगत विभिन्न राज्यो से प्राप्त होने वाला खिराज, कम्पनी के लिये एक वित्तीय लाभ ही था[65]।

जॉन मालकम के अतिरिक्त मिल और विल्सन तथा कर्नल टाड आदि अंग्रेज विद्वानो की मान्यता है कि राजपूत राज्यो ने मराठो और पिंडारियो के आक्रमणो तथा लूटमार से अपने राज्यो को बचाने के लिए ब्रिटिश सरक्षण स्वीकार किया था[66]। ओझा, श्यामलदास, डा एम एस मेहता और डा देवीलाल पालीवाल भी उनके कथन की पुष्टि करते हैं[67]। किन्तु राजपूत राज्यो से संधिया सम्पन्न होने से पूव मराठा और पिंडारियो की शक्ति को पूणत कुचल दिया गया था। दिसम्बर 1817 तक सिंधिया ने अंग्रेजो से नई संधि करली थी भासले पूणत पराजित हाकर जोधपुर भाग आया था जहा महाराजा मानसिंह ने उसे अपने यहा शरण दी थी और जनवरी 1818

मे होल्कर ने भी आत्म समपरा कर दिया था। जोधपुर और कोटा को छोड़कर सभी राज्यो ने, मराठो के समपरा के बाद सधियाँ की थी। किन्तु राजपूत शासको को, कम्पनी सरकार को भी उतना ही खिराज देना स्वीकार करना पडा था, जितना कि वे मराठो को अनियमित रूप से देते आये थे। इस दृष्टि से राजपूत राज्यो को किसी प्रकार की आर्थिक राहत भी नही मिली थी।

अब केवल प्रश्न रह जाता है पिंडारियो की लूटमार और उनके आतक का। पिंडारियो के प्रमुख चार नेता थे—करीमखा वसील मुहम्मद, चीतू और अमीरखा। इसमे से केवल अमीरखा का राजपूत राज्यो से सम्पर्क रहा था। आरम्भ मे अमीरखा व्यक्तिगत रूप से कोई अलग शक्ति नही था, अपितु होल्कर का मुख्य सेनानायक होने के कारण राजपूत राज्यो के सम्पर्क मे आया था। लेकिन होल्कर की शक्ति क्षीण होने के बाद उसने अपना स्वतत्र दल गठित कर लिया था। कृष्णाकुमारी की घटना के समय सर्वप्रथम जयपुर राज्य ने उसकी सेवाओ को क्रय किया था,[68] लेकिन जयपुर राज्य से अपेक्षित धन न मिलने पर तथा जोधपुर राज्य की ओर से अधिक धन का प्रलोभन मिलने पर वह जोधपुर राज्य की सेनाओ से मिल गया था। तत्पश्चात उसने जो जयपुर और उदयपुर की तरफ सनिक अभियान किये, उनमे जोधपुर राज्य की सेनाओ ने उसका साथ दिया था[69]। जोधपुर राज्य की राजनीति मे भी उसने महाराजा मानसिंह के विरोधी सामन्तो के सहयोग से कुछ समय तक हस्तक्षेप करने मे सफल रहा था[70]। राजपूतो के विभिन्न पक्षो का सहयोग करते हुए उसे राजपूत राज्यो की आन्तरिक कमजोरियो का ज्ञान हो गया था, जिससे उसका होसला कुछ अधिक बढ गया था। इसलिये वह अपनी सैनिक सेवाओ का मूल्य अधिक से अधिक और सख्ती से वसूल करने लगा था। लेकिन 17 नवम्बर 1817 को, अर्थात् राजपूत राज्यो द्वारा ब्रिटिश सरक्षण प्राप्त करने से पूर्व ही अमीरखा ने अग्रेजो से सधि करली थी[71]। इस सधि के अन्तगत उसे टोक रामपुरा का स्वतत्र शासक स्वीकार करते हुए 'नबाब' की उपाधि प्रदान की गई थी, जिसके बदले मे अमीरखा न वचन दिया था कि, केवल आन्तरिक व्यवस्था बनाये रखन हेतु आवश्यक सेनाओ को छोडकर वह अपनी समस्त सेना भग कर देगा, अपनी समस्त तोपें व सनिक सामान, केवल आन्तरिक व्यवस्था बनाय रखने हेतु आवश्यक तोपें व सैनिक सामान को छोडकर ब्रिटिश सरकार को समर्पित कर देगा और किसी अन्य राज्य पर आक्रमण नही करेगा। इससे स्पष्ट है कि राजपूत राज्यो द्वारा ब्रिटिश सरक्षण स्वीकार

करने से पूर्व पिंडारी आत्म समर्पण कर चुके थे और राजस्थान में पिंडारी आतंक समाप्त हो चुका था।

राजपूत शासकों द्वारा ब्रिटिश संरक्षण स्वीकार करने का मुख्य कारण यह था कि वे अपने सामंतों की शक्ति को नियन्त्रित करने में असमर्थ थे और इसके लिए किसी सर्वोच्च सत्ता का सहयोग प्राप्त करना अनिवार्य समझते थे। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्हें मराठों से पर्याप्त सहयोग और समर्थन नहीं मिल पाया और वे अपने सामंतों को नियन्त्रण में रखने में असफल रहे थे। मराठों के हस्तक्षेप के बाद तो सामंतों की शक्ति में और अधिक वृद्धि हो गयी थी क्योंकि मूल्य चुकाने के बाद तो मराठों की सहायता उन्हें भी उपलब्ध हो सकती थी। सामंतों में भी परस्पर विरोधी गुट बन गये और उनकी पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विता के कारण राज्यों में अव्यवस्था फैल गई थी। जोधपुर के सामंतों के दो प्रभावशाली गुटों में से एक ने अमीरखां को भारी रकम देकर अपने विरोधी सत्तारूढ़ दल के आयस देवनाथ और सिंघवी इन्द्रराज का वध करवा दिया, लेकिन महाराजा मानसिंह हत्यारों का बाल भी बांका न कर सका[72]। राजमहल में राज्य के दीवान और महाराजा के गुरु की हत्या हो जाना और महाराजा का हत्यारों की जानकारी होते हुए भी उनके विरुद्ध कार्यवाही करने में अपने को असहाय पाना, महाराजा की दुर्बलता को स्पष्ट कर देता है। इस घटना के बाद महाराजा मानसिंह ने सिंघवी इन्द्रराज के स्थान पर उसके भाई गुलराज को दीवान नियुक्त किया, लेकिन विरोधी पक्ष ने युवराज छत्रसिंह को अपने पक्ष में कर गुलराज को भी मरवा डाला[73]। सामंतों के दबाव के कारण ही मानसिंह को विवश होकर युवराज छत्रसिंह को राज्य का अभिभावक बनाना पड़ा[74]। ऐसी ही स्थिति अन्य राज्यों में भी थी। जयपुर राज्य में माचेड़ी (बाद में अलवर) के ठाकुर प्रतापसिंह को जब भी अवसर हाथ लगा उसने जयपुर राज्य की खालसा भूमि को हस्तगत करने का प्रयास किया[75]। खेतड़ी के ठाकुर अभयसिंह और सीकर के लक्ष्मणसिंह के बीच राज्य प्रशासन को अपने नियन्त्रण में लेने के लिये गहरी प्रतिस्पर्द्धा चली। जब लक्ष्मणसिंह का गुट मिसर गणेशनारायण को दीवान पद से हटाने में सफल हो गया, तो गणेशनारायण ने अभयसिंह के साथ मिलकर सीकर के इलाकों को लूटना आरम्भ कर दिया[76]। शेखावाटी के ठाकुर श्यामसिंह ने तो ब्रिटिश क्षेत्र के कुछ सीमावर्ती गाँवों को लूट लिया और जब ब्रिटिश सरकार ने जयपुर महाराजा को इसकी शिकायत की तो जयपुर महाराजा ने उत्तर दिया कि वह श्यामसिंह को नियन्त्रित करने अथवा सजा देने में असमर्थ है[77]। इसी प्रकार उदयपुर में भी चूंडावतों और शक्तावतों के बीच भयंकर प्रति

द्विद्विता रही। चूडावतो ने शक्तावतो के पक्षपाती राज्य के प्रधान सोमचद गाधी की हत्या करदी, किन्तु शक्तिहीन महाराणा हत्यारो का बाल भी बाका न कर सका। मराठो ने भी कभी चूडावतो का तो कभी शक्तावतो का साथ दिया। फलस्वरूप मेवाड वीरान हो गया तथा राज्य की शक्ति पूर्णत नष्ट हो गयी[78]। कई सामन्तो ने खालसा भूमि को हडप लिया तथा 'भोम रखवाली नामक कर जो महाराणा को प्राप्त होता था, वह सामन्ता ने वसूल करना आरम्भ कर दिया और माल निकासी पर भी चुगी लगा दी[79]। शक्तिहीन महाराणा के लिये सामन्तो पर नियन्त्रण रखना सभव नही था। महाराणा की स्वय की आर्थिक स्थिति इतनी बिगड चुकी थी कि उसे कोटा के भाला जालिमसिंह से रुपये लेकर अपना दैनिक खर्च चलाने के लिये विवश होना पडा था[80]। बीकानेर का राज्य यद्यपि सामान्यत मराठो और पिंडारियो की लूट-मार से बचा हुआ था लेकिन यहा के शासक को भी अपने सामन्तो से भारी सघर्ष करना पड रहा था। 1809 ई मे भाडवे बादापुर मैणासर, मुकरमा सीधमुख, भाद्रा आदि के सामन्तो ने विद्रोह कर दिया[81]। 1813 ई मे देपालसर के ठाकुर ने विद्रोह कर दिया। 1815 ई मे चूरू के ठाकुर के नेतृत्व मे देपालसर, सीधमुख, जसाणे, भाद्रा, ददेवा, रावतसर आदि के सामन्तों ने विद्रोह कर दिया। इन विद्रोहो का दमन तब तक नही किया जा सका, जब तक कि अंग्रेजा से सैनिक सहायता प्राप्त नही हो गयी।

उपयुक्त विवरण से स्पष्ट है कि राजपूत शासको की शक्ति इतनी क्षीण हो चुकी थी कि वे अपने सामन्तो को नियन्त्रित करने मे असमर्थ थे और सामन्तो पर शासकों का कोई प्रभाव नहीं रह गया था। इसलिये राजपूत शासकों के समक्ष मराठो व पिंडारियो के आतक की समस्या नही थी बल्कि समस्या थी अपने सामन्तो पर नियन्त्रण स्थापित करने की तथा राज्य मे शान्ति एव व्यवस्था स्थापित करने की। इस समस्या का समाधान वे किसी बाहरी शक्ति की सहायता के बिना नही कर सकते थे। ऐसी स्थिति मे उनके समक्ष ब्रिटिश सरक्षण स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नही रह गया था। बीकानेर राज्य से हुई सन्धि की सातवी धारा मे तो स्पष्ट रूप से कहा गया था कि अंग्रेज सरकार महाराजा के विरुद्ध विद्रोह करने वाले एव उनकी सत्ता को न मानने वाले ठाकुरो तथा राज्य के अन्य पुरुषों को उनके अधीन करेगी[82]। इसके अतिरिक्त मेवाड राज्य से सन्धि सम्पन्न होने के बाद ब्रिटिश सरकार ने मेवाड मे नियुक्त प्रथम पोलीटिकल एजेन्ट कर्नल टॉड को मेवाड मे कार्य करने के लिए जो हिदायतें दी थी, उसमे भी प्रमुख रूप मे कहा गया था कि वह (कर्नल टाड) सम्पूर्ण मेवाड मे महाराणा का आधिपत्य

पुन स्थापित करे, क्योकि यहा के सामन्तो ने अवसर का लाभ उठाकर राज्य की खालसा भूमि पर अधिकार कर लिया है तथा महाराणा का उन सामन्तो पर प्रभाव भी नही रहा है[83]। इसी प्रकार जयपुर राज्य से संधि सम्पन्न होने के बाद ऑक्टरलोनी स्वय जयपुर गया और उसने जयपुर मे पहला काय सामन्तो को नियन्त्रण म लाने का किया, जिसम उसे सफलता भी मिली[84]। ऐसी परिस्थितियो को देखते हुए यह कहना ही युक्ति सगत होगा कि राजपूत शासको न मराठो और पिडारियो के भय से नही, बल्कि अपने सामन्तो पर नियन्त्रण स्थापित करने के लिये ब्रिटिश सरक्षण स्वीकार किया था।

राजपूत शासको को ब्रिटिश सरक्षण की भारी कीमत चुकानी पडी थी। उन्ह अपनी बाह्य सत्ता अग्रेजो को सौंपनी पडी और अपने आपसी विवादो को भी अग्रेजो की मध्यस्थता और निणय हेतु प्रस्तुत करने का वचन देना पडा। सर्वाधिक महत्वपूण तो बात यह थी कि अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिये सर्वोच्च सत्ता के साथ अपने समानता के दावे को भी त्यागना पडा और ब्रिटिश सरकार के प्रति अधीनस्थता की नीति का पालन करने के लिये विवश होना पडा। इससे पहले राजपूत शासको ने इतने प्रभावकारी और निश्चित रूप से अपनी स्वाधीनता किसी अन्य शक्ति, यहा तक कि मुगलो को भी समर्पित नही की थी[85]। राजपूत शासक अग्रेजो की सहायता से अपने विद्रोही सामन्तो को दबाकर अपनी आन्तरिक प्रभुसत्ता पुन स्थापित करने की आशा रखते थे, क्योकि अब सामन्तो के लिये बाह्य भाडत सनिक सहायता प्राप्त करना सम्भव नही रहा था।

सदभ टिप्पणी

1 जयपुर के शासक सवाई जयसिंह ने अपने छोटे पुत्र शिवसिंह को विष देकर हत्या करदी थी तथा जोधपुर के शासक महाराजा अजीतसिंह की हत्या उसके पुत्र बख्तसिंह ने करदी थी। इस सम्बध म राजस्थान म यह दोहा प्रसिद्ध है—

पत जयपुर जोधाण पत दोनू ई थाप ऊथाप।
कूरम मारिया डीकरो कमधज मार्‌यो बाप।।

2 मारवाड राज्य की ख्यातो से पता चलता है कि जयपुर के सवाई माधोसिंह की रानी ने जो जोधपुर के महाराजा बख्तसिंह की भतीजी

थी, माधोसिंह के कहने से बख्तसिंह को मिलने के लिये बुलाकर विषाक्त फूलों का हार पहनाया, जिससे बख्तसिंह शीघ्र बीमार होकर मर गया। (रेऊ मारवाड का इतिहास, भाग 1, पृ 368 पाद टिप्पणी)

3 मारवाड की ख्यात, भाग 2, पृ 123 (चौपासनी शोध संस्थान, जोधपुर), सूर्यमल मिश्रण वंश भास्कर खण्ड 4, पृ 3126 27।

4 डॉ कालूराम शर्मा उन्नीसवी सदी के राजस्थान का सामाजिक एव आर्थिक जीवन, पृ 7।

5 जोधपुर राज्य सिंधिया को, जयपुर और बूंदी सिंधिया तथा होल्कर दोनों को, उदयपुर, कोटा और भरतपुर सिंधिया, होल्कर और पेशवा तीनों को, करौली पेशवा को, प्रतापगढ होल्कर को, डूगरपुर और बांसवाडा धार के पवार को खिराज देते थे। जसलमेर और बीकानेर ने मराठों को कभी खिराज नही दिया।

6 डा प्रकाश व्यास मेवाड राज्य का इतिहास पृ 10

7 रेऊ मारवाड का इतिहास, भाग 1, पृ 397 पाद टिप्पणी।

8 डा के एस गुप्ता मेवाड एण्ड द मराठा रिलेशन्स, पृ 127

9 दयालदास सिंढायच दयालदास री ख्यात, भाग 2, पृ 95

19 प हनुमान शर्मा जयपुर राज्य का इतिहास, पृ 223

11 (i) महेश्वर दरबाराचिन बातामी पत्रे, भाग 2 (डी बी पारसनीस द्वारा सम्पादित) न 228
(ii) हिस्टोरीकल पेपस रिलेटिंग टू महादजी सिंधिया (जी एस सरदेसाई द्वारा सम्पादित) न 599

12 (i) ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग 2, पृ 680
(ii) जदुनाथ सरकार मुगल साम्राज्य का पतन, भाग 4, पृ 52

13 (i) श्यामलदास वीर विनोद पृ 1563
(ii) डा० प्रकाश व्यास मेवाड राज्य का इतिहास, पृ 21

14 पोटफोलियो फाइल न 6, पत्र संख्या 57–59 (जोधपुर रेकार्ड्स, राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर)

15 श्यामलदास वीर विनोद, 1568

16 केलेन्डर आफ पशियन कारेसपोंडेन्स, खड 6, पृ 175 और 280 (डा जी आर परिहार की 'मारवाड एण्ड मराठाज' पुस्तक से उद्धृत)

17 कलेंडर आफ पशियन कारेसपोंडेन्स, खड 7, पृ 564–65 1442 और 1556।

18 (i) पूना रेजीडेन्सी कारेसपोन्डेंस, खड 1, पृ 250
(ii) कलेन्डर श्राफ पर्शियन कारेसपोन्डेंस, खड 9, पृ 161 श्रीर 207
19 पूना रेजीडेन्सी कारेसपोन्डेंस, खड 9, पृ 294
20 पोलीटिकल डिपाटमट रेकार्ड्स, खड 15, पृ 311
21 पालीटिकल डिपाटमेंट रेकार्ड स, खड 16 पृ 151
22 प्रोसीडिंग्ज वाल्यूम XIV, राजस्थान हिस्ट्री काग्रेस, डॉ जी सी वर्मा का लेख ।
23 सी यू एचिसन ट्रीटीज एन्गेजमेन्टस एण्ड सनद्स, भाग 3, पृ 389
24 वही, पृ 400
25 वही, पृ 66
26 (i) हकीकत वही, सख्या 8, फो 444
(ii) फो पो कन्सलटेशन, 19 सितम्बर 1805 न 62–63
27 फो पो कन्सलटेशन, 12 श्रप्रेल 1804 न 110
28 वेलेजली का जनरल लेक को पत्र दिनाक 17 जुलाई 1803 (मार्टिन द्वारा सम्पादित वेलेजली डिस्पेचेज')
29 जी एस सरदेसाई न्यू हिस्ट्री श्राफ द मराठाज, खण्ड 3, पृ 435
30 (i) खरीता बही, सख्या 12, फा 4
(ii) रेऊ मारवाड का इतिहास, भाग 2, पृ 405
(iii) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 1736
31 एच टी प्रिंसप मैमायस श्राफ श्रमीरखां, पृ 296
32 हकीकत खाता बही, सख्या 9 फो 31
33 वही, फो 47
34 फो पो कन्सलटेशन, 9 श्रप्रेल 1807, न 25
35 फो पो कन्सलटेशन, 11 श्रगस्त 1807 न 4
36 रेऊ मारवाड का इतिहास, भाग 2 पृ 441
37 एच टी प्रिंसप मैमायस श्राफ श्रमीरखा पृ 344
38 (i) फो पो कन्सलटेशन 5 जून 1810 न 53
(ii) फो पो कन्सलटेशन, 21 जून 1810 न 42
39 (i) फो पो कन्सलटेशन, 25 श्रगस्त 1810 न 50
(ii) हकीकत खाता बही, सख्या 6 फो 477–530
(iii) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 1738
40 (i) फो पो कन्सलटेशन 2 फरवरी 1807 न 97

(ii) खरीता बही न 9, पृ 150

41 पूना रेजीडेन्सी कारेसपोंडेंस, भाग 14 पृ 79–81 और 83–85

42 डॉ एम एस मेहता लार्ड हेस्टिंग्ज एण्ड द इण्डियन स्टेट्स पृ 2–3

43 फो पो कन्सलटेशन 12 जुलाई 1811 न 1

44 फो पो कन्सलटेशन 22 अप्रेल 1814 न 11

45, डिस्पेच टू कोर्ट आफ डायरेक्टर्स, दिनांक 19 मई 1818

46 जान विलियम कई लाइफ एण्ड कारेसपांडेंस आफ चार्ल्स लार्ड मेटकॉफ, भाग 1, पृ 320

47 (i) फो पो कन्सलटेशन 29 सितम्बर 1817 न
(ii) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 28 अक्टूबर 1817 न 415

48 फो पो कन्सलटेशन, 14 नवम्बर 1817 न 50

49 राजपूत राज्यो से हुई सन्धियो के लिये द्रष्टव्य सी यू एचिसन द्वारा सपादित 'ए कलेक्शन आफ ट्रीटीज, एन्गेजमट्स एण्ड सनद्स भाग 3

50 सी यू एचिसन ए कलेक्शन आफ ट्रीटीज, एन्गेजमेंट्स एण्ड सनद्स, भाग 3, पृ 68–69

51 (i) वही, पृ 128–130
(ii) फो पो कन्सलटेशन 6 फरवरी 1818 न 102

52 सी यू एचिसन पूर्व उद्धृत पृ 22–23

53 सी यू एचिसन पूर्व उद्धृत पृ 357–361

54 सी यू एचिसन पूर्व उद्धृत पृ 229–230

55 फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 28 अक्टूबर 1817 न 26

56 जान मालकम द पोलीटिकल हिस्ट्री आफ इण्डिया भाग 2, पृ 289

57 जॉन मालकम पूर्वोक्त भाग 1, पृ 181

58 सी यू एचिसन पूर्वोक्त भाग 9, पृ 62

29 वही, पृ 241 और भाग 2 पृ 131

60 डॉ कालूराम शर्मा उन्नीसवी सदी के राजस्थान का सामाजिक एव आर्थिक जीवन, पृ 211

61 फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 28 अक्टूबर 1817 न 26

62 फो पो कन्सलटेशन 25 सितम्बर 1819 न 50/कपटद्वारा न 711

63 (i) बी डी बसु राइज आफ द क्रिश्चियन पावर इन इंडिया, भाग 4, पृ 98

(ii) एम एस मेहता लार्ड हेस्टिंग्ज एण्ड द इंडियन स्टेटस, पृ 31 व 252

64 फो पो कन्सलटेशन, 10 अक्टूबर 1818 न 4

65 एम एस मेहता लार्ड हेस्टिंग्ज एण्ड द इंडियन स्टेटस, पृ, 136

66 (i) मिल एण्ड विल्सन हिस्ट्री आफ ब्रिटिश इंडिया, भाग 8, पृ 148 व 301

(i) जेम्स टाड एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज आफ राजस्थान भाग 1 पृ *547* (विलियम क्रुक द्वारा सम्पादित)

67 (i) ओझा राजपूताने का इतिहास खंड 1, पृ 343

(ii) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 1743

(iii) एम एस मेहता पूर्वोक्त, पृ 128

(iv) डा डी एल पालीवाल मेवाड़ एण्ड द ब्रिटिश पृ 6

68 फो पो कन्सलटेशन 23 जुलाई 1807 न 30

69 (i) हकीकत खाता बही न 6, फो 477

(ii) हकीकत बही न 9 फो 93

(iii) खरीता बही न 9, फो 130

70 (i) हकीकत खाता बही न 6, फो 611–14

(ii) हकीकत बही, न 10, फो 84 और 117

71 सी यू एचिसन पूर्वोक्त, भाग 3 पृ 244–45

72 (i) फो पो कन्सलटेशन 10 नवम्बर 1815 न 14

(ii) हकीकत खाता बही न 6, फो 611

73 (i) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 866

(ii) डॉ आर पी व्यास रोल आफ नोबिलिटी इन मारवाड़ पृ 51–52

74 (i) फो पो कन्सलटेशन 14 जून 1817 न 13

(ii) फो पो कन्सलटेशन, 1 अगस्त 1817 न 40

(iii) हकीकत बही न 10, फो 111

75 (i) जॉन विलियम के लाइफ एण्ड कारेस्पोन्डेन्स आफ चार्ल्स मेटकाफ, भाग 1, पृ 311

76 (i) फो पो कन्सलटेशन, 27 अक्टूबर, 1815 न 24
(ii) फो पो कन्सलटेशन, 17 नवम्बर, 1815 न 28
77 (i) फो पो कन्सलटेशन, 21 अगस्त 1812 न 21
(ii) फो पो कन्सलटेशन, 27 अक्टूबर, 1815, न 24
78 डॉ प्रकाश व्यास मेवाड राज्य का इतिहास, पृ 39–54
79 फा पा कन्सलटेशन, 5 जून 1818 न 67
80 (i) फो पो कन्सलटेशन, 5 जून 1818 न 67
(ii) श्यामलदास वीर विनोद पृ
81 ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग 2, पृ 391
82 सी यू एचिसन पूर्वोक्त, भाग 3, पृ 287–88
83 फो पो कन्सलटेशन, 6 मार्च 1818, न 7–11'
82 फा पा कन्सलटेशन, (सीक्रेट), 29 अगस्त 1818 न 81
85 एम एस मेहता लार्ड हेस्टिग्ज एण्ड द इण्डियन स्टेट्स, पृ 178

राजपूत राज्यो मे ब्रिटिश हस्तक्षेप

राजपूत राज्या और ब्रिटिश इस्ट इण्डिया कम्पनी के मध्य हुई सधियो म इस बात का स्पष्ट उल्लेख था कि राजपूत शासक अपने राज्यो के सावभौम शासक बन रहेंगे अथात कम्पनी सरकार इन राज्या के आतरिक मामलो मे हस्तक्षेप नही करेगी। फिर भी इन सधिया म ऐसी धाराए सम्मिलित की गई थी, जो राजपूत राज्यो के आतरिक मामलो मे ब्रिटिश हस्तक्षेप को अवश्यभावी बनाने वाली थी। उदाहरणाथ, बीकानेर राज्य के साथ सम्पन्न हुई सधि के अतगत ब्रिटिश सरकार ने महाराजा के विरोधी सामतो एव अय विरोधिया को कुचलने म सहयाग देने की बात कही गई थी[1]। अत महाराजा के विरोधियो को कुचलकर व्यवस्था स्थापित करने के नाम पर कम्पनी सरकार का हस्तक्षेप अवश्यभावी था। इसी प्रकार डूगरपुर, बासवाडा और प्रतापगढ राज्यो के साथ सम्पन्न हुई सधियो मे इन राज्या के शासको ने ब्रिटिश सरकार की सलाह से शासन सचालित करने का वचन दिया था[2]। अत शासन सचालन मे ब्रिटिश सरकार की सलाह राज्य के आतरिक मामलो म प्रत्यक्ष हस्तक्षेप था। जयपुर और उदयपुर राज्या के साथ सम्पन्न हुई सधिया मे वार्षिक खिराज की रकम निर्धारित न कर, राज्य के कुल राजस्व का एक निश्चित हिस्सा लेना तय किया[3]। इससे कम्पनी राज्य की आय मे हिस्सेदार बन गई और अपने हिस्से का खिराज प्राप्त करने हेतु कम्पनी को इन राज्यो के आतरिक मामलो मे हस्तक्षेप करने का अवसर मिल गया।

राजपूत राज्या और कम्पनी के बीच सम्पन्न हुई सधियो के अतगत राजपूत नरेशा ने अपने राज्य म कम्पनी का पोलीटिकल एजन्ट नामक राज नीतिक अधिकारी रखना स्वीकार किया था। यह पोलीटिकल एजेन्ट राज्य मे व्यवस्था बनाये रखने के नाम पर शासको को निरन्तर सलाह देने लगे। राजपूत शासक इतने निबल हो चुके थे कि पोलीटिकल एजेन्ट की सलाह की अवहेलना करना उनके लिये सभव नही था। इसलिये धीरे धीरे राजपूत राज्यो

के आंतरिक मामलो मे पोलीटिकल एजेन्ट का हस्तक्षेप बढने लगा[4]। ब्रिटिश सरक्षण स्वीकार करने के फलस्वरूप राजपूत शासको की बाह्य स्वतन्त्रता तो समाप्त हो ही गई थी और सधि सम्पन्न होने के बाद अग्रेजो ने राजपूत राज्यो की आन्तरिक प्रभुसत्ता को भी धीरे धीरे समाप्त करना आरम्भ कर दिया। राजपूत शासको के पदाधिकारियो ने भी अब पोलीटिकल एजेन्ट के इशारा पर शासन चलाना आरम्भ कर दिया तथा अपने शासक के आदेशो की अवहेलना शुरु कर दी। राजपूत नरेशो ने ऐसे पदाधिकारियो को पदच्युत करने का भी प्रयास किया, लेकिन ऐसे पदाधिकारियो को चूकि कम्पनी सरकार का समर्थन प्राप्त होता था अत राजपूत शासक अपने ही अधीनस्थ ऐसे पदाधिकारियो के विरुद्ध कोई कार्यवाही नही कर सके। राज्यो के आंतरिक प्रशासन पर अपना पूर्ण वचस्व स्थापित करने की दृष्टि से ब्रिटिश सरकार न अपने पक्ष के पदाधिकारियो को प्रभावशाली एव शक्तिशाली बनाने का प्रयास किया। सधि सम्पन्न होने के तुरन्त बाद दिल्ली स्थित ब्रिटिश रेजीडेन्ट आक्टरलोनी ने जयपुर नरेश सवाई जगतसिह पर इस बात के लिय दबाव डाला कि वह अपने मन्त्रिमण्डल का पुनगठन करे[5]। अत सवाई जगतसिह को ब्रिटिश समथक नाजिर मोहनराम तिवाडी को राज्य का प्रधानमन्त्री नियुक्त करना पडा[6]। दिसम्बर 1818 मे सवाई जगतसिह की निसतान मृत्यु हो जाने पर नाजिर मोहनराम तिवाडी ने एक अन्य ब्रिटिश समथक डिग्गी के जागीरदार मेघसिह से मिलकर जयपुर की गद्दी के वशानुगत उम्मीदवारो के दावो की अवहेलना करत हुए नरवर के अल्पवयस्क मोहनसिह को गद्दी पर बठा दिया और आक्टरलोनी ने बिना किसी जाच पडताल के अपने समथको की इस कायवाही की पुष्टि कर दी[7]। राज्य मे अधिकाश सामन्तो ने इसका विरोध किया किन्तु ब्रिटिश सरकार अपने पिछलग्गुओ का समथन करते हुए सामन्तो के विरोध की उपेक्षा करती रही। लेकिन जब 25 अप्रेल 1819 को स्वर्गीय महाराजा जगतसिह की विधवा रानी के पुत्र उत्पन्न हो गया, तब मोहनसिह को हटा कर उस शिशु को जयसिह तृतीय के नाम से शासक घोषित करना पडा[8]। राजमाता भटियाणी, शिशु शासक की अभिभाविका बनाई गई। राजमाता भटियाणी नाजिर मोहनराम तिवाडी को पदच्युत करने का निश्चय किया, तब आक्टरलोनी ने राजमाता पर हर सभव दबाव डालकर नाजिर मोहनराम को प्रधानमत्री बनाये रखने का प्रयत्न किया किन्तु राजमाता ने आक्टरलोनी के दबाव की उपेक्षा करते हुए नाजिर मोहनराम तिवाडी को पदच्युत कर रावल बरीसाल को प्रधानमत्री व फौजीराम को उसका सलाहकार नियुक्त कर दिया[9]। राजमाता के समथक पदाधिकारियो को ब्रिटिश सरकार

का सहयोग न मिलने के कारण राज्य की प्रशासन व्यवस्था बिगड़ने लगी। कुछ समय बाद राजमहल में फौजीराम और राजमाता के गुरु हनुमन्त चेल के बीच सशस्त्र संघर्ष हो जाने से कुछ लोग मारे गये। तब ब्रिटिश सरकार ने आक्टरलोनी के सुझाव को स्वीकृत करते हुए कप्तान स्टीवर्ट को अपना एजेंट नियुक्त कर उसे राजस्व प्रशासन में हस्तक्षेप करने की स्वीकृति दे दी[10]।

तत्पश्चात आक्टरलोनी ने प्रधानमन्त्री बरीसाल को अपने पक्ष में मिला लिया,[11] अतः अब बरीसाल ने राजमाता की अवज्ञा करना आरम्भ कर दिया। राजमाता ने आक्टरलोनी के आदेशों की परवाह न करते हुए बरीसाल को पदच्युत कर दिया[12]। 1835 ई. में जयसिंह तृतीय की मृत्यु हो जाने पर उसके अल्पवयस्क पुत्र रामसिंह को गद्दी पर बैठाया गया[13]। इस पर ब्रिटिश पदाधिकारियों के प्रोत्साहन पर ब्रिटिश समर्थक दल ने यह अफवाह फैलादी कि भूथाराम[14] के दल ने जयसिंह को विष देकर हत्या की है ताकि अल्पवयस्क महाराजा के शासनकाल में सत्ता पर उनका वर्चस्व बना रहे[15]। अब अंग्रेजों को अपने विरोधी दल को कमजोर कर सत्ता पर प्रभाव स्थापित करने का अवसर मिल गया। ए. जी. जी. कर्नल एल्विस स्वयं जयपुर आया और अल्पवयस्क महाराजा के हितों की देखभाल का दायित्व स्वयं ग्रहण करने की घोषणा करदी[16]। इससे राज्य के पदाधिकारियों में घोर असंतोष फैल गया तथा 4 जून 1835 को कर्नल एल्विस एवं उसके सहायक कप्तान ब्लेक पर घातक हमला किया गया, जिससे कप्तान ब्लेक मारा गया[17]। इस घटना का दायित्व भूथाराम पर डालते हुए उसे बन्दी बनाकर आजीवन कारावास की सजा दे दी गई[18]। राजमाता को प्रशासनिक अधिकारों से वंचित कर बरीसाल की अध्यक्षता से पांच सदस्यों की एक रीजेन्सी कौंसिल का गठन किया गया और समस्त प्रशासनिक अधिकार उसे सौंप दिये गये[19]। 1838 ई. में जयपुर के लिए पुनः पोलीटिकल एजेन्सी स्थापित की गई[20]। तत्पश्चात जयपुर राज्य में ब्रिटिश समर्थक पदाधिकारियों का प्रभाव बढ़ने लगा।

जोधपुर राज्य में भी ब्रिटिश अधिकारियों ने हस्तक्षेप कर अपने समर्थक पदाधिकारियों का दल तैयार करने का प्रयत्न किया। यद्यपि जोधपुर का महाराजा मानसिंह अंग्रेजों का घोर विरोधी था लेकिन आक्टरलोनी के दबाव पर उसे ब्रिटिश समर्थक मेहता अखचन्द को दीवान और पोकरण के ठाकुर सालिमसिंह को प्रधान के पद पर नियुक्त करना पड़ा[21]। लेकिन मानसिंह ने अपनी स्थिति मजबूत होते ही मेहता अखचन्द को मरवा दिया[22]। सालिमसिंह जैसलमेर की ओर भाग गया किन्तु उसके सहयोगी खेजड़ला और निंबाज के ठाकुरों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा[23]। इस पर ब्रिटिश समर्थक लोगों

ने मानसिह के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार से अपील की, तब ब्रिटिश सरकार ने मानसिह पर दबाव डालकर मानसिह और उसके विरोधियो मे समझौता करवा दिया[24]। लेकिन मानसिह ने ब्रिटिश समथक लोगो को किसी महत्वपूण पद पर नियुक्त नही किया तथा प्रशासन मे मानसिह के विश्वासपात्र तथा अग्रेजो के विरोधी नाथो का प्रभाव बना रहा[25]। अग्रेजो ने नाथो का प्रभाव समाप्त करने का भरसक प्रयत्न किया और इसके लिये उन्हे जोधपुर पर सनिक अभियान भी करना पडा[26]। कप्तान लुडलो को जोधपुर राज्य का पोलीटिकल एजेन्ट नियुक्त किया गया[27]। लुडलो की नियुक्ति और महाराजा मानसिह की मृत्यु के बाद मेहता विजयसिह के नेतृत्व म ब्रिटिश समथक दल का प्रशासन पर प्रभाव बढ गया[28]।

उदयपुर राज्य के प्रशासन पर अग्रेजो को अपना वचस्व स्थापित करने मे विशेष कठिनाई नही हुई। मेवाड से सधि सम्पन्न होने के बाद गवनर जनरल लाड हेस्टिंग्स न मेवाड म नियुक्त प्रथम पोलीटिकल एजेन्ट कनल टॉड को मेवाड के प्रशासन को अपने हाथ मे लेने का निर्देश दिया था[29]। कनल टॉड के काल मे महाराणा की स्थिति एक स्वतन्त्र शासक की न रहकर एक निवृत वेतन प्राप्त व्यक्ति की तरह थी, जो ब्रिटिश सरकार से प्रतिदिन 1,000 रुपये अपने निजी खच हेतु प्राप्त करता था[30]। कनल टॉड ने शासन सचालन हेतु मेहता देवीचद को प्रधान के पद पर नियुक्त करवाया[31]। लेकिन जब महाराणा भीमसिह और मेहता देवीचद मे नही बनी, तब महाराणा ने देवीचद को पदच्युत कर शाह शिवलाल को प्रधान बनाया[32]। कनल टॉड के उत्तराधिकारी कप्तान वॉग ने शिवलाल को अपने पक्ष म कर लिया, अत वह महाराणा व राज्य के प्रमुख सामन्तो की उपेक्षा करने लगा। इस पर महाराणा ने शिवलाल को भी पदच्युत कर दिया,[33] यद्यपि ऑक्टरलोनी महाराणा की इस कायवाही से सख्त नाराज हुआ[34]। ब्रिटिश पोलीटिकल एजेन्ट के दबाव पर महाराणा को ब्रिटिश समथक मेहता रामसिह को प्रधान बनाना पडा[35]। रामसिह ने ब्रिटिश हितो का ही ध्यान नही रखा बल्कि अपने सबंधियों को अधिकार और लाभ के पद पर नियुक्त कर दिया। यद्यपि महाराणा जवानसिह ने रामसिह को पदच्युत करना चाहा लेकिन रामसिह पर ब्रिटिश अधिकारियो की अत्यधिक कृपा होने के कारण, जब तक कनल कॉब मेवाड का पोलीटिकल एजेन्ट रहा महाराणा रामसिह को पदच्युत न कर सका[36]। कॉब के चले जाने के बाद महाराणा ने रामसिह को पदच्युत कर मेहता शेरसिह को प्रधान बना दिया[37]। इससे मेवाड मे ब्रिटिश समथक दल की स्थिति कमजोर हो गयी। लेकिन महाराणा सरदारसिह के काल मे अग्रेजो का पुन

रामसिंह को प्रधान बनाने मे सफलता मिल गई[38] और इसके बाद तो मेवाड राज्य के प्रशासन पर ब्रिटिश सरकार का वचस्व बढता ही गया।

इसी प्रकार भरतपुर राज्य म 1826 ई म उत्तराधिकार सघष की समाप्ति के बाद ब्रिटिश सरकार न रानी अमृतकवर को अल्पवयस्क महाराजा बलवन्तसिंह की अभिभाविका तो स्वीकार कर लिया, किन्तु शासन की वास्त विक शक्ति अपने पक्ष के फौजदार चूडामरण और दीवान जवाहरलाल का सौंप दी[39]। रानी अमृतकवर ने धीरे धीरे इन ब्रिटिश समथक व्यक्तियो को प्रभाव हीन कर अपने विश्वस्त अधिकारी ज्ञानी बैजनाथ की सहायता से शासन सचालन करना आरम्भ कर दिया[40]। इस पर ब्रिटिश पोलीटिकल एजेन्ट ने अव्यवस्था का बहाना लेकर भरतपुर राज्य मे हस्तक्षेप किया तथा शासन सत्ता अपने समथक लोगो को सौंप दी एव ज्ञानी बजनाथ को राज्य से निर्वा सित कर दिया[41]। फिर भी रानी ने जब ब्रिटिश समथक लोगो को शक्तिहीन बनाकर शासन सत्ता पर अपना नियत्रण स्थापित कर लिया, तब ब्रिटिश सर कार ने रानी को अभिभाविका के पद से ही हटाकर अपने समथक मन्त्रियो की एक रीजेन्सी कौंसिल गठित कर दी[42] जो ब्रिटिश पोलीटिकल एजेन्ट के निर्दे शानुसार काय करती थी। इस प्रकार भरतपुर राज्य के प्रशासन पर भी अग्रेजो का वचस्व कायम हो गया।

उपयु क्त विवेचन से स्पष्ट है कि ब्रिटिश सरकार ने राजपूत राज्यो के आन्तरिक प्रशासन पर अपना वचस्व कायम करने के लिये राज्या मे अपने समथक पदाधिकारियो को प्रभावशाली और शक्ति सम्पन्न होने मे पूरा सहयोग दिया। ब्रिटिश समथक पदाधिकारी पोलीटिकल एजेन्ट को ही 'सत्ता और अधिकार का स्रोत' मानकर उसके आदेशानुसार ही काय करने लगे। अत राज्य के आन्तरिक शासन मे राजाओ का महत्व घट गया और उनके स्थान पर ब्रिटिश अधिकारियो का महत्व बढ गया। कम्पनी सरकार के साथ सम्पन्न हुई सन्धियो द्वारा राजपूत शासको के अधिकार एव उनके कायक्षेत्र पहले ही सीमित हो चुके थे और अब आन्तरिक शासन मे ब्रिटिश अधिकारियो के हस्त क्षेप तथा उनके द्वारा ब्रिटिश समथक पदाधिकारियो का प्रोत्साहन दिये जाने से राजपूत नरेश शासन सम्बन्धी कार्यों के प्रति उदासीन होन लगे। शासन के प्रति उदासीन शासको के पास भोग विलास तथा आमोद प्रमोद के अलावा अन्य कोई काय नही रह गया था। अत वे भोग विलास मे डबते गये। जयपुर का शासक जगतसिंह सर्वाधिक विलासी निकला। उसन रसकपूर नामक एक वेश्या को अपनी महारानियो से भी अधिक सम्मान और अधिकार प्रदान किया तथा उसके नाम के सिक्के भी जारी किये[43]। जोधपुर का शासक मानसिंह भी

भोग विलास मे डूबता गया[44] और उसके उत्तराधिकारी तख्तसिंह का भी यही हाल रहा[45]। कोटा का शासक शत्रुशाल तो अपना अधिकाश समय रनिवास में ही बिताता था[46]। मेवाड के शासक जवानसिंह[47] और स्वरूपसिंह[48] भी अत्यधिक विलासी निकले। कभी कभी तो राजपूत शासक महीनो तक अपने अन्त पुर से बाहर ही नही निकलते थे। इसके अतिरिक्त पोलो, शिकार, कुश्ती के दगल, हाथियो के दगल, विलायती नटो के तमाशे, विलायती कुत्ता के तमाशे, सगीत, नृत्य और शराब की दावतो आदि म ही उनका अधिकाश समय व्यतीत होने लगा। शासको की इस स्थिति के सम्बध म मुंशी देवी प्रसाद ने लिखा है "किसी ने भी कभी अपनी रियासत मे इस सिरे मे उस सिरे तक दौरा न किया होगा। न ही रय्यत से पूछा होगा कि तुम्हारी क्या हालत है। हमारे अहलकार और हाकिम तुम्हारे साथ कैसा सलूक करते हैं और क्या हासिल (लगाम) लेते हैं। शेर और सूअर की तलाश मे तो अपने मुल्क के ऊजड जगलो मे नजर दौडाकर इधर उधर गौर से देखा होगा, मगर यह कभी नही हुआ कि उन जगलो मे कही से पानी लाने की तरकीब कर घास फूस की जगह जौ और गहू के सरसब्ज खेतो से आखो को ठडा करे। मेले और तमाशे के शौक से तो बहुत मरतबे गलिया और बाजारो में बन ठन कर निकले होग, मगर वैसे कभी रय्यत के सुख-दुख की खबर लेने को महलो के बाहर कदम भी न रखा होगा। डोम डाढी, रडी और भडवा को तो हमेशा रूबरु बुलाकर दो दो और चार चार पहर तक उनका नाच और मुजरा देखा होगा मगर कभी दरबारे आम म बैठकर रय्यत की फरियाद दो घडी भी न सुनी होगी[49]।" वस्तुत ब्रिटिश अधिकारियो का हित भी इसी मे था कि शासक लोग प्रशासनिक कार्यों से विमुख होकर भोग विलास तथा आमोद प्रमोद म डूबे रह ताकि राज्यो का शासन वे अपनी इच्छानुसार चला सके[50]। ऐसी परिस्थितियो मे ब्रिटिश पोलीटिकल एजेन्ट ने राज्य मे तानाशाह की भूमिका निभाना आरम्भ कर दिया।

ब्रिटिश सरकार ने आरम्भ से ही राजपूत राज्यो से अधिक से अधिक धन वसूल करने की नीति अपनाई थी, शासन की सुव्यवस्था से उनका कोई सम्बध नही था। शासन मे सुव्यवस्था की बात तभी की जाती जब उन्हें समय पर खिराज नही मिलता था। खिराज की भारी रकम के अलावा समय समय पर राजपूत राज्यो पर अन्य खर्चे बलात् थोप दिये जाते थे। जयपुर राज्य म शान्ति और व्यवस्था के नाम पर राजमाता के समथक सामन्तो को कुचलने के लिये शेखावाटी तथा तोरावाटी पर आक्रमण किया गया और इस सनिक अभियान के खर्चे की वसूली के लिये साभर झील तथा जिले को ब्रिटिश सर-

कार ने अपने नियत्रण म ले लिया[51]। शेखावाटी मे शान्ति एव व्यवस्था बनाये रखन के नाम पर 1835 ई म 'शेखावाटी ब्रिगेड' की स्थापना की गई, जिसका नियत्रण ब्रिटिश अधिकारियो के हाथो मे था, किन्तु इसका खच जयपुर राज्य स वसूल किया जाने लगा[52]। जयपुर राज्य की वार्षिक आय मे से वार्षिक खिराज और अन्य खर्चों को चुकाने के बाद शेप आय से राज्य का प्रशासन खच भी चलाना मुश्किल हो गया[53]। अत राज्य को बार बार सेठ साहूकारो से ऋण लेना पडा। जोधपुर मे भी शान्ति एव व्यवस्था के नाम पर छाग' तथा काट किराना परगना के 21 गाव ब्रिटिश सरकार न अपन नियत्रण म ले लिये[54]। मेरवाडा मे मर व मीनो के उपद्रव को दवाने के लिय 'मेरवाडा बटालियन कायम की गई जिसका सारा खच जोधपुर और उदयपुर राज्यो पर थोप दिया गया[55]। 1835 ई के लगभग बकाया रकम की वसूली के नाम पर साभर भील को नियत्रण मे ले लिया गया[56] हालाकि जोधपुर राज्य ने बकाया खिराज किश्तो मे चुकाने तथा प्रथम किश्त के पाच लाख रुपये तत्काल देने का प्रस्ताव किया था लेकिन इसे स्वीकार नही किया गया[57]। 1838 ई म पुन बकाया खिराज के नाम पर नावा और गुढा के नमक उत्पादक क्षेत्रो को भी कम्पनी ने अपने नियत्रण मे ले लिया[58]। यद्यपि 1818 ई की सधि मे जोधपुर राज्य ने आवश्यकता पडने पर कम्पनी को 1500 घुडसवार सनिको की सहायता देन का वचन दिया था लेकिन 1835 मे कम्पनी ने जोधपुर के सनिको की अकुशलता का बहाना लेकर इस सहायता के बदले 'जोधपुर लीजियन' का गठन किया, जिसका नियत्रण ब्रिटिश अधिकारियो के हाथो मे रखा लेकिन इसके खर्चे के 1 15,000 रुपये वार्षिक जोधपुर राज्य से वसूल किये जाने लगे[59]। शान्ति और व्यवस्था के नाम पर 1836 ई मे जोधपुर राज्य स मालानी परगना भी हथिया लिया और 1839 ई मे महाराजा मानसिंह के विरुद्ध सनिक अभियान किया और इसका खच भी जोधपुर राज्य पर डाल दिया[60]। इसी प्रकार 1825 30 के मध्य मेवाड के भीलो के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार न सनिक कायवाही की और उसका सम्पूर्ण खच महाराणा के नाम पर ऋण के रूप म लिख लिया तथा इस ऋण पर छ प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज लिया जाने लगा[61]। 1841 ई मे भोमट क्षेत्र मे सुप्रबन्ध का बहाना लेकर मेवाड भील कोर स्थापित की गई, जिसके सचालन का खच 50,000 रुपये वार्षिक मेवाड राज्य से वसूल किया जाने लगा[62]। वार्षिक खिराज की वसूली दो किश्तो मे की जाती थी। प्रत्येक किश्त की बकाया राशि पर 12 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज जोडकर उसे मूलधन के साथ जोड दिया जाता था[63]। इस प्रकार कम्पनी सरकार सेठ-साहूकारो की भाति चक्रवृद्धि ब्याज वसूल कर लेती थी।

भारी खिराज, बकाया खिराज पर चक्रवृद्धि ब्याज और अन्य खर्च के थोपे जाने से राज्यो की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर हो गयी कि कई राज्य तो अपने सनिको और कमचारियो को कई महीना तक वेतन भी नही चुका पाते थे। सनिको और सिपाहियो को बकाया वेतन के लिये बार बार विद्रोह करने पर विवश होना पडता था[64]। ऐसी स्थिति मे राज्य कमचारियो द्वारा भ्रष्ट तरीको से धन अर्जित करना तो स्वाभाविक ही था[65]। वे लोग व्यापारियो तथा जनसाधारण से घूस और बेगार लेने लगे, दुकानदारो को कम कीमत देकर बलपूवक सामान लेने लगे। पुलिस कोतवाली तो सर्वाधिक बदनाम थी। आवागमन के माग तक सुरक्षित नही थे और लोगो को यात्रा करते समय अपनी सुरक्षा के लिये राजकीय सैनिक अथवा निजी गारद (पहरेदार) साथ लेकर चलना पडता था[66]। न्यायालयो मे न्याय नाम की कोई चीज ही नही रह गई थी[67]।

राजपूत शासको ने अपने सामन्तो पर नियत्रण स्थापित करने के लिये ब्रिटिश सरक्षण स्वीकार किया था। अत 1818 ई की सन्धिया सम्पन्न होने के बाद राजपूत शासको ने अग्रेजो की सहायता से अपने सामन्तो की शक्ति को कुचलने का प्रयास किया, जिससे कम्पनी सरकार को राज्यो के आन्तरिक मामलो मे हस्तक्षेप करने तथा प्रशासन पर अपना वास्तविक नियत्रण स्थापित करने का अवसर उपलब्ध हो गया। ब्रिटिश पोलीटिकल एजेन्ट ने अपने प्रभाव और शक्ति का प्रयोग कर सामन्तो की शक्ति को सीमित करने का प्रयास किया। राजस्थान के जिन राज्यो के शासको को सनिक सहयोग देने मे ब्रिटिश सरकार के स्वाथ सिद्ध होते थे, वहा के शासको को सैनिक सहयोग देकर सामन्तो की शक्ति को कुचलने का प्रयास किया गया। चू कि बीकानेर राज्य दिल्ली और सिन्ध प्रदेश के मुख्य व्यापारिक माग पर था, अत बीकानेर के शासक की शक्ति को सबल बनाना आवश्यक था[68]। इसलिये बीकानेर के जिन सामन्तो ने खालसा भूमि पर अधिकार कर महाराजा की अवज्ञा करना आरम्भ कर दिया था, उनके विरुद्ध सनिक कायवाही की गई और उनसे न केवल खालसा भूमि ही छीनी गई बल्कि उनकी वशानुगत जागीरो को भी छीन लिया गया अथवा उनकी जागीरो के कुछ क्षेत्रो पर अधिकार करके उनकी जागीरो मे भारी कमी करदी गई[69]। जयपुर राज्य मे भी जब ठाकुर भरतसिंह के नेतृत्व मे कुछ सामन्तो ने खालसा भूमि लौटाने से इन्कार किया तब उसके विरुद्ध भी सैनिक कायवाही करने का कडा रुख अपनाया गया, जिसके फलस्वरूप ठाकुर भरतसिंह, रावल बरीशाल, ठाकुर श्यामसिंह, ठाकुर बख्तावरसिंह आदि प्रमुख सामन्तो ने भयभीत होकर खालसा भूमि लौटा दी[70]। मेवाड मे भी कम्पनी

सरकार की विशेष रुचि थी, क्योकि प्रथम तो कम्पनी, राज्य की आय म हिस्सेदार बन गई थी[71] और दूसरी ओर मेवाड एक अफीम उत्पादक क्षेत्र था। अत गवनर जनरल लाड हेस्टिग्ज ने कनल टॉड को आदेश दिया कि मेवाड का प्रशासन अपने हाथ म लेकर सामन्तो पर महाराणा का प्रभुत्व स्थापित करे[72]। अत कनल टॉड ने महाराणा और सामन्ता के बीच समझौता करवाने हेतु एक कौलनामा तयार किया जिसे राज्य के लगभग 33 सामन्तो ने स्वीकार कर लिया[73]। इस प्रकार कनल टाड ने इस कौलनामे के आधार पर सामन्ता को नियमो मे बाध कर उनकी शक्ति पर अकुश लगाने का प्रयास किया। मेवाड का प्रशासन जब तक कनल टाड के हाथ म रहा, महाराणा पूण रूप से ब्रिटिश सत्ता के आश्रित रहा[74]। कितु जिन राज्यो के शासक सामन्ता की शक्ति को कुचलने मे ब्रिटिश सहयोग की उपेक्षा करते हुए स्वय की शक्ति से सामन्ता को दबाना चाहा अथवा वे सामन्त जो ब्रिटिश समथक थे, उनके प्रति ब्रिटिश सरकार की नीति भिन्न रही। जोधपुर के महाराजा मानसिंह न जब अपने सामन्तो की शक्ति को कुचल कर अपनी निरकुश सत्ता स्थापित करने का प्रयत्न किया[75] तो ब्रिटिश सरकार न उसके विरोधी सामन्तो का पक्ष लिया। फलस्वरूप महाराजा को अधिकाश सामन्ता की जागीरें लौटानी पडी। 1827 28 ई मे जब जोधपुर के सामन्तो ने पुन विद्रोह कर दिया और महाराजा मानसिंह इस विद्रोह को न दबा सका तब उसन ब्रिटिश सरकार क पच निणय को मानना स्वीकार कर लिया। उस समय भी अग्रेजा ने विद्रोही सामन्ता का ही पक्ष लिया[76]। इसी प्रकार जयपुर राज्य मे सीकर के राव राजा लक्ष्मणसिंह के पास खडेला की खालसा जागीर तथा डिग्गी के ठाकुर मेघसिंह के पास लाम्बा का खालसा दुग था। लेकिन जब तक वे ब्रिटिश समथक रहे उनसे खालसा के क्षेत्र लौटान का आग्रह नही किया गया, लेकिन जब एक अय ब्रिटिश समथक रावल बरीसाल को राज्य के मुख्तार पद पर नियुक्त किया गया तब रावराजा लक्ष्मणसिंह और ठाकुर मेघसिंह पर अग्रेजो की कृपा दष्टि नही रही, अत 1822 ई म रावल लक्ष्मणसिंह को खडला लौटान का आदेश दिया गया और साथ ही उसके विरुद्ध सैनिक तयारी भी प्रारम्भ कर दी। अत म लक्ष्मणसिंह को खडेला के लिय वार्षिक खिराज और एक लाख रुपया बतौर नजराना देना स्वीकार करना पडा[77]। अगले ही वप जब राजमाता ने ब्रिटिश समथक बरीसाल को मुख्तार पद से हटा कर ठाकुर मेघसिंह को मुख्तार पद पर नियुक्त किया तब अग्रेजा ने उसे लावा का खालसा दुग लौटान हेतु दबाव डाला। यद्यपि मेघसिंह न दुग लौटाने का वादा कर लिया फिर भी उसके विरुद्ध सनिक कायवाही की गई और ब्रिटिश सना ने लाबा पर अधिकार कर लिया[78]।

मेवाड़ के प्रति भी ब्रिटिश सरकार की नीति निरपेक्ष नहीं थी। जब तक महाराणा की स्थिति दुर्बल रही ब्रिटिश अधिकारी महाराणा का पक्ष लेते हुए सामन्तों को नियंत्रित करने का प्रयास करते रहे, लेकिन साथ ही महाराणा और सामन्तों के बीच विवाद के नये मामले भी उठाते रहे, ताकि दोनों पक्षों में विवाद चलता रहे, जिसमें कम्पनी सरकार को प्रशासन में हस्तक्षेप करने का अवसर उपलब्ध होता रहे। कर्नल टॉड के मेवाड़ से चले जाने के बाद कप्तान कॉब ने छटूंद और चाकरी का एक ऐसा विवादास्पद मामला खड़ा कर दिया, जो सम्पूर्ण 19 वीं शताब्दी में महाराणा और सामन्तों के बीच विवाद का विषय बना रहा। यही कारण था कि जब कर्नल रॉबिन्सन मेवाड़ का पोलीटिकल एजेन्ट बन कर आया तब दोनों पक्षों ने उसे मध्यस्थता करने की प्रार्थना की[79]। कर्नल रॉबिन्सन ने नया कौलनामा तैयार किया जिसमें पुराने विवाद का हल करने की बजाय विवाद के नये विषय उत्पन्न कर दिये। कर्नल रॉबिन्सन के कौलनामे में कहा गया था कि जागीर की स्थिर की हुई रेख के अनुसार आधी चाकरी व शेष आधी की छटूंद दी जायगी। किन्तु इसमें यह स्पष्ट नहीं था कि छटूंद सम्पूर्ण रेख पर लगाई जायगी अथवा रेख के केवल आधे भाग पर। सामन्तों का कहना था कि रेख के आधे भाग पर चाकरी दी जायेगी तथा शेष आधी रेख पर छटूंद दी जायेगी। लेकिन महाराणा का कहना था कि छटूंद तो सम्पूर्ण रेख पर लगाई जायेगी और यह छटूंद सामन्तों द्वारा रेख के आधे भाग पर दी जाने वाली चाकरी के अतिरिक्त होगी[80]। इस विवाद के कारण लगभग सभी प्रमुख मेवाड़ी सामन्त विद्रोही हो गये[81]। वस्तुतः ब्रिटिश अधिकारी किसी विवाद को अधिकाधिक उलझा रहे थे ताकि दोनों पक्ष झगड़े के निपटारे हेतु ब्रिटिश अधिकारियों पर आश्रित हो जाय, जिससे कि ब्रिटिश अधिकारियों को मेवाड़ में अपना वर्चस्व स्थापित करने का अवसर मिल सके। 1842 ई. तक चूंकि महाराणा की स्थिति कमजोर रही, अतः ब्रिटिश अधिकारियों ने महाराणा का समर्थन कर सामन्तों को कमजोर करने की नीति अपनाई। लेकिन 1842 ई. के बाद जब महाराणा स्वरूपसिंह ने स्वयं की शक्ति से सामन्तों को कुचलने का प्रयास किया[82] तब ब्रिटिश अधिकारियों ने सामन्तों का पक्ष ग्रहण कर महाराणा की कार्यवाहियों को अविवेकपूर्ण बताने लगे[83]। इससे स्पष्ट है कि ब्रिटिश अधिकारी राज्य के आन्तरिक कलह को समाप्त करने के इच्छुक ही नहीं थे क्योंकि प्रशासन में हस्तक्षेप करने के लिये ऐसी स्थिति ही उनके लिये लाभप्रद थी।

राजस्थान पर अपनी सर्वोपरि सत्ता स्थापित करने के बाद ब्रिटिश सरकार की नीति यह हो गयी कि सामन्तों को धीरे धीरे किन्तु निश्चित रूप

से पूर्णतया महत्वहीन एवं प्रभावहीन बना दिया जाय, ताकि अपने पक्षपाती पदाधिकारियों की सहायता से राज्य में उन्हें मनमानी करने की स्वतन्त्रता मिल जाय। अतः ब्रिटिश अधिकारियों ने सामन्तों को भी करदाता बनाने का प्रयत्न किया, जैसाकि स्वयं ऑक्टरलोनी ने राजपूत राज्यों में तैनात पोलीटिकल एजेन्टों को लिखा था कि ब्रिटिश संरक्षण के फलस्वरूप शासकों को तो वार्षिक खिराज देना पड़ता है, किन्तु सामन्तों को ब्रिटिश संरक्षण के लिये किसी प्रकार का कोई कर नहीं चुकाना पड़ता जबकि शासकों के समान ही सामन्तों को भी ब्रिटिश संरक्षण का लाभ मिल रहा है[84]। ब्रिटिश संरक्षण स्वीकार करने के बाद शासकों को सामन्तों की सैनिक सेवाओं की आवश्यकता नहीं रही। अतः ब्रिटिश अधिकारियों ने सामन्तों की परम्परागत सैनिक सेवाओं के बदले नकद रुपया वसूल करने का निश्चय किया। सैनिक सेवा के बदले नकद रुपया वसूल करने के संबंध में सभी राज्यों में एक समान पद्धति नहीं अपनाई गई। मेवाड़ में सैनिक सेवा आधी कर, शेष आधे भाग के बदले नकद रकम वसूल करने का निश्चय किया गया। लेकिन बीकानेर राज्य में पूरी सैनिक सेवा समाप्त कर उसके बदले नकद रकम की मांग की गई[85]। मारवाड़ और मेवाड़ में सवार और पैदल सैनिक सेवा के हिसाब से नकद रकम निर्धारित की गई, तो करौली में जागीर की कुल आय का कुछ हिस्सा लेने का निश्चय किया गया[86]। जयपुर में कुछ सामन्तों से एक निश्चित रकम और कुछ सामन्तों से जागीर की आय का कुछ हिस्सा लेने का निश्चय किया गया[87]। लेकिन सामन्तों ने नई व्यवस्था को स्वीकार नहीं किया जिसके फलस्वरूप राज्यों में झगड़े का नया कारण उत्पन्न हो गया। वस्तुतः ब्रिटिश अधिकारियों ने सामन्तों की सेवाओं को रोकड़ रकम की अदायगी में इसलिये परिवर्तित करना चाहा, क्योंकि सामन्तों की सैनिक सेवाएं ही शासकों की शक्ति का स्रोत थी और इन्हें समाप्त करने से राजपूत नरेश स्वतः ही अंग्रेजों की सहायता की याचना करते रहेंगे। इतना ही नहीं, नई व्यवस्था से अंग्रेजों ने सामन्तों को भी निर्बल बनाने की चेष्टा की।

राजस्थानी राज्यों में प्रथम श्रेणी के सामन्त अपने राज्य को पैतृक सम्पत्ति मानते हुए स्वयं को राज्य का संरक्षक तथा शासक का सलाहकार मानते थे और यह अपेक्षा रखते थे कि शासक राज्य की महत्वपूर्ण समस्याओं पर उनसे विचार विमर्श करता रहे[88]। इससे राज्य के प्रशासन में सामन्तों का वर्चस्व होता था और सामन्त इसे अपनी प्रतिष्ठा की बात मानते थे। लेकिन ब्रिटिश संरक्षण के बाद ब्रिटिश अधिकारियों ने अपने आर्थिक एवं व्यापारिक हितों की वृद्धि को ध्यान में रखते हुए राज्य के पदाधिकारियों एवं

मुत्सद्दी लोगो को अपना समर्थन देकर प्रशासनिक मामलो में शासक की सत्ता को महत्वहीन बनाने का प्रयास किया। जयपुर राज्य से संधि सम्पादित होने के तुरन्त बाद दिल्ली स्थित ब्रिटिश रेजीडेन्ट ने महाराजा जगतसिंह पर दबाव डालकर नाजिर मोहनराम तिवाडी को मुख्तार पद पर नियुक्त करवाया[89]। दिसम्बर 1818 मे जब महाराजा जगतसिंह की मृत्यु हो गयी तब नाजिर मोहनराम तिवाडी ने एक अन्य ब्रिटिश समर्थक डिग्गी के ठाकुर मेघसिंह से मिलकर वशानुगत दावो को अस्वीकार करते हुए नरवर के अल्पवयस्क मोहनसिंह को जयपुर राजसिंहासन पर बठा दिया[90]। रेजीडेन्ट आक्टरलोनी ने भी बिना जाच पडताल किये अपने समर्थको की कार्यवाही की पुष्टि कर दी[91]। लेकिन अप्रेल 1819 म जब महाराजा जगतसिंह की विधवा रानी के पुत्र उत्पन्न हो गया तब मोहनसिंह को गद्दीच्युत कर उस शिशु को जयसिंह तृतीय के नाम से गद्दी पर बठा दिया गया[9] तथा राजमाता भटियाणी राज्य की अभिभाविका बन् गई, जिसने ब्रिटिश समर्थक नाजिर मोहनराम तिवाडी को मुन्तार पद से हटाने का निश्चय कर लिया। यद्यपि आक्टरलोनी ने राजमाता को दबाकर मोहनराम को पद पर बनाये रखने का प्रयत्न किया किन्तु राजमाता अपने निर्णय पर अटल रही[93]। राजमाता ने रावल बरीसाल को मुख्तार पद पर नियुक्त किया, किन्तु ब्रिटिश अधिकारियो ने रावल बरीसाल को अपनी ओर मिला लिया जिससे बरीसाल राजमाता की अवज्ञा करने लगा[94]। राजमाता ने बरीसाल को भी पदच्युत कर दिया[95]। 1835 ई मे जयसिंह तृतीय की मृत्यु हो गयी तथा उसका अल्पवयस्क पुत्र रामसिंह गद्दी पर बठा। राज्य के ब्रिटिश समर्थक पदाधिकारियो ने यह अफवाह फलादी कि राजमाता के भूतपूर्व गुमाश्ता झूथाराम के अनुयायियो ने जयसिंह को विष देकर उसकी हत्या की है[96]। एसी स्थिति मे ए जी जी कर्नल एल्विस ने जयपुर पहुचकर नये महाराजा के हितो की देखभाल का दायित्व ग्रहण करने की घोषणा कर दी[97]। इससे राज्य मे घोर असतोष फल गया जिसके फलस्वरूप 4 जून 1835 को कर्नल एल्विस तथा उसके सहायक मार्टिन ब्लेक पर घातक हमला किया गया जिसमे मार्टिन ब्लेक मारा गया और एल्विस किसी तरह बच निकला[98]। ब्रिटिश अधिकारियो न इस घटना के लिये झूथाराम को दोषी ठहरा कर उसे कैद कर लिया तथा आजीवन कारावास की सजा देकर चुनार के दुर्ग मे भेज दिया[99]। राजमाता को प्रशासनिक अधिकारो से वचित कर रावल बरीसाल की अध्यक्षता म रीजेन्सी कौंसिल गठित की गई और शासन के सभी अधिकार उसे सौंप दिये[100]। इसके बाद तो जयपुर मे ब्रिटिश समर्थक पदाधिकारियो का प्रभाव बढता ही गया।

मेवाड़ म भी ब्रिटिश समर्थक पदाधिकारियों का दल तैयार करने मे अंग्रेजो को कोई विशेष कठिनाई का सामना नहीं करना पडा। क्योंकि संधि सम्पादन के तुरन्त बाद गवनर जनरल के आदेश से कनल टॉड ने मेवाड का प्रशासन अपने हाथ म ले लिया था[101]। कनल टॉड ने महाराणा भीमसिंह पर दबाव डालकर मेहता देवीचद को प्रधान पद पर नियुक्त करवाया, लेकिन शासन की वास्तविक शक्ति मेहता देवीचद के साले मेहता रामसिंह के हाथ मे रही, जो ब्रिटिश समर्थक था[102]। महाराणा भीमसिंह की मेहता देवीचद से नहीं बनी, अत महाराणा ने शाह शिवलाल को प्रधान पद पर नियुक्त किया। किन्तु कुछ ही माह बाद ब्रिटिश एजेन्ट के दबाव के फलस्वरूप महाराणा ने शाह शिवलाल को पदच्युत कर ब्रिटिश समर्थक मेहता रामसिंह को प्रधान बनाया[103]। लेकिन शाह शिवलाल ने जब ब्रिटिश अधिकारियो का समर्थन प्राप्त कर लिया और वह अंग्रेजो की नीतियों का समर्थन करने लगा तब 1823 ई म मेहता रामसिंह को पदच्युत करवा कर पुन शाह शिवलाल को प्रधान पद पर नियुक्त करवाया[104]। शाह शिवलाल एक भ्रष्ट व्यक्ति था, अत 1825 ई म जब शिवलाल के भ्रष्ट आचरण की पुष्टि के प्रमाण प्राप्त हो गये तब स्वय ब्रिटिश पोलीटिकल एजेन्ट की स्वीकृति से उसे पदच्युत कर पुन मेहता रामसिंह को प्रधान बनाया गया[105]। महाराणा जवानसिंह ने मेहता रामसिंह को हटाने का प्रयत्न किया, किन्तु ब्रिटिश पोलीटिकल एजेन्ट के हस्तक्षेप के कारण उसे अपना विचार त्यागना पडा[106]। लेकिन पोलीटिकल एजेन्ट कनल काब के मेवाड से चले जाने के बाद महाराणा ने मेहता रामसिंह को हटा कर महता शेरसिंह को प्रधान बना दिया[107]। कनल काब ने जो उस समय कलकत्ता मे था महाराणा को इसके विरोध म एक पत्र लिखा[108]। तत्पश्चात महाराणा सरदारसिंह के शासन काल मे मेहता शेरसिंह को पदच्युत कराने और मेहता रामसिंह को पुन प्रधान बनाने म सफलता मिल गई[109]। इसके बाद तो मेवाड दरबार मे ब्रिटिश समर्थक दल शक्तिशाली होता ही गया।

मारवाड म ब्रिटिश समर्थक दल को अपना प्रभाव स्थापित करने मे कुछ समय लगा। क्योंकि महाराजा मानसिंह हृदय से अंग्रेजो का कट्टर विरोधी था[110]। मानसिंह ने ब्रिटिश विरोधी तत्वो का कुचलन की बजाय उनके प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की तथा आन्तरिक प्रशासन मे ब्रिटिश हस्तक्षेप का विरोध किया। प्रारम्भ मे आक्टरलोनी के दबाव डालने पर मानसिंह ने अपने विरोधी किन्तु ब्रिटिश समर्थक मेहता अखचन्द को दीवान तथा पोकरण ठाकुर सालिमसिंह को प्रधान के पद पर नियुक्त कर दिया लेकिन अपनी स्थिति मज

घूत होते ही उसने मेहता अखैचन्द और उसके साथियों को मरवा डाला[111]। ब्रिटिश समर्थक सामन्ता ने ब्रिटिश सरकार से अपील की तब ब्रिटिश सरकार के दबाव के कारण उसे अपने विरोधी सामन्तो से समझौता करना पडा[112]। फिर भी प्रशासन पर ब्रिटिश विरोधी नाथो का ही प्रभाव बना रहा। अंग्रेजो ने नाथो का प्रभाव समाप्त करने का प्रयत्न किया और इसके लिये उन्हे राज्य पर सैनिक अभियान तक करना पडा[113]। इस पर मानसिंह ने ब्रिटिश पोलीटिकल एजेन्ट के परामर्श से प्रशासन चलाना स्वीकार कर लिया,[114] फिर भी नाथो का प्रभाव पूर्ववत् बना रहा[115]। पोलीटिकल एजेन्ट की सिफारिश पर यद्यपि सिंघवी सुखराज को दीवान पद पर नियुक्त किया गया,[116] किन्तु वह भी नाथो पर अकुश लगाने म असमर्थ रहा और कुछ दिनो बाद ही उसने अपने पद पर काम करने मे अपनी असमर्थता व्यक्त करदी[117]। नाथो का वर्चस्व समाप्त करने हेतु पोलीटिकल एजेन्ट लुडलो ने कई बार प्रशासन म हस्तक्षेप किया, लेकिन महाराजा मानसिंह का ब्रिटिश विरोधी रुख यथावत बना रहा[118]। अन्त मे मानसिंह की मृत्यु के बाद मारवाड मे ब्रिटिश समर्थक दल का प्रभाव बढने लगा[119]।

भरतपुर राज्य भी ब्रिटिश हस्तक्षेप से नही बच सका। 1826 ई म यद्यपि ब्रिटिश सरकार ने रानी अमृतकुवर को अल्पवयस्क महाराजा बलवतसिह की अभिभाविका स्वीकार कर लिया, किन्तु शासन की वास्तविक सत्ता अपने पक्षपाती फौजदार चूडामण और दीवान जवाहरलाल को सौंप दी[120]। रानी अपने विश्वस्त अधिकारी बजनाथ की सहायता से स्वय शासन सचालित करना चाहती थी अत रानी ने ब्रिटिश समर्थक दल को प्रभावहीन कर शासन अपने हाथ म ले लिया[121]। इस पर ब्रिटिश सरकार न पुन हस्तक्षेप किया और रानी को नाममात्र की अभिभाविका बनाकर शासन सत्ता चूडामण, जवाहरलाल, गोविन्दराम आदि ब्रिटिश समर्थक लोगो का सौप दी गई[122]। ब्रिटिश हस्तक्षेप के उपरान्त भी रानी ने ब्रिटिश समर्थक मन्त्रियो को प्रभावहीन बनाकर प्रशासन पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया[123]। अत ब्रिटिश सरकार न रानी का अभिभाविका पद से ही हटा दिया और पोलीटिकल एजेन्ट की देखरेख म अपने समर्थक लोगो की रीजेन्सी कौंसिल गठित करदी[124]। इसके बाद तो भरतपुर राज्य म ब्रिटिश समर्थक दल का प्रभाव निरन्तर बढता ही गया।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ब्रिटिश सरकार ने राजपूत राज्यो के आन्तरिक प्रशासन पर अपना नियन्त्रण स्थापित करने के लिये ब्रिटिश समर्थक दलो को प्रभावशाली बनाने का पूरा पूरा प्रयत्न किया। ऐसा करने

समय उसने अपने विरोधियों की नियुक्ति का विरोध करने और नियुक्त हो जाने पर उनके कार्यों म बाधाए उपस्थित कर उन्हें अयोग्य सिद्ध करने के उपायों का सहारा लिया। परिणामस्वरूप राज्यों के आन्तरिक शासन म सामन्तो की शक्ति क्षीण होती गई तथा ब्रिटिश समर्थक पदाधिकारियों की शक्ति सबल होती गई जिनकी स्वामीभक्ति और निष्ठा अपने शासकों के प्रति न होकर ब्रिटिश सरकार के प्रति रही। इस प्रकार ब्रिटिश सरकार ने प्रशासनिक मामलो मे सामन्तो को महत्वहीन बनाने के प्रयास किये और उन्हें काफी अंशों तक सफलता भी मिली। इतना ही नही, ब्रिटिश अधिकारियो ने इस बात का भी प्रयत्न किया कि सामन्तो के वशानुगत उत्तराधिकारी न होने पर वहा अपने कृपापात्र व्यक्तियों को सामन्तो की गद्दी पर बठा दिया जाय[125]। जब उन्हे अपने इस काय मे सफलता नही मिली तब उन्होने सामन्तो के विशेषाधिकारो पर प्रहार कर उन्ह प्रभावहीन बनाने के प्रयत्न किये। मेवाड मे नये महाराणा की गद्दीनशीनी सलूम्बर के रावत की सहमति से होनी थी[126] तथा महाराणा के कोई पुत्र न होने की स्थिति म महाराणा यदि किसी को गोद लेना चाहता तो उसके लिये सभी प्रथम श्रेणी के सामन्तो की सहमति के साथ सलूम्बर के रावत की सहमति आवश्यक थी[127]। किन्तु ब्रिटिश सरकार ने सलूम्बर के रावत का यह विशेषाधिकार समाप्त कर दिया। राजस्थान म अनेक सामन्तो को अपने गढ अथवा हवेली म शरण देने का अधिकार प्राप्त था और किसी को शरण देना सामन्तो के लिये बडी प्रतिष्ठा की बात समझी जाती थी, किन्तु ब्रिटिश सरकार ने उनका यह विशेषाधिकार भी समाप्त कर दिया[128]। सामन्तो को अपने अपने क्षेत्र मे न्यायिक अधिकार भी प्राप्त थे तथा राजपूत शासको अथवा ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा इस अधिकार क्षेत्र मे किसी प्रकार का हस्तक्षेप नही किया जा सकता था, क्योंकि सामन्त इसे 'कदीम दस्तूर' बताकर किसी प्रकार के हस्तक्षेप का विरोध करते थे। लेकिन ब्रिटिश सरकार ने सामन्तो के न्यायिक अधिकार काफी सीमित कर दिये[129]। सामन्तो को अपनी जागीर की वार्षिक आय के अनुसार अपनी निश्चित सेना के साथ शासक की सेवा म उपस्थित होना पडता था जिसे चाकरी कहा जाता था। अपने इस दायित्व का पूरा करने के लिये सामन्तो को निर्धारित सनिक रखने पडते थे, जिससे सामन्तो की सनिक शक्ति काफी बढी चढी होती थी। सामन्तो द्वारा सनिक रखना भी एक प्रतिष्ठा की बात समझी जाती थी क्योंकि सामन्तो के सनिक ही शासक की शक्ति के स्रोत थे। ब्रिटिश सरक्षण स्थापित होने के बाद सामन्तो की सनिक सेवा की आवश्यकता नही रही और सामन्तो की सैनिक शक्ति ब्रिटिश सरकार के लिए असहनीय

थी । अत ब्रिटिश सरकार न प्रारम्भ से ही सामन्तो की इस सैनिक शक्ति को कुचलने के लिये सामन्ता की सेवा को रोकड रकम की अदायगी मे बदलने का प्रयत्न किया[130] । जिससे सामन्ता का क्रुद्ध होना स्वाभाविक था ।

ब्रिटिश सरकार ने सामन्तो की पद मर्यादा न केवल शासको की दृष्टि मे कम करने का प्रयास किया बल्कि जागीर क्षेत्र की प्रजा की दृष्टि म भी कम करने का प्रयास किया । जागीरो के निवासी अपन सामन्तो की स्वीकृति के बिना अपना निवास स्थान छोडकर कही अन्यत्र आबाद नही हो सकते थे । सामन्ता के इस विशेषाधिकार के कारण जागीर क्षेत्र की प्रजा पर साम त का पूर्ण प्रभाव और नियत्रण रहता था । सामन्तो के इस प्रभाव को समाप्त करन के उद्देश्य से ए जी जी हेनरी लारेन्स ने अपने अधीन समस्त पोलीटिकल एजेन्टो को निर्देश दिया कि वे अपने सबधित राज्यो के शासको पर दबाव डालकर सामन्तो के इस विशेषाधिकार को समाप्त करने का प्रयत्न करे[131] । फलस्वरूप सामन्ता के इस विशेषाधिकारका भी समाप्त कर दिया गया, जिससे जागीर क्षेत्र की प्रजा पर सामन्तो का प्रभाव व नियत्रण समाप्त हो गया तथा सामन्ती प्रजा की दृष्टि मे सामन्तो की प्रतिष्ठा मे कमी आगई । ब्रिटिश सरक्षण से पूर्व ठिकान के सेठ साहूकारो तथा व्यापारिया पर सामन्तो का काफी प्रभाव था । सामन्त, व्यापारियो से 'राहदारी, 'दाना-पानी' आदि शुल्क वसूल करके बदले मे उन्ह सुरक्षा प्रदान करत थे । किन्तु ब्रिटिश सरकार ने सामन्तो के इस विशेषाधिकार को भी समाप्त कर दिया[132] । यद्यपि ब्रिटिश अधिकारी इस बात को स्वीकार करते थे कि सामन्तो द्वारा वसूल किये जाने वाले इस शुल्क स तथा सामन्तो द्वारा प्रदान की जाने वाली सुरक्षा से व्यापारी वग पूर्ण सन्तुष्ट था[133] । ब्रिटिश सरकार द्वारा ऐसा करने का एक मात्र उद्देश्य व्यापारी वग से सामन्तो का प्रभाव समाप्त करना था । नय ब्रिटिश नियमो ने भी सेठ साहूकारा को सामन्तो के प्रभाव स मुक्त होने म सहायता दी । सेठ साहूकारो का अब अपन आसामियो से ऋण वसूली क लिये, पूर्व की भाति सामन्ता से आग्रह करन की आवश्यकता नही रही, क्योकि अब वे न्यायालय की सहायता से बडी आसानी से अपना ऋण वसूल कर सकते थे [134] । ऐसा करने मे ब्रिटिश सरकार का मुख्य ध्येय सेठ-साहूकारो तथा व्यापारी वग की सहानुभूति प्राप्त करना तथा उन पर पूर्व स्थापित सामन्ता के प्रभाव का समाप्त कर ब्रिटिश सत्ता के प्रति एक वफादार वर्ग का निर्माण करना था । राजपूत राज्यो के प्रशासन पर अपना वर्चस्व स्थापित करने के साथ साथ सामन्ता को प्राप्त सभी सुविधाए समाप्त कर उन्ह भी जन सामान्य की स्थिति मे लाकर उन पर अपना वचस्व स्थापित करन का प्रयास किया । 19वी

शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक जागीर क्षेत्र का नेतृत्व सामन्तों के पास था तथा समाज में उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी[135] किन्तु धीरे धीरे जागीर क्षेत्र में सामन्तों का नेतृत्व समाप्त होने लगा तथा समाज में भी उनकी प्रतिष्ठा क्षीण होने लगी। अत 1857 के विप्लव के पूर्व राजस्थान का सामन्ती वर्ग ब्रिटिश सत्ता से सर्वाधिक क्रुद्ध था।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि राजपूत राज्यों से 1818 ई में सम्पन्न हुई संधियों में इस बात का स्पष्ट उल्लेख था कि राजपूत राज्यों के आन्तरिक प्रशासन में कम्पनी सरकार किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करेगी तथा राजपूत शासक अपने राज्यों के सार्वभौम शासक बने रहेंगे। लेकिन कम्पनी सरकार ने संधियों की ऐसी धाराओं का सहारा लेकर, अथवा उनका मन चाहा अर्थ लगाकर, जो राज्यों के आन्तरिक प्रशासन में ब्रिटिश हस्तक्षेप का मार्ग प्रशस्त करने वाली थी सभी राज्यों में खुलकर हस्तक्षेप किया। फलत राजपूत शासकों पर ब्रिटिश अधिकारियों का वर्चस्व स्थापित हो गया और फिर उन्होंने सामन्तों को महत्वहीन और प्रभावहीन बनाने के प्रयत्न आरम्भ कर दिये। ऐसी परिस्थितियों में ब्रिटिश विरोधी वातावरण तैयार होना स्वाभाविक ही था।

संदर्भ टिप्पणी

1 सी यू एचिसन ए कलेक्शन आफ ट्रीटीज, एंगेजमेंटस एण्ड सनद्स, भाग 3, पृ 287 88
2 वही पृ 450, 459 और 466
3 वही, पृ 69 और 22
4 रशब्रुक विलियम द ब्रिटिश क्राउन एण्ड द नेटिव स्टेटस, पृ 48 और 128
5 फो पो कंसलटेशन, 17 जुलाई 1818 न 42
6 फो पो कंसलटेशन (सीक्रेट), 19 जून 1818 न 22
7 (i) फो पो कंसलटेशन 6 फरवरी 1819 न 45
(ii) फो पो कंसलटेशन 1 मई 1819 न 40
8 फो पो कंसलटेशन, 22 मई 1819 न 28/कपटद्वारा न 998, 765

9 (i) फो पो कसलटेशन 28 अक्टूबर 1820 न 18
(ii) फो पो कसलटेशन, 21 माच 1823 न 33
10 फो पो कसलटेशन, 30 जून 1821 न 8/कपटद्वारा न 808
11 फो पो कसलटेशन, 20 अक्टूबर 1820 न 8
12 फो पो कसलटेशन, 15 अप्रेल 1825 न 20/कपटद्वारा न 735/आर
13 फो पो कन्सलटेशन, 30 माच 1835 न 127-28
14 भूथाराम राजमाता का भूतपूव गुमाश्ता था और राजमाता का प्रबल समर्थक माना जाता था।
15 फो पो कन्सलटशन, 1 जून 1835 न 19
16 फो पो कसलटेशन 5 माच 1835 न 60
17 (i) फो पो कसलटेशन, 15 जून 1835 न 15
(ii) फो पो कसलटेशन, 7 सितम्बर 1835 न 30
18 फो पो कन्सलटेशन, 27 फरवरी 1837 न 14-17
19 फो पो कन्सलटेशन, 6 जुलाई 1835 न 12
20 फो पो कसलटेशन, 14 नवम्बर 1838 न 27
21 (i) श्यामलदास, वीर विनोद, पृ 867
(ii) डा आर पी व्यास रोल आफ नोबिलिटी इन मारवाड, पृ 57
22 (i) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 867 68
(ii) प रामकरण आसोपा मारवाड का मूल इतिहास, पृ 279
23 फो पो कसलटेशन, 8 दिसम्बर 1821 न 42 43
24 खरीता बही न 12, पृ 346-47
25 (i) फो पो कसलटेशन, 4 अगस्त 1830 न 4-5
(ii) मारवाड प्रेसी, पृ 22
26 (i) ऐजेसी रेकाड हिस्टोरीकल रेकाड 227, फाईल न 14 'ए' सन् 1839 खड VI
(ii) हकीकत बही न 12, पृ 253
27 हकीकत खाता बही न 13, पृ 207 और 218
28 (i) फा पो कसलटेशन, 28 फरवरी 1842 न 22
(ii) खरीता बही न 10, पृ 352-55
29 फा पो कसलटेशन (सीक्रेट), 15 मई 1818 न 25
30 फो पो कसलटेशन 17 फरवरी 1854 न 152 159
31 फो पो कसलटशन 6 अक्टूबर 1821 न 10 20

32 श्यामलदास वीर विनोद, पृ 1745
33 (i) फा पा कसलटेशन, 7 अप्रेल 1826 न 7 8
(ii) श्यामलदास वीर विनोद पृ 1747
34 (i) फो पो कसलटशन, 21 नवम्बर 1823 न 7 10
(ii) जे सी ब्रुक हिस्ट्री ग्राफ मेवाड, पृ 28
35 फो पो कसलटेशन, 7 अप्रेल 1826 न 7-8
36 डॉ प्रकाश व्यास मेवाड राज्य का इतिहास, पृ 98
37 (i) फो पा कसलटशन, 16 सितम्बर 1831 न 32-33
(ii) ग्राझा उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग 2 पृ 727
38 (i) फो पो कसलटेशन 9 जनवरी 1839 न 72
(ii) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 1893
39 फो पो कसलटेशन, 24 फरवरी 1826 न 16
40 फो पो कसलटेशन, 14 अप्रेल 1826 न 14
41 (i) फो पो कसलटेशन 27 जुलाई 1826 न 33
(ii) फो पो कसलटेशन 8 सितम्बर, 1826 न 11
42 (i) फो पो कसलटेशन 15 अगस्त, 1826 न 11
(ii) फो पो कसलटेशन 6 अक्टूबर 1826 न 27
43 श्यामलदास वीर विनोद, पृ 1316
44 डा ग्रार पी व्यास रोल ग्राफ नोबिलिटी इन मारवाड, पृ 81
45 (i) फो पो कसलटेशन, 14 माच 1845 न 72-73
(ii) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 878
46 श्यामलदास वीर विनोद, पृ 1428
47 फा पा कसलटेशन, 11 माच 1831 न 48
48 बख्शीखाना उदयपुर, वही न 61
49 मुशी दवीप्रसाद स्वप्न राजस्थान, पृ 31 32
50 फो पो कसलटेशन 10 जुलाई 1839 न 37
51 फो पो कसलटेशन, 19 फरवरी 1835 न 20 ग्रौर 34
52 (i) फो पो कसलटेशन, 29 फरवरी 1836 न 15
(ii) फो पो कसलटेशन 29 जुलाई 1846 न 106
53 फो पो कसलटेशन 22 माच 1841 न 42
54 सी यू एचिसन पूर्वोक्त भाग 3, पृ 115 ग्रौर 131
55 वही पृ 131

56 (i) फो पो कन्सलटेशन, 23 जनवरी 1835 न 29 31
(ii) फो पो क ालटेशन, 5 फरवरी 1835 न 44 45
(iii) हकीकत बही न 12, पृ 271
57 एजेन्सी रेकाड, जोधपुर खड 2, 1834 की फाइल सख्या 5, पृ 199 200
58 फो पो क सलटेशन, 25 जून 1838 न 48
59 (i) हकीकत बही न 36, पृ 147
(ii) खरीता बही न 10, पृ 347
60 (i) खरीता बही न 10 पृ 360
(ii) मारवाड प्रेसी, पृ 72
61 फो पो क सलटेशन, 11 माच 1831 न 48
62 (i) फो पो क सलटेशन 3 मई 1841 न 44 45
(ii) बख्शीखाना, उदयपुर बही न 62, कनल राबिसन का पत्र महाराणा के नाम, दिनाक 23 जून 1841
63 फो पो क मलटेशन, 9 जनवरी 1839 न 57
64 (i) फो पो क सलटशन, 12 नवम्बर 1824 न 7-12
(ii) फो पो क सलटेशन, 19 दिसम्बर 1838 न 54 56
(iii) रेऊ मारवाड का इतिहास, भाग 2, पृ 423
65 मु शी दवीप्रसाद स्वप्न राजस्थान पृ 88
66 (i) मेहता सग्रामसिंह क्लेक्शन, हवाला न 76
(ii) कोटा रेकाडस, भडार न 3 वि स 1908 का बस्ता न 44
67 (i) जोधपुर दस्तरी रकाड स, वि स 1891 की फाइल न 4
(ii) कोटा रेकाडस, भडार न 2/2, वि स 1891 का बस्ता न 10
68 फो पो (सीक्रेट) क सलटेशन, 23 माच 1849, न 396 397
69 पी डब्यू पाउलेट गजेटियर ग्राफ बीकानेर पृ 110
70 (i) फो पा क सलटेशन, 17 जुलाई 1818 न 42
(ii) फो पो क सलटेशन, 24 अक्टूबर, 1818 न 26
71 फो पो क सलटेशन 6 फरवरी 1818 न 104 107
72 (i) फो पो (सीक्रेट) क मलटेशन 15 मई 1818 न 25
(ii) जेम्स टॉड एनल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ग्राफ राजस्थान, प्रथम भाग, पृ 555 62 (क्रुक द्वारा सम्पादित)
73 फो पो क मलटेशन, 7 अप्रेल 1818 न 103 106

74 फो पो कन्सलटेशन 17 फरवरी 1854 न 152-159
75 (i) फो पो कन्सलटेशन, 31 मार्च 1821 न 13 14
(ii) मारवाड की ख्यात, भाग 3, पृ 284-289
76 (i) खरीता बही न 12 पृ 346 47 (बीकानेर अभिलेखागार)
(ii) फा पो कन्सलटेशन, 5 सितम्बर 1828 न 17-18
77 फो पो कन्सलटेशन, 28 अगस्त 1822 न 7
78 (i) फो पो कन्सलटेशन, 29 मार्च 1823 न 18-19
(ii) फो पो कन्सलटेशन 2 मई 1823 न 21-22
79 (i) फो पो कन्सलटेशन, 17 फरवरी 1854 न 152-159
(ii) जे सी ब्रुक हिस्ट्री ऑफ मेवाड, पृ 64
80 फो पो कन्सलटेशन, 3 मई 1841 न 38
81 (i) फो पो कन्सलटेशन, 27 अप्रेल 1840 न 41 42
(ii) जे सी ब्रुक हिस्ट्री आफ मेवाड, पृ 62
82 (i) फो पो कन्सलटेशन, 1 मई, 1847 न 36 38
(ii) मेहता संग्रामसिंह कलेक्शन, हवाला न 560
(iii) बख्शीखाना, उदयपुर बही न 68, भीण्डर महाराज हमीरसिंह को पोलीटिकल एजेन्ट के नाम पत्र मिगसर सुदी 3 संवत 1903 (21 नवम्बर 1846)
83 (i) जे सी ब्रुक हिस्ट्री आफ मेवाड पृ 65 66
(ii) ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास दूसरा भाग, पृ 751-52
84 राजपूताना एजेन्सी रेकार्ड, मिसलेनियस कॉरेसपोन्डेंस, खण्ड 69, 152 154
85 (i) फो पो कन्सलटेशन 11 नवम्बर 1854 न 813
(ii) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास खड 2 पृ 618
86 ट्रिब्यूट डिपार्टमेंट फाइल न सी 4/6, खड 1 (बीकानेर अभिलेखागार)
87 एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट, जयपुर स्टेट, 1925 26, पृ 41
88 (i) अर्जी बही न 6, पृ 205 (बीकानेर अभिलेखागार)
(ii) फो पो कन्सलटेशन, 8 नवम्बर 1841 न 118
(iii) श्यामलदास वीर विनोद पृ 2043
89 फा पो कन्सलटेशन 17 जुलाई 1818 न 42
90 फो पो कन्सलटेशन, 6 फरवरी 1819 न 45

91 फो पो कन्सलटेशन, 7 मई 1819 न 24
92 फो पो कन्सलटेशन, 22 मई 1819 न 28
93 (i) फो पो कन्सलटेशन, 3 जून 1819 न 20
(ii) फो पो कन्सलटेशन, 21 माच 1823 न 33
94 फो पो कन्सलटेशन, 20 अक्टूबर 1820 न 8
95 फो पो कन्सलटेशन 15 अप्रेल 1825 न 20
96 फो पो कन्सलटेशन 1 जून 1835 न 19
97 फो पो कन्सलटेशन 5 माच 1835 न 60
98 (i) फो पो कन्सलटेशन, 15 जून 1835 न 64
(ii) फो पो कन्सलटेशन, 7 सितम्बर 1835 न 30
99 फो पो कन्सलटेशन, 27 फरवरी 1837 न 14-17
100 फो पो कन्सलटेशन, 6 जुलाई 1835 न 12
101 फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट) 15 मई 1818 न 25
(ii) फो पो कन्सलटेशन, 6 अक्टूबर 1821 न 10 20
(iii) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 1745
102 डॉ प्रकाश व्यास मेवाड राज्य का इतिहास, पृ 85 86
103 (i) फो पो कन्सलटेशन 21 माच 1823 न 39
(ii) श्यामलदास कलेक्शन न 215, कनल काब का महाराणा के नाम पत्र, फाल्गुन सुदि 12 सवत् 1879 (22 फरवरी 1823) (बीकानेर अभिलेखागार)
104 फो पो कन्सलटेशन, 7 अप्रेल 1826 न 7 8
105 वही।
106 (i) फो पो कन्सलटेशन, 25 फरवरी 1831 न 5 और 38
(ii) जे सी ब्रुक हिस्ट्री ऑफ मेवाड पृ 36
(iii) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 1792
107 फो पो कन्सलटेशन, 16 सितम्बर 1831 न 32 33
108 कप्तान कॉब का महाराणा के नाम पत्र, ज्येष्ठ सुदि 14 स 1887 (24 जून 1831) (वीर विनोद, पृ 1795 96)
109 श्यामलदास वीर विनोद पृ 1893
110 अर्जी बही न 6, पृ 32 33 (बीकानेर अभिलेखागार)
111 (i) फो पा कन्सलटेशन 21 माच 1821 न 14
(ii) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 867 68
(iii) प रामकरण आसोपा मारवाड का मूल इतिहास, पृ 279

112 (i) फो पो कंसलटेशन, 10 अक्टूबर 1824 न 57
(ii) खरीता वही न 12, पृ 346 47
113 (i) फो पो कंसलटेशन (सीक्रेट), 6 नवम्बर 1839 न 93
(ii) हकीकत वही न 13, पृ 253
114 (i) एजेंसी रेकाड, फाइल न 14 अ, जोधपुर खण्ड 6, 1839 (महाराजा मानसिंह व ब्रिटिश सरकार के बीच 24 सितम्बर 1839 का इकरारनामा)
(ii) हकीकत वही न 12, पृ 263
115 फो पो कंसलटेशन, 16 अप्रेल 1841 न 36
116 हकीकत वही न 12, न 476
117 वही।
118 (i) फा पो कंसलटेशन, 14 जून 1843 न 92 105
(ii) हकीकत वही न 12, पृ 494
(iii) खरीता वही न 13 पृ 426-27
119 सुख सम्पत्तिराय भण्डारी ओसवाल जाति का इतिहास पृ 66 67
120 फो पो कंसलटेशन 24 फरवरी 1826 न 16
121 फा पो कंसलटेशन, 14 अप्रेल 1826 न 14
122 फा पा कंसलटेशन, 27 जुलाई 1826 न 33
123 फो पो कंसलटेशन, 15 अगस्त 1826 न 11
124 फो पो कंसलटेशन, 6 अक्टूबर 1826 न 27
125 (i) उदयपुर (जागीर) रेजीडेंसी फाइल न 6 सन् 1862, प्रलेख सख्या 13
(ii) फो पो कंसलटेशन, पोलीटिकल 'बी' अप्रेल 1875 न 34 37
126 (i) मेहता संग्रामसिंह कलेक्शन, हवाला न 28
(ii) डा जी एन शर्मा सोशल लाइफ इन मिडाइवल राजस्थान, पृ 87
127 श्यामलदास वीर विनोद, पृ 2043
128 (i) फा पा कंसलटेशन अक्टूबर 1884 न 345 349
(ii) मेहता संग्रामसिंह कलेक्शन, हवाला न 789
(iii) श्यामलदास वीर विनोद पृ 1919 20
129 (i) मेहता संग्रामसिंह कलेक्शन हवाला न 26
(ii) बीकानेर रेकाडस, रेजीडेंसी फाइल न 4

(iii) उदयपुर रेकाडस, फौजदारी अपराध बही सन् 1870

130 (i) फो पो कन्सलटेशन, 27 दिसम्बर 1841 न 35-37
(ii) एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोट, जयपुर स्टेट, 1925-26, पृ 41
(iii) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास भाग 2 पृ 618
(iv) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 1395

131 (i) एजेन्सी रेकाड, हिस्टोरिकल रिकाड, न 252, फाइल न 81
(ii) खडगावत राजस्थान्स रोल इन द् स्ट्रगल ग्राफ 1857, पृ 12

132 (i) फो पो कन्सलटेशन, 26 अगस्त 1848 न 26
(ii) मेहता सग्रामसिह कलेक्शन, हवाला न 26

133 फो पो कन्सलटेशन 26 अगस्त 1848 न 26

134 एजेन्सी रेकाड, 1858 की फाइल न 8, खण्ड II, पृ 42

———

ब्रिटिश सत्ता के प्रति जन-आक्रोश

पूर्व अध्यायों में स्पष्ट किया जा चुका है कि ब्रिटिश संरक्षण के बदले राजपूत शासकों को न केवल अपनी बाह्य सत्ता अंग्रेजों को सौंपनी पड़ी, बल्कि अपनी आन्तरिक स्वाधीनता का भी बलिदान करना पड़ा। अपनी आन्तरिक कमजोरियों से विवश होकर राजपूत शासकों को सर्वोच्च सत्ता के साथ समानता के दावे को छोड़ते हुए ब्रिटिश सत्ता के प्रति अधीनस्थता की नीति अपनानी पड़ी। राजपूत शासकों ने इससे पूर्व, इतने प्रभावकारी और निश्चित रूप से अपनी स्वाधीनता, किसी अन्य शक्ति, यहां तक कि मुगल सत्ता को भी समर्पित नहीं की थी जैसाकि उन्होंने 1818 ई में कम्पनी सरकार के समक्ष किया था। अंग्रेजों से सैनिक सहायता का आश्वासन प्राप्त करने के बाद अधिकांश राजपूत शासक ब्रिटिश सत्ता के प्रति असीम निष्ठावान बने रहे।[1] फिर भी राजस्थान में ऐसे भी शासक थे, जिन्होंने अपने स्वाभिमान को बनाये रखने के लिये ब्रिटिश सत्ता का विरोध किया।

भारत में विप्लव का विस्फोट होने से पूर्व, सम्पूर्ण राजस्थान में ब्रिटिश विरोधी वातावरण तैयार हो चुका था। जोधपुर का शासक महाराजा मानसिंह ब्रिटिश सत्ता का घोर विरोधी था, जिसने न केवल अंग्रेजों की मैत्री संधि का प्रस्ताव ठुकराया था[2], अपितु जसवंतराव होल्कर, सिंध के अमीरों और नागपुर के अप्पा साहब भोंसले जैसे ब्रिटिश विरोधी व्यक्तियों को शरण व सहायता प्रदान की थी[3]। अंग्रेजों से मैत्री संधि सम्पन्न होने के बाद भी वह ब्रिटिश विरोधी नीति अपनाता रहा। मानसिंह ने अपने राज्य के बाहर ब्रिटिश विरोधी केन्द्रों से सम्पर्क स्थापित किया जो मानसिंह को उन क्षेत्रों में होने वाली ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों से अवगत कराते थे तथा अन्य ब्रिटिश विरोधी तत्वों को जोड़ने में कड़ी का काम करते थे। भिन्न भिन्न राज दरबारों के संदेशवाहक फकीरों के वेष में जोधपुर पहुंचते थे और एकान्त में मानसिंह से वार्ता करके उसके संदेश अन्य ब्रिटिश विरोधी तत्वों के पास पहुंचाते थे[4]। अंग्रेजों द्वारा कड़ा विरोध किये जाने के बावजूद मानसिंह ने पंजाब के महा-

राजा रणजीतसिंह से सम्पर्क स्थापित किया, जो हृदय से ब्रिटिश विरोधी था[5]। गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बैंटिङ्क ने जब अजमेर में भव्य दरबार आयोजित किया, तब सभी राजस्थानी नरेशों को इसमें सम्मिलित होने के लिये अजमेर बुलाया। लेकिन मानसिंह ने अजमेर दरबार में सम्मिलित होने से इन्कार कर दिया, जिससे ब्रिटिश सरकार मानसिंह से नाराज हो गई।[6]

अजमेर दरबार के कुछ ही समय उपरान्त कुछ ब्रिटिश विरोधी तत्वों ने अंग्रेज डाक्टर मोटले की हत्या करदी। मानसिंह ने मोटल की हत्या करने वालों को अपने राज्य में शरण दी, जिससे अंग्रेजों का क्रोध अत्यधिक भड़क उठा[7] और उन्होंने मानसिंह को अपदस्थ कर उसके प्रतिद्वन्द्वी धोकलसिंह को जोधपुर की गद्दी पर बठाने की धमकी दी[8]। अन्त में 1834 ई में अंग्रेजों व मानसिंह के बीच समझौता हो गया जिसके अनुसार मानसिंह ने डाक्टर मोटले की हत्या व किशनगढ़, सिरोही तथा जसलमेर के क्षेत्रों में हुई लूटमार की क्षतिपूर्ति देने का आश्वासन दिया[9] यद्यपि इस संधि में मानसिंह ने ठगों का दमन करने का भी आश्वासन दिया था, लेकिन इस कार्य में भी उसने अंग्रेजों से कभी सहयोग नहीं किया[10]। 1834 ई के समझौते के बावजूद अंग्रेजों को मानसिंह पर विश्वास नहीं हुआ कि वह उक्त संधि में दिये गये आश्वासनों को पूरा करेगा। अतः अंग्रेजों ने बाड़मेर में एक सैनिक छावनी स्थापित करके मालानी के अंग्रेज विरोधी ठाकुरों का कद कर लिया[11]। मालानी में अंग्रेजों द्वारा सेना रखी गई और इस सेना के खर्च के लिये गुढा, डीडवाना व मारोठ के नमक उत्पादक क्षेत्र अपने सीधे प्रशासन में ले लिये[12], जिससे मानसिंह अंग्रेजों से क्रुद्ध हो गया।[13] इस क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा सेना रखने का मूल उद्देश्य न केवल मानसिंह की ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों पर नियन्त्रण रखना था, बल्कि अफगानिस्तान में रूस के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने तथा सिंध में सनिक कार्यवाही के उद्देश्य से मारवाड़ में सनिक अड्डा बनाना था[14]।

महाराजा मानसिंह अंग्रेजों के मूल उद्देश्य से अनभिज्ञ नहीं था। अतः उसने उन सभी तत्वों से सम्पर्क स्थापित किया, जो ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के इच्छुक थे। उनकी योजना थी कि जसे ही रूस व परशिया की सेनाएं अफगानिस्तान के मार्ग से भारत पर आक्रमण करें वैसे ही वे सब एक साथ चारों ओर से अंग्रेजों पर आक्रमण करदें[15]। लेकिन सारी योजना का भंडा-फोड़ हो गया तथा ब्रिटिश सरकार ने 1839 ई में एक जांच आयोग बठाया, जिसकी रिपोर्ट से प्रतीत होता है कि मारवाड़ ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों का मुख्य केन्द्र था तथा मानसिंह युद्ध भड़काने का भरसक प्रयत्न कर रहा

था[16]। यद्यपि मानसिंह के विरुद्ध आरोप प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध न हो सके, फिर भी उसके प्रति एक अस्पष्ट सन्देह अवश्य उत्पन्न हो गया था कि वह ब्रिटिश विरोधी तत्वों से मिला हुआ है। अतः अंग्रेज मानसिंह को दंडित करना चाहते थे, लेकिन उनको भय था कि मानसिंह को दंडित करने से मारवाड़ में उसके शत्रुओं में उसके प्रति सहानुभूति की भावना उत्पन्न न करदे। अतः उन्होंने मानसिंह के सामन्तों को उकसाया जिससे कि सामन्तों का विद्रोह ब्रिटिश हस्तक्षेप के आधार तयार करदे[17]। लेकिन मारवाड़ के सामन्तों की निष्ठा व भक्ति बदलती रही,[18] जिससे अंग्रेजों की इच्छा पूर्ण न हो सकी। अन्त में ब्रिटिश सरकार ने प्रशासन में हस्तक्षेप करने के लिये प्रशासनिक सुधारों का बहाना लिया और कर्नल सदरलैंड को जोधपुर भेजा[19]। मानसिंह और कर्नल सदरलैंड के बीच आठ दिनों तक बातचीत चलती रही, लेकिन मानसिंह प्रत्येक प्रश्न पर टालमटूली करता रहा और किसी प्रश्न का अंतिम फैसला नहीं होने दिया[20]। इसी बीच कर्नल सदरलैंड को ज्ञात हुआ कि मानसिंह अंग्रेजों के विरुद्ध षडयन्त्र में लगा हुआ है, क्योंकि इसी दौरान नेपाल से एक राजदूत जोधपुर पहुंचा जिसका मानसिंह ने भव्य स्वागत किया[21]। फलस्वरूप कर्नल सदरलैंड यकायक जोधपुर से लौट गया और उसने मानसिंह के ब्रिटिश विरोधी रुख के सम्बन्ध में एक विस्तृत रिपोर्ट गवर्नर जनरल को भेजी[22]। इस पर गवर्नर जनरल ने मानसिंह के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही करने की आज्ञा दे दी[23]। ब्रिटिश सेनाओं ने तीन ओर से मारवाड़ में प्रवेश किया और ज्योंही सेनाएं दांतीवाड़ा पहुंची, मानसिंह बनाड़ गया और कप्तान लुडलो व कर्नल सदरलैंड से बातचीत कर जोधपुर का किला अंग्रेजों को सुपुर्द करना स्वीकार कर लिया[24]। 24 सितम्बर 1839 को उसने अंग्रेजों के साथ एक नई संधि की[25] जिसमें उसने मारवाड़ के प्रशासन में सुधार करने के लिये अनेक व्यवस्थाएं स्वीकार करली तथा अपने राज्य में ब्रिटिश पोलीटिकल एजेन्ट रखना स्वीकार किया[26]। इस संधि के बावजूद प्रशासन में ब्रिटिश विरोधी नाथों का प्रभाव बना रहा[27]। कर्नल सदरलैंड नाथों को प्रशासन से अलग करने के लिये बार बार मानसिंह को पत्र लिखे, लेकिन मानसिंह ने ब्रिटिश सत्ता के प्रति घोर उपेक्षा प्रदर्शित की[28]। अतः अंग्रेजों ने ब्रिटिश विरोधी नाथों को कैद करने का दायित्व अपने ऊपर ले लिया, तब असहाय अवस्था में मानसिंह मई 1843 ई. में सन्यासी बन गया[29]।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अंग्रेजों द्वारा भरसक प्रयत्न करने पर भी वे अपने कट्टर विरोधी महाराजा मानसिंह को नहीं दबा सके और मानसिंह भी जीवन पर्यन्त ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों में लगा रहा। मानसिंह

की कार्यवाहियों के कारण न केवल मारवाड़ मे, अपितु अन्य राज्यो मे भी ब्रिटिश विरोधी भावनाए फैलने लगी। इस प्रकार विप्लव से काफी समय पूर्व महाराजा मानसिंह ने ब्रिटिश विरोधी तत्वो का प्रतिनिधित्व किया था। अग्रेज मानसिंह के लिय ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर देना चाहते थे जिसका सामना करना उसके लिये असम्भव हा जाय, परन्तु जिस सावधानी एव कुशलता से मानसिंह ने अपन विरुद्ध रचे गये षडयन्त्रो पर विजय प्राप्त की, उससे अग्रेज भी चकित हो गये।

जैसाकि पूर्व अध्याय म बताया जा चुका है कि 18 8 ई की सधियो मे इस बात का स्पष्ट उल्लेख था कि कम्पनी सरकार राजपूत राज्यो के आन्तरिक प्रशासन मे हस्तक्षेप नही करेगी। फिर भी इन राज्यो मे तैनात पोलीटिकल एजेन्टो ने व्यवस्था बनाये रखन के नाम पर राज्य के आन्तरिक मामलो मे हस्तक्षेप किया। इस अनाधिकार हस्तक्षेप के फलस्वरूप शासक वग मे असतोष उत्पन्न हो गया। ब्रिटिश सरकार न राज्य म व्यवस्था बनाये रखने के नाम पर डूगरपुर के महारावल जसवतसिंह को गद्दीच्युत कर वृन्दावन भेज दिया तथा प्रतापगढ के शासक सामन्तसिंह के पौत्र दलपतसिंह को डूगरपुर का शासक बनाया[30] जो अग्रेजो का कठपुतली मात्र था। इस घटना से शासक वग मे ब्रिटिश सत्ता के प्रति घृणा उत्पन होगयी।

जयपुर मे राजमाता भटियाणी को अधिकारच्युत करन हेतु ब्रिटिश अधिकारियो न हस्तक्षेप किया, जिससे क्रुद्ध होकर ए जी जी कनल एलिवस के सहायक कप्तान ब्लेक की हत्या करदी गई[31]। कप्तान ब्लेक की हत्या पूव नियोजित षडयत्र था तथा ब्रिटिश अधिकारियो के विरुद्ध खुला विद्रोह था, जिसे कनल ब्रुक न स्पष्ट शब्दो म स्वीकार किया है[32]। इस हत्याकाण्ड की जाच से तथा बाद मे पकडे गये पत्र व्यवहार के दस्तावेजो से पता चलता है *कि जाँच षडयन्त्र को प्रोत्साहित करन वाला राजमाता का गुमाश्ता झूथाराम* था तथा उसका रिश्तेदार अमरचन्द ब्रिटिश विरोधी तत्वो को सहायता व सहयोग देकर ए जी जी पर हमला करवा कर अव्यवस्था उत्पन्न करना चाहता था[33]। यद्यपि अग्रेजो ने इस घटना का दोष झूथाराम पर लगाकर उसे चुनार के दुग म बदी बनाकर रखा, किन्तु राज्य मे आम धारणा यह थी कि 'नमक सधि' के द्वारा अग्रेजो ने जयपुर राज्य से साभर हथिया लेने तथा ब्रिटिश हस्तक्षेप के कारण लोगो म तीव्र असतोष के फलस्वरूप यह घटना घटित हुई थी[34]।

कोटा मे अग्रेजो ने फौजदार झाला जालिमसिंह और उसके उत्तराधिकारियो के दावा का, महाराव किशोरसिंह के विरुद्ध समथन किया, जिससे

हाडा राजपूतो का खून खौल उठा और वे अपने शासक के पक्ष मे अंग्रेजो के विरुद्ध शस्त्र लेकर उठ खड़े हुए। इस संघर्ष मे अंग्रेजो ने जालिमसिंह का पक्ष लिया। महाराव किशोरसिंह ने अपने हाडा राजपूतो को साथ लेकर अंग्रेजो से युद्ध किया जिसमे दो अंग्रेज अधिकारी मारे गये[35]। यद्यपि हाडा राजपूत पराजित हो गये, लेकिन उन्होने जिस साहस और शौर्य का परिचय दिया उससे स्पष्ट हो जाता है कि अंग्रेज आसानी से राजपूतो को गुलामी की बेड़ियो मे न जकड़ सके थे[36]।

अलवर मे उत्पन्न हुए उत्तराधिकार विवाद मे भी अंग्रेजो ने अनाधिकार हस्तक्षेप किया। अलवर के सामन्तो ने स्वर्गीय महाराजा के भतीजे बनेसिंह का पक्ष लिया, जबकि अलवर के मुसलमानो ने स्वर्गीय महाराजा के अवैध पुत्र बलवंतसिंह का पक्ष लिया। इस विवादग्रस्त उत्तराधिकार के मामले मे अंग्रेजो ने हस्तक्षेप कर निर्णय दिया कि बनेसिंह नाम मात्र के शासक रहें तथा शासन के समस्त अधिकार बलवन्तसिंह के हाथ मे रहे। कुछ समय बाद बनेसिंह ने बलवन्तसिंह को कैद कर शासन के समस्त अधिकार अपने हाथ मे ले लिये। अंग्रेजो ने बनेसिंह पर दबाव डालकर विवश किया कि वह बलवन्तसिंह और उसके उत्तराधिकारियो के लिये समुचित प्रबन्ध करे[37]। इसी प्रकार फरवरी 1825 ई मे भरतपुर के शासक बलदेवसिंह की मृत्यु के बाद अंग्रेजो ने उसके भतीजे दुर्जनशाल के दावे को अस्वीकार कर उसे कैद कर लिया तथा बलदेवसिंह के अवैध अवयस्क पुत्र बलवंतसिंह को भरतपुर का शासक स्वीकार कर लिया[38]। अवयस्क उत्तराधिकार के मामले मे अंग्रेजो को राज्यो पर अपना नियन्त्रण स्थापित करने का अवसर मिल जाता था, क्योकि ऐसे मामलो मे ब्रिटिश सरकार पोलीटिकल एजेन्ट की अध्यक्षता मे रीजेन्सी कौंसिल गठित कर देती थी और उसके द्वारा राज्य का शासन प्रबन्ध सीधे उसके नियन्त्रण मे आ जाता था।

उपर्युक्त घटनाओ ने राजपूत शासको के मन मे अंग्रेजो के विरुद्ध असतोष उत्पन्न कर दिया था। ऐसे शासक अप्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश आधिपत्य से मुक्ति चाहते थे। फिर भी 1857 के विप्लव मे राजस्थान के शासको ने ब्रिटिश सत्ता का पक्ष लिया, क्योकि ब्रिटिश संरक्षण मे उन्हें सुरक्षा व शान्ति प्राप्त हुई थी[39]।

राजस्थानी समाज का एक महत्वपूर्ण अंग सामन्ती वर्ग भी अंग्रेजी आधिपत्य से असतुष्ट था। ब्रिटिश संरक्षण के पूर्व सामन्तो को राज्य का आधार स्तम्भ माना जाता था। युद्ध के समय सामन्तो की सेना ही शासक की सहायतार्थ आती थी। चूंकि शासक के पास अपनी कोई सेना नही होती थी

अत शासक, सामन्ती सैनिक सेवा पर ही निर्भर रहते थे। इसलिये सामन्तो के अधिकार और विशेषाधिकार भी बढे चढे थे। लेकिन ब्रिटिश सरक्षण के बाद राजपूत राज्यो मे नई व्यवस्था का सूत्रपात हुआ, जिसमे सामन्ता को महत्वहीन बनाकर उन पर निरकुश नियत्रण स्थापित करने के प्रयत्न आरम्भ हुए। ब्रिटिश सरक्षण से पूव शासको की कमजोर स्थिति का लाभ उठाते हुए कई सामन्तो न खालसा भूमि पर बलपूवक अधिकार कर लिया था। शासक ऐसी भूमि को पुन प्राप्त करना चाहते थे, लेकिन सामन्त लोग अपने अधिकृत किसी भूमि को त्यागन को तैयार नही थे[10]। अत शासको ने ऐसी भूमि प्राप्त करने हेतु ब्रिटिश सरकार से सहायता की माग की[11]। शासको को सहयोग और सहायता देने म ब्रिटिश सरकार के अपन हित निहित थे। अत ब्रिटिश सरकार ने शासको को सहयोग और सहायता देकर सामन्तो के अधिकार की खालसा भूमि को मुक्त करवाया[42]। लेकिन उन सामन्तो के प्रति, जो ब्रिटिश सत्ता के समथक थे, ब्रिटिश सरकार की नीति भिन्न रही और जब तक वे ब्रिटिश सत्ता के समर्थक रहे, तब तक उनसे खालसा भूमि मुक्ति करवाने के लिये किसी प्रकार की कायवाही नही की गई[43]। ब्रिटिश सरकार की इस नीति से सामन्तो का असन्तुष्ट होना स्वाभाविक ही था।

ब्रिटिश सरक्षण के पूव सामन्तो की सैनिक सेवाए, शासका की सनिक शक्ति का मुख्य स्रोत थी। युद्ध के अवसर पर सामन्तो को अपन सन्य बल सहित शासक की सहायताथ जाना पडता था और शान्ति काल मे अपनी जागीरो की आय के अनुसार निश्चित सनिक और सवारो के साथ निश्चित अवधि के लिये शासक की सेवा मे उपस्थित रहना पडता था जिसे चाकरी कहा जाता था[44]। अपने इस दायित्व को पूरा करने के लिये सामन्तो को निर्धारित सैनिक रखने पडते थे जिसस सामन्ता की सैनिक शक्ति काफी बढी चढी थी। सामन्तो द्वारा सेना रखना और चाकरी के लिये उपस्थित होना प्रतिष्ठा की बात समझी जाती थी। ब्रिटिश सरक्षण की स्थापना के बाद अब शासको को सामन्तो की सनिक सवा की आवश्यकता नही रही, क्योकि शान्ति और व्यवस्था के लिय अग्रेज अधिकारियो के नियत्रण मे मेरवाडा बटेलियन, मेवाड भील कोर, शेखावाटी ब्रिगेड, जोधपुर लीजियन और कोटा बटालियन स्थापित हो चुकी थी जिनका सम्पूण व्यय सम्बधित राज्यो से वसूल किया जाता था[45]। आपसी युद्धो का अत हो जाने के कारण भी सामन्तो की सनिक सेवा की आवश्यकता नही रही। इसके अतिरिक्त सामन्ता की सनिक शक्ति ब्रिटिश सरकार के लिये असहनीय थी। अत ब्रिटिश अधिकारियो ने सामन्तो की सनिक शक्ति को समाप्त कर उन्हे करदाता बनाने का निश्चय किया

जमाकि स्वय ऑक्टरलोनी ने राजपूत राज्या मे तनात पोलीटिकल एजेन्टा को लिखा था कि ब्रिटिश सरक्षण के फलस्वरूप शासको को तो खिराज देना पडता है, किन्तु सामन्ता का ब्रिटिश सरक्षण के लिये किसी प्रकार का कोई कर नही चुकाना पडता, जबकि शासकों के समान ही सामन्तो को ब्रिटिश सरक्षण का लाभ मिल रहा है[46]। अत ब्रिटिश सरकार ने सामन्ता की सनिक सेवा को रोकड रकम की अदायगी म परिवर्तित करना चाहा[47]। ब्रिटिश सरकार सामन्ता को करदाता बनाकर उनकी प्रतिष्ठा पर प्रहार करना चाहती थी जिसका साम तो ने प्रबल विरोध किया[48]। फिर भी अधिकाश राज्यो म ब्रिटिश अधिकारी अपने इस प्रयत्न म सफल हुए, लेकिन मेवाड मे सम्पूण 19वी शताब्दी मे अग्रेजो को कोई सफलता नही मिली[49]। राजपूत सामन्त अपन शासक का सनिक सेवा प्रदान करने मे अपनी प्रतिष्ठा और गौरव समझते थे। ब्रिटिश सरकार की इस नीति के कारण सामन्तो को न केवल शक्तिहीन बनाया गया बल्कि उनके प्राचीन गौरव और परम्परागत प्रतिष्ठा पर भी प्रहार किया गया, फलस्वरूप राजपूत सामन्त वग ब्रिटिश सत्ता स क्रुद्ध हो उठा।

ब्रिटिश सरकार ने सामन्तो को सवथा महत्वहीन बनाने हेतु उनके परम्परागत विशेषाधिकारा पर भी प्रहार किया। उदाहरणाथ मेवाड में नये महाराणा की गद्दीनशीनी सलूम्बर रावत की सहमति से होती थी[50]। मेवाड के महाराणा के कोई पुत्र न हान की स्थिति मे महाराणा यदि किसी को गोद लेना चाहता तो उसके लिये सभी प्रथम श्रेणी के सामन्ता की सहमति क साथ सलूम्बर के रावत की सहमति आवश्यक थी[51]। किन्तु ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रशासन पर नियन्त्रण स्थापित करने के बाद सलूम्बर रावत का यह विशेषाधिकार समाप्त कर दिया। अनक राजपूत सामन्ता का अपन गढ अथवा हवेली म शरण देने का अधिकार था[52] और किसी को शरण देना राजपूत साम त के लिये बडी प्रतिष्ठा की बात समझी जाती थी। किन्तु ब्रिटिश अधिकारिया ने उनका यह अधिकार भी समाप्त कर दिया[53]। ब्रिटिश सरक्षण के पूव साम त लोग अपनी अपनी जागीरा मे लगभग स्वतत्र शासक की भांति काय करते थे तथा उनके न्यायिक अधिकार भी काफी बढे-चढे थे[54]। लेकिन ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रशासन पर नियन्त्रण स्थापित करने के बाद सामन्ता के इन अधिकारा को भी समाप्त कर दिया। सामन्ता के अपने क्षेत्र से राजस्व वसूली के अधिकारा को भी सीमित करन का प्रयास किया गया[55]। जोधपुर मे सामन्ता को अपने जागीर क्षेत्र म भूमि अनुदान देने का अधिकार था, लेकिन ब्रिटिश सरकार ने उनका यह अधिकार भी समाप्त कर दिया[56]। कुछ प्रमुख

सामन्तो को राज्य के न्यायालय मे 'स्टाम्प शुल्क' व "न्यायालय शुल्क' देने से मुक्त रखा गया था, लेकिन ब्रिटिश सरकार ने उनका यह विशेषाधिकार भी समाप्त कर दिया[57]। राजस्थान के अधिकांश राज्यो मे शासक की पूर्व अनुमति के बिना स्थानीय सामान्य न्यायालयो में सामन्तो के विरुद्ध अभियोग नही चलाया जा सकता था, लेकिन अब ऐसी परम्पराए समाप्त करदी गई। बीकानेर राज्य मे तो सामान्य न्यायालयो को भी सामन्तो के विरुद्ध अभियोगो की सुनवाई करने तथा उनके विरुद्ध 'कुर्की' के आदेश जारी करने के अधिकार दे दिये गये[58]। न्यायिक अधिकार छिन जाने अथवा अत्यधिक सीमित हो जाने और न्यायालयो के समक्ष जन-सामान्य और उनकी स्थिति मे विशेष अन्तर न रह जाने से सामन्तो की सार्वजनिक प्रतिष्ठा काफी कम हो गई।

शासको और सामन्तो के आपसी कलह मे ब्रिटिश सरकार की नीति किसी पक्ष विशेष का समर्थन करने की नही थी, बल्कि दोनो पक्षो की शक्ति को क्षीण कर दोनो को ही अपना आश्रित बना, राज्यो के प्रशासन पर अपना नियन्त्रण स्थापित करने की थी। जहा एक ओर ब्रिटिश सरकार शासक को पूर्ण निरकुश होने से रोकती थी, तो दूसरी ओर सामन्तो के शक्तिशाली होने के भी सर्वथा विरुद्ध थी[59]। इससे स्पष्ट है कि ब्रिटिश सरकार की नीति समय समय पर शासको और सामन्तो मे आपसी विवाद के नये-नये विषय पैदा करने तथा आपस मे मतभेद उत्पन्न करने मे सहायक रही। मेवाड मे तो सलूम्बर रावत केसरीसिह ने अपने एक पत्र मे अग्रेजो पर यह स्पष्ट आरोप लगाया कि राज्य मे जितने झगडे फसाद हुए हैं वे अग्रेजो की सलाह से ही हुए हैं[60]। जोधपुर मे भी 1828–29 मे सामन्तो के विद्रोह के पीछे ब्रिटिश सरकार का ही षडयन्त्र था[61]। लेकिन अनेक अवसरो पर शासक विरोधी सामन्तो ने भी अपने शासक के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार द्वारा की जाने वाली कार्यवाहियो का समर्थन करने से इन्कार कर दिया[62]। ऐसी स्थिति मे ब्रिटिश सरकार को सामन्तो की शक्ति को कमजोर करना ही उचित प्रतीत हुआ और उन्होने सामन्तो को शासको की दृष्टि मे महत्वहीन बनाने के प्रयास प्रारम्भ कर दिये।

ब्रिटिश सरकार ने सामन्तो की पद मर्यादा न केवल शासको की दृष्टि मे कम करने का प्रयास किया बल्कि जागीर क्षेत्र की प्रजा की दृष्टि में भी कम करने का प्रयास किया। जागीरो के निवासी अपने सामन्त की स्वीकृति के बिना अपना निवास स्थान छोडकर कही अन्यत्र आबाद नही हो सकते थे। सामन्तो के इस विशेषाधिकार के कारण जागीर क्षेत्र की प्रजा पर सामन्त का पूर्ण प्रभाव व नियन्त्रण रहता था। सामन्तो के इस प्रभाव को समाप्त करने

के उद्देश्य से ए जी जी हेनरी लारेन्स ने राजपूताना के समस्त पोलीटिकल एजेन्टो को निर्देश दिया कि वे अपने सम्बन्धित राज्यो में शासको पर दबाव डालकर सामन्तो के इस विशेषाधिकार को समाप्त करने का प्रयत्न करें[63]। फलस्वरूप सामन्तो के इस विशेषाधिकार को समाप्त कर दिया गया, जिससे जागीर क्षेत्र की प्रजा पर सामन्तो का प्रभाव क्षीण हो गया और सामन्ती प्रजा की दृष्टि में सामन्तो की प्रतिष्ठा मे कमी आ गयी। 19 वी शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक ठिकाने के सेठ साहूकारो तथा व्यापारियो पर सामन्तो का काफी प्रभाव था। सामन्त, व्यापारियो से राहदारी, दानापानी आदि शुल्क वसूल करके उन्हे सुरक्षा प्रदान करते थे[64]। लेकिन ब्रिटिश सरकार ने सामन्तो के इस अधिकार को भी समाप्त कर दिया[65]। यद्यपि ब्रिटिश अधिकारी इस बात को स्वीकार करते थे कि सामन्तो द्वारा वसूल किये जाने वाले इस शुल्क से तथा सामन्तो द्वारा प्रदान की जाने वाली सुरक्षा से व्यापारी पूर्णत सतुष्ट थे[66]। ब्रिटिश सरकार द्वारा ऐसा करने का एक मात्र उद्देश्य व्यापारी वर्ग पर से सामन्तो का प्रभाव समाप्त करना था। ब्रिटिश संरक्षण से पूर्व ठिकाने के सेठ साहूकारो को अपने आसामियो से ऋण वसूली के लिये अपने सामन्त पर निर्भर रहना पडता था लेकिन अब उन्हे पूर्व की भांति सामन्तो पर निर्भर रहने की आवश्यकता नही रही क्योकि अब वे राज्य के न्यायालय की सहायता से बडी आसानी से अपना ऋण वसूल कर सकते थे[67]। इस प्रकार सेठ-साहूकारो व व्यापारियो की दृष्टि मे सामन्तो की पद मर्यादा समाप्त करने का प्रयास किया गया। पहले सामन्तो के नाम से आने वाले माल पर चुगी नही लगती थी, लेकिन ब्रिटिश अधिकारियो ने उनको दी जाने वाली यह छूट भी बन्द करदी[68]। इस प्रकार ब्रिटिश संरक्षण के बाद सामन्त वर्ग कई मामलो में जन सामान्य की स्थिति मे आगया, जिससे उसका ब्रिटिश सत्ता के प्रति क्रुद्ध होना स्वाभाविक ही था।

ब्रिटिश सरकार की इस नीति के विरुद्ध तीव्र प्रतिक्रिया हुई। ब्रिटिश सरकार ने विभिन्न राज्यो के खर्चे पर जो कोटा कन्टीजेन्ट, जोधपुर लीजियन, शेखावाटी ब्रिगेड आदि की स्थापना डाकुओ व लुटेरो को पकडने मे ब्रिटिश सरकार की सहायता देने के लिये की थी लेकिन अब इन सैनिक दस्तो को ब्रिटिश विरोधी सामन्तो का दमन करने मे लगा दिये। शेखावाटी ब्रिगेड तो अनेक वर्षों तक उस क्षेत्र के ब्रिटिश विरोधी सामन्तो से संघर्ष करती रही। इन सामन्तो ने जिस दृढता से ब्रिटिश सेना का मुकाबला किया उससे स्पष्ट हो जाता है कि उन्होने ब्रिटिश सत्ता का तथा उनके सैनिक दस्तो का अंतिम दम तक सामना किया[69]। संभव है शेखावाटी तथा प्रदेश के अन्य भागो के

सामन्तो ने अपने स्वार्थों के वशीभूत होकर ब्रिटिश सत्ता से संघर्ष किया हो, लेकिन इन सामन्तो को अपने क्षेत्र के जन-साधारण का जो सहयोग प्राप्त हुआ उससे इस बात की पुष्टि होती है कि जन-साधारण म भी ब्रिटिश सत्ता के प्रति तीव्र आक्रोश था[70]। यदि सामन्तो को अपने क्षेत्र की जनता का सहयोग व समर्थन न मिलता तो मुट्ठी भर सामन्तो द्वारा कम्पनी की प्रशिक्षित सेना का लम्बे समय तक मुकाबला करना असम्भव हो जाता। 19 वी शताब्दी के पूर्वार्द्ध मे ब्रिटिश विरोधी सामन्तो का ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध सशस्त्र उठ खडा होना, चाहे इसमे उनका उद्देश्य कुछ भी रहा हो, इस बात का प्रमाण है कि वे निश्चित रूप से ब्रिटिश सत्ता को उखाड फेंकना चाहते थे जिन्होने उनके पद मर्यादा पर प्रहार कर उन्हे राज्य म महत्वहीन बनाने की ठोस नीति का प्रतिपादन किया था।

सामन्तो के अतिरिक्त राजस्थान की आम जनता मे भी ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध आक्रोश था। राजस्थान की आम जनता तो उन डाकुओ व लुटेरो की प्रशंसा करती थी जो ब्रिटिश छावनी और सरकारी खजाना लूटते थे और गरीबो की सहायता करते थे। डूगजी और जवाहरजी उस समय के प्रसिद्ध डकैत थे। ये शेखावत राजपूत थे और इनके पास अपनी सेना थी। चूंकि लूटमार का लक्ष्य ब्रिटिश छावनियां एव धनी लोग थे, अत ब्रिटिश विरोधी सामन्त इन्हे सरक्षण देते थे। सामान्य जनता म भी ये बडे लोकप्रिय थे। 1846 ई म डूगजी व जवाहरजी को कोर्ट ग्राफ वकीलस ने कैद की सजा दी क्योकि उन्होने फतेहपुर के एक व्यापारी के तीन लाख रुपये लूट लिये थे[71]। इन्हें आगरा की जेल मे रखा गया। किन्तु सीकर से आये उनके साथियो ने 28 दिसम्बर 1846 को मोहरम के दिन जेल पर आक्रमण कर उन्हे छुडा लिया। उनके मुक्त होते ही ब्रिटिश विरोधी लोगो म प्रसन्नता की लहर दौड गई[72]। यहा से मुक्त होने के बाद डूगजी ने अपने चार-पांच सौ साथियो को लेकर 18 जून 1847 को नसीराबाद छावनी पर आक्रमण कर दिया तथा छावनी के कोष को लूट लिया। छावनी के छ रक्षको को मार दिया गया तथा गार्ड हाउस मे आग लगा दी गई[73]। अग्रेज सरकार ने राजपूताने के सारे राज्यो से डूगजी को पकडने के लिये सहायता मांगी। डूगजी मारवाड की तरफ तथा जवाहरजी बीकानेर की तरफ चले गये[74]। जवाहरजी बीकानेर मे लेफ्टिनेन्ट शावर्स और राज्य की सेना द्वारा पकड लिया गया, लेकिन डूगजी को नही पकडा जा सका। जोधपुर के किलेदार अनाडसिंह ने मॉन्क मेसन को सूचना दी कि डूगजी डीडवाना के आसपास घूम रहा है। इस पर मा क मेसन ने जोधपुर के कुछ सवारो को लेकर डूगजी का पीछा किया, किन्तु उसे

सफलता नही मिली। मॉंक मेसन को शक था कि कुचामन के ठाकुर ने डूगजी को सरक्षण दिया है[75]। अन्त मे जोधपुर के कुछ ठाकुरो और सवारो के साथ सहायक ए जी जी हाडकेसल ने 28 दिसम्बर 1847 को जयपुर के गाव पाटोदा म डूगजी को पकड लिया। जब हाडकेसल अपने सहयोगियो के साथ वहा पहुचा, डूगजी हाथ मे तलवार लिये आत्महत्या करने को तैयार था ताकि वह जीवित न पकडा जा सके। लेकिन जोधपुर के सरदारो और हाडकेसल द्वारा यह वचन दिये जाने पर कि उसे जोधपुर ले जाया जायेगा, डूगजी ने आत्मसमपरण कर दिया[76]। डूगजी की गिरफ्तारी के बाद हाडकेसल व ब्रिटिश अधिकारियो के बीच काफी समय तक पत्र व्यवहार होता रहा कि डूगजी को जोधपुर म रखा जाय अथवा कही अन्यत्र। हाडकेसल व जोधपुर के ठाकुरो ने ब्रिटिश सरकार से अनुरोध किया कि डूगजी को जोधपुर मे रखा जाय। अन्त मे गवनर जनरल ने निर्देश दिया कि डूगजी का अजमेर ले जाकर मुकदमा चलाया जाय। जोधपुर के महाराजा तख्तसिह ने डूगजी को जोधपुर होत हुए अजमेर ले जाने का विरोध किया। अत डूगजी को नागौर होत हुए अजमेर ले जाया गया[77]। डूगजी को अजमेर लाया जाना बडा नाटकीय था। जिन जिन स्थानो से डूगजी को अजमेर ले जाने वाला यह काफिला गुजरता था जनता डूगजी पर फूल मालाए डालती थी तथा उसे ले जाने वाले सिपाहियो पर पत्थर फेंकती थी। अजमेर के निवासियो ने भी डूगजी पर फूल बरसाये तथा उसे पकडवाने वालो के प्रति घृणा का प्रदशन किया[78]। अजमेर म चलाये गये मुकदमे मे डूगजी को फासी की सजा दी, और अजमेर के सुपरिन्टे-डेंट ने इस सजा को कार्यान्वित करने हेतु गवनर जनरल को सिफारिश कर दी। इस निणय का जोधपुर व जयपुर की जनता ने तीव्र विरोध किया। इस जन विरोध का देखते हुए जोधपुर के महाराजा तख्तसिह न सदरलैंड स अनुरोध किया कि डूगजी को जोधपुर म रखा जाय, जसाकि डूगजी का वचन दिया गया था। सदरलड ने भी गवनर जनरल से अनुरोध किया कि महाराजा तख्तसिह की माग स्वीकार करली जाय[79]। लेकिन गवनर जनरल ने सदरलैंड के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया। किन्तु सदरलैंड ने गवनर जनरल को अपना निणय बदलने हेतु बार-बार पत्र लिखे तथा अलवर के महाराजा भीमसिह ने भी इस बात पर जोर दिया कि डूगजी को दिय गये वचन का पालन किया जाय[80]। अन्त म विवश होकर गवनर जनरल को अपना निणय बदलना पडा। गवनर जनरल ने आदेश दिया कि हाडकेसल द्वारा डूगजी को दिये गये वचन के कारण डूगजी की फासी की सजा को आजीवन कारावास म बदल दिया जाय और उस जोधपुर म रखा जाय। डूगजी जोधपुर से भागन न पाय इसकी जिम्मेदारी जोधपुर के महाराजा की होगी[81]।

उपयु क्त विवेचन से स्पष्ट है कि जन विरोध के सामन ब्रिटिश सत्ता को घुटने टेक्न पडे। डूगजी के मामले मे जनता का विरोध प्रदशन एव सामन्तो व शासकों की सहानुभूति इस बात की द्योतक थी कि अग्रेजो की छावनी व सरकारी कोष को लूटने वाले डूगजी सभी वर्गों मे लोकप्रिय थे और अग्रेजा क प्रति लोगो मे तीव्र असतोष था। यद्यपि इन डाकुओं की गतिविधिया न तो राष्ट्रीय थीं और न ही देशभक्ति से प्ररित थी, फिर भी इन डाकुओ को जनसाधारण का जो सहयोग व प्रशसा मिली उसस स्पष्ट है कि लागा मे ब्रिटिश सत्ता के प्रति इतना तीव्र आक्राश था कि लोग ऐसे किसी व्यक्ति के प्रति सहानुभूति रखते थे जिसकी गतिविधिया ब्रिटिश विराधी थीं अथवा जिन्हांने अग्रेजा से साहसपूवक मुकाबला किया था। इससे जनसाधारण म ब्रिटिश विरोधी भावना प्रदर्शित होती है।

साहित्य समाज का दपण होता है और उस समाज द्वारा सृजित साहित्य से उस समाज की विचारधारा का ज्ञान हाता है। 19 वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध म जिस साहित्य का सृजन हुआ उसम ब्रिटिश विरोधी भावना का स्पष्ट प्रदशन होता है। जोधपुर के दरबारी कवि बाकीदास न उन सभी शासका की निन्दा की जो ब्रिटिश सत्ता के भक्त थे[82]। किन्तु बाकीदास ने भरतपुर के जाट राजा रणजीतसिंह की प्रशसा की जिमने कम से कम अग्रेजा का बहादुरी से सामना किया था[83]। कवि राघोदास ने सलूम्बर के रावत केसरीसिंह की प्रशसा की जिसने मेवाड के प्रशासन पर अग्रेजो के आधिपत्य का विरोध किया था[84]। एक अन्य कवि दूलजी ने डूगरपुर के उन सामन्तो की तीव्र भत्सना की जिन्होंने अग्रेजा के साथ सहयाग करते हुए महारावल जसवन्तसिंह को गद्दीच्युत करवाया[85]। जयपुर के शासक द्वारा अग्रेजो को साभर दिये जाने की तीव्र आलोचना जयपुर के तात्कालिक लाकगीता मे मिलती है[86]। जयपुर मे कप्तान ब्लेक की हत्या का कारण भी, साभर अग्रेजा को दिये जाने के प्रति तीव्र आक्रोश था[87]। जाधपुर म महाराजा मानसिंह द्वारा 1839 ई म अग्रेजों को जाधपुर का किला सुपुद किय जाने के अवसर पर राठौड भीमजी द्वारा कप्तान लुडलो पर आक्रमण किया गया[88]। इस घटना से भी लोगो का अग्रेजा के प्रति आक्रोश प्रकट होता है। राजस्थानी कवियो ने बीकानेर के महाराजा रतनसिंह की प्रशसा की जिन्होने डाकू जवाहरजी को अग्रेजो का सुपुद करने से इन्कार कर दिया था और जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह की निन्दा की जिसन डूगजी को अग्रेजो के सुपुद कर दिया था[89]। यह आलोचना इतनी तीव्र थी कि तख्तसिंह को विवश होकर डूगजी को जोधपुर म रखने की माग करनी पडी[90]। 19 वी शताब्दी के पूर्वाद्ध मे

ब्रिटिश सत्ता के प्रति इतना तीव्र आक्रोश था कि तात्कालिक कवियों ने डूगजी व जवाहरजी जसे डाकुओं की प्रशसा मे काव्य रचना की, क्योंकि उन्होंने अंग्रेजों की छावनी और सरकारी कोष लूटा था[91]। कवि सादू गागजी ने अपने काव्य में आशा व्यक्त की कि डूगजी ब्रिटिश सर्वोच्चता को समाप्त कर देंगे। कवि गिरवरदान, कवि उज्जवल लखमीदान तथा अन्य कवियों ने इन डाकुओं की लूटमार का रोचक वर्णन किया था[9] ।

यद्यपि इस काल मे रचित काव्य मे ब्रिटिश विरोधी लोगों का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया गया है तथा जिन लोगों को नायक बनाकर काव्य का सृजन किया था उनमें राष्ट्रीयता अथवा स्वदेश प्रेम के पुष्ट प्रमाण भी नहीं मिलते, लेकिन उस समय के काव्य से लोगों की ब्रिटिश विरोधी भावनाओं का पता चलता है विशेषकर उन लोगों की जिन्होंने इस प्रकार के काव्य की रचना की थी। महाकवि सूर्यमल मिश्रण ने अनेक जागीरदारों को पत्र लिखे, जिसमे उन्होंने ब्रिटिश भक्त शासकों की कड़ी आलोचना की थी[93]। मेवाड़ म सलूम्बर और कोठारिया के सामन्त ब्रिटिश सत्ता के घोर विरोधी थे तथा उनकी ब्रिटिश विरोधी गतिविधियां इस सीमा तक पहुच चुकी थी कि ए जी जी हनरी लारेंस ने भारत सरकार से अनुरोध किया था कि ऐसे सामन्तो को उनकी जागीर से च्युत कर उन्हें राजपूताना से निष्कासित कर दिया जाय तथा उनके स्थान पर उनके किसी रिश्तेदार को जागीर दे दी जाय[94]। ऐसे सामन्तों की प्रशसा म तात्कालिक कवियों ने काव्य रचना की थी[95]। जोधपुर के ब्रिटिश भक्त महाराजा तख्तसिंह से तथा उसके ब्रिटिश समर्थक पदाधिकारियों से वहा के सामन्त और जनता इतनी नाराज थी कि महाराजा अपनी स्थिति को असुरक्षित समझता था और उसने ब्रिटिश अधिकारियों को लिखा था कि उसकी स्थिति उतनी ही असुरक्षित है जितनी ब्रिटिश अधिकारियों की[96]। कोटा के महाराव और टोंक के नवाब का तो अपनी सेना पर ही विश्वास नहीं रह गया था, इसीलिये उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों को सलाह दी थी कि वे उनके राज्यों म न आयें[97]।

प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि राजस्थान की जनता म ब्रिटिश सत्ता के प्रति यह आक्रोश क्यों था ? चूंकि ब्रिटिश सत्ता की स्थापना के बाद ग्राम नागरिक का आर्थिक जीवन विषादपूर्ण बनता जा रहा था, अत जनसाधारण ने ब्रिटिश सत्ता को कभी पसन्द नहीं किया। अंग्रेजों के आर्थिक शोषण के कारण लोगों का जीवन निर्वाह करना कठिन हो गया था[98]। ब्रिटिश सरकार

ने लोगो पर पाश्चात्य विचार एव सस्थाए थोपन का प्रयास किया जिनके प्रति लोगो की कोई सहानुभूति नही थी। ब्रिटिश सरकार ने राजस्थान मे सती प्रथा के उन्मूलन का प्रयास किया, जिसे लोगो ने शताब्दियो से चली आ रही सभ्यता को नष्ट करना समझा। समाज के प्रभावशाली वग सामन्तो को भी अग्रेजो से घृणा थी, क्योकि अग्रेजो ने उन्हें प्रभावहीन बनाने का प्रयास किया। ब्रिटिश सरक्षण के पूव राजपूत नरेश अपने सामन्तो के सहयोग व सहानुभूति पर निभर थे, अत वे चाहते हुए भी अपने विरोधी सामन्तो के विरुद्ध काय वाही करने का साहस नही कर सके थे। किन्तु ब्रिटिश सरकार से हुई सन्धियो ने शासको की स्थिति का सुदृढ बना दिया, क्योकि अब उन्हे ब्रिटिश सत्ता से सहयोग एव सहायता मिलने का आश्वासन मिल चुका था। अत अब वे सामन्तो के परम्परागत अधिकारो एव विशेषाधिकारो की उपक्षा करने लग। ब्रिटिश सरकार द्वारा राज्यो के आन्तरिक मामलो मे हस्तक्षेप तथा परम्परागत रीति रिवाजो का समाप्त करने के प्रयत्न से सभी राज्यो मे तीव्र आक्रोश था[99]। लाड डलहौजी द्वारा अपने गोद निषेध सिद्धान्त के अन्तगत करौली को हडपने का प्रयत्न सर्वविदित है। इससे राजस्थान के नरेशो के मन मे भी ब्रिटिश सत्ता के प्रति सदेह उत्पन्न हो गया तथा जनसाधारण को विश्वास हो गया कि ब्रिटिश सत्ता के जारी रहने का अथ राज्यो का राजनतिक विनाश है।

मुस्लिम सत्ता के काल मे बलपूवक या प्रलोभन द्वारा लोगो को मुसलमान बनाने की स्मृतिया लोगो के मन म अभी भी बनी हुई थी। अब ईसाई धम उपदेशक अपने धम का सगठित प्रचार करने लगे। ईसाई धम प्रचारको ने स्कूल खोले, जिनमे ईसाई धम की शिक्षा दी जाती थी। अकाल के समय गरीब जनता को दिन मे तीन बार भोजन बाटा जाता था तथा कपडा व दवाइया मुफ्त बाटी जाती थी। अत स्वाभाविक था कि ईसाइयत का प्रचार होता। गरीब और नीची जाति के लोग ईसाई धम ग्रहण करने लगे। अजमेर के सुपरिन्टेन्डेंट डिक्शन ने इस दिशा म विशेप प्रयास किया, जिसके फलस्वरूप अजमेर मेरवाडा मे हजारो हिन्दू ईसाई बन गये। इससे लोगो मे तीव्र असतोष फलने लगा। लोगो मे यह विचार जोर पकडने लगा कि कही हिन्दुत्व ही समाप्त न हो जाय। यद्यपि ईसाई धम का प्रचार सरकार की ओर स नही किया जाता था, लेकिन सरकार पादरियो के साथ सहानुभूति रखती थी तथा उन्हें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रोत्साहन दिया जाता था, जिसस जनता मे ब्रिटिश सत्ता के प्रति तीव्र आक्रोश था[100]।

इस प्रकार राजस्थान मे विप्लव की अग्नि प्रज्ज्वलित होने से पूव राजस्थान की स्थिति बडी विस्फोटक थी।

सदर्भ टिप्पणी

1 जी एच ट्रेवर ए चेप्टर ऑफ द इडियन म्यूटिनी, पृ 1
2 फो पो कसलटेशन (सीक्रेट) 14 जून 1804 न 56
3 (i) फो पो कसलटेशन, 18 जून 1829 न 26
(ii) फो पो कसलटेशन, 24 जुलाई 1829 न 19
(iii) पूना रेजीडेन्सी कॉरसपोन्डेंस, भाग 5, न 236
(iv) खड्गावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल श्राफ 1857, पृ 2
4 (i) फो पो कसलटेशन 24 जुलाई 1839 न 38
(ii) अर्जी बही, सख्या 6, पृ 32–33
5 (i) फो पो कसलटेशन, 30 जनवरी 1832 न 40
(ii) फो पो कसलटेशन, 26 नवम्बर 1832 न 14
6 फो पो कसलटेशन 7 मई 1832 न 35
7 फो पा कसलटेशन, 19 अगस्त 1834 न 17–18
8 फो पो कसलटेशन, 22 अगस्त 1834 न 17–18
9 फो पो कन्सलटेशन, 2 दिसम्बर 1834 न 24
10 एजेन्सी रेकाड, जोधपुर–फाइल न 5 सन् 1834 खण्ड I
11 फो पो कसलटेशन, 26 सितम्बर 1836 न 30
12 (i) फो पो कसलटेशन, 2 दिसम्बर 1836 न 40
(ii) एजेसी रेकाड जोधपुर–फाइल न 14 'ए' सन् 1838 खण्ड II
13 वही।
14 फो पो कसलटेशन 26 सितम्बर 1836 न 30
15 फो पो कसलटेशन, 24 जुलाई 1839 न 38
16 फो पो कसलटेशन, 17 अक्टूबर 1838 न 12
17 फो पो कसलटेशन (सीक्रेट), 9 अक्टूबर 1839 न 31
18 फो पा कसलटेशन 26 दिसम्बर 1838 न 10
19 (i) फो पो कसलटेशन, 7 अगस्त 1847 न 845
(ii) हकीकत बही, न 12, पृ 218–35
20 फो पो कसलटेशन, 24 जुलाई 1839 न 38
21 वही।
22 फो पो कन्सलटेशन, 24 जुलाई 1839 न 389

23 फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट) 9 अक्टूबर 1839 न 32
24 हकीकत बही, सख्या 12, पृ 260-62
25 (i) एजेंसी रेकार्ड जोधपुर-फाइल न 14 'ए' भाग VI
(ii) हकीकत बही, सख्या 12, पृ 263
26 सधि की विस्तृत शर्तों हेतु द्रष्टव्य पोटफोलियो फाइल सख्या 22 मे 24 सितम्बर 1839 का इकरारनामा।
27 फो पो कन्सलटेशन, 8 नवम्बर 1841 न 122
28 (i) खरीता बही, सख्या 13, पृ 423-26
(ii) पोटफोलियो फाइल सख्या 17, कप्तान लुडलो द्वारा मानसिंह को इस सम्बध म अनेक पत्र भेजे वे इस पत्रावली म विद्यमान है।
29 (i) जोधपुर राज्य की ख्यात, भाग 4, पृ 213-14
(ii) श्यामलदास वीर विनोद, भाग 2, पृ 873-74
30 ओझा डूगरपुर राज्य का इतिहास, पृ 160
31 फो पो कन्सलटेशन, 15 जून 1835 न 15
32 जे सी ब्रूक पोलीटिकल हिस्ट्री आफ जयपुर, पृ 36
33 फो पो कन्सलटेशन, 27 फरवरी 1837 न 14-17
34 जे सी ब्रूक पोलीटिकल हिस्ट्री आफ जयपुर, पृ 36, उस समय के लोकगीतो मे भी अग्रेजो को साभर देने के प्रति असतोष की अभियक्ति मिलती है। जसे—'म्हारो राजा भोलो साभर तो दे दीनो अगरेज न, म्हारा टाबर भूखा रोटी तो मागे तीख लूण री'।
35 डा एम एल शर्मा कोटा राज्य का इतिहास, भाग 2, पृ 573
36 खडगावत राजस्थानस रोल इन द स्ट्रगल ऑफ 1857, पृ 5
37 सी यू एचिसन द ट्रीटीज, एगजमेट्स एण्ड सनद्स, भाग 3, पृ 284
38 फो पो कन्सलटेशन, 5 अप्रेल 1825, न 37
39 एच एस विल्सन *द हिस्ट्री आफ ब्रिटिश इण्डिया, भाग 2,* पृ 125
40 (i) फो पो कन्सलटेशन, 17 जुलाई 1818 न 40
(ii) फो पो कन्सलटेशन, 5 जून 1818 न 67
(iii) जेम्स टॉड एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज आफ राजस्थान, भाग 1, पृ 563 (विलियम क्रुक द्वारा सम्पादित)

41 (i) फो पो कन्सलटेशन, 26 अगस्त 1820 न 29
(ii) फो पो कन्सलटेशन, 11 मार्च 1831 न 45

42 (i) फो पो कन्सलटेशन 17 जुलाई 1818 न 42
(ii) फो पो कन्सलटेशन 7 अप्रेल 1818, न 103–106
(iii) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग 2, पृ 400 402

43 डा कालूराम शर्मा उन्नीसवी सदी के राजस्थान का सामाजिक एव आर्थिक जीवन, पृ 76–78

44 (i) मेहता सग्रामसिंह क्लेक्शन, हवाला न 27, 572 और 1039
(ii) अर्जी फाइल न 1/5, वि स 1858
(iii) डा गोपीनाथ शर्मा राजपूत स्टडीज, पृ 180

45 (i) फो पो कन्सलटेशन 2 दिसम्बर 1834 न 23–26
(ii) फो पो कन्सलटेशन 19 फरवरी 1835 न 20 और 34

46 एजेन्सी रेकार्ड मिसलेनियस कारेसपोन्डेन्स, खण्ड 69, पृ 152 159

47 (i) फो पो कन्सलटेशन, 2 अगस्त 1822 न 5 9
(ii) श्यामलदास वीर विनोद पृ 1395
(iii) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग 2 पृ 618

48 (i) फा पो कन्सलटेशन, 17 फरवरी 1854 न 152–159
(ii) रेऊ मारवाड का इतिहास, भाग 2, पृ 628

49 (i) उदयपुर जागीर (माल) सेक्शन 12 'ए' सवत 1987 न 27
(ii) सर सुखदेव प्रसाद मेवाड अण्डर महाराणा भूपालसिंह, पृ 27–30

50 (i) मेहता सग्रामसिंह क्लेक्शन, हवाला न 28
(ii) डा गोपीनाथ शर्मा सोशल लाइफ इन मिडिवल राजस्थान, पृ 87

51 (i) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 2043
(ii) डॉ गोपीनाथ शर्मा सोशल लाइफ इन मिडिवल राजस्थान, पृ 87

52 (i) फो पो कन्सलटेशन, 31 अक्टूबर 1833 न 37–44
(ii) मेहता सग्रामसिंह क्लेक्शन हवाला न 787
(iii) एजेन्सी रेकार्ड हिस्टोरीकल रिकार्ड 215, जोधपुर फाइल न 5 खण्ड 1, सन् 1834 पृ 19

53 (i) फो पो कन्सलटेशन, 10 जनवरी 1834 न 16–18
(ii) एजेन्सी रेकाड, हिस्टोरीकल रिकाड 215, जोधपुर फाइल न 5, खण्ड 1, सन् 1834

54 (i) मेवाड एजेन्सी रिपोट (1865–66 व 1866–67) पेरा 11–12
(ii) बीकानेर रेजीडेन्सी फाइल न 4 'ए'
(iii) मारवाड प्रेसी, पृ 154

55 (i) फो पो कन्सलटेशन, 22 जून 1827 न 22
(ii) बीकानेर रेजीडेन्सी फाइल न 4 व सन् 1891

56 (i) एसकाइन राजपूताना गजेटियर, खण्ड 3 ए पृ 146
(ii) रामकरण आसोपा आसोप का इतिहास, पृ 160 व 193

57 (i) एजेन्सी रेकाड, 1858 की फाइल न 8 खण्ड I, पृ 81–117
(ii) बीकानेर रेजीडेन्सी फाइल न 4 'ए'

58 (i) बीकानेर रेजीडेन्सी फाइल न 4 'ब'
(ii) रेऊ मारवाड का इतिहास, भाग 2, पृ 474

59 जोधपुर मे सामन्तो की मागो का समथन करते हुए ब्रिटिश सरकार ने महाराजा मानसिंह के विरुद्ध कायवाही की थी। इसी प्रकार जयपुर मे राजमाता भटियाणी को प्रभावहीन बनाने के लिये रावल बरीसाल का समथन किया। मेवाड मे जब महाराणा स्वरूपसिंह ने अपने विरोधी सामन्तो का दबाने का प्रयत्न किया तो ब्रिटिश सरकार ने सामन्तो के परम्परागत विशेषाधिकारो का समथन किया। किन्तु बीकानेर के सामन्तो की शक्ति काफी बढी चढ़ी थी, अत ब्रिटिश सरकार ने वहा सामन्तो को कुचलने मे पूरा-पूरा सहयोग दिया।

60 मेहता सग्रामसिंह क्लेक्शन, हवाला न 2
"श्री जी तो पाट रा मालक अर मै गढ रा मुख्तार सौ अवल तो आ ही देखजे के साब लोगा न आया 34 बरस हुआ जिणमे अठा किसी भी झगडा फसाद जो हुई सो साब लोगा री सला सू हीज हुई"

61 फो पो कन्सलटेशन 4 अगस्त 1830 न 4

62 (i) फो पो कन्सलटेशन 12 फरवरी 1827 न 18
(ii) अर्जी वही, सख्या 6, पृ 205

63 (i) एजेन्सी रेकाड न 252, फाइल न 81

(ii) प्रिचार्ड द म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 227–229
(iii) रेऊ मारवाड का इतिहास, भाग 2, पृ 448–450
(iv) खड्गावत् राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल ग्राफ 1857, पृ 12

64 फो पा कन्सलटेशन 26 अगस्त 1848 न 26
65 मेहता संग्रामसिंह कलेक्शन, हवाला न 26
66 फो पो कन्सलटेशन, 26 अगस्त 1848 न 26
67 एजेन्सी रेकार्ड, 1858 की फाइल न 8, खण्ड II, पृ 42
68 (i) एजेंसी रेकार्ड, 1858 की फाइल न 8, खण्ड II, पृ 42 43
(ii) हथवही सख्या 5, पृ 40 43
(iii) रेउ मारवाड का इतिहास, भाग 2, पृ 473
69 खड्गावत् राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल ऑफ 1857, पृ 6
70 19 वी शताब्दी के पूर्वार्द्ध मे राजस्थान मे भाटो और चारणो ने जिस काव्य की रचना की थी, उसम ऐसे सामन्तो की भूरि भूरि प्रशसा कर उनके प्रति श्रद्धाजली अर्पित की गई है जिन्होन ब्रिटिश सत्ता का विरोध किया था। तात्कालिक साहित्य समाज का दर्पण है और तात्कालिक साहित्य मे ब्रिटिश विरोधी भावना का स्पष्ट प्रदर्शन हुआ है।
71 फो पो कन्सलटेशन, 26 अगस्त 1848 न 101 अजमेर के सुपरिटेन्डेंट डिक्सन का ए जी जी सदरलैंड को पत्र दिनाक 1 मई 1848
72 (i) वही,
(ii) राजस्थान हिस्ट्री काग्रेस प्रोसीडिंग्ज वाल्यूम VII पृ 122
73 (i) फो पो कन्सलटेशन, 26 अगस्त 1848 न 101 अजमेर के सुपरिटेन्डेंट डिक्सन का ए जी जी सदरलण्ड को पत्र, दिनाक 1 मई 1848
(ii) खड्गावत राजस्थान रोल इन द स्ट्रगल ग्राफ 1857, पृ 7
74 (i) फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1847 न 269 सहायक ए जी जी मार्क मेसन का ए जी जी सदरलैंड को पत्र दिनाक 17 अगस्त 1847
(ii) राजस्थान हिस्ट्री काग्रेस प्रोसीडिंग्ज वाल्यूम VII, पृ 123
75 वही

76 फो पो कन्सलटेशन, 26 अगस्त 1848 न 103, ई जे हाडकेसल का पत्र सदरलैंड के नाम दिनाक 20 जून 1848

77 फो पो कन्सलटेशन, 26 अगस्त 1848 न 101, सदरलैंड का उत्तर-पश्चिमी प्रान्त की सरकार के सचिव थानटन के नाम पत्र दिनाक 15 मई 1848

78 फो पो कन्सलटेशन, 26 अगस्त 1848 न 101, हाडकेसल का सदरलैंड के नाम पत्र दिनांक 13 जनवरी 1848

79 फो पो कन्सलटशन, 26 अगस्त 1848, न 99, सदरलैंड का भारत सरकार के सचिव के नाम पत्र दिनाक 11 अप्रेल 1848

80 फो पो कन्सलटेशन, 26 अगस्त 1848 न 101, सदरलैंड का भारत सरकार के सचिव के नाम पत्र दिनाक 15 मई 1848

81 फो पो कन्सलटेशन, 26 अगस्त 1848 न 107, लाड डलहौजी के मिनट्स 'डूगरसिंह ए नोटेड फ्री बूटर'।

82 परम्परा 'गोरा हट जा' अगस्त 1956, पृ 54

83 बजियो भलो भरतपुर वालो गाजे गजर धजर नभ भोम,
पहिला सिर साहब रो पडियो, भड ऊभा नह दीधी भोम।

84 (i) खडगावत् राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल ऑफ 1857, पृ 96 97 व 123
(ii) राजस्थान हिस्ट्री काग्रेस प्रोसीडिग्ज वॉल्यूम VII, पृ 117

85 (i) परम्परा 'गोरा हट जा' अगस्त 1950, पृ 92–93
(ii) खडगावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 112

86 म्हारो राजा भोलो साभर तो द दीनो अगरज नैं
म्हारा टाबर भूखा रोटी तो मार्ग तीखं लूणरी।

87 जगदीशसिंह गहलोत राजपूताना का इतिहास, भाग 3 पृ 149–150

88 (i) ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग 2, पृ 861
(ii) रेउ मारवाड का इतिहास भाग 2, पृ 435 पाद टिप्पणी 2

89 (i) खडगावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 123
(ii) राजस्थान हिस्ट्री काग्रेस प्रोसीडिग्ज वाल्यूम VII पृ 118

90 फो पो कन्सलटेशन, 26 अगस्त 1848 न 99 सदरलैंड का भारत सरकार के सचिव के नाम पत्र दिनाक 11 अप्रेल 1848

91 (i) परम्परा 'गोरा हट जा', अगस्त 1956, पृ 100 119–120, 122 और परम्परा 'डूगजी जवाहरजी री पड' लोक काव्य परम्परा पृ 125–135
(ii) खड्गावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 115–116

92 छोटा मोटा गाव लूटिया नहीं नाम डूगजी
नाम करो तो लूटो डगजी अगरेंजो री छावणी।
हाथ जोड कहै अगरेंजों री कामणी,
छावणी लूट मत भवर लाडा।

93 महाकवि सूयमल मिश्रण का पीपल्या के ठाकुर फूलसिंह को लिखा गया पत्र, मिति पोष सुदि 1 सवत 1914 (खड्गावत द्वारा पृ 9 पर उद्धृत)

94 (i) फौ पो कसलटेशन 9 अप्रेल 1858 न 252–271
(ii) एजेसी रेकाड, मेवाड 1857 न 173
(ए जी जी का भारत सरकार के सचिव के नाम पत्र दिनाक 5 फरवरी 1857)

95 परम्परा 'गोरा हट जा' अगस्त 1956, पृ 72

96 मुशी ज्वाला सहाय लायल राजपूताना, पृ 286

97 जी एच ट्रेवर ए चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 12–13

98 निम्न कहावत से इस तथ्य की पुष्टि होती है—
मिनखा निठगी मोठ बाजरी, घोडा निठग्यो घास'

99 मुशी ज्वाला सहाय लायल राजपूताना, पृ 278–280

100 डा (श्रीमती) निमला गुप्ता राजस्थान अव्यवस्था से व्यवस्था की ओर, पृ 176–180

———

राजस्थान में संघर्ष का सूत्रपात

राजस्थान का मरुस्थलीय प्रदेश यद्यपि अधिकांशतः अनउपजाऊ था तथापि इस प्रान्त में अंग्रेजों के विशेष हित थे। इस प्रदेश के राजपूत यद्यपि महान् योद्धा एवं साहसी सैनिक थे तथा जिन्होंने भारत की महान् शक्ति मुस्लिम सत्ता से भीषण संघर्ष के बावजूद आसानी से घुटने नहीं टेके थे, लेकिन 18 वीं शताब्दी के अन्त तक उन्हें मराठा और पिंडारियों के हाथों भीषण क्षति उठानी पड़ी थी[1]। यद्यपि राजपूत राज्यों पर ब्रिटिश संरक्षण स्थापित हो जाने के फलस्वरूप राजस्थानी नरेशों को सुरक्षा का आश्वासन मिल जाने के कारण वे ब्रिटिश सत्ता के प्रति पूर्ण निष्ठावान बन चुके थे तथापि राजस्थान का सामन्त वर्ग ब्रिटिश सत्ता से घोर घृणा करता था[2]। तात्कालिक राजनैतिक स्थिति से यह स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि यदि राजस्थान में तैनात सेना में विप्लव फूट पड़ता है और प्रदेश पर सर्वोच्च सत्ता का नियंत्रण ढीला पड़ जाता है तो सामन्तों की घृणा अंग्रेजों के भय से भी अधिक खतरनाक सिद्ध हो सकती है[3]। अतः उत्तरी भारत में विप्लव की अग्नि प्रज्ज्वलित होने के समय राजस्थान की स्थिति भी बड़ी विस्फोटक थी।

प्रारम्भ में, दिल्ली स्थित रेजीडेन्ट को राजस्थान के सभी राज्यों प नियन्त्रण रखने का काम सौंपा गया था, परन्तु 1832 ई. में अजमेर में राज पूताना रेजीडेन्सी स्थापित की गई तथा इसकी व्यवस्था के लिये ए. जी. जी (एजेन्ट टू द गवर्नर जनरल) की नियुक्ति की गई[4] जो इस क्षेत्र में शान्ति ए व्यवस्था बनाये रखने के लिये उत्तरदायी था। राजस्थान में केवल टोंक रिय सत को छोड़कर सभी रियासतों पर हिन्दू नरेशों का शासन था। इन हि नरेशों में प्रथम स्थान मेवाड़ के शासक महाराणा स्वरूपसिंह का था,[5] सिसोदिया राजपूतों का मुखिया था, लेकिन इस समय वह शक्तिहीन हो चु था। जयपुर का महाराजा रामसिंह कछवाहा राजपूतों का मुखिया था, जि पूर्वजों ने मुगल दरबार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हुये अपने राज्य समृद्धिशाली बनाया था[6]। इसी राजघराने की एक कनिष्ठ शाखा ने अल

में अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित करली थी और वनसिंह इस समय यहा का शासक था। जोधपुर का महाराजा तख्तसिंह, राठौड़ राजपूतो का मुखिया था, जिसके पूर्वाधिकारी महाराजा मानसिंह ने ब्रिटिश सत्ता की उपेक्षा करते हुए अंग्रेजों के विद्रोहियो को अपने राज्य मे शरण दी थी। राठौड़ राजपूतो की एक शाखा बीकानेर पर शासन कर रही थी। हाडा राजपूतो के दो राज्य थे-बूंदी और कोटा। टोंक की छोटी रियासत मुस्लिम शासक के अधीन थी, जो पिंडारी नेता अमीरखां के वंशज थे, जिसने पूर्व मे सम्पूर्ण राजपूताना को आतंकित कर दिया था। राजपूताना, यहा के सामंतो के शौर्य एवं हिन्दुओं की देश भक्ति का केन्द्र माना जाता था। राजपूत अपनी भूमि और परम्परागत अधिकारो की रक्षा के लिये अपने जीवन का बलिदान तक करने को तत्पर रहते थे। यदि इन राजपूतो को धर्म के नाम पर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध खड़ा कर दिया जाता तो संभवत दिल्ली से गुजरात तक के मरुस्थलीय प्रदेश से ब्रिटिश सत्ता ही समाप्त हो जाती[7]।

कुछ समय पूर्व हेनरी लारेंस राजपूताना का ए जी जी था। किन्तु जब उसे अवध में शान्ति एवं व्यवस्था स्थापित करने के लिये भेजा गया तब उसके अनुज जार्ज पैट्रिक लारेंस को राजपूताना का ए जी जी नियुक्त किया गया। राजपूताना का ए जी जी नियुक्त होने से पूर्व वह सात वर्ष तक उदयपुर मे पोलीटिकल एजेन्ट रह चुका था। अत वह इस क्षेत्र के राजनैतिक वातावरण से भली भांति परिचित था। इसके अतिरिक्त वह अपने 36 वर्ष के सेवाकाल में साहस शौर्य और योग्यता का परिचय दे चुका था[8]। उदयपुर में पोलीटिकल एजेन्ट के पद पर कप्तान सी एल शॉवर्स की नियुक्ति की गई थी। कप्तान शावर्स भी अत्यन्त साहसी एवं योग्य प्रशासक था। जयपुर में कर्नल ईडन और जोधपुर में कप्तान मॉंक मेसन भी अत्यन्त अनुभवी राजनीतिज्ञ पोलीटिकल एजेन्ट के पद पर कार्य कर रहे थे। सामान्य परिस्थितियों में भी उनके लिये इन राज्यो मे कार्य करना आसान नहीं था, क्योंकि वहा दीर्घकाल से शासको और सामन्तो के बीच झगड़ा चल रहा था। चूंकि शासको को सर्वोच्च सत्ता का समर्थन मिल रहा था, अत सामन्तो का यह संघर्ष भ्रम उत्पन्न कर रहा था कि सामन्तो का यह संघर्ष अपने शासको से है या ब्रिटिश सत्ता से है[9]। कोटा में मेजर बर्टन पोलीटिकल एजेन्ट के पद पर कार्य कर रहा था। ये सभी पोलीटिकल एजेन्ट, ए जी जी के अधीन थे।

उन दिनो राजस्थान मे कोई रेल मार्ग नही था। [illegible]
रेलमार्ग कानपुर से आगे तक नही पहुंच पाया था औ [illegible]
जो वर्तमान रेलमार्ग है, उसका उस समय तक [illegible]

विप्लव प्रारम्भ होने के समय राजपूताना मे छ ब्रिटिश छावनियां थी। अजमेर से 16 मील की दूरी पर नसीराबाद, नसीराबाद स लगभग 120 मील की दूरी पर नीमच, नसीराबाद से लगभग 60 मील की दूरी पर देवली, अजमेर से लगभग 35 मील की दूरी पर ब्यावर, अजमेर से लगभग 100 मील की दूरी पर एरिनपुरा और उदयपुर से लगभग 50 मील की दूरी पर खैरवाडा ब्रिटिश छावनिया थी[11]। इन ब्रिटिश छावनियो मे लगभग पाच हजार भारतीय सैनिक थे। किन्तु किसी भी छावनी मे कोई यूरोपियन सनिक नही था[12]। राजपूताना मे इन पाच हजार भारतीय सनिको की उपस्थिति और उन पर नियन्त्रण के लिये एक भी यूरोपियन टुकडी का न होना तत्कालीन ए जी जी के लिये गम्भीर चिन्ता का विषय बन गया था[13]।

सन् 1857 के भारत व्यापी विप्लव का तात्कालिक कारण एनफील्ड राइफल्स का आविष्कार था, जिसका सवप्रथम प्रयोग क्रिमिया युद्ध मे किया गया था। भारत सरकार ने निर्णय लिया कि भारतीय सैनिको को भी इस राइफल का प्रयोग करने हेतु प्रशिक्षण दिया जाय। इस राइफल मे एक विशेष प्रकार का कारतूस काम म लाया जाता था, जिस पर एक कागज लगा रहता था तथा कारतूस को राइफल के चेम्बर में डालने से पूव, सैनिको का अपने दात से इस कागज को हटाना पडता था। ऐसा कहा जाता था कि इस कारतूस को चिकना करने के लिये इस पर गाय और सूअर की चर्बी का प्रयोग किया जाता था। अत भारतीय सनिको को यह विश्वास हो गया कि अंग्रेज लाग भारतीयो को धम भ्रष्ट कर ईसाई बनाना चाहते है। भारतीय सनिको मे अंग्रेजो के विरुद्ध विद्रोह की भावना भडक उठी। 26 फरवरी 1857 को बरहामपुर मे 19 वी रेजीमेट ने विद्रोह कर दिया। 29 मार्च को 34 वी रेजीमेट के मगल पाण्डे नामक एक ब्राह्मण सिपाही ने बारकपुर की छावनी मे कुछ ब्रिटिश अधिकारियो पर आक्रमण कर उन्हें मौत के घाट उतार दिया। 3 मई को लखनऊ मे सैनिको ने नये कारतूस का प्रयोग करने से इन्कार कर दिया। 10 मई का मेरठ मे भी सैनिको ने ब्रिटिश अधिकारियो पर आक्रमण कर उन्हे मौत के घाट उतार दिया। मेरठ के विद्रोहियो ने मेरठ की छावनी को लूटकर दिल्ली की ओर प्रस्थान किया[14]। यह विप्लव द्रुत गति स लगभग सम्पूर्ण उत्तरी भारत म फल गया।

मेरठ मे विप्लव की सूचना ए जी जी जाज पट्रिक लारेन्स को 19 मई 1857 को आबू मे प्राप्त हुई, जहा राजपूताने के सभी पालीटिकल एजेन्ट राजनैतिक विचार विमश के लिये आये हुए थे[15]। मेरठ म हुए विप्लव की

सूचना मिलते ही ए जी जी ने राजपूताना के सभी शासको के नाम एक घोषणा पत्र जारी किया[16] जिसमे कहा गया कि वे अपने अपने क्षेत्र मे शाति बनाये रखें, अपने राज्यो मे विप्लवकारियो को घुसने न दें तथा यदि उनकी सीमाओ म विप्लवकारियो का प्रवेश हो तो उन्हे तुरन्त गिरफ्तार करलें। इस घोषणा पत्र म यह भी कहा गया था कि वे सर्वोच्च सत्ता के प्रति निष्ठावान रहें तथा उनके क्षेत्र मे ब्रिटिश अधिकारी द्वारा विप्लव को दबाने हेतु जब भी सहायता मागी जाय, सहायता दी जाय। ए जी जी के समक्ष मुख्य समस्या अजमेर की सुरक्षा की थी, क्योकि अजमेर राजपूताना के केन्द्र मे स्थित होने के कारण उसका सामरिक दृष्टि से अत्यधिक महत्व था। वास्तव म अजमेर, राजस्थान का हृदय था, और यदि हृदय काम करना बन्द करदे तो मृत्यु अवश्यभावी हो जाती है। अजमेर म ब्रिटिश सरकार का शस्त्रागार और सरकारी खजाना था। यदि यह सब विप्लवकारियो के हाथ म पड जाता है तो ब्रिटिश हितो पर आघात तथा विप्लवकारियो की स्थिति सुदृढ हो सकती थी[17]। अजमेर के शस्त्रागार और खजाने की रक्षा 15 वी नेटिव इन्फेन्टी की दो टुकडिया कर रही थी, जो अभी अभी मेरठ से यहा बुलाई गई थी। अत मेरठ म हुए विप्लव के कारण ए जी जी को सदेह हुआ कि सभवत यह इन्फेन्ट्री मेरठ से विद्रोह की भावना लेकर आई हो। इसलिये ए जी जी अजमेर के शस्त्रागार और काष को इस इन्फेन्ट्री के हाथो सुरक्षित नही समझ रहा था। अत ए जी जी ने डीसा के ब्रिटिश अधिकारियो का यूरोपियन सनिक टुकडी भेजने के लिये लिखा[18]। लेकिन डीसा से 83 वी रेजीमट आने से पूव ही अजमेर के कमिश्नर डिक्सन ने, ब्यावर से मेर रेजीमट को बुला लिया ताकि 15 वीं नेटिव इन्फन्ट्री के स्थान पर उसे तनात किया जा सके[19]। मेर रजीमेंट मेरवाडा के स्थानीय लोगो की एक वफादार सनिक टुकडी थी तथा उच्चकुलीय हिन्दुओ के, कारतूसो पर लगे गाय व सूअर की चर्बी से उत्पन्न धार्मिक उन्माद से सवथा अप्रभावित थी। लेफ्टिनेंट कारनेल मेर रेजीमेंट के साथ अजमेर पहुचा और शस्त्रागार व खजाने की सुरक्षा का दायित्व ग्रहण कर लिया। 15 वी नेटिव इन्फेन्ट्री की दोनो टुकडियो को पुन नसीराबाद भेज दिया गया जहा इस इन्फेन्ट्री के शेष सनिक विद्यमान थे[20]। इसके अतिरिक्त कोटा कन्टीजेंट को भी तत्काल अजमेर पहुचने हेतु लिखा गया लेकिन इस आदेश के पहुचने से पूर्व ही कोटा कन्टीजेंट को आगरा भेज दिया गया था[21]।

ए जी जी जाज पट्रिक लारेन्स ने, नेटिव इन्फेन्ट्री पर सदेह के कारण, यह अग्रिम व्यवस्था की थी, क्योकि पिछले कुछ समय से ब्रिटिश छावनियो म

विप्लव के अंकुर प्रस्फुटित होते दिखाई दे रहे थे तथा दिल्ली से आये हुए फकीरों के वेष म विप्लवकारी बाजारो तथा छावनियो मे ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध आक्रोश फला रहे थे[22]। यद्यपि ब्रिटिश अधिकारियो को अपने सनिको पर पूर्ण विश्वास था लेकिन छावनियो म उत्तेजना व्याप्त थी। प्रत्येक सनिक की जबान पर आट म मानव हड्डियो को पीस कर मिलाने तथा गाय व सूअर की चर्बी लग कारतूसो की चर्चा थी[23]। ऐसी स्थिति म 27 मई 1857 को सभी सैनिक छावनियो म बगाल से (ईस्ट इण्डिया कम्पनी का मुख्यावास) आदेश प्राप्त हुआ जिसम छावनी के सनिक अधिकारी को, ऐसे किसी सिपाही को तुरन्त पदोन्नत करने हेतु अधिकृत किया गया, जो सरकार के विरुद्ध भड काने या षडयत्र करने वाले व्यक्ति के बारे म सूचना देगा,"[4] लकिन अब काफी देर हो चुकी थी। इसलिय ऐसे आदेश का कोई प्रभाव नहीं पडा।

राजस्थान मे विप्लव का सूत्रपात नसीराबाद से हुआ था। अत प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि जब सभी छावनियो म उत्तेजना फली हुई थी तब सर्वप्रथम विप्लव नसीराबाद छावनी मे ही क्यो हुआ ? नसीराबाद छावनी म विप्लव प्रारम्भ होने के निम्न कारण थे —

(1) उस समय नसीराबाद मे 15 वी और 30 वी बगाल नेटिव इन्फेंट्री भारतीय तापखाना की सैनिक टुकडी तथा पहली बम्बई लासस के सनिक विद्यमान थे। मेरठ म हुए विप्लव की सूचना से सनिको म उत्तेजना फैली हुई थी। ब्रिटिश अधिकारी विप्लव की आशका से बडे भयभीत थे। इसलिये उन्होने छावनी की रक्षा के लिय बम्बई लांसस के उन सनिको से, जो सरकार के वफादार समझे जाते थे, गश्त लगवाना प्रारम्भ किया तथा गाला बारूद भर कर तोपें तयार करवादी। अत 15 वी नटिव इन्फेन्ट्री के सनिको ने सोचा कि यह सब कार्यवाही भारतीय सनिको को कुचलने के लिय की गई है तथा तोपें भी उनके विरुद्ध प्रयोग करन के लिये तयार की गई हैं[25]। अत उनम विद्रोह की भावना जाग्रत हुई।

(2) जसाकि ऊपर बताया गया है, मेरठ म विप्लव की सूचना प्राप्त होन पर ए जी जी जाज पट्रिक लारेन्स ने 15 वी बगाल नेटिव इन्फेन्ट्री की एक टुकडी को, जो काफी समय से अजमेर म शस्त्रागार की रक्षा कर रही थी अविश्वास और सदेह के कारण अजमेर से हटा कर पुन नसीराबाद भेज दिया, जहाँ इस इन्फेन्ट्री के शेष सनिक तनात थे तथा शस्त्रागार की रक्षा के लिये मेर रेजीमेंट को बुला लिया। इससे सनिको के मन म यह धारणा उत्पन्न हो गयी कि उन पर सदेह किया जा रहा है और अविश्वास के कारण उन्हें अजमेर से हटाया गया है[6]। अत वे ब्रिटिश अधिकारियों से नाराज हो गये।

(3) इन दिनों बाजारों और छावनियों में बंगाल और दिल्ली से संदेश वाहक साधु और फकीरों का वेश बनाकर राजस्थान आये तथा उन्होंने चर्बी वाले कारतूसों के विरुद्ध प्रचार कर विद्रोह का संदेश प्रसारित किया। इससे अफवाहों का बाजार गर्म हो गया। सरकार ने भयभीत होकर चर्बी वाले कारतूसों को हटा लेने का आदेश दिया, लेकिन इससे सैनिकों में और अधिक संदेह उत्पन्न हो गया। तत्पश्चात् यह नई अफवाह फैलाई गई कि सेना को जो आटा दिया जा रहा है उनमें मानव हड्डियों को पीस कर मिलाया जाता है[27]। अतः भारतीय सैनिकों ने सोचा कि अंग्रेज उन्हें धोखे से ईसाई बनाना चाहते हैं। इस धार्मिक भावना के कारण समस्त सेना में उत्तेजना फैल गई।

27 मई 1857 को 15 वीं नेटिव इन्फेंट्री का बख्तावरसिंह नामक एक सिपाही अंग्रेज अधिकारी प्रिचार्ड के पास गया तथा उससे पूछा कि, 'क्या यह बात सत्य है कि यहां यूरोपियन सेना बुलाई गई है।'' प्रिचार्ड ने उससे इस प्रश्न का तात्पर्य पूछा तो बख्तावरसिंह ने कहा कि सेना में इस बात को लेकर भयंकर असंतोष है कि यहां यूरोपियन सेना इसलिये बुलाई जा रही है, क्योंकि अंग्रेजों का भारतीय सैनिकों पर विश्वास नहीं रहा है। प्रिचार्ड ने कहा कि सरकार इस बात के लिये स्वतंत्र है कि कौनसी सैनिक टुकड़ी कहां रखी जाय[8]। इस प्रकार प्रिचार्ड कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दे सका, क्योंकि यद्यपि भारतीय सैनिकों पर नियंत्रण रखने के लिये डीसा से यूरोपियन सेना और कुछ तोपें मंगवाई गई थीं, किन्तु इस तथ्य को गुप्त रखा गया था और प्रत्यक्ष में यह बात किसी को मालूम नहीं थी लेकिन बाद में यह गुप्त बात सेना में प्रकट हो गई, जिससे सेना में उत्तेजना फैल गई।

28 मई 1857 को प्रातः 15 वीं नेटिव इन्फेंट्री के एक मुंशी (अनुवादक) मीर बाकर अली ने प्रिचार्ड को सूचना दी कि जो सिपाही बाजार गये थे उन्हें दुकानदारों ने बताया कि सरकार उनका धर्म नष्ट करने के लिये आटे में हड्डियों का चूरा मिलवाया है, जिससे सैनिकों में अत्यधिक उत्तेजना है। इस पर प्रिचार्ड अपने कर्नल के पास गया ताकि ब्रिगेडियर को इसकी सूचना दी जा सके। लेकिन कर्नल ने इस तथाकथित अफवाह पर कोई कार्यवाही करने से इन्कार कर दिया। अतः प्रिचार्ड अपने मेजर के पास गया और उसे स्थिति से अवगत कराया। मेजर ने प्रिचार्ड को आश्वासन दिया कि कल वह सारी सूचना ब्रिगेडियर को प्रेषित कर देगा[29]। दोपहर के लगभग दो बजे जब प्रिचार्ड दोपहर का खाना खाकर उठा उसके कुछ ही समय बाद उसने तोप छूटने की आवाज सुनी। प्रिचार्ड मकान के बाहर आया और देखा कि

बाहर जोरो का शोर मचा हुआ है। 15 वी नेटिव इन्फेंट्री के कुछ सैनिको ने तोपखाने के सैनिको को अपनी तरफ मिलाकर तोपखाने पर अधिकार कर लिया था। सारी छावनी मे भगदड मच गई थी तथा छावनी मे सनिका की रकश आवाजें, बच्चा की चिल्लाहट व घोडा की हिनहिनाहट की आवाज गूजने लगी[30]। प्रारम्भ मे प्रिचाड को सूचना मिली कि 30 वी नेटिव इन्फेंट्री के कुछ सनिको ने विद्रोह कर दिया है, शेप सभी सनिक वफादार है। अत प्रिचाट अपनी यूनीफाम पहन कर परेड मैदान की ग्रार आया। उधर अधिका धिक सख्या म सनिक परेड मैदान मे एकत्रित हा रह थे और वे विप्लव मे कूदने को पूरी तरह तयार थे। सनिको की भीड शस्त्र भण्डार पर शस्त्र प्राप्त करने हेतु टूट पडी। ब्रिटिश अधिकारियो ने सभी सनिको को लाइन म खडे हाने का आदेश दिया। इस पर सभी सनिका ने आदेश का पालन किया। इस दौरान विप्लवकारी, जिन्होने तापखान पर अधिकार कर लिया था, थोडी थोडी देर म तोपो से गोले दाग रहे थे। प्रिचाड ने अपनी सनिक टुकडी के समक्ष भाषण देते हुए कहा कि वे निष्ठावान एव साहसी सिपाहियो की तरह अपना कत्त व्य पालन करें। तत्पश्चात अश्वारोही सेना को तोपखाने की ओर बढने का आदेश दिया गया, लेकिन अश्वारोही सेना न आदश का पालन नही किया। इस पर लाइट इ फेंट्री को विप्लवकारियो से भिडन का आदेश दिया, लेकिन उसने भी आदश की उपक्षा की। इस प्रकार एक एक करके सभी सनिक टुकडिया को विप्लवकारिया के विरुद्ध बढने का आदेश दिया गया लेकिन किसी ने आदेश का पालन नही किया[31]। बम्बई लासर की पहली रेजीमेंट ने विप्लवकारियो से काई सहयोग नही किया और वह पूर्णत वफादार रही[32]। एक मेजर स्पाटिमवुड तोपखान की ओर आगे बढा लेकिन उसके गाली लगने स वह वही गिर पडा और उसकी मृत्यु हा गयी। कनल न्यूबरी क भी टुकडे टुकडे कर दिय गय और लेफ्टिनेन्ट लाक व कप्तान हार्डी बुरी तरह से घायल हो गय[33]। स्थिति क्षण प्रतिक्षण बिगडती गई और धीरे धीर सभी सैनिक विद्रोही हो गय।

ब्रिटिश अधिकारियो को सर्वाधिक चिन्ता अपने परिवार की थी। अत परिवार की महिलाओ व बच्चो को छावनी से पहले ही भेज दिया गया। स्थिति की गम्भीरता का देखने हुए ब्रिगेडियर ने सभी ब्रिटिश अधिकारियों को भी छावनी छोडने का आदेश दे दिया। अत सभी ब्रिटिश अधिकारी गोलिया की बौछारो के बीच छावनी से भाग छूट। यद्यपि रेजीमेंट के कनल के घोडे के तोन गोलिया लग चुकी थी और स्वय कनल के घुटने और नाक पर भी गोली लग चुकी थी, फिर भी वह छावनी से बच निकला। यदि कनल का

घायल घोडा कनल को लेकर न दौड पडता तो कनल की हत्या अवश्यभावी थी[34]। छावनी स भाग हुए ब्रिटिश अधिकारियो ने यह निणय नही लिया था कि वे अजमेर जाय या ब्यावर। सुरक्षित शरण के लिये यद्यपि अजमेर म किला था, लेकिन सुरक्षा की दृष्टि से वह अत्यन्त ही कमजोर था। विप्लवकारियो द्वारा अजमेर के काप का लूटने की पूरी सभावना थी और इन ब्रिटिश अधिकारियो के पास विप्लवकारियो से मुकाबला करने के काई साधन नहीं थे। ब्रिटिश अधिकारियो के साथ उनके बीवी बच्चे भी थे जिनकी न कवल सुरक्षा का प्रबन्ध करना था बल्कि उनक खाने पीने का प्रबन्ध भी करना था। व जानत थे कि डीसा स एक यूरोपियन सेना रवाना हो चुकी है, जो सभवत ब्यावर से हाकर गुजरगी। अत ब्रिगडियर ने ब्यावर चलन का निर्णय लिया और सभी ब्रिटिश अधिकारी अपने बीवी बच्चो के साथ ब्यावर की तरफ रवाना हा गये[35]। लासस न इन ब्रिटिश अधिकारियो की रक्षा करन मे अपनी स्वामीभक्ति का परिचय दिया तथा माग म विद्रोहियो से उनकी पूणत रक्षा की। ब्रिटिश अधिकारियो की यह टोली रात भर भटकती हुई तथा माग मे परेशानी एव असुविधाओ का सामना करती हुई दूसर दिन 11 बजे ब्यावर पहुची। वहा कमिश्नर डिक्सन ने अविवाहितो एव सनिक अधिकारियो के ठहरने की व्यवस्था अपन बगले मे की तथा महिलाओ व बच्चो को डा स्माल व उसकी पत्नी ने अपने यहा ठहराया[36]। ये ब्रिटिश अधिकारी, जब तक नसीराबाद के विद्रोही सनिक दिल्ली की ओर कूच न कर गय, तब तक यहा मेरवाडा बटेलियन की सुरक्षा मे रहे। उसके बाद ये सैनिक अधिकारी अजमेर लौट आये। महिलाए और बच्चे जोधपुर महाराजा के निमन्त्रण पर जोधपुर चले गय। नसीराबाद से ब्यावर की ओर आते हुए माग म लासस के कनल पेन्नी को परेशानियो एव कठिनाइयो के कारण दिल का दौरा पडने के कारण घोडे स सडक पर गिरकर उसका देहान्त हो गया[37]।

सभी ब्रिटिश अधिकारियो के छावनी से चले जाने के बाद वहा पूणत अराजकता व्याप्त हो गई। सव प्रथम चच म आग लगा दी गई फिर अधिकारियो के बगलो मे आग लगाई गई खजाने की तिजोरिया तोडदी गई और प्राप्त धन विद्रोही सनिको ने वेतन के तौर पर आपस म बाट लिया। पूरी रात विद्रोही सनिक छावनी को लूटते रहे। किताबें कपडे, महिलाओ के कपडे फर्नीचर गहने घोडागाडिया आदि लूट के सामान का लाइन्स म ढेर लगा दिया गया। तत्पश्चात उन्होन अपने भविष्य के कायक्रम पर विचार किया। जसे ही 30 वी नेटिव इन्फेंट्री उनसे आकर मिली उन्होन अपने ब्रिगडियर का चुनाव किया और कुछ व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास किया। ब्रिटिश

अधिकारियो के बगले लूटने के बाद ये छावनी के बाजार को लूटने आगे बढे। उन्होने बाजार की तरफ तोपें खडी करदी और धमकी दी कि यदि दुकानदार चुपचाप समपण नही करते है तो उन्हें तोपो से भून दिया जायेगा। तत्पश्चात बाजार को भी लूटा गया। लेकिन इन विद्रोही सनिको ने व्यथ म रक्तपात नही किया। विद्रोह के समय जो चार ब्रिटिश अधिकारी मारे गये अथवा घायल हुए उन्हें छोडकर रक्त की एक बूद भी नही गिरी। 30 वी नटिव इन्फेंट्री ने तो अपने अधिकारिया क हाथ तक नही लगाया। इनम एक अग्रेज अधिकारी फेनविक सायकाल 8 बजे तक इन लोगो के साथ रहा, किन्तु जब 15 वी नटिव इन्फेंट्री न 30 वी नटिव इन्फेंट्री को कहलवाया कि वह उनके साथ सहयोग करे अन्यथा उन पर तोपें चलादी जायगी तब 30 वी नटिव इन्फेंट्री ने फेनविक को वहा से चले जाने का आग्रह किया और फेनविक की सुरक्षा के लिये चार सनिक भेजे गये जो उसे छावनी के किनारे तक छोडने आय। 30 वी नटिव इन्फेंट्री के 120 सनिको की एक टुकडी ने तो भगोडे ब्रिटिश अधिकारियो को ब्यावर तक सुरक्षित पहुचाने म भी सहायता दी[38]।

प्रिचाड ने लिखा है कि छावनी के बाजार को लूटते समय विद्रोहियो को जो भी सुन्दर औरत दिखाई दी उसे पकड कर छावनी मे ले आय[39]। लेकिन प्रिचाड का यह कथन दुभावनापूण प्रतीत होता है। प्रिचाड के अतिरिक्त किसी भी तात्कालिक अग्रेज लेखक न ऐसी किसी घटना का उल्लेख नही किया है। इसके अतिरिक्त नसीराबाद के विप्लवकारियो के दिल्ली की ओर कूच कर जाने के बाद प्रिचाड सहित अन्य ब्रिटिश अधिकारी जब लौट कर नसीराबाद आये थे तब छावनी के बाजार क दुकानदारो न प्रिचाड को विप्लवकारियो के द्वारा किय गये विध्वश का ब्यौरा दिया था[40]। लेकिन किसी व्यक्ति ने यह नही कहा कि उनकी औरतो के साथ दुव्यवहार किया गया अथवा उनका अपहरण किया गया। यदि ऐसा हुआ होता तो व अवश्य इस घटना का भी ब्यौरा देत। फिर, प्रिचाड तो अपने साथियो के साथ छावनी से भाग चुका था, अत पीछे छावनी मे जो कुछ हुआ वह उसने वापिस आकर देखा और कुछ ब्यौरा वहा के स्थानीय लोगो ने दिया था, जिसम ऐसी किसी घटना का उल्लेख नही था। अत प्रिचाड के इस कथन का कोई आधार प्रतीत नहीं होता। एक स्थान पर प्रिचाड यह स्वीकार करता है कि बाजार के दुकानदारो को विप्लव की पूव सूचना थी[41] इसका अथ यह हुआ कि बाजार के दुकानदार और विप्लवकारी आपस म मिले हुए थे। ऐसी स्थिति म ऐसी घटना की सभावना ही नही रह जाती। प्रिचाड विप्लव की घटना से अत्यधिक क्रुद्ध

था और विप्लवकारियों के प्रति क्रोध और दुर्भावना के कारण उसने यह आरोप लगाया है, जो सत्य प्रमाणित नहीं होता।

नसीराबाद में विप्लव के समय बम्बई केवेलरी की एक टुकड़ी वहां उपस्थित थी, लेकिन ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा आदेश दिये जाने के बावजूद उसने मुट्ठी भर सनिकों से तोपें नहीं छीनी। अतः यह निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि उन्हें भी विप्लव के लिये प्रोत्साहित किया जा चुका था। बम्बई केवेलरी में कम से कम आधे सनिक अवध के थे जिनके 15 वीं तथा 30 वीं नेटिव इन्फेन्ट्री के सनिकों के हित समान थे। फिर भी ऐसे अनेक कारण थे जिनकी वजह से बम्बई केवेलरी ने न तो विप्लव में भाग लिया और न विप्लवकारियों के विरुद्ध कोई कार्यवाही की। मुख्य रूप से बम्बई रजीमेंट में ऐसी व्यवस्था थी जो बंगाल रजीमेंट में विद्यमान नहीं थी। बंगाल रेजीमेंट में कमांडिंग ऑफिसर सार्जेन्ट मेजर आदि का अपने सनिकों पर कोई वास्तविक नियन्त्रण नहीं था। एडजुटेन्ट जनरल सम्पूर्ण सेना पर नियन्त्रण रखता था। कमांडिंग ऑफिसर न तो किसी सनिक को दण्ड दे सकता था और न किसी को पुरस्कृत कर सकता था। इसके विपरीत बम्बई रेजीमेंट में कमांडिंग ऑफिसर को सभी प्रकार के अधिकार थे। अतः उसका अपने सनिकों पर पूर्ण प्रभाव था। इसके अतिरिक्त बम्बई रेजीमेंट में यह परम्परा थी कि सनिक अपने परिवार को अपने साथ रखते थे, लेकिन बंगाल रजीमेंट के सनिक शायद ही कभी अपने परिवार को साथ रखते थे। यद्यपि परिवार को साथ रखने से रेजीमेंट की कार्यकुशलता प्रभावित होती थी, विशेषकर जब रेजीमेंट को आगे बढ़ने का आदेश दिया जाता था, तब सैनिकों के बीबी बच्चों के लिये सवारी आदि का प्रबन्ध करना आवश्यक हो जाता था। अन्यथा रेजीमेंट के आगे बढ़ने में बाधा उत्पन्न हो जाती थी। आपातकाल में उनके बीबी बच्चों की सुरक्षा का प्रबन्ध करना भी एक महत्वपूर्ण समस्या रहती थी। यही कारण है कि बम्बई केवेलरी अपने अधिकारियों के प्रति पूर्ण वफादार रही और जब ब्रिटिश अधिकारी छावनी से भाग रहे थे बम्बई केवलरी ने उनकी रक्षा की थी। जिस समय सम्पूर्ण छावनी पर विप्लवकारियों का अधिकार हो चुका था उस समय बम्बई केवेलरी के सनिकों का परिवार छावनी में ही रहा। लेकिन विप्लवकारियों ने इन परिवारों को कोई हानि नहीं पहुंचाई। प्रिचार्ड ने यह संभावना व्यक्त की है कि बम्बई रजीमेंट और बंगाल रेजीमेंट में समझौता हो चुका था कि बम्बई केवेलरी बंगाल रेजीमेंट के सनिकों के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं करेगी तथा बदले में बंगाल रेजीमेंट के सनिक, बम्बई केवलरी के सनिकों के परिवार के लोगों की जिन्दगी एव सम्मान की रक्षा करेंगे। अन्यथा

जो सनिक ब्रिटिश अधिकारियो के साथ छावनी छोड चुके थे वे अपने परिवार को छावनी मे विप्लवकारियो की दया पर असुरक्षित कसे छोड जाते। यह सत्य है कि एक छोटी टुकडी पीछे छावनी मे रह गई थी, लेकिन वह इतनी शक्तिशाली नही थी कि विप्लवकारियो का मुकाबला कर सके। अत बम्बई केवेलरी और बगाल रेजीमेट के बीच कोई गुप्त समझौता हो चुका था[41]।

छावनी को तहस नहस करने के बाद विप्लवी सनिको ने अविलम्ब दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। लेफ्टिनेंट वाल्टर तथा डिप्टी क्वाटर मास्टर हीथकोट ने विप्लवकारियो का पीछा किया। इन अग्रेज अधिकारियो के साथ जोधपुर व जयपुर राज्य की सेनाए थी। लेकिन इन राज्यो की सेनाओ ने विप्लवकारियो से कोई मुकाबला नही किया, क्योकि उनकी सहानुभूति भी विप्लवकारियो के साथ थी। उनका विश्वास था कि अग्रेजो ने उनके धम को भ्रष्ट करने का प्रयास किया है। फिर भी वे इन दोनो अधिकारियो के साथ गये और विप्लवकारियो का पीछा करते रहे। 18 जून 857 को विप्लवकारी दिल्ली पहुच गये[42]। दिल्ली पहुचकर इन विप्लवी सनिको ने अग्रेज पलटन पर जो दिल्ली का घेरा डाले हुए थी पीछे से आक्रमण किया। दूसरे दिन दोनो के बीच बडा सघप हुआ, जिसमे अग्रेज सेना पराजित हुई[43]।

इस सम्बन्ध मे यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि नसीराबाद के सभी विप्लवकारी राजस्थान मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण केन्द्र अजमेर पर आक्रमण करने की बजाय सीधे दिल्ली की ओर प्रस्थान क्यो किया ? अग्रेज विद्वान ट्रेवर ने लिखा है कि विप्लवकारियो के पास लूट का माल इतना अधिक था कि अब उन्हे अजमेर लूटने की न तो आवश्यकता थी और न वे अब अधिक समय खराब करने की स्थिति मे ही थे। अजमेर शस्त्रागार पर अधिकार करना भी कठिन काय था। ट्रेवर ने यह भी लिखा है कि ए जी जी जार्ज लारेंस ने डीसा से यूरोपियन सनिक को अजमेर भेजने की माग की थी, अत विप्लवकारी इस बात से भयभीत थे कि कही अजमेर मे डीसा से यूरोपियन सनिक टुकडी न आगई हो। ट्रेवर ने एक महत्वपूर्ण कारण यह भी बताया है कि इन सिपाहियो मे कुछ के साथ उनके बीवी बच्चे भी थे[44]। ब्रिटिश अधिकारी प्रिचाड का कहना है कि यद्यपि सडकें खराब थी और उनके साथ लूट का अत्यधिक सामान था तथापि वे तेजी के साथ दिल्ली की ओर बढ रहे थे। वे अपने लूट के माल की बिना परवाह किये तेजी से आगे बढते गये। अनेक विप्लवकारियो ने तो अपना लूट का माल रास्ते के गावो मे ही लोगो के पास छोड दिया था। ब्रिटिश अधिकारियो के साथ जो देशी राज्यो की सेना थी उनकी विप्लवकारियो के प्रति सहानुभूति थी इसलिये इस सेना ने विप्लवकारियो का

अजमेर से पास रोकने का प्रयास ही नही किया। इसके अतिरिक्त विप्लव कारियों के साथ उनके बीबी बच्चे भी थे और यदि वे अजमेर जाते तो वहा अंग्रेजो से संघर्ष होना अवश्यभावी था, जिससे उनके बीबी बच्चो की सुरक्षा खतरे में पड सकती थी[45]। वस्तुत इन अंग्रेज लेखको का यह कथन उचित प्रतीत नही होता। सत्य तो यह है कि विप्लवकारी पहले दिल्ली पहुच कर मुगल सम्राट बहादुरशाह की सेवा मे उपस्थित होना चाहते थे तथा उनसे फरमान हासिल करके अजमेर पर आक्रमण करना चाहते थे। मेवाड के पालीटिकल एजेन्ट कप्तान शावर्स ने इस कथन को स्वीकार किया है कि दिल्ली के विप्लवकारियो ने इन विप्लवकारियो को पहले दिल्ली बुलाया था, इसलिये वे सीधे दिल्ली प्रस्थान कर गये थे[46]। इससे स्पष्ट है कि दिल्ली मे इन विप्लव कारियो की उपस्थिति नितान्त आवश्यक थी और वे वहा से मुगल सम्राट का फरमान प्राप्त कर अपनी गतिविधियो और कार्यवाहियो को वैधानिक रूप देना चाहते थे। इससे यह बात भी स्पष्ट होती है कि लूटपाट करने की अपेक्षा उनमे सर्वोच्च सत्ता से अधिकृत होने की भावना अधिक प्रबल थी। दिल्ली मे सर्वोच्च सत्ता की स्थापना हो गयी थी और उससे अधिकृत होने के बाद लाखो लोगो को वे अपने पक्ष मे कर सकते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दू और मुसलमान दोनो की आखें दिल्ली मे मुगल सम्राट बहादुरशाह पर टिकी हुई थी[47]।

नसीराबाद के बाद विप्लव की अग्नि नीमच मे भी प्रज्ज्वलित हो गयी। नीमच की छावनी नसीराबाद से लगभग 120 मील दूर थी। मेरठ के विप्लव की सूचना से इस छावनी के सैनिकों मे भी पर्याप्त उत्तेजना थी। लेकिन 72 वी नेटिव इन्फेन्ट्री के ब्रिटिश अधिकारी ने किसी तरह छावनी मे शान्ति बनाये रखने का प्रयास किया। फलस्वरूप इस छावनी मे विप्लव कुछ समय के लिये टल गया था। लेकिन जब नसीराबाद के विप्लव की सूचना नीमच पहुची तब कर्नल एबाट अत्यन्त भयभीत हुआ तथा उसने भारतीय सैनिक अधिकारियो को एकत्रित कर उन्हे कुरान और गगाजल पर हाथ रख कर शपथ दिलवाई कि वे अपने कर्त्तव्य के प्रति वफादार रहेगे। कर्नल एबाट ने भी बाइबिल पर हाथ रखकर शपथ ली कि वह अपने भारतीय सैनिक अधिकारियो पर पूरा विश्वास रखेगा[48]। तत्पश्चात 2 जून 1857 को कर्नल एबॉट ने सभी सैनिको को परेड मैदान मे एकत्रित कर सूचित किया कि उनके अधिकारियो ने वफादारी की शपथ ली है और इसी प्रकार सभी सैनिको को भी वफादार रहना चाहिये। इस पर घुडसवार सेना का एक सैनिक मोहम्मद अली बेग आगे बढकर कर्नल एबाट को चुनौती भरे शब्दो मे सम्बोधित करते हुए

कहा, अग्रेजो ने स्वय ने अपनी शपथ का पालन नही किया है, क्या आपने अवध का अपहरण नहीं किया ? इसलिये भारतीय भी अपनी शपथ का पालन करने को बाध्य नहीं हैं। [49] कर्नल एबाट न किसी तरह उस समय तो मोहम्मद अली बेग को समझा बुझाकर शात कर दिया। कि तु 3 जून 1857 को नीमच के सभी सनिको को नसीराबाद म हुए विप्लव की सूचना मिल गई। फलस्वरूप 3 जून 1857 की रात के 11 बजे नीमच के सनिको न विद्रोह कर दिया[50]। कुछ सैनिक तोपखान की ओर बढ़े और तोपखाने पर अधिकार करके तोपो से दो गोले दागे। तोपो से गोले छूटते ही 7 वी नटिव इ फे ट्री ने अपनी कतार भग कर दी। विप्लवकारियो न छावनी को घेर लिया तथा उसम आग लगादी। छावनी के प्रत्येक मकान म आग लगादी गई और उनम रहन वाले लोग भयभीत होकर अपने प्राणो की रक्षा हतु भागन लगे[51]। छावनी म रहने वाले ब्रिटिश अधिकारी भी भयभीत होकर भाग खड़े हुए। छावनी के एक ब्रिटिश अधिकारी कप्तान मक्डोनल्ड न किले की रक्षा करन का प्रयत्न किया, लेकिन वह असफल रहा, क्योकि किले की सुरक्षा के लिये तनात सनिक टुकड़ी भी विद्रोही हो गयी और खजाना लूट लिया। लेकिन इन सुरक्षा सनिको न अपन यूरोपियन अधिकारियो और उनक परिवार को कोई हानि नही पहु-चाई केवल एक सार्जेट की पत्नी को मौत के घाट उतारा गया तथा उसके बच्चो को उनकी टांगें पकड़ कर जलती हुई आग मे फेंक दिया गया[52]। नीमच म नसीराबाद के विप्लव की प्रत्येक घटना की पुनरावृत्ति हुई, यहा तक कि उमसे अधिक बड़े पैमाने पर लूटपाट व आगजनी हुई, बन्दीगृह से सभी बदियो को मुक्त कर दिया गया और सनिक खजाने से 50,000 रुपये तथा असनिक कोष से 1,26,900 रुपये लूट लिय गये[53]।

नीमच छावनी के लगभग 40 अग्रेज, औरतें व बच्चे भयभीत होकर मेवाड की ओर भागे। विप्लवकारियो ने इनका पीछा किया। भयभीत एव आतकित इन अग्रेजो को डूगला गाव के एक किसान रुगाराम ने शरण प्रदान की[54] तथा उनके लिये भोजन आदि की व्यवस्था की। विप्लवकारी भी इन ब्रिटिश अधिकारियो का पीछा करते हुए डूगला आ पहुचे, लेकिन मेवाड के पोलीटिकल एजेन्ट कप्तान शॉवस, बेदला के राव बख्तसिह के नेतृत्व मे मेवाड की एक सेना लेकर डूगला पहुच गया। इस सेना के पहुचते ही विप्लवकारी वहां से भाग खड़े हुए और इस प्रकार विप्लवकारियो से बिना मुकाबला किये डूगला मे फसे अग्रेजो को बचा लिया गया। बेदला के राव बख्तसिह न पालकी, घोड़े व हाथियो का प्रबन्ध कर इन अग्रेज, औरतो व बच्चो को सुरक्षित उदय पुर पहुचा दिया, जहा उन्हे पिछोला झील म बने जगमदिर म ०२१

गया। महाराणा ने मेहता गोकुलचन्द की देखरेख में उनके रहने आदि की तथा सुरक्षा की उत्तम व्यवस्था की[55]।

नीमच में विद्रोह प्रारम्भ होने पर जब अंग्रेज अधिकारी, औरतें व बच्चे वहा से भाग खड़े हुए थे, तब इन भागे हुए अंग्रेज अधिकारियो मे डा मरे व डा गेन अपने साथियो से बिछुड़ गये और रास्ता भूल गये। वे पैदल चलते चलते पूर्ण रूप से थक चुके थे तथा भूख प्यास से अत्यधिक व्याकुल हो उठे थे। ऐसी स्थिति मे वे दोनो सादड़ी के केसुन्दा गाव मे पहुचे। केसुन्दा गाव के पंडित यदुराम, पटेल रामसिंह, पटेल केसरीसिंह तथा ओंकारसिंह ने इन दोनो को शरण प्रदान की तथा उनके लिये भोजन आदि की व्यवस्था की। इसी दौरान कुछ विप्लवकारी भी इन अंग्रेजो का पीछा करते हुए इस गाव मे आ पहुचे तथा ब्रिटिश शरणार्थियो को सौपने की माग की और गोली चलाने की धमकी दी, किन्तु गाव वालो ने बड़ी निर्भीकता से काम लिया और उक्त अंग्रेजो का सुपुर्द नही किया। इतने मे बेंगू के रावत की ओर से तथा सादड़ी के हाकिम की ओर से सैनिक सहायता आ पहुची, जिससे विद्रोही अपने उद्देश्य मे सफल न हो सके[56]। रात के अन्धेरे मे इन दोनो अंग्रेजो को छोटी सादड़ी लाया गया, जहा मेवाड की सैनिक टुकड़ी तैनात थी तथा वहा से उन्हे डूंगला गाव ले जाया गया, जहा वे अपने अंग्रेज साथियो से आ मिले और वहा से कप्तान शावर्स के साथ उदयपुर गये। केसुन्दा गाव वालो की इस सहायता तथा ब्रिटिश अधिकारियो के प्रति प्रदर्शित सहानुभूति के उपलक्ष मे विद्रोह की समाप्ति पर यदुराम, केसरीसिंह व ओंकारसिंह को ब्रिटिश सरकार की ओर से प्रत्येक को 1200 रुपये का इनाम दिया गया तथा गाव मे एक कुआ बनवाया[57]।

नीमच के विप्लवकारी छावनी को लूट कर आग लगाने के बाद सभी ने मिलकर सूबेदार गुरेसराम को रेजीमेंट का कमाण्डर मनोनीत किया, सूबेदार सूदेरीसिंह को ब्रिगेडियर और जमादार दोस्त मोहम्मद को ब्रिगेड का मेजर मनोनीत किया। इसी समय विप्लवकारियो को सूचना मिली कि एक यूरोपियन सेना नीमच की ओर आ रही है, अतः उन्होंने लूट के माल को लेकर बैंड बजाते हुए छावनी से कूच किया[58]। ये विप्लवकारी रास्ते मे चित्तौड, हम्मीरगढ़ व बनेड़ा मे सरकारी बगलो को लूटते हुए और उनमे आग लगाते हुए शाहपुरा पहुचे। शाहपुरा के शासक ने विप्लवकारियो को दो दिन तक अपने यहाँ ठहराया और उनके लिये रसद आदि की व्यवस्था की[59]। तत्पश्चात विप्लवकारी वहा से रवाना हुए और निम्बाहेड़ा पहुचे जहा की स्थानीय जनता ने तथा अधिकारियो ने इनका बड़ा स्वागत किया। दूसरे दिन प्रात वे निम्बा

हेडा से रवाना होकर देवली पहुचे और छावनी को लूटा[60]। चू कि अग्रेज इस छावनी को खाली कर पहले ही जहाजपुर चले गये थे, अत यहा किसी अग्रेज को अपनी जिन्दगी से हाथ नही धोना पडा। देवली में महीदपुर की सैनिक टुकडी तनात थी, लेकिन वह भी विप्लवकारिया से मिल गई[61]। देवली से विप्लवकारी टोंक पहुचे, जहा भारी सख्या मे वहा की जनता न उनका स्वागत किया। टोंक के नवाब की सेना ने भी विप्लव कर दिया था, अत भारी सख्या में स्थानीय जनता तथा नवाब की सेना विप्लवकारियो से मिल गई[62]। इस प्रकार विप्लवकारिया की सख्या मे अभूतपूव वद्धि हो गई। तत्पश्चात विप्लवकारी आगरा की ओर बढे। रास्ते मे कोटा कन्टीजेन्ट के लगभग 60 सैनिक विप्लवकारियो से मिल गये, लेकिन कुछ दिन बाद कोटा कन्टीजेन्ट के ये सनिक विप्लवकारियो का साथ छोडकर पुन देवली लौट आये थे[63]। शेष सभी विप्लवकारी दिल्ली पहुचे और दिल्ली के विप्लवकारियो से मिलकर ब्रिटिश सेना पर प्रहार किया[64]।

उपयु क्त घटना चक्र से एक आश्चयजनक तथ्य यह प्रकट होता है कि विप्लवकारी बिना किसी प्रतिरोध के आगे बढते गये थे। ए जी जी ने उन्हें रोकने का कोई प्रयत्न नही किया। यदि निम्बाहेडा से रवाना होते ही विप्लव कारिया पर आक्रमण कर दिया जाता तो उनका सगठन छिन्न भिन्न हो जाता, जिससे देवली की छावनी को बचाया जा सकता था। इस सम्बध मे कप्तान शावस ने ए जी जी को एक सदेश भी भेजा था जिसमे बढते हुए विप्लवकारिया पर प्रहार करने की प्राथना की गई थी। लेकिन ए जी जी जाज लारेन्स विप्लवकारियो पर प्रहार करके अजमेर के लिये कोई सकट मोल लेना नहीं चाहता था। उसकी दृष्टि मे अजमेर की सुरक्षा सर्वाधिक महत्वपूण थी[65]। कप्तान शावस न लिखा है कि एक तरफ तो नीमच के विप्लवकारी बिना किसी प्रतिरोध के बढते जा रहे थे और दूसरी तरफ ब्रिटिश सत्ता उन पर प्रहार कर उन्ह रोकने को तयार नही थीं, जो न केवल साम्राज्य के सर्वोच्च हितो के प्रतिकूल थी, बल्कि इसने सम्पूण देश म ऐसे तत्वो को प्रोत्साहन दिया जो सत्ता की शक्ति की प्रतिष्ठा और अस्तित्व को चुनौती देने को तयार थे[66]।

अजमेर की स्थिति हरमेजेस्टीज की 83 वी रेजीमट और 12 वी बम्बई इन्फेन्ट्री के लगभग 400 यूरोपियन सनिको के पहुचने पर सुदृढ हो गई थी। कनल जाज लारेन्स, अजमेर-मेरवाडा के चीफ कमिश्नर के रूप मे इस सेना का दायित्व स्वय ग्रहण करने हेतु आबू से अजमेर आया। उसने किले की मरम्मत करवा कर वहा छ माह की रसद सामग्री भी जमा करली।

करने म ब्रिटिश नीति का मुख्य लक्ष्य यह था कि अजमेर तथा वहा के गोला बारुद और खजाने की सुरक्षा की जाय[67]। जाज लारेंस ने स्वय अपनी रिपोट मे लिखा है कि, "अजमेर के महत्व को नजर अदाज नही किया जा सकता था। राजपूताना के लिये उसका वही महत्व था, जितना उत्तरी भारत म दिल्ली का है और वहा पर (अजमेर मे) विद्रोह होन का अथ असतुष्ट तत्वो का ध्यान आकर्षित हो जाना है।"[68] उसने अपनी रिपोट म यह भी लिखा कि लेफ्टिनेंट कारनेल की सामयिक कायवाही से, जिसे मेरा का पूण सहयोग प्राप्त था, नसीराबाद के विप्लवकारियों से अजमेर को बचाया जा सका। लेफ्टिनन्ट कारनल द्वारा की गई उचित व्यवस्था के कारण ही विप्लवकारी अजमेर जसे घनी आबादी वाले शहर मे हाथ डालने से कतराते रहे। इस प्रकार अजमेर मे शान्ति एव व्यवस्था बनी रही। लेकिन 9 अगस्त 1857 को अजमेर जेल म विप्लव फूट पडा, जिसमे जेल के 50 कदी फरार हो गये। इस घटना को छोडकर अजमेर पूणतया शात रहा और शहर के मुसलमानो ने ब्रिटिश सरकार के साथ पूण सहयोग किया[69]।

जब नीमच के विद्रोही निम्बाहेडा से देवली की तरफ रवाना हुए थे तब कप्तान शावस ने मेवाड की एक सनिक टुकडी को विप्लवकारियो का पीछा करने के लिये चित्तौड की ओर जाने की आज्ञा दी और स्वय नीमच की ओर गया। कप्तान शावस विप्लवकारियो को रास्ते मे ही रोकना चाहता था। इसलिये उसने ए जी जी जाज लारेंस का सैनिक सहायता भेजने की प्राथना की। लेकिन जाज लारेंस के लिये अजमेर की सुरक्षा अधिक महत्वपूण थी, अत उसने सहायता भेजने म अपनी असमथता व्यक्त की[70]। इस पर शॉवस अपने साथ जितने भी सैनिक थे, उन्हे लेकर विप्लवकारियो का पीछा करता हुआ शाहपुरा पहुचा, जहा क राजाधिराज ने विप्लवकारियो को दो दिन तक अपने यहा शरण दी थी तथा उन्हे रसद आदि प्रदान की थी। शॉवस के पहुचने पर राजाधिराज ने, जो कि मेवाड और ब्रिटिश सरकार दोनो का सामन्त था, शावस की रस्म के मुताबिक पेश्वाई करना तथा उसे रसद आदि प्रदान करना तो दूर रहा, अपने किले का दरवाजा तक नही खोला[71]। वहा से शॉवस जहाजपुर गया और जहाजपुर से पुन नीमच की ओर रवाना हो गया[72]। इधर नीमच पर पुन अधिकार करने हेतु ए जी जी जाज लारेंस ने कोटा व बूदी मे राजकीय फौजो को वहा भेजने का आदेश दिया और इधर शावस भी मेवाड की राजकीय फौज को लेकर नीमच आ पहुचा। किन्तु इस समय तक विप्लवकारी नीमच से पलायन कर चुके थे। अत 8 जून 1857 को नीमच पर कम्पनी सरकार का पुन अधिकार हो गया। इस समय नीमच

म कोटा, बूदी और मेवाड की सेनाए विद्यमान थी तथा तरह तरह की अफ वाहें फल रही थीं। वातावरण अत्यन्त ही तनावपूर्ण था। ऐसी स्थिति म मेवाड के सनिकों में यह अफवाह फैली कि अग्रेज उनके धर्म को नष्ट करने पर तुले हुए हैं तथा सनिकों को जो आटा दिया जाता है उसमे हड्डियों का चूरा मिलाया जाता है। इस खबर से मेवाड के सनिक अशान्त एव उत्तेजित हो उठे और वे लगभग विद्रोह करने का निश्चय कर चुके थे। ऐसी स्थिति म शॉवस ने सैनिकों को शान्त करने के लिये मेवाडी सेनानायक सहीवाला अर्जुनसिंह को भेजा। अर्जुनसिंह ने उस आटे की रोटी बनवा कर स्वय ने अशान्त सैनिकों के सामने खाई[73]। इसस सनिकों का असन्तोष दूर हो गया और वे शान्त हो गये।

नसीराबाद म विप्लव फूट पडने के बाद ए जी जी ने डीसा से एक यूरोपियन सेना बुलाई थी, क्योंकि वहा राजकीय फौजों की उपस्थिति को उचित नही समझा गया। अत जुलाई 1857 म वहां डीसा स 83 वी हर-मजेस्टीज रेजीमट, 12 वी बम्बई नेटिव इन्फेन्ट्रीज तथा बम्बई केवलरी के कुछ सनिक पहुच गये। अगस्त 1857 म 12 वी बम्बई नेटिव इन्फेंट्री के कुछ सनिकों मे उत्तेजना फल गई और व विप्लव के लिय उतारू हो गये लेकिन शीघ्र ही उनके शस्त्र आदि छीन कर उन्ह शस्त्रहीन कर दिया गया[74]। 10 अगस्त 1857 का बम्बई केवलरी के एक सिपाही न अव्यवस्था उत्पन्न करने का प्रयास किया और उसने अपन साथियो को विप्लव के लिये प्रोत्साहित किया[75]। लेकिन शीघ्र ही उस सिपाही के टुकडे टुकडे कर दिय गये 12 वी बम्बई नेटिव इन्फेन्ट्री के पाच मुख्य नेताओं को फासी दे दी गई और 25 शस्त्रहीन सनिक छावनी छोडकर चले गय। तत्पश्चात ए जी जी क आदेश से नसीराबाद म उपस्थित सभी हिन्दुस्तानी सिपाहियो को सेवामुक्त कर दिया गया[76]। इस प्रकार ब्रिटिश अधिकारियों की सामयिक कार्यवाही से नसीराबाद मे पुन उठने वाली विप्लव की आशका को दबा दिया गया।

नीमच पर पुन कम्पनी सरकार का अधिकार हो जाने के बाद छावनी के कमाण्डर कनल जेक्सन को सूचना मिली कि छावनी के भारतीय सनिक पुन विद्रोह की तयारी कर रहे हैं और उन्होंने सभी यूरोपियन अधिकारियो की हत्या करने की योजना बनाई है[77]। जसी कि सूचना थी, 12 अगस्त 1857 को नीमच म पुन विप्लव फूट पडा, जिसमे 83 वी रेजीमट का एक यूरोपियन अधिकारी मारा गया तथा दो अधिकारी घायल हुए। इस विप्लव से ब्रिटिश अधिकारी हतप्रभ रह गये। किंकर्त्तव्यविमूढ की स्थिति में एक यूरोपियन की बन्दूक से एक दूसरा यूरोपियन अधिकारी, लेफ्टिनेंट ब्लेयर घायल

हो गया[78]। अन्त मे मेवाडी सनिको की सहायता से छावनी मे शान्ति स्थापित की गई और इस क्षणिक विप्लव को दबा दिया गया[79]। इस घटना के बाद भी, यद्यपि मन्दसौर के विप्लवकारियो के कारण नीमच की स्थिति कई बार खतरे मे पडी,[80] लेकिन ब्रिटिश अधिकारियो की सूझबूझ और सामयिक कार्यवाही से किसी तरह व्यवस्था बनी रही।

जब इस समय ब्रिटिश सत्ता राजपूताने के विभिन्न भागो मे कम्पनी सरकार के विप्लवी सनिको से सघपरत थी, *मारवाड का एक ठिकाना आउवा* ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध उठ खडा हुआ तथा ब्रिटिश सर्वोच्चता को चुनौती दी। वस्तुत मारवाड और मेवाड के असन्तुष्ट सामन्त पिछले काफी समय से ऐसा विप्लव खडा करने हेतु षडयन्त्र कर रहे थे और इस षडयन्त्र को सितम्बर 1857 मे कार्यान्वित किया गया। नसीराबाद, नीमच और एरिनपुरा (इस विप्लव का विवरण अगले अध्याय मे किया जायेगा) म जो विप्लव हुआ उसके मूल मे कम्पनी के भारतीय सनिको मे ब्रिटिश सत्ता के प्रति आक्रोश था, जबकि आउवा के विप्लव के मूल मे राजस्थानियो के मानस मे ब्रिटिश सत्ता के प्रति तीव्र आक्रोश था जिसका विस्तृत विवरण अगले अध्याय म किया जायेगा।

सदर्भ टिप्पणी

1 (i) मेलीसन द इण्डियन म्यूटिनी आफ 1857 पृ 264
 (ii) टी आर होम्स ए हिस्ट्री आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 149
2 (i) आई टी प्रिचार्ड द म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 6
 (ii) टी आर होम्स ए हिस्ट्री आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 264
 (iii) मुशी ज्वालासहाय लायल राजपूताना, पृ 278-280
3 (i) आई टी प्रिचार्ड द म्यूटिनीज इन राजपूताना पृ 8 9
 (ii) *टी आर होम्स ए हिस्ट्री आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 264*
4 फो पो कन्सलटेशन, 16 अप्रैल 1832 न 22
5 राजस्थान के सभी हिन्दू नरेश मेवाड के शासक को हिन्दुआ सूरज स्वीकार करते थे।
 (i) श्यामलदास वीर विनोद, प्रथम भाग, पृ 219
 (ii) ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास *प्रथम भाग*, पृ *68*
6 (i) रफाकतअलीखां द कछवाहाज अण्डर अकबर एण्ड जहागीर पृ 10 11

(ii) शर्मा और व्यास राजस्थान का इतिहास, पृ 229-230
7 एस एन सेन एटीन फिफ्टी सेवन, पृ 307-308
8 (i) जी एच ट्रेवर ए चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 2
(ii) खड्गावत राजस्थानृस रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 15
9 आई टी प्रिचाड द म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 227 229
10 जी एच ट्रेवर ए चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 2
11 (i) फो पो कसलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3147
(ii) एजेन्सी रेकाड, लेटर बुक न 13, पृ 52
12 (i) एजेन्सी रेकाड, लेटर बुक न 13, पृ 52
(ii) खडगावत राजस्थानृस रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 172
13 (i) फो पो कसलटशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
(ii) जी एच ट्रेवर ए चेप्टर ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 2 3
14 एस एन सेन एटीन फिफ्टी सेवन, पृ 41 66
15 (i) ऐजेन्सी रेकाड, लेटर बुक न 13, पृ 43
(ii) सी एल शॉवस ए मिसिग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 8 9
16 (i) फो पो कसलटेशन (सीक्रेट), 26 जून 1857 न 113 116
(ii) फो पो कसलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
17 (i) जी एच ट्रेवर ए चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 3 4
(ii) टी आर होम्स ए हिस्ट्री आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 150
18 (i) फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146-47
(ii) एस एन सेन एटीन फिफ्टी सेवन, पृ 309
19 (i) खड्गावत राजस्थानृस रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 17
(ii) टी आर होम्स ए हिस्ट्री आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 150
20 (i) आई टी प्रिचाड द म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 39
(ii) खडगावत राजस्थानृस रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 17
(iii) एस एन सेन एटीन फिफ्टी सेवन, पृ 309
21 जी एच ट्रेवर ए चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 3
22 (i) आई टी प्रिचाड द म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 19 20 व 29 30 और 99
(ii) जी एच ट्रेवर ए चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 4
23 आई टी प्रिचाड द म्यूटिनीज इन राजपूताना पृ 21

24 आई टी प्रिचार्ड द् म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 32
25 (i) एस एन सेन एटीन फिफ्टी सेवन, पृ 309
(ii) आई टी प्रिचार्ड द् म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 34 35
26 (i) जी एच ट्रेवर ए चेप्टर आफ द् इण्डियन म्यूटिनी पृ 4
(ii) खड्गावत् राजस्थान्स रोल इन द् स्ट्रगल आफ 1857, पृ 17
27 (i) आई टी प्रिचार्ड द् म्यूटिनीज इन राजपूताना पृ 29 और 99
(ii) एस एन सेन एटीन फिफ्टी सेवन, पृ 309
28 आई टी प्रिचार्ड द् म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 35 36
29 आई टी प्रिचार्ड म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 41-44
30 (i) फो पो कन्सलटेशन 27 जुलाई 1858 न 3146-47
(ii) आई टी प्रिचार्ड द् म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 43-44
31 आई टी प्रिचार्ड द् म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 48
32 फो पो कन्सलटेशन 27 जुलाई 1858 न 3146 47
33 आई टी प्रिचार्ड द् म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 49
34 वही, पृ 54 55
35 फो पो कन्सलटेशन 27 जुलाई 1858 न 3146 47
36 (i) फो पो कन्सलटेशन, 27 जुलाई, 1858 न 3146 47
(ii) आई टी प्रिचार्ड द् म्यूटिनी इन राजपूताना, पृ 78-79
37 (i) टी आर होम्स ए हिस्ट्री आफ द् इण्डियन म्यूटिनी, पृ 151
(ii) आई टी प्रिचार्ड द् म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 73-74
38 (i) जी एच ट्रेवर ए चेप्टर आफ द् इण्डियन म्यूटिनी, पृ 5
(ii) टी आर होम्स ए हिस्ट्री आफ द् इण्डियन म्यूटिनी, पृ 151
(iii) आई टी प्रिचार्ड द् म्यूटिनीज इन राजपूताना पृ 65 68
(iv) मुशी ज्वालासहाय लॉयल राजपूताना, पृ 200 201
39 आई टी प्रिचार्ड द् म्यूटिनीज इन राजपूताना पृ 68
40 वही पृ 83 85
41 वही, पृ 102 104

बम्बई रेजीमट के एक सैनिक द्व [illegible] गया
था कि बम्बई लासस के जमादार ने
लासस और 15 वी एव 30 वी नेटिव
चुका था कि लासस, विप्लवकारियो के

15 वी व 30 वी नेटिव इन्फेन्ट्री के सनिक, लासस के सैनिको के परिवारो पर कोई प्रहार नही करेंगे। इसलिये लासस के सैनिक अपने परिवार को छावनी म छोड गये थे। उनमे यह भी समझौता हुआ था कि विप्लवकारी लासस के क्वाटर गाड को भी नही छुऐंगे, जहा लासस के सनिक तथा भारतीय अधिकारियो का रोकड रुपया आदि रखा हुआ था।

42 (1) फो पो कन्सलटेशन, 27 जुलाई 1858 न 3146-47
(11) टी आर होम्स ए हिस्ट्री आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 151
(111) आई टी प्रिचाड द म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 89 90

43 (1) जी एच ट्रेवर ए चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 5
(11) मुशी ज्वालासहाय लायल राजपूताना, पृ 200-201

44 जी एच ट्रेवर ए चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 5-6

45 आई टी प्रिचाड द म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 89 90

46 एजेन्सी रेकाड, मेवाड 1857 न 88, कप्तान शावस का ए जी जी के नाम पत्र, दिनाक 25 माच 1858

47 खडगावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 20

48 नीमच के सुपरिन्टेन्डेन्ट कप्तान बी पी लायड की ए जो जी को रिपोट, दिनाक 16 जून 1857 (प्रिचाड द म्यूटिनी इन राजपूताना, पृ 121 128 पर उद्धृत)

49 सी एल शॉवस ए मिसिग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 27

50 फो पा कन्सलटेशन (सीक्रेट), 31 जुलाई 1857 न 81 82

51 सी एल शॉवस ए मिसिग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 27 29

52 (1) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 31 जुलाई 1857 न 81-82
(11) सी एल शॉवस ए मिसिग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 27 29

53 (1) फो पो कन्सलटशन, 27 जुलाई 1858 न 3146-47
(11) जी एच ट्रेवर ए चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 7

54 (1) एजेन्सी रेकाड, लेटर बुक न 13 पृ 46
(11) सी एल शावस ए मिसिग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 27 29

55 (1) फो पो कन्सलटशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
(11) एजेन्सी रेकाड, लेटर बुक न 13, पृ 55

(iii) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 1966

56 (i) बख्शीखाना उदयपुर बही न 216 कप्तान शावस का मेवाड के महाराणा के नाम पत्र दिनाक 18 अगस्त 1857
(ii) सी एल शावस ए मिसिग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 30
(iii) सहीवाला अजु नसिंह का जीवन चरित्र, भाग 1, पृ 57

57 (i) एजेसी रेकाड लेटर बुक न 13, पृ 50
(ii) बख्शीखाना, उदयपुर, बही न 216, कप्तान शावस का मेवाड के महाराणा के नाम पत्र दिनाक 18 अगस्त 1857

58 (i) फा पो कसलटेशन 31 दिसम्बर 1858 न 3146-47
(ii) आई टी प्रिचाड द म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 128

59 (i) एजेसी रेकाड, लेटरबुक न 13, पृ 51
(ii) शोध पत्रिका, भाग 14, अक 2, पृ 157-58

60 (i) फो पो कसलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
(ii) सी एल शावस ए मिसिग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 45

61 (i) सी एल शावस ए मिसिग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 46
(ii) *खड्गावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857*, पृ 23

62 (i) फो पो कसलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
(ii) सी एल शावस ए मिसिग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 45

63 फा पो कसलटेशन, 27 जुलाई 1858 न 3146 47

64 सी एल शावस ए मिसिग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 45-46

65 (i) फो पो कसलटेशन, 27 जुलाई 1858 न 3146 47
(ii) सी एल शावस ए मिसिग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 46

66 सी एल शॉवस ए मिसिग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 45

67 जी एच ट्रेवर ए चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 8

68 (i) फो पो कसलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
(ii) जी एच ट्रेवर ए चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 14

69 (i) फो पो कसलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
(ii) जी एच ट्रेवर ए चेप्टर ग्राफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 8
70 सी एल शॉवस ए मिसिंग चेप्टर ग्राफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 38-42
71 (i) एजेसी रेकार्ड, लेटर बुक न 13, पृ 51
(ii) सी एल शॉवस ए मिसिंग चेप्टर ग्राफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 39 40
72 (i) सी एल शावस ए मिसिंग चेप्टर ग्राफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 45-46
(ii) शोध पत्रिका, भाग 14, ग्रक 2 पृ 157-58
73 (i) सहीवाला ग्रजुनसिंह का जीवन चरित्र, भाग 1 पृ 59
(ii) खडगावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल ग्राफ 1857, पृ 75
74 फो पा कसलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
75 मेलीसन हिस्ट्री ग्राफ द इण्डियन म्यूटिनी, भाग 4, पृ 387
76 फो पो कसलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
77 फो पो कसलटेशन (सीक्रेट), 30 ग्रक्टूबर 1857 न 506
78 वही।
79 मेलीसन हिस्ट्री ग्राफ इण्डियन म्यूटिनी, भाग 4 पृ 387
80 फो पो कसलटेशन (सीक्रेट), 29 जनवरी 1858 न 267-271
(ii) फा पो कसलटेशन (सीक्रेट), 29 जनवरी 1858 न 261-271
(iii) फो पो कसलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47

—— ——

मारवाड में सघर्ष

जैसाकि पूव अध्याय मे बताया गया है कि 1857 ई मे भारतव्यापी विप्लव आरम्भ होने से पूव राजस्थान मे ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध तीव्र आक्रोश था। विप्लव से काफी समय पूव जोधपुर के राजा मानसिंह न ब्रिटिश विरोधी तत्वो का प्रतिनिधित्व किया था। महाराजा मानसिंह के कोई पुत्र नही था। अत 1843 ई मे महाराजा मानसिंह की मृत्यु के बाद अहमदनगर की ईडर रियासत से तख्तसिंह को बुलाकर जोधपुर के राजसिंहासन पर बठाया गया था[1]। महाराजा तख्तसिंह से उसके अनेक सामन्त अप्रसन्न थे, क्योकि महाराजा तख्तसिंह ने मारवाड के शासन सचालन मे मारवाड के लागो की उपेक्षा की तथा अपने साथ ईडर से लाये गुजरातियो को प्रशासन म ऊचे ऊचे पद प्रदान कर दिय[2]। महाराजा तख्तसिंह द्वारा प्रशासन मे मारवाडियो की उपेक्षा करन के कारण मारवाड की प्रजा और सामन्त उसे विदेशी शासक समझने लगे जिसे गुजरात की रियासत ईडर से लाकर मारवाड की गद्दी पर बठाया गया था। महाराजा तख्तसिंह ने अपने सामन्तो से परम्परागत रेख के अतिरिक्त 'नजराना' भी मागना आरम्भ कर दिया तथा हुक्मनाम की राशि म भी वद्धि करदी[3]। इससे नाराज होकर सामन्तो ने रेख और चाकरी देना बन्द कर दिया। फलस्वरूप ब्रिटिश पोलीटिकल एजेन्ट की सलाह से महाराजा तख्तसिंह न विरोधी सामन्तो के कई गाव जब्त कर लिय। महाराजा तख्तसिंह के विरोधी सामन्तो म मुख्य रूप स पोकरण, आउवा आसोप आदि के सामन्त थे तथा विरोधी सामन्तो का नेतृत्व आउवा ठाकुर कुशालसिंह कर रहा था। आउवा ठाकुर कुशालसिंह ने बिथोडा नामक ठिकाने के उत्तराधिकार के मामले मे अनुचित हस्तक्षेप करके महाराजा तख्तसिंह को नाराज कर दिया था। बिथोडा के ठाकुर ने महाराजा तख्तसिंह की अनुमति से कानजी नामक व्यक्ति को गाद लिया, जिसका आउवा के ठाकुर ने विरोध किया तथा ठाकुर कुशाल सिंह ने गाद लिय व्यक्ति कानजी को बन्दी बना लिया। (इस समय बिथोडा के ठाकुर की मृत्यु हो चुकी थी तथा कानजी बिथोडा का ठाकुर बन गया था) आउवा के ठाकुर न कानजी को तभी मुक्त किया जब उसन आउवा ठाकुर को

दस हजार रुपये देने का आश्वासन दे दिया। ठाकुर कुशालसिंह की इस कार्यवाही से क्षुब्ध होकर पालीटिकल एजेन्ट के कहने पर महाराजा तख्तसिंह ने ठाकुर कुशालसिंह पर तीन हजार रुपये जुर्माना कर दिया। ठाकुर कुशालसिंह ने जुर्माना न देकर अप्रेल 1857 ई म बिथोडा गाव मे आग लगवा दी और बिथोडा ठाकुर कानजी की हत्या करवा दी। महाराजा तख्तसिंह ने आउवा के ठाकुर को दण्डित करने के लिए एक सेना ठाकुर कुशालसिंह के विरुद्ध भेज दी जिसने बालोतरा पर आक्रमण कर दिया। लेकिन आउवा ठाकुर कुशाल सिंह ने राजकीय सेनाओ के आक्रमण को विफल कर दिया। इसी समय भारतव्यापी विप्लव को ध्यान म रखते हुए ब्रिटिश सरकार ने महाराजा स सैनिक सहायता मागी, जिसके फलस्वरूप राजकीय सेनाओ को वहा से वापिस बुलाना पडा और आउवा के ठाकुर के विरुद्ध कोई कार्यवाही नही की जा सकी[1]। इस सम्पूर्ण कार्यवाही म गूलर आसाप, आलणियावास आदि के सामन्तो ने ठाकुर कुशालसिंह के पक्ष का समर्थन किया।

मारवाड म यह सब उस समय घटित हो रहा था जबकि ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध भारत म एक व्यापक विप्लव उठ खडा हुआ था। मेरठ म हुए विप्लव की सूचना ए जी जी जार्ज लारेन्स को माउण्ट आबू मे 19 मई 1857 को प्राप्त हुई थी। अत ए जी जी ने 23 मई 1857 का राजपूताना क सभी शासको को एक परिपत्र भेजकर उनसे आग्रह किया कि वे अपने अपने क्षेत्र म शान्ति बनाये रखें, अपने राज्यो म विद्रोहियो को न घुसने दें और यदि उनके राज्य की सीमाओ मे विद्रोहियो का प्रवेश हो तो उन्हे तुरन्त गिरफ्तार करलें। परिपत्र म यह भी कहा गया कि वे सर्वोच्च सत्ता के प्रति निष्ठावान बने रह तथा उनके क्षेत्र म तैनात ब्रिटिश अधिकारी द्वारा, विद्रोह को दबाने हेतु जब भी सहायता मागी जाय, उस सहायता प्रदान की जाय[0]। महाराजा तख्तसिंह इस तथ्य से भलीभाति परिचित था कि उसका अस्तित्व ब्रिटिश सरकार के सहयोग पर निर्भर है। अत ए जी जी का परिपत्र प्राप्त होने से पूर्व ही ज्योंही उसे मेरठ व दिल्ली के विप्लव की सूचना मिली, उसने पोलीटिकल मॉक मेसन को राजकीय सहयोग का आश्वासन दिया[6]। 22 मई 1857 को पोलीटिकल एजेन्ट ने ए जी जी के निर्देशानुसार महाराजा तख्तसिंह से सैनिक सहायता की अपील की और उसने महाराजा को निम्न व्यवस्था करने का सुझाव दिया[7] —

(1) ब्यावर व पाली के बीच एक सैनिक चौकी स्थापित की जाय तथा एक सैनिक टुकडी अजमेर के निकट मारवाड की सीमा

पर तनात कर दी जाय ताकि आवश्यकता पडने पर अजमेर के लिये यह सैनिक टुकडी प्रयुक्त की जा सके।

(2) सामन्ता द्वारा दी जाने वाली सनिक सेवा को ब्यावर के निकट मारवाड की सीमा पर तनात कर दिया जाय।

(3) दो या चार सवार ब्यावर और पाली के बीच प्रत्येक दस मील के फासले पर तनात कर दिये जाय और उन सवारो को यह निर्देश दे दिया जाय कि ब्यावर, अजमेर व नसीराबाद की ओर स प्राप्त होने वाली सूचनाए पाली की ओर पहुचादें और इसी प्रकार पाली की ओर से प्राप्त होने वाली सूचनाए ब्य वर, अजमेर और नसीराबाद की तरफ पहुचादें।

(4) यदि इस माग (ब्यावर पाली) से कोई यूरोपियन अधिकारी गुजरे तो उनकी सुरक्षा की पूरी व्यवस्था की जाय।

(5) इस समय जो सेना गूलर मे तनात है उसे आलणियावास व लाडपुरा मे तैनात कर दी जाय।

(6) बिना एक क्षण नष्ट किये जितनी अधिक सभव हो सके एक सेना सीमा पर एकत्रित करली जाय तथा इस सेना के कमाण्डर कुशलराज सिंघवी को आदेश दे दिया जाय कि वह अजमेर के कमिश्नर तथा नसीराबाद के ब्रिगेडियर के आदेशो का पालन करें।

महाराजा तख्तसिंह ने इन आदेशा का तुरत पालन किया और 25 मई 1857 को इसकी सूचना पोलीटिकल एजेन्ट को भिजवा दी। महाराजा तख्तसिंह ने पालीटिकल एजेन्ट का यह भी लिखा कि ऐसे विप्लव प्राय कुछ समय के लिय ही भडकते हैं, अत विप्लवकारी शीघ्र ही कुचल दिये जायेंगे[8]। महाराजा तख्तसिंह ने कुशलराज सिंघवी को भी तत्सम्बधी आदेश देत हुए लिखा कि उसके पास इस समय जो 5,000 पैदल व अश्वारोही सेना तथा 20 तोपें हैं उनम स 2 000 अश्वारोही व पदल तथा छ तोपें आलणियावास म तनात करदे और 2,800 अश्वारोही व पदल तथा 12 तोपें उन विद्रोही सरदारो का दमन करने के लिये रखी जाय जा गूलर के ठाकुर को सहयोग दे रह है[9]। इसके अतिरिक्त दो तोपा सहित 200 घुडसवार मेरवाडा की सीमा पर स्थित बर नामक गाव की तरफ भेजे गये तथा महाराजा तख्तसिंह ने बर की तरफ 500 घुडसवार व पैदल सनिक और भेजने का वायदा किया। महाराजा न गूलर मे तनात सेनानायक को आदेश दिया कि यदि अजमेर के
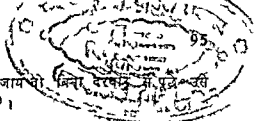
कमिश्नर द्वारा सहायता की मांग की जाय तो बिना देरी किए पूछे उसे तुरन्त सहायता उपलब्ध करा दी जाय[10]।

28 मई 1857 को महाराजा तख्तसिंह ने ए जी जी के निर्देशा का पालन करते हुए ब्यावर व पाली के बीच स्थित सनिक चौकी का विस्तार अजमेर व नसीराबाद तक कर दिया[11]। ब्रिटिश पोलीटिकल एजेन्ट ने महाराजा तख्तसिंह को सूचित किया कि ब्रिटिश सरकार सिरोही से अजमेर व मेरवाड़ा तक की सम्पूर्ण सीमा की सुरक्षा का दायित्व महाराजा का मानती है। महाराजा ने इस दायित्व को सहष स्वीकार कर लिया। बाद मे जोधपुर म बहुत ही महत्वपूर्ण सचार लाईन स्थापित की गई, जिसके फलस्वरूप ब्रिटिश साम्राज्य के विभिन्न भागो के बीच सचार व्यवस्था के लिय जोधपुर एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया। दिल्ली मे स्थित ब्रिटिश सेना के बीच सचार व्यवस्था भी इसी माग से होने लगी। इतना ही नही, डीसा से जो यूरोपियन अधिकारी अजमेर की ओर जा रहे थे, उन्हे हाथी ऊट, बलगाडिया आदि भी जोधपुर से प्रदान की जाती थी[12]।

ए जी जी जाज लारेन्स के निर्देशानुसार जोधपुर अश्वारोहियो की एक सेना कुशलराज सिंघवी के नेतृत्व म अजमेर के कोष व शस्त्रागार की रक्षाथ भेजी गई[13]। महाराजा तख्तसिंह द्वारा दी गई इस सहायता के लिये ब्रिटिश सरकार ने महाराजा के प्रति बडा आभार व्यक्त किया तथा कुशलराज सिंघवी के नेतृत्व म भेजी गई इस सेना की बडी प्रशसा की[14]। लेकिन जोधपुर राज्य की एक अन्य सेना जो महाराजा तख्तसिंह द्वारा अजमेर भेजी गई, का व्यवहार बडा उपेक्षापूर्ण रहा। इस सेना का नेतृत्व एक मुसलमान कर रहा था। यह सेना अजमेर पहुच कर अन्नासागर झील के पास ठहर गई तथा ब्रिटिश सत्ता के प्रति अनादर की भावना प्रदर्शित की। इस सेना के सनिको ने भूतपूव ए जी जी सदरलैंड के स्मारक पर पत्थर फेंक कर अपनी अनादर की भावना व्यक्त की[15]। इस प्रकार की कायवाही से लेफ्टिनेट कारनेल को इस सेना की वफादारी पर सदेह हुआ और उसने इस सेना का सायकाल से पूव ही अजमेर से वापिस जोधपुर जाने का आदेश दे दिया। लेफ्टिनेंट कॉरनेल ने इस सेना का यह धमकी भी दी कि यदि वे अजमेर से वापिस नही गई तो उसे अजमेर से बलपूवक निकाल दिया जायेगा। इस पर सेना ने बहाना बनाया कि गाडिया उपलब्ध न होने के कारण वे ऐसा करने मे असमर्थ है। इस पर कारनेल ने उनके लिये गाडियो का प्रबन्ध कर रात होने से पूव ही इस सेना को अजमेर से बाहर भेज दिया[16]।

इसी दौरान 18 जून 1857 को ग्वालियर के कुछ विप्लवकारी भाग कर जयपुर की तरफ आये[17]। महाराजा तख्तसिंह ने नावा, साभर, मारोठ और परवतसर के अधिकारियो को आदेश भिजवाया कि यदि जयपुर के महाराजा द्वारा सहायता की माग की जाय तो उन्हे तुरत सहायता प्रदान की जाय[18]। महाराजा तख्तसिंह ने जोधपुर से भी अपनी राजकीय सेना की एक टुकडी को जयपुर की तरफ विप्लवकारियो को दबाने के लिये भेजा[19]। महाराजा तख्तसिंह ने नीमच व नसीराबाद के विद्रोहियो के विरुद्ध भी एक सेना भेजी, जो इन छावनियो को लूटने के बाद दिल्ली की ओर जा रहे थे। लेकिन जोधपुर की इस सेना के पहुचने से पूर्व विद्रोही काफी दूर जा चुके थे, यह सेना लौटकर आगई और आगे के आदेशो का इन्तजार करने लगी[20]। ब्रिटिश अधिकारियो को सहायता देने के लिये जब अजमेर से कुछ रोकड रुपये ले जाये जा रहे थे तब भी, रुपया ले जाने वाले दल की सुरक्षा के लिये जोधपुर से एक सैन्य दल भेजा गया। महाराजा तख्तसिंह ने इस सैन्य दल को रात के समय जोधपुर से रवाना किया ताकि जोधपुर के लोगो को इस सैन्य सहायता की जानकारी न मिल सके[21], क्योकि जोधपुर मे अग्रेजो के विरुद्ध तीव्र आक्रोश था।

28 मई 1857 को नसीराबाद मे विप्लव भडक चुका था तथा छावनी के सैनिक छावनी को नष्ट करने के बाद दिल्ली की तरफ रवाना हो गये थे। अब अजमेर के ब्रिटिश अधिकारी लेफ्टिनेंट वाल्टर और लेफ्टिनेंट हीथकोट ने इन विप्लवकारियो का पीछा किया। इन अधिकारियो के साथ कुशलराज सिंघवी के नेतृत्व मे एक हजार मारवाड की फौज भी थी। कप्तान हाडकेसल को भी इस अभियान मे साथ भेजा गया क्योकि कप्तान हाडकेसल का राजपूतो से दीर्घकाल तक सम्पर्क रहा था अत मारवाड की फौज को उत्साहित करने के लिये हाडकेसल का उपयुक्त व्यक्ति समझा गया। लेकिन मारवाड की इस फौज ने विप्लवकारियो के विरुद्ध कोई कार्यवाही नही की[22]। इतना ही नही इस सेना ने यह भी प्रकट कर दिया कि उनकी सहानुभूति विप्लवकारियो के साथ है। फिर भी वे ब्रिटिश अधिकारियो के साथ साथ गये और विप्लवकारियो के पीछे पीछे रहे लेकिन विप्लवकारियो से टक्कर लेने का कोई प्रयास नही किया[23]। कुशलराज सिंघवी के नेतृत्व मे मारवाड की फौज कप्तान हाडकेसल के अधीन नीमच के विप्लवकारियो का पीछा करने हेतु भेजी गई थी। कप्तान हाडकेसल ने जयपुर दरबार से भी कुछ सैनिक सहायता प्राप्त करली थी जिसमे जयपुर के कुछ सरदारो की सेना भी शामिल थी। जयपुर की यह सेना कप्तान हाडकेसल के साथ लालसोट तक गई तथा हाड

केमल के शिविर से लगभग तीन मील की दूरी पर अपना शिविर लगाया। कप्तान हाडकेसल ने जब जयपुर की सेना को बुलाया तो उन्होंने पहले तो हाडकेसल को कहला दिया कि उन्हें फुर्सत नहीं है और बाद में उन्होंने लालसोट से आगे बढने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। जयपुर की यह सेना वहीं पर तब तक रुकी रही, जब तक कि कप्तान हाडकेसल के अधीन विप्लवकारियों का पीछा करने वाली फौज लौटकर नहीं आ गई[24]। जयपुर की सेना के इस प्रकार के व्यवहार ने मारवाड की फौज को भी प्रभावित किया, फिर भी कप्तान हाडकेसल उन्हें प्रोत्साहित कर सुहुर नामक स्थान तक ले गया। कप्तान हाडकेसल की योजना थी कि विप्लवकारियों को हिण्डौन में रोक लिया जाय, लेकिन जोधपुर की राजकीय सेना आगे नहीं बढी[25]। जब विप्लवकारी जोधपुर की सेना से काफी दूर निकल गये, तब जोधपुर की सेना हिण्डौन की तरफ बढने को राजी हुई। 27 अगस्त को वहाँ तैनात जयपुर की सेनाओं ने विद्रोह कर दिया और सरकारी गुप्तचर रिपोर्ट के अनुसार कुछ विप्लवकारी इस तरफ लौट रहे थे। अत इस स्थान को असुरक्षित समझते हुए तथा स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए कप्तान हाडकेसल ने विप्लवकारियों का पीछा करने का विचार त्याग दिया और जोधपुर की सेना को लेकर हिण्डौन से वापिस लौट आया[26]।

जोधपुर की सेना के इस व्यवहार पर टिप्पणी करते हुए कप्तान हाडकेसल ने कहा था कि यदि तात्कालिक परिस्थितियों का देखा जाय तो जोधपुर की सेना का यह व्यवहार विस्मयकारी नहीं था। यह सैनिक टुकडी उस सेना का एक भाग थी जिसे महाराजा तख्तसिंह ने अपने राज्य की सेवा हेतु स्थापित की थी। इस सेना में तीस से अधिक ठाकुर थे, जिनके परस्पर विरोधी स्वार्थ थे और वे एक दूसरे से ईर्ष्या करते थे। इनमें से कुछ तो ऐसे थे जो अपने राज्य की सीमा से बाहर जाने को तैयार नहीं थे और कुछ ठाकुर, विशेषकर कुचामन लाडनू के ठाकुर ब्रिटिश सरकार की सेवा में अपना साहस एव शौर्य प्रदर्शित करते हुए महाराजा तख्तसिंह के प्रति अपनी निष्ठा भक्ति दिखाना चाहते थे। इसीलिये यदि उन्हें विप्लवकारियों के विरुद्ध सफलता प्राप्त होने की आशा होती तो वे आगे बढकर विप्लवकारियों से टक्कर लेने को भी तैयार थे। लेकिन चूंकि जयपुर की सेना उनसे अलग हो चुकी थी तथा भरतपुर से भी उन्हें सहायता की कोई आशा नहीं थी, ऐसी परिस्थितियों में वे अपनी और अपने महाराजा की प्रतिष्ठा दाव पर लगाने को तैयार नहीं हुए क्योंकि विप्लवकारियों के पास उनसे अधिक एव सुसज्जित सेना थी[27]। कप्तान हाडकेसल की यह टिप्पणी राजपूती चरित्र से अनभिज्ञता प्रकट करती

है। यह बात सही है कि ठाकुरो मे परस्पर विरोधी स्वार्थ थे और वे एक दूसरे से ईर्ष्या करते थे, लेकिन ब्रिटिश नीति से सभी समान रूप से प्रभावित थे, जो उनके अधिकारो एव विशेषाधिकारो को समाप्त कर उन्हे राज्य मे अस्तित्वहीन करना चाहती थी। महाराजा तख्तसिंह की भी अपने सामन्तो के प्रति नीति सामन्तो के लिये हितकर नही थी तथा महाराजा की ब्रिटिश सत्ता के प्रति भक्ति भावना से भी वे भलीभाँति परिचित थे। ऐसी स्थिति मे उन ठाकुरो का ब्रिटिश सेवा मे रहकर महाराजा तख्तसिंह के प्रति निष्ठा भक्ति प्रदर्शित करने का प्रश्न ही कहा पदा होता है। तात्कालिक परिस्थितिया तो इस बात की ओर सकेत करती हैं कि उन ठाकुरो की सहानुभूति सभवत विप्लवकारियो के साथ थी। कप्तान हाडकेसल का यह कहना कि यदि उन्हे सफलता की आशा होती तो वे विप्लवकारियो से टक्कर लेने को तयार थे, कुछ असगत प्रतीत होता है। राजपूतो के चरित्र मे यह बात कभी देखने को नही मिलती कि सफलता की आशा होने पर ही वे शत्रु से टक्कर लेते थे। राजपूत तो युद्ध मैदान मे लडते हुए वीर गति प्राप्त करना गौरव समझते थे। इसलिये राजपूतो ने शत्रु के समक्ष जाकर कभी सफलता या असफलता के प्रश्न पर विचार नही किया। अत हाडकेसल के इस कथन मे भी सत्यता नही है।

जोधपुर राज्य और ब्रिटिश सरकार के बीच 1818 ई मे हुई सधि की धारा 8 के अनुसार जोधपुर राज्य ब्रिटिश सरकार 1500 सवार सहायता देने हेतु बाध्य था, किन्तु जोधपुर राज्य द्वारा प्रदत्त ये सवार अत्यन्त ही अनुशासनहीन व अयोग्य प्रमाणित हुए। अत 1835 ई मे जोधपुर राज्य व ब्रिटिश सरकार के बीच हुए समझौते के अनुसार जोधपुर राज्य ने इन 1500 सवारो के बदले ब्रिटिश सरकार को 1,15,000 रुपये वार्षिक देना स्वीकार कर लिया तथा ब्रिटिश सरकार ने जोधपुर राज्य से प्राप्त इस धनराशि से 1836 ई मे जोधपुर लीजियन नामक एक सेना तयार की[28]। इस जोधपुर लीजियन का मुख्यावास अजमेर से 110 मील की दूरी पर स्थित एरिनपुरा रखा गया। जोधपुर लीजियन मे तोपखाना सनिक, अश्वारोही सनिक और पदल सनिक सम्मिलित थे। अश्वारोही सेना उत्तम घोडो व साज-सामान के कारण अधिक प्रसिद्ध थी। पदल सेना मे आठ कम्पनी तो पूर्बिया सनिको की थी तथा तीन कम्पनी भील सैनिको की थी[29]। अगस्त 1857 मे एरिनपुरा स्थित जोधपुर लीजियन की एक सनिक टुकडी अभ्यास हेतु आबू गई हुई थी। 18 अगस्त को यह टुकडी रोवा के ठाकुर के विद्रोह को दबाने हेतु अनादरा नामक स्थान पर पहुँची[30]। जोधपुर लीजियन का कप्तान हॉल भी माउण्ट

आबू से उनर कर, 19 अगस्त को यहा सैनिको को आवश्यक निर्देश देने हेतु आ पहुचा। उसने सेना को बहुत ही अच्छी स्थिति म पाया तथा सेना म विप्लव का काई सकेत दिखाई नही दिया। आवश्यक निर्देश दन के बाद कप्तान हॉल पुन आबू की तरफ लौट गया। रास्त मे उसे जाधपुर लीजियन का एक हवलदार गाजनसिह मिला, जिसने कप्तान हॉल को, पूछने पर बताया कि वह अपने कुछ साथियो से मिलने अनादरा जा रहा ह। बाद म इसी हवालदार गोजनसिह न आबू मे आरम्भ हुए विप्लव मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी[31]।

अरावली पहाडी शृ खलाओ में आबू सर्वोच्च शिखर पर स्थित होने के कारण यूरोपियनो के लिये स्वास्थ्य लाभ का स्थान भी था। इसके अतिरिक्त जा यूरोपियन अधिकारी राजपूताना मे तथा अन्य पडोसी स्थानो पर तनात थे, उनके तथा उनके परिवार के लिये ग्रीष्मकालीन आवास हेतु आबू उनकी पसन्द का स्थान था। अगस्त 1857 मे जोधपुर लीजियन के 60 नेटिव सिपाहियो के अलावा 83 वी हिज मेजेस्टीज रेजीमट के 30–35 बीमार तथा स्वास्थ्य लाभ कर रहे सनिक भी आबू मे थे। इस रेजीमेट के चार आदमी प्रशिक्षण स्कूल के सुरक्षा प्रहरी के रूप मे तनात थे तथा शेष अपन बरक मे थे। 21 अगस्त को प्रात 3 बजे अनादरा गई हुई सैनिक टुकडी के चालीस पचास सनिक चुपचाप आबू की पहाडी पर चढे तथा यूरोपियन सनिको के बरक तक जा पहुचे। इस समय आबू म गहरा कोहरा छाया हुआ था, जिसके फलस्वरूप दस कदम की दूरी पर भी कोई चीज दिखाई नही दे रही थी। यूरोपियन सैनिको के बरक तक पहुच कर इन सिपाहियो ने अपनी बन्दूको से गालिया दागनी शुरू करदीं। इसके प्रत्युत्तर मे यूरोपियन सनिको न भी गालिया चलानी आरम्भ करदी तथा जोधपुर लीजियन के सनिको को वहा से खदेड दिया। चू कि प्रशिक्षण स्कूल कुछ दूरी पर थी तथा तेज हवा चल रही थी अत प्रशिक्षण स्कूल पर तनात सुरक्षा प्रहरियो ने गालियो की कोई आवाज नही सुनी। बरक मे कोई यूरोपियन सनिक हताहत नही हुआ। एक यूरोपियन सारजेंट लगभग 14 सिपाहियो को लेकर निकटस्थ दूरी से प्रशिक्षण स्कूल की तरफ रवाना हुआ[32]।

इसी समय विद्रोही सनिको की एक अन्य टुकडी ने कप्तान हाल के मकान पर भी आक्रमण किया जिसमे ए जी जो का पुत्र ए लारेस घायल हुआ। कप्तान हाल तथा उसका परिवार किसी तरह पिछले दरवाजे से भाग निकले तथा प्रशिक्षण स्कूल म जाकर श. ण ली। अपने परिवार को वही

छोडकर कप्तान हॉल व कप्तान यग, 83 वी रेजीमेंट के आठ आदमियो को लेकर जोधपुर लीजियन के शिविर की तरफ गये। दोनो पक्षो मे थोडी देर तक गोलिया चली तथा कप्तान हॉल ने विद्रोहियो को पहाडी के नीचे अनादरा की तरफ खदेड दिया। इस समय तक विभिन्न स्थानो पर तनात सभी सनिक विप्लवकारियो से मिल चुके थे। केवल भील सनिको ने विद्रोहियो का साथ नही दिया। सभी विद्रोही सनिक एरिनपुरा की तरफ रवाना हुए, लेकिन जब उन्हे मालूम हुआ कि सिरोही के राव शिवसिंह ने उनके विरुद्ध रास्ते मे दो तोपें तनात कर रखी है, तब वे उस रास्ते को छोडकर अन्य माग से एरिनपुरा की तरफ रवाना हुए[33] जहा जोधपुर लीजियन का मुख्यावास था। एरिनपुरा म स्थित जोधपुर लीजियन के सैनिको का नसीराबाद एव आबू क विप्लव की सूचना मिल चुकी थी। अत आबू से विद्रोहियो के यहा पहुचने के पहले ही सम्पूण छावनी मे विप्लव फूट पडा। इस समय एरिनपुरा म लफ्टिनेंट कोनोली तथा एक सारजेंट मात्र यूरोपियन अधिकारी और उनका परिवार मौजूद था, जिन्ह इस विप्लव की सूचना 22 अगस्त का प्रात 4 बजे अपन एक अदली मखदूमवरश द्वारा प्राप्त हुई। मखदूम बरश को आबू से एक विद्रोही सनिक ने एक पत्र लिखा था, जिसम उसने आबू म हुए विप्लव की अतिरजित सूचना देते हुए एरिनपुरा के सिपाहिया से आग्रह किया गया था कि वे एरिनपुरा छावनी की सभी तोपो का छीन लें तथा विद्रोह करन के वाद वे दिल्ली की तरफ प्रस्थान करदें। लेफ्टिनेंट कोनोली ने तुरत इसकी सूचना जोधपुर के पोलीटिकल एजेन्ट माक मेसन को भिजवादी और उससे तुरन्त सहायता भेजने की प्राथना की[34]। 22 अगस्त को प्रात जब काफी दिन निकल गया तब कोनोली घोडे पर सवार होकर परेड मैदान की तरफ गया। परेड मैदान म तोपखाने के सनिक तापो की ओर दौड रहे थे। कोनोली ने वहा पहुच कर उन्ह चेतावनी देते हुए तापो से दूर रहने का आदेश दिया। इस समय तक जोधपुर लीजियन की अश्वारोही सैनिक टुकडी भी विद्राही हो चुकी थी। यद्यपि भील सनिक पूणत वफादार रहे, लेकिन वे भी विद्रोहियो के विरुद्ध बढन का तयार नही हुए, क्योकि विद्रोहिया की सख्या अधिक थी और वे अत्यधिक उत्तेजित थे[35]। कोनोली ने जोधपुर लीजियन की पदल सनिक टुकडी का शात रहने की अपील की, लेकिन उसका कोई प्रभाव नही पडा। तत्पश्चात वह तापखाने की सनिक टुकडी की तरफ गया लेकिन तोपखाने के सनिका न तोपा क मुह उसकी तरफ करते हुए उस मार डालने की धमकी दी। तब कोनोली न अन्य दिशा से तापा तक पहुचने का प्रयास किया लेकिन कुछ अन्य सनिका न उसकी तरफ बन्दूकें तान कर उसका यह प्रयास भी विफल कर

दिया। फिर भी कुछ सैनिक कोनोली के बचाव के लिये आगे आये। रसालदार अब्बास अली ने ऐसी तनावपूर्ण स्थिति में अद्भुत साहस व वफादारी का परिचय देते हुए आगे आया। अब्बास अली ने अपनी पगडी उतार कर विद्रोही सैनिकों के पैरों में रखदी और कहा कि यदि कोई भी सैनिक कोनाली की तरफ बढ़ेगा तो उसे पहले मेरे शरीर के ऊपर से होकर गुजरना होगा। अब्बास अली की इस कार्यवाही ने कोनोली का प्राण रक्षा की और कुछ अश्वारोही सैनिक अब्बास अली के पक्ष में आगये[36]।

जोधपुर लीजियन के इस विद्रोह में एक आश्चर्यजनक तथ्य सामने आता है। इस विद्रोह के केवल दो महीने पूर्व लीजियन के सवारों ने एक लिखित याचिका प्रस्तुत की थी, जिसमे उन्होंने प्रार्थना की थी कि उन्हें विद्रोही सैनिकों अथवा अन्य शत्रुओं के विरुद्ध भेजकर अपना शौर्य उत्साह एवं वफादारी प्रमाणित करने का अवसर प्रदान किया जाय[37]। लेकिन दो माह बाद ही वे सभी विद्रोही हो गये और विद्रोह फूट पड़ने के बाद कुछ वफादार सैनिक कोनाली के प्राण बचाने हेतु अपनी जान की बाजी लगाने को तैयार हो गये लेकिन उन्होंने कोनाली के साथ या किसी किसी अन्य यूरोपियन के साथ उनकी सुरक्षा हेतु सिरोही जैसे सुरक्षित स्थान की ओर जाने से इन्कार कर दिया। उन्होंने कोनाली तथा अन्य यूरोपियन अधिकारियों के बाल बच्चो की सुरक्षा का दायित्व ग्रहण करने की तो इच्छा प्रकट की लेकिन उन बाल बच्चों के माता पिता की सुरक्षा करने में अपनी असमर्थता व्यक्त की[38]। विद्रोही सैनिकों ने यूरोपियनों को परेड मैदान में एक छोटे टेण्ट में रुकने और रात गुजारने की अनुमति प्रदान करदी। यद्यपि यूरोपियन इस टेण्ट में रुक गये और रात भी गुजारी, लेकिन विद्रोहियों के आतंक के कारण वे रात भर नींद नहीं ले सके।

23 अगस्त को प्रातः आबू के विद्रोही एरिनपुरा पहुंच गये जहां एरिनपुरा के विद्रोही सैनिकों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। सभी विद्रोही सैनिक यूरोपियनों के विरुद्ध आक्रामक रुख अपनाने को दृढ़ संकल्प थे किन्तु वफादार सैनिकों ने उन्हें यूरोपियनों को किसी प्रकार की हानि पहुंचाने से रोक दिया। 24 अगस्त को प्रातः विद्रोही सैनिकों ने लीजियन के सार्जेंट तथा उसके बीबी बच्चों को वहां से जाने की अनुमति दे दी और उन्हें शिवगंज के कामदार के साथ सुरक्षित रूप से सिरोही की ओर भेज दिया। उसी दिन विद्रोही सैनिकों ने मिलकर मेहरबानसिंह को जनरल के पद पर पदासीन कर दिया तथा मेहरबानसिंह ने विद्रोही सेना को यहां से चलने का आदेश दे

दिया। कोनाली का घोड़े पर बिठाकर साथ लिया गया और इसके साथ ही उसकी सुरक्षा की पूरी व्यवस्था की। रसानदार अब्बास अली, कोनाली की सुरक्षा हेतु बड़ी दृष्टि रखे हुए था। कोनोली की सलाह पर अब्बास अली ने जोधपुर के पालीटिकल एजेन्ट मॉक मेसन को सूचित किया कि वह पर्याप्त अश्वारोही सेना व तोपों के साथ विद्रोही सैनिकों से अलग होकर जोधपुर आने को तैयार है बशर्ते कि उसे तथा उसके साथियों को क्षमा प्रदान कर पुनः ब्रिटिश सरकार की सेवा में ले लिया जाय। लेकिन माक मेसन, अब्बास अली के इस प्रस्ताव को स्वीकार करने की स्थिति में नहीं था, क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने यह स्पष्ट आदेश दे रखा था कि किसी भारतीय सैनिक अथवा अधिकारी का कोई प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया जाय, जब तक कि विप्लवकारी शस्त्र धारण किये हुए हैं। अतः माक मेसन इस आदेश का उल्लंघन कर अब्बास अली के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकता था[39]।

जोधपुर लीजियन के विद्रोही सैनिक एरिनपुरा से पाली की तरफ जाने वाले रास्ते पर आगे बढ़ते जा रहे थे। इसी बीच जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह ने किलेदार अनाड़सिंह को एक सेना देकर भेजा और आदेश दिया कि वह ब्रिटिश अधिकारियों के परामर्श से कार्य करें तथा विद्रोही सैनिकों के पाली पहुंचने से पूर्व ही उन्हें रास्ते में रोकने का प्रयास करें[40]। अनाड़सिंह के साथ लगभग 700 घुड़सवार पैदल व ऊंट सवार तथा दो छोटी तोपें थी। लेकिन जब अनाड़सिंह को सूचना मिली कि विद्रोही सैनिकों की संख्या अधिक है तब अनाड़सिंह ने पाली में ही एक सुरक्षित स्थान पर रुक कर विद्रोहियों के आने का इन्तजार करने लगा[41]। इधर पाली की ओर बढ़ रहे विप्लवकारियों को जब सूचना मिली कि अनाड़सिंह पाली में ससैन्य तैनात है तब उन्होंने अपना रास्ता बदल लिया और खरवा के रास्ते की ओर बढ़ने लगे तथा आउवा के निकट एक गाव में अपना शिविर लगाया[42]।

उस समय आउवा का ठाकुर कुशालसिंह, महाराजा तख्तसिंह का तीव्र विरोध कर रहा था। जैसा कि पूर्व पृष्ठों में बताया जा चुका है कि ठाकुर कुशालसिंह ने बिथोरा के उत्तराधिकार के मामले में हस्तक्षेप करके महाराजा तख्तसिंह और ब्रिटिश अधिकारियों को नाराज कर दिया था। इसके अतिरिक्त ठाकुर कुशालसिंह व महाराजा तख्तसिंह के बीच सामन्तीय अधिकारों एवं विशेषाधिकारों के सम्बन्ध में भी झगड़ा चल रहा था। ठाकुर कुशालसिंह का कहना था कि उसकी जागीर का कोई व्यक्ति उसकी अनुमति के बिना उसका जागीर क्षेत्र नहीं छोड़ सकता लेकिन ब्रिटिश सरकार और महाराजा तख्तसिंह

ने उसके इस अधिकार को मानने से इन्कार कर दिया था और जब उसकी जागीर के दो महाजन ठाकुर की बिना अनुमति के जागीर क्षेत्र छोड़ दिया, तब ठाकुर ने उन दोनों महाजनों को लौटाने की माग की, लेकिन महाराजा तख्तसिंह ने उसकी माग ठुकरा दी[43]। अत दोनों पक्षों मे भीषण तनाव चल रहा था। गूलर, आलणियासवास व आसोप के सामन्ता के साथ-साथ लाम्बिया, बाटा, भीवालिया, राडावास, बाजावास आदि के सरदारो ने आउवा ठाकुर कुशालसिंह का पक्ष ग्रहण किया[44]।

जोधपुर लीजियन के विद्रोही सनिका के आउवा की तरफ आन की सूचना मिलन पर 31 अगस्त 1857 को ठाकुर कुशालसिंह ने जोधपुर के पालीटिकल एजेन्ट माक मेसन का सूचित किया कि उसने विप्लवकारिया का, जो उसके किले की दीवार के पास ठहर हुए है अस्त्र शस्त्र तथा सरकारी सम्पत्ति को समर्पित करने हेतु तयार कर लिया है, बशर्ते कि उन्हे क्षमा कर दिया जाय[45]। चू कि सर्वोच्च सत्ता के निर्देशानुसार माक मेसन ऐसे प्रस्ताव स्वीकार करन की स्थिति मे नही था, अत उसन ठाकुर कुशालसिंह को प्रत्युत्तर भिजवाया कि उस इस बात पर बेहद आश्चर्य हुआ है कि आउवा ठाकुर, जो ब्रिटिश सरकार व ब्रिटिश अधिकारियो की दृष्टि मे हमेशा वफादार व आज्ञाकारी रहा है वह ऐसे लागो को क्षमा प्रदान करने का प्रस्ताव कर रहा है जो देशद्रोही हैं और जिन्होन ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध विद्रोह किया है[46]। माक मेसन स इस प्रकार का प्रत्युत्तर प्राप्त होने पर ठाकुर कुशालसिंह ने विप्लवकारिया से बातचीत की और उन्हे अपने किले मे बुला लिया[47]। अब ठाकुर कुशालसिंह न विद्रोही सनिका के साथ मिलकर मारवाड व ब्रिटिश सरकार के सनिका से लडने का निश्चय किया। इसी बीच आसोप का ठाकुर शिवनाथसिंह, गूलर का ठाकुर बिशनसिंह और आलणियावास का ठाकुर अजीतसिंह अपनी अपनी सेनाए लकर आउवा आ पहुचे[48]। आउवा ठाकुर कुशालसिंह न खेजडला ठाकुर को भी विद्रोहियो का पक्ष ग्रहण करने को प्रोत्साहित किया लेकिन खेजडला ठाकुर व्यक्तिगत रूप से तो नही आया, केवल अपनी कुछ सेना भेज दी[49]। मेवाड के सलूम्बर रूपनगर लासाणी तथा आसीन्द के सामन्तो न भी अपनी-अपनी सेनाए आउवा भेज दी[50]।

इसी बीच किलेदार अनाडसिंह की सहायता के लिये जोधपुर से कुशलराज सिंघवी छत्रशाल, राजमल महता विजयमल मेहता आदि के नेतृत्व मे कुछ सेना और आ गई[51]। अनाडसिंह ने आउवा से कुछ ही मील की दूरी पर बिथोडा नामक गाव म अपना पडाव डाला तथा और सैनिक सहायता व

आवश्यक निर्देशो का इ तजार करने लगा। ए जी जी जाज लारेन्स को इस बात से घोर चिन्ता हो रही थी कि अनाडसिंह के नतृत्व म जोधपुर की सेनाओ ने अभी तक विप्लवकारियो पर आक्रमण नही किया था। अत ए जी जी जाज लारेन्स न महाराजा तख्तसिंह का बहुत ही कठोर शब्दो का प्रयोग करत हुए एक पत्र भेजा तथा उस पत्र की एक प्रतिलिपि अनाडसिंह के पास भी भेजी। इस पत्र मे ए जी जी न मारवाड की सेना पर बुझदिली पर कडा प्रहार करते हुए लिखा कि मारवाड की सेना विप्लवकारियो की परिचारक की भाँति उसके चारो आर नृत्य कर रही है और उनके विरुद्ध काई कायवाही करने से हिचकिचा रही है[52]। ए जी जी के इस प्रकार के पत्र से अनाडसिंह की भावनाओ को गहरी ठेस लगी। अत उसने निश्चय किया कि यदि वह विद्रोहियो पर पूण विजय प्राप्त नही कर लेगा तो वह असम्मानपूर्ण जिन्दगी लेकर जीना उचित नहीं समझेगा। इस निश्चय के साथ ही 8 सितम्बर को उसने अपनी तापा के मुह विद्रोहियो की तरफ खोल दिये। विद्रोही आउवा के किले की दीवार के पास एक पहाडी की ओट मे थे। अनाडसिंह द्वारा गोलाबारी आरम्भ करने पर विद्रोहियो न भी गोलाबारी आरम्भ करदी[53]। यह गोलाबारी लगभग तीन घटे तक चलती रही। मारवाड की राजकीय सेना के दस आदमी मारे गये, जिसमे मिठडी का ठाकुर भी सम्मिलित था। अनाडसिंह की सेना विद्रोही सेना से पूणत पराजित हुई[54]।

जिस समय अनाडसिंह पुन विद्रोहियो पर आक्रमण करने की तयारी कर रहा था लेफ्टिनेंट हीथकोट उसके शिविर म आ पहुचा। लेफ्टिनेंट हीथकोट को ए जी जी जाज लारेन्स ने अनाडसिंह को परामश देने हेतु भेजा था[55]। हीथकोट न यहा आते ही देखा कि विद्रोहियो का शिविर अनाडसिंह के शिविर के अत्यधिक निकट है। अत उसने अनाडसिंह को सुझाव दिया कि राजकीय सेना के शिविर के सामने छोटी छोटी सनिक टुकडियाँ तनात करदी जाय ताकि शत्रु सेना द्वारा अचानक आक्रमण करने पर ये सनिक टुकडिया शत्रु सेना को आगे बढने स राक सकें और इस दरम्यान राजकीय सेना लडने की तयारी कर सके। यद्यपि हीथकोट का यह सुझाव अत्यन्त ही महत्वपूण था, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि या तो इस सुझाव को ठीक ढग से कार्यान्वित ही नही किया गया अथवा यदि सनिक टुकडिया तैनात की गई तो इन टुकडियो न निष्ठापूवक अपना कत्तव्य पालन नही किया। हीथकोट के इस महत्वपूर्ण सुझाव की उपेक्षा राजकीय सेना एव स्वय अनाडसिंह के लिये अत्यन्त ही घातक सिद्ध हुई[56]। जिस दिन हीथकोट यहा आया उसी दिन दोपहर को पूव योजनानुसार पाच सौ अश्वारोही सेना के साथ विद्रोहियों पर

आक्रमण किया गया। लेकिन राजकीय सेना विद्रोहियों की तोपों के विरुद्ध आगे बढ़ने से हिचकिचाती रही, फलस्वरूप यह आक्रमण पूर्णतया असफल रहा। दूसरे दिन प्रातः विद्रोहियों ने अचानक राजकीय सेना पर आक्रमण कर दिया, फलस्वरूप जोधपुर की राजकीय सेना छिन्न भिन्न हो गयी। ऐसी संकटमय स्थिति में कुशलराज सिंघवी और मेहता विजयसिंह सहित अधिकांश राजकीय फौज अनाडसिंह को अकेला छोड़ युद्ध मैदान से भाग खड़ी हुई। फिर भी अनाडसिंह ने धैर्य और साहस नहीं खोया। इन विपरीत परिस्थितियों में भी अनाडसिंह अपने कुछ बहादुर सैनिकों के साथ शत्रु दल से भिड़ गया। यद्यपि उसने अपने साहस और शौर्य का अनुपम परिचय दिया, लेकिन अन्त में अनाडसिंह सहित राजकीय सेना के लगभग 76 आदमी मारे गये। लेफ्टिनेंट हीथकोट बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाकर वहां से भाग खड़ा हुआ और राजकीय सेना के शिविर की समस्त सामग्री विद्रोहियों के हाथ लगी[57]।

आउवा में राजकीय सेना की अपमानजनक पराजय की सूचना से ए जी जी जार्ज लारेंस को बड़ी चिन्ता हुई, क्योंकि यदि विद्रोहियों की इस सफलता के बाद ब्रिटिश सरकार चुपचाप बैठी रहती है और डीसा व नसीराबाद के बीच के मार्ग पर विद्रोहियों की गतिविधियों को रोकने का प्रयास नहीं करती है तो इस घटना का देश के विभिन्न भागों पर घातक प्रभाव पड़ सकता था। अतः ए जी जी जार्ज लारेंस ने ब्यावर में एक सेना एकत्रित की और उस सेना को लेकर स्वयं आउवा की तरफ गया[58]। यद्यपि इस महत्वपूर्ण अभियान हेतु ए जी जी पर्याप्त सेना एकत्रित नहीं कर सका था, फिर भी इस अभियान द्वारा वह सर्वोच्च सत्ता की शक्ति का प्रदर्शन करना चाहता था। ए जी जी की मान्यता थी कि स्वयं ए जी जी के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना का विद्रोहियों के विरुद्ध इस अभियान का निष्ठावान सैनिकों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा और साधारण जनता में पुनः विश्वास जागृत होगा। इसके अलावा ए जी जी को अपनी सफलता की पूर्ण आशा थी[59]। भारी वर्षा के कारण ए जी जी को आउवा पहुंचने में कई दिन लग गये। 18 सितम्बर को ए जी जी आउवा पहुंच गया। ए जी जी के ससैन्य आउवा के निकट पहुंचते ही विद्रोहियों ने गोलाबारी आरम्भ कर दी। ब्रिटिश सेनाओं ने भी प्रत्युत्तर में गोलाबारी आरम्भ कर दी। ब्रिटिश सेनाओं की तीन घंटे की गोलाबारी का इतना प्रभाव अवश्य हुआ कि विद्रोही सैनिकों ने अपनी तोपें पीछे हटालीं और शहर के भीतरी भागों में चले गये। ऐसा प्रतीत होता है कि विद्रोही ब्रिटिश सेना से खुले मैदान में मुकाबला करने को तैयार नहीं थे और शहर के भीतरी भागों में ब्रिटिश तोपें कारगर सिद्ध नहीं हो सकती थीं। जिस समय

ब्रिटिश सेना विद्रोहियो से संघपरत थी, उसी समय जोधपुर का पोलीटिकल एजेन्ट माक मेसन आउवा की तरफ आया और किसी से ए जी जी के बारे मे पूछा कि वह कहा है और उस दिशा की ओर रवाना हो गया, जिस दिशा की ओर उस व्यक्ति न सकेत किया था। जिस तरफ मॉक मेसन जा रहा था, उस दिशा से बिगुल की आवाज भी आ रही थी, अत उसने समझा कि ब्रिटिश सेना का शिविर भी उस तरफ ही है। मॉक मेसन कुछ ही गज की दूरी पर गया था कि विद्रोही शिविर मे दागी गई एक गोली उसके लगी, जिससे वह घायल होकर गिर पडा। उसके गिरते ही विद्रोही घुडसवारो न उसकी हत्या करदी तथा किले के दरवाजे के सामने उसका शव को उल्टा लटका दिया[60]। इस संघष म ए जी जी का बड़ी अपमानजनक पराजय का सामना करना पडा। इसम ब्रिटिश सेना का एक यूरोपियन सनिक व एक भारतीय सनिक मारे गये तथा तीन भारतीय सनिक घायल हुए। विवश होकर ए जी जी को चूलावास नामक गाँव की तरफ आना पडा। चूलावास म ए जी जी तीन दिन तक रुका रहा और यह आशा करता रहा कि विद्रोही उस पर मैदान म आकर आक्रमण करेंगे। लेकिन जब विद्रोहियो ने उस पर आक्रमण नही किया और उसे सूचना मिली कि विद्रोही अपनी स्थिति सुदृढ कर रहे हैं, तब वह लौटकर अजमेर आ गया[61]।

गवनर जनरल ने जाज लारे स के इस असफल अभियान को बडी गम्भीरता से लिया और कहा कि उसका यह अभियान अनावश्यक था और यह असफल अभियान राजस्थान का गम्भीरता से प्रभावित कर सकता है। गवनर जनरल ने ए जी जी को निर्देश दिया कि जहाँ तक सभव हो सके ऐसे अभियान मे भाग न लिया जाय[62]। किन्तु प्रिचाड ने जाज लारेंस की काय वाही का समथन करते हुए लिखा है कि इतिहास मे ऐसे अनेक उदाहरण विद्यमान है जबकि ब्रिटिश सेनाओ ने आउवा से भी अधिक शक्तिशाली स्थानो पर विजय प्राप्त की है, लेकिन लारे स की कठिनाई यह थी कि उसके पास बहुत ही कम यूरोपियन सनिक थे जिन पर वह विश्वास कर सकता था। दूसरी कठिनाई यह थी कि सम्पूण राजपूताना की प्रतिरक्षा के लिये जितने यूरोपियन सनिक उपलब्ध हो सकते थे, उतने सनिक उसके साथ थे और आउवा म उनका बलिदान करके लारेंस राजपूताना मे ब्रिटिश सत्ता की प्रतिरक्षा को खतरे म डालना नही चाहता था। प्रिचाड ने यह भी लिखा है कि लारेंस के सनिक आउवा मे सकटमय परिस्थितियो मे होते हुए भी शत्रु स मुकाबला करते हुए पीछे नही हटे और यहा तक कि जाज लारेंस की अपेक्षा उसके सनिक अपनी अनिच्छा से पीछे हटे थे[63]।

इसी बीच 13 सितम्बर 1857 को डीसा के विद्रोह। नेता रसालदार अब्दुल अली अब्बास, शेख मोहम्मद बख्श, सूबेदार, जमादार तथा सभी हिन्दू व मुसलमान सिपाहियो के नाम से मारवाड व मेवाड की जनता के नाम अपील प्रसारित की, जिसमे उन्हें शरण व सहायता देने को कहा गया था। इस अपील से इस बात का सकेत मिलता है कि मारवाड व मेवाड के सामन्त विद्रोहियो के साथ थे[64]। आउवा के ठाकुर कुशालसिह ने मेवाड म सलूम्बर रावत केसरीसिह को लिखा कि विद्रोहियो को सहायता दे तथा उस यह भी आश्वासन दिया कि दिल्ली के बादशाह की ओर से तुरन्त सहायता आने वाली है[65]। इस प्रकार के अनक पत्र ठाकुर कुशालसिह न सलूम्बर रावत केसरीसिह को लिखे थे, जिन्ह मेवाड मे देवगढ के रावत रणजीतसिह ने बीच म पकड कर ब्रिटिश अधिकारियो को सौप दिये थे।

ए जी जी जाज लारेन्स की आउवा मे पराजय से ब्रिटिश सत्ता की प्रतिष्ठा को भारी धक्का लगा। इसी समय यदि दिल्ली पर अग्रेजो की सफलता का समाचार प्राप्त न होता[66] तो जोधपुर के महाराजा तख्तसिह का अस्तित्व ही खतरे म पड जाता क्योकि ऐसी सूचना प्राप्त न होने पर जोधपुर लिजियन के विद्रोही सनिक विजयो माद मे जोधपुर की तरफ बढकर आक्रमण करते और महाराजा तख्तसिह अपने परिवार सहित एव यूरोपियन परिवार भी विद्रोहियो की दया पर निभर रह जाते। लेकिन दिल्ली पर अग्रेजो को विजय से विद्रोहियो का मनोबल गिर गया और महाराजा तख्तसिह मे एक नया आत्म विश्वास उत्पन्न हो गया। दिल्ली पर अग्रेजो की विजय घोषित करते हुए ए जी जी ने राजपूताना के लोगो को विद्रोहियो को शरण व सहायता देने के विरुद्ध चेतावनी दी। ए जी जी ने अपनी इस घोषणा म यह भी स्पष्ट कर दिया कि किसी व्यक्ति द्वारा विद्रोहियो को शरण देते समय 'शरणे' के अधिकार का बहाना स्वीकार नही किया जायगा[67]।

दिल्ली पर अग्रेजो का पुन अधिकार हो जाने से न केवल जोधपुर लीजियन के विद्रोहियो का मनोबल गिर गया बल्कि आउवा के ठाकुर कुशालसिह की महत्वाकांक्षा को भी भारी आघात लगा। फलस्वरूप जोधपुर लीजियन के विद्रोही आउवा ठाकुर से अलग हो गये। अब आउवा ठाकुर कुशालसिह ने महाराजा तख्तसिह को गद्दीच्युत करने हेतु एक योजना तयार की। उसने जोधपुर की गद्दी के दावेदार स्वर्गीय धोकलसिह के पुत्र को जोधपुर की गद्दी पर बठाने की योजना बनायी। तदनुसार उसने अपने प्रतिनिधियो का एक दल धोकलसिह के पुत्र के पास डिग्गी भेजा और उसे जोधपुर की गद्दी स्वीकार करने का आग्रह किया गया[68]। आसोप गूलर और आलणियावास के ठाकुर

जोधपुर लीजियन के विद्रोहियो के साथ 10 अक्टूबर को दिल्ली की तरफ रवाना हो गये ताकि वहां से सनिक सहायता प्राप्त की जा सके[69]। कई व मेलीसन ने लिखा है कि आउवा ठाकुर व *विद्रोही सनिको के बीच झगडा हो गया था* अत दोनो पक्ष सघपरत होने की बजाय दोनो ने अलग होना स्वीकार कर *लिया*[70]। *विद्रोही मारवाड के रास्ते से दिल्ली की तरफ रवाना* हुए और रेवाडी पर अधिकार कर लिया। अत इन विद्रोहियो के विरुद्ध से ब्रिगेडियर गेराड के नेतृत्व मे एक सेना भेजी गई। *16* नवम्बर को नारनौल म दोनो के बीच भीषण युद्ध हुआ, जिसम यद्यपि ब्रिगेडियर गेराड मारा गया, लेकिन इस सघष मे विद्रोहियो की निर्णायक पराजय हुई[71]। नारनौल मे हुए इस सघष के विवरण से ज्ञात होता है कि इस सघष म विद्रोहिया की पराजय उनकी भयकर भूल के कारण हुई थी। विद्रोही नारनौल से लगभग दो मील दूर एक सुदृढ स्थान पर थे, यहा पर जब विद्रोहिया ने देखा कि ब्रिटिश सेना लडने के लिये नही आ रही है इसलिये सभवत वह चली गई है। चूकि विद्रोहिया के पास ऐसा कोई नेता भी नही था जो यह देख सके कि ब्रिटिश सेना चली गई है या नही, सभी विद्रोही उस सुदृढ स्थान का छोडकर बाहर *निकल आये और बाहर निकलते ही ब्रिटिश सेना ने उन पर* आक्रमण कर दिया। यदि विद्रोही उस सुदृढ स्थान को नही छोडते तो सभवत उन्हे इतनी *आसानी से पराजित नही किया जा सकता*[72]। इस सघष म अनेक विद्रोही मारे गये और जो बच गये थे, वे वहा से भाग खडे हुए। चूकि जोधपुर *लीजियन मारवाड म एक आतक उत्पन्न कर चुकी थी और अब तक वह अजेय* समझी जाती थी, लेकिन जोधपुर लीजियन की इस पराजय का मारवाड मे *अनुकूल प्रभाव पडा। अब मारवाड के लोगो ने यूरोपियनो से टक्कर लेना* उचित नही समझा[73]।

दिल्ली पर अग्रेजो की विजय से यद्यपि आउवा का ठाकुर कुशालसिंह हतोत्साहित हुआ, तथापि वह अपने सहयोगियो को निरतर प्रोत्साहित करता रहा और अपने ठिकाने मे सुदृढ किलेबन्दी करता रहा, जो बाद मे उसकी प्रतिरक्षा के लिये बडी कारगर सिद्ध हुई। इधर जनवरी 1858 मे बम्बई से अतिरिक्त सेना आ गई अत आउवा के विरुद्ध पुन अभियान की तयारी की गई। कनल होम्स के नेतृत्व म लगभग 1800 सनिक इस अभियान हेतु भेजे गये[74]। 20 जनवरी 1858 को कनल होम्स की सेनाओ ने आउवा को घर लिया[75]। आउवा ठाकुर कुशालसिंह इस अचानक अभियान से घबरा गया, क्योकि उस समय उसके पास अपनी प्रतिरक्षा के लिये केवल 700 सनिक थे[76]। चार दिन तक आउवा का घेरा चलता रहा तथा दोनो पक्षो म भीषण

गोलाबारी हाती रही। जब ठाकुर कुशालसिंह को अपनी सफलता की कोई आशा नही रही, तब 23 जनवरी की रात्रि को, जबकि भीषण वर्षा हो रही थी और घोर अन्धेरा छाया हुआ था, अपने सरदारो एव कामदार की सलाह पर ठाकुर कुशालसिंह अन्धेरे का लाभ उठाते हुए वहा स बच निकला और मेवाड म अपने मित्र सामन्तो के यहा शरण ली[77]। ठाकुर कुशालसिंह के जाने क बाद कुशालसिंह के छोट भाई व लाम्बिया के ठाकुर पृथ्वीसिंह ने विद्रोहिया का नतृत्व ग्रहण किया[78]। विद्रोहिया व ब्रिटिश सेना के बीच चार दिन और सघर्ष चलता रहा। अन्त मे आउवा के किलेदार को रिश्वत देकर अग्रेजो न उस अपनी तरफ मिला लिया। फलस्वरूप किलेदार न किले का दरवाजा खोल दिया[79] जिससे ब्रिटिश सेना किल म प्रवेश कर गई और किले पर ब्रिटिश फौजो का अधिकार हो गया[80]। लेकिन अग्रज किले पर अधिकार करके भी सन्तुष्ट नहीं हुए, उन्होने पूरे गाव को बुरी तरह लूटा। यहा तक कि आउवा के मन्दिरो व मूर्तियो का भी ध्वस्त कर दिया गया। आउवा स महाकाली की मूर्ति को अजमेर लाया गया, जो आज भी अजमेर के म्यूजियम म विद्यमान ह। आउवा के किले स अग्रेजो को तोपें व भारी मात्रा मे गोला बारूद प्राप्त हुआ, जिसमे छ पीतल की तोपें, सात लोहे की तोपें, लगभग तीन टन बारूद और लगभग तीन हजार गोले सम्मिलित हैं। पीतल की तोपें अजमेर क शस्त्रागार म भेज दी गई तथा बारूद का प्रयोग आउवा ठाकुर के निवास स्थान एव किलेबन्दी को ध्वस्त करन म किया गया। अग्रेजो म बदले की भावना इतनी प्रबल थी कि उन्होने आउवा निवासियो को अमानवीय यातनाए दी तथा उन पर निमम अत्याचार किये[81]।

आउवा ठाकुर कुशालसिंह व उसके कुछ सहयोगियो के भाग निकलने तथा आउवा के पतन के बाद 23 जनवरी 1858 को सिन्ध अश्वारोही सनिको की एक टुकडी को विद्रोहियो का पीछा करने हेतु भेजा गया। लेकिन इस पीछा करने वाले दल को सिरियाली के ठाकुर ने रोक लिया। सिरियाली के ठाकुर न मार्ग के द्वार बन्द कर दिय तथा पीछा करन वाले मन्य दल को तब तक रोके रखा, जब तक कि विद्रोही वहा से काफी दूर नही चल गये। फिर भी पीछा करने वाले ब्रिटिश मन्य दल ने 124 विद्रोहियो को पकड कर बन्दी बना लिया और शेष बच कर भाग निकले। सिरियाली के ठाकुर को भी बन्दी बनाकर लाया गया[8-]। सिरियाली के ठाकुर की कार्यवाही को देखत हुए उसे जोधपुर के महाराजा को, उचित कार्यवाही करन हेतु सौप दिया तथा उसका गाव जब्त कर लिया। जिन 124 विद्रोहियो को बन्दी बनाया गया था, उनम से 24 विद्रोही तो ऐसे थे जो ब्रिटिश सत्ता के अधीन जोधपुर लीजियन मे थे

किन्तु विद्रोह हो जाने पर वे विद्रोहियों के साथ मिलकर अंग्रेजो के विरुद्ध शस्त्र उठा लिये थे। इन सभी पर सैनिक अदालत में देशद्रोह के अपराध में मुकदमा चलाया गया और उन्हें मृत्यु दण्ड दे दिया गया[83]। शेष बन्दी बनाये गये विद्रोही राजपूत थे, जिन्हें जोधपुर के कार्यवाहक पोलीटिकल एजेन्ट को सौंप दिया गया, ताकि जोधपुर दरबार द्वारा उनके विरुद्ध उचित कार्यवाही की जा सके[84]।

आउवा के अतिरिक्त, आसोप, गूलर व आलणियावास के ठिकाने की किलेबन्दी भी नष्ट कर दी गई क्योंकि इन ठिकानो के ठाकुर ब्रिटिश विरोधी थे तथा उन्होंने आउवा ठाकुर एवं अन्य विद्रोहियों को सहयोग व सहायता दी थी। आसोप के ठाकुर शिवनाथसिंह, गूलर के ठाकुर बिशनसिंह व आलणियावास के ठाकुर अजीतसिंह आउवा ठाकुर कुशालसिंह के निकट सहयोगी थे और वे तीनो आउवा से विद्रोहियों के साथ दिल्ली जाने हेतु नारनौल तक गये थे[85]। नारनौल में उन्होंने विद्रोहियों के साथ मिलकर ब्रिटिश सेनाओं से संघर्ष किया था। इस संघर्ष के दौरान ब्रिटिश सेना की एक टुकड़ी यहां से आसोप पर आक्रमण करने भेजी गई। ठाकुर शिवनाथसिंह को ज्योंही आसोप पर राजकीय फौजो के आक्रमण की सूचना मिली, वह लौटकर मारवाड आ गया। ठाकुर शिवनाथसिंह के पहुंचने तक राजकीय फौजो ने बिना किसी विशेष प्रतिरोध के आसोप पर अधिकार कर लिया लेकिन ठाकुर शिवनाथसिंह ने बडसू नामक स्थान पर राजकीय सेनाओं से भीषण युद्ध किया। यह संघर्ष लगभग पांच सप्ताह तक, तब तक चलता रहा जब तक कि उसकी युद्ध सामग्री समाप्त नहीं हो गयी। अंत में उसने आत्मसमर्पण कर दिया। ठाकुर शिवनाथसिंह को बन्दी बनाकर जोधपुर लाया गया और उसे किले के बन्दीगृह में डाल दिया। ब्रिटिश सरकार की सलाह से महाराजा तख्तसिंह ने उसकी जागीर जब्त करली[86]। ठाकुर बिशनसिंह व ठाकुर अजीतसिंह की अप्रैल 1857 में ही उनकी जागीरो से अपदस्थ कर दिया गया था अतः जब वे नारनौल से लौटकर आये तब उन्होंने शेखावाटी क्षेत्र में शरण ली, जहां से वे मारवाड में लूटपाट करते रहे[87]।

विप्लव की समाप्ति के बाद उन सभी ठाकुरों को दण्डित किया गया, जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से विद्रोहियों को सहायता दी थी। आउवा गूलर, आसोप आलणियावास व बाजावास के ठाकुरों को दस्यु घोषित किया गया। लगडी का ठाकुर काफी समय से अपने शासक के प्रति शत्रु भाव रखता था और विद्रोह काल में जब सितम्बर 1857 में ए जी जी जार्ज लारेन्स

ग्राउवा से लौटकर ग्रा रहा था तब बगडी ठाकुर ने अपने शहर के द्वार बन्द करवा दिये थे तथा जाज लारेन्स को रसद ग्रादि देने से स्पष्ट इन्कार कर दिया था। ग्रत मेजर मोरीशन ने बगडी ठाकुर को बुलाया तथा उस, उसकी इन गतिविधियो के कारण चेतावनी दी। बगडी की सम्पूरण जागीर जब्त करली गई। बगडी ठाकुर ने ग्रपन ठिकाने म जो प्रतिरक्षा हेतु किलेब दी की थी उसे ध्वस्त कर दिया गया तथा शहर के चारो ग्रोर जो सामरिक खाइया खुदी हुई थी उन्ह भर दिया गया। मोरीशन न बगडी ठाकुर तथा उसके चार पुत्रो को जोधपुर भेज दिया ग्रौर महाराजा तख्तसिंह को एक पत्र भेजकर बगडी ठाकुर के ग्रपराधो को सूचित करते हुए ग्रादेश दिया कि उन्ह राजधानी म तब तक बन्दी बनाकर रखा जाय जब तक कि वह ग्रपनी सम्पूरण बकाया राशि मारवाड सरकार को न चुका दे[88]।

ग्राउवा का ठाकुर कुशालसिंह ग्रगले कई वर्षों तक ग्रपनी जागीर पुन प्राप्त करने का प्रयत्न करता रहा। उसन ग्राउवा पर ग्रनक बार ग्रसफल ग्राक्रमरण भी किय ग्रौर यहा तक कि जब मध्य भारत का विद्रोही नता तात्या टोपे राजस्थान की ग्रोर ग्राया तब उससे सम्पक कर उससे सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न किया। लेकिन जब वह तात्या स सम्पक करन म ग्रसफल रहा तब उसने मेवाड मे कोठारिया के रावत जोधसिंह के यहा शरण ली। वह कोठारिया म 1860 ई तक रहा ग्रौर 1860 ई मे उसने नीमच म ब्रिटिश ग्रधिकारियो के समक्ष ग्रात्म-समपरण कर दिया। तत्पश्चात ब्रिटिश सरकार ने ग्रजमेर म एक सनिक ग्रदालत मे विद्रोही सामन्तो पर मुकदमे चलाये। इस मुकदमे म उस पर लगाये गये ग्रधिकाश ग्रारोपो स मुक्त कर दिया गया[89]।

1858 ई के ग्रन्त तक भारत व्यापी विप्लव की ग्राधी समाप्त हो गई, लेकिन इस विप्लव के फलस्वरूप ग्रग्रेजो व भारतीयो के बीच कटुता ग्रौर घृणा उत्पन्न करदी। ग्रग्रेजो न 1857 ई के सम्पूरण ग्रीष्मकाल म प्रतिशोध की भावना से काय किया[90]। गवनर जनरल लाड केनिंग इस प्रतिशोध की भावना को साम्राज्य के लिये घातक मानता था। यद्यपि इगलैंड म भी, जब भारत मे विप्लव फूट पडने के समाचार पहुचे थे तब वहा के लोगो ने भी प्रतिशोध की ग्रावाज उठाई थी, लेकिन ज्योही इगलैड म विद्रोह की समाप्ति के समाचार पहुचे, वहा भी प्रतिशोध की भावना समाप्त हो गई ग्रौर 1858 ई म इगलैड के समाचार पत्रो व ससद ने भारत सरकार को सहनशीलता एव दया से काय करने की सलाह दी। इगलड की ससद न 1858 ई म एक ग्रधिनियम पारित कर भारत मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन समाप्त कर

दिया और भारत का शासन ब्रिटिश ताज व संसद को सौंप दिया। यद्यपि इस परिवर्तन का भारतीय जनसाधारण पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा, लेकिन शासकों ने अपने आपको ब्रिटिश ताज से संबद्ध पाकर गर्व अनुभव किया। इंगलैंड की महारानी विक्टोरिया के नाम से एक घोषणा पत्र भारत भेजा गया, जिसे लार्ड केनिंग ने 1 नवम्बर 1858 को इलाहाबाद के भव्य दरबार में पढ़कर सुनाया। इसी घोषणा पत्र को 2 दिसम्बर 1858 को माउण्ट आबू में विभिन्न शासकों के वकीलों के दरबार में ए जी जी ने पढ़ कर सुनाया[92]। इस घोषणा पत्र में ईस्ट इण्डिया कम्पनी व देशी नरेशों के बीच हुई संधियों व समझौतों की पुष्टि की गई तथा देशी नरेशों के अधिकार सम्मान व प्राचीन गौरव को बनाये रखने का आश्वासन दिया गया। इस घोषणा पत्र द्वारा उन सभी विद्रोहियों को क्षमा करने की घोषणा की गई जो तुरंत हथियार डाल देंगे तथा जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजों की हत्या करने में भाग नहीं लिया है।

सम्पूर्ण विप्लव काल में राजपूताना के सभी शासकों ने बिना किसी अपवाद के ब्रिटिश सत्ता के प्रति अपनी वफादारी प्रदर्शित की थी तथा सर्वोच्च सत्ता को सभी संभव सहायता प्रदान की थी। अतः ब्रिटिश सरकार का विचार था कि यदि राजपूताना के शासकों की वफादारी का उचित प्रतिफल दिया जाय तो राजपूताना के शासक साम्राज्य के शक्ति स्तम्भ प्रमाणित हो सकते हैं। इसलिये ब्रिटिश सरकार ने विप्लव के बाद इन शासकों की अधिकाधिक सद्भावना प्राप्त करने का प्रयत्न किया। 1859 ई. में लार्ड केनिंग ने अपनी गृह सरकार को सुझाव दिया कि भारतीय देशी नरेशों की ब्रिटिश सत्ता के प्रति निष्ठा में वृद्धि करने हेतु उन्हें उपाधियों से विभूषित कर पुरस्कृत किया जाय[9']। ब्रिटिश सरकार ने इस सुझाव को स्वीकार कर एक नई उपाधि 'स्टार आफ इण्डिया' का सृजन किया जो आगे चलकर राजपूताना के शासकों के लिये आकर्षण का केन्द्र बन गई और इस उपाधि को प्राप्त करने हेतु वे सदैव ब्रिटिश सत्ता के प्रति अधिकाधिक निष्ठा प्रदर्शित करते रहे। इसके अतिरिक्त अप्रेल 1860 में केनिंग ने अपनी गृह सरकार को यह भी सुझाव दिया कि भारतीय शासकों को पुनः गोद लेने का अधिकार बिना शर्त प्रदान कर दिया जाय[93]। इस सुझाव को स्वीकार करते हुए 26 जुलाई 1860 को भारत सचिव चार्ल्स वुड ने वायसराय को यह अधिकार दे दिया कि वह सभी शासकों को गोद लेने के अधिकार की सनदें प्रदान करदें। तदनुसार 11 मार्च 1862 को जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह को भी इस प्रकार की सनद प्रदान करदी गई[94]। इसमें महाराजा को यह आश्वासन दिया गया

था कि यदि महाराजा के कोई निजी पुत्र नही होगा तो उसे तथा उसके उत्तराधिकारियो को हिन्दू कानून, रीति रिवाज और प्रचलित परम्परा के अनुसार किसी को गोद लेन का अधिकार होगा, जिसे मान्यता दे दी जायेगी। लेकिन इसके साथ शत यह रखी गई कि राज्य का राजघराना ब्रिटिश ताज के प्रति राजभक्त बन रहे तथा भारत मे ब्रिटिश सत्ता के प्रति अपनी सधि, समझौते आदि के अनुसार अपने कत्तव्य का पालन करते रहे। शासका के अतिरिक्त जिन अन्य व्यक्तियो ने विप्लव काल मे ब्रिटिश सत्ता के प्रति अपनी वफादारी प्रदर्शित की थी, उन्हें भी पुरस्कृत किया गया। तदनुसार कुचामन के ठाकुर केसरीसिंह व खरवा के ठाकुर सावतसिंह का एक सम्मान की तलवार एव पिस्तौल देकर पुरस्कृत किया गया[97]।

वस्तुत यह विप्लव महाराजा तख्तसिंह के लिये वरदान सिद्ध हुआ। महाराजा तख्तसिंह के विरोधी सामन्ता ने अपनी विरोधी गतिविधियो के कारण न केवल महाराजा के नाक मे दम कर रखा था, वरन् राज्य म अशाति एव अव्यवस्था उत्पन्न कर दी थी। महाराजा तख्तसिंह ने विप्लव काल म ब्रिटिश सत्ता के प्रति असीमित निष्ठा प्रदर्शित कर न केवल ब्रिटिश सरकार की सद्भावना प्राप्त करली थी, बल्कि उसे अपने विरोधी सामन्ता से छुटकारा मिल गया। क्योकि ब्रिटिश सरकार न ऐसे सामन्तो का पूणत शक्तिहीन कर दिया। विप्लव काल म इन विरोधी सामन्ता की विद्रोही गतिविधिया के कारण उन्हें दण्डित किया गया। कुछ विरोधी सामन्तो को तो राज्य से निर्वासित कर दिया और कुछ सामन्ता की जागीरें व गाव जब्त कर लिये गय। इतना ही नही, विरोधी सामन्ता की किलेबन्दी का पूणत नष्ट कर दिया गया ताकि भविष्य मे वे पुन कोई सशस्त्र विद्रोह न कर सके। विरोधी सामन्ता के विरुद्ध की गई इस प्रकार की कायवाही अन्य सामन्तो के लिये चेतावनी सिद्ध हुई[98]।

मारवाड म आउवा का विद्रोह केवल एरिनपुरा से जोधपुर लीजियन के आगमन के कारण अकस्मात नही हुआ था बल्कि यह तो दीघकाल से चली आ रही ब्रिटिश विरोधी भावना का परिणाम था। इस विद्रोह म मारवाड के प्रमुख सामन्तो–गूलर, आसोप, आलणियावास आदि के सामन्ता ने सक्रिय भाग लिया था। इन सामन्तो म ब्रिटिश विरोधी भावना इतनी अधिक प्रवल थी कि वे इस भीषण विद्रोह से भी सन्तुष्ट नही हुए, बल्कि व दिल्ली जाकर मुगल सम्राट बहादुरशाह से आदेश व सहायता प्राप्त करने को तयार हो गय। मारवाड के सामन्ता व मेवाड म सलूम्बर के रावत केसरीसिंह के बीच हुए

पत्र व्यवहार से[97], जो बीच म पकड लिये गये थे, स्पष्ट होता है कि मारवाड व मेवाड के लगभग सात सामन्त, आसोप के ठाकुर शिवनाथसिंह के नेतृत्व म दिल्ली जाने के लिये रवाना हुए थे। इस पत्र व्यवहार से यह भी स्पष्ट होता है कि ये सभी सामन्त, जिन्होन आउवा के विद्रोह मे भाग लिया था, मारवाड से बाहर अन्य स्थानों पर भी विद्रोह कराने की तयारी कर रहे थे। मारवाड के इन सामन्तो को मेवाड म सलूम्बर का रावत केसरीसिंह प्रोत्साहित कर रहा था तथा इन सभी सामन्तो का अपनी प्रजा का भी नतिक समर्थन प्राप्त था। यही कारण है कि वे अपने आबादी वाले क्षेत्रा से होकर दिल्ली की ओर प्रयाण कर सके थे। इस पत्र व्यवहार से इस तथ्य का भी रहस्योद्‌घाटन होता है कि आउवा ठाकुर के सहयोगी सामन्त, एरिनपुरा के विद्रोहिया का सहयोग प्राप्त न हान पर भी दिल्ली जाने का तयार थे। इन सभी तथ्यो से यह स्पष्ट हो जाता है कि आउवा का विद्रोह, एरिनपुरा के विद्रोहियो के आगमन से अकस्मात ही नही फूट पडा था, वरन् सशस्त्र विद्रोह की यहा बहुत समय पहले स ही तयारी चल रही थी। ऐसा प्रतीत होता है कि यदि आउवा का ठाकुर विद्रोहियों के साथ सम्मिलित न भी हाता तो भी मारवाड के अन्य सामन्त विद्रोह करने पर उतारु थे जसाकि पण्डित विश्वेश्वरनाथ रेउ ने लिखा है कि प्रारम्भ म आउवा का ठाकुर कुशालसिंह जोधपुर लीजियन के विद्रोहियो से सहयोग करन को तैयार नही हुआ था और वास्तव म गूलर के ठाकुर बिशनसिंह द्वारा उसे विद्रोह करने हेतु बाध्य किया गया था[98]। अत आउवा ठाकुर के सहयोगी सामन्तो मे ब्रिटिश विरोधी भावना अधिक प्रबल थी। यदि आउवा का विद्रोह केवल ठाकुर कुशालसिंह की ब्रिटिश विरोधी भावना तथा एरिनपुरा के विद्रोहिया के आगमन के कारण हुआ होता तो जोधपुर लीजियन के आउवा से चले जान और ठाकुर कुशालसिंह के आउवा स भाग निकलने के बाद विद्रोह और सघष समाप्त हो जाना चाहिये था, लेकिन वास्तविक स्थिति यह है कि राजकीय सेना आउवा के लागो से 1861 ई तक सघष करती रही। यहा तक कि जब ए जी जो ने आउवा पर आक्रमण कर आउवा को घेर लिया था तब पहली गोली गाव वाला की तरफ से राजकीय सेना पर चलाई गई थी[99]। अत स्पष्ट है कि स्वय गाव वाले भी अपने सामन्त का समथन कर रहे थे तथा उनम भी ब्रिटिश विरोधी भावना थी। यही कारण है कि जब कप्तान मॉक मेसन की हत्या की गई तब उसके सिर को आउवा के किले के द्वार पर लटका दिया गया था, लेकिन ऐसा व्यवहार किलेदार अनाडसिंह के शव के साथ नही किया गया[100]। भाटा व चारणा की कविताओ तथा तात्कालिक लाकगीना से स्पष्ट हाता है कि राजकीय सेना

पर ग्राउवा की फौज की विजय को अग्रेजो के विरुद्ध भारतीय सेनाग्रो की विजय माना गया।

यद्यपि विप्लवकारी पूरी तरह पराजित हुए तथा उनके विद्रोह को पूर्णत कुचल दिया गया, लेकिन विप्लवकारियो का बलिदान निरथक नही गया। इस विप्लव से जनमानस म यह बात प्रवेश कर गई कि सैनिक शक्ति से अग्रेज भले ही सफलता प्राप्त करलें, लेकिन जनसामान्य की ब्रिटिश विरोधी भावना समाप्त नही कर सकते। तात्कालिक लोकगीतो मे ग्राउवा के सघप का बडा लोकरजक वणन किया गया है और इसे गोरा और कालो का सघप बताया है। इन लोकगीतो म ग्राउवा ठाकुर कुशालसिह को अद्वितीय साहसी तथा विदेशी सत्ता से निर तर सघप करने वाला दशभक्त कहा गया है[101]।

सदर्भ टिप्पणी

1 एजेन्सी रेकाड हिस्टोरीकल रेकाड (हि रे) न 237, फाइल न 52 जोधपुर 1843, पृ 149

2 (i) फो पो कन्सलटेशन, 7 माच 1844 न 67–74
(ii) एजेन्सी रेकाड, हि रे न 250 फाइल न 81, जोधपुर 1851 खण्ड I, पृ 40–41
(iii) हकीकत खाता वही, न 12, पृ 512
(iv) खरीता वही, न 13, पृ 441

3 (i) फो पो कन्सलटेशन 22 मई 1857 न 82
(ii) एजेन्सी रेकाड हि रे न 250 फाईल न 81 जोधपुर खण्ड I पृ 35–36

4 (i) एजेन्सी रेकाड हि रे न 38 फाइल न 1 म्यूटिनी खण्ड I, पृ 112–113
(ii) डा आर पी व्यास रोल ग्राफ नाबिलिटी इन मारवाड पृ 133–134

5 (i) फो पो कन्सलटेशन, 26 जून 1857 न 115
(ii) एजेन्सी रेकाड, हि रे न 38, फाइल न 1, म्यूटिनी, खण्ड I, पृ 39–48

6 एजेंसी रेकार्ड, हि रे न 38 फाईल न 1, म्यूटिनी खण्ड I, पृ 110–111
7 एजेंसी रेकार्ड, हि रे न 38, फाईल न 1, म्यूटिनी खण्ड I पृ 112–113
8 एजेंसी रेकार्ड, हि रे न 38, फाईल न 1, म्यूटिनी खण्ड I, पृ 128–130
9 हकीकत वही न 18, पृ 366
10 एजेंसी रेकार्ड, हि रे न 38, फाईल न 1, म्यूटिनी खण्ड I, पृ 128–130
11 (i) फो पो क सलटेशन (सीक्रेट) 27 नवम्बर 1857 न 324
   (ii) एजेंसी रेकार्ड, हि रे न 38, फाइल न 1, म्यूटिनी खण्ड I, 171–172
12 (i) फो पो क सलटेशन (सीक्रेट), 27 नवम्बर 1857 न 323
   (ii) आई टी प्रिचार्ड द म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 192-194
13 (i) एजेंसी रेकार्ड, हि रे न 38, फाइल न 1, म्यूटिनी खण्ड I, पृ 184
   (ii) हकीकत वही न 18, पृ 382 व 384
   (iii) खास रुक्का परवाना वही न 8, पृ 47 व 131
   (iv) सनद वही न 126, पृ 63 व 554
   (v) अर्जी वही न 7, पृ 63
14 एजेंसी रेकार्ड हि रे न 38, फाइल न 1 म्यूटिनी खण्ड I, पृ 212–213
15 जी एच ट्रवर ए चेप्टर ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 6–7
16 वही ।
17 खरीता वही न 10, पृ 36
18 सनद वही न 126, पृ 557
19 खास रुक्का परवाना वही न 8 पृ 48
20 हकीकत वही न 18, पृ 366
21 हकीकत वही न 18, पृ 372
22 एजेंसी रेकार्ड, हि रे न 53, फाइल न 10, म्यूटिनी खण्ड II पृ 78
23 आई टी प्रिचार्ड द म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 60

24 एजेसी रेकाड, हि रे न 39, फाइल न 1, म्यूटिनी खण्ड II पृ 118–119
25 एजेसी रेकार्ड हि रे न 39, फाइल न 1, म्यूटिनी खण्ड II, पृ 119–120
26 एजेसी रेकार्ड, हि रे न 39 फाइल न 1, म्यूटिनी खण्ड II, पृ 120–121
27 एजेसी रेकाड, हि रे न 39, फाइल न 1, म्यूटिनी खण्ड II, पृ 121–122
28 (i) फो पो कन्सलटेशन, 5 दिसम्बर 1836 न 33–34
(ii) हकीकत बही न 36, पृ 147
(iii) खरीता बही न 10, पृ 347
29 (i) फो पो कन्सलटेशन 5 दिसम्बर 1836 न 33–34
(ii) आई टी प्रिचाड द म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 208–209
30 एजेसी रेकाड, हि रे न 39, फाइल न 1, म्यूटिनी खण्ड II, पृ 272
31 वही ।
32 एजेसी रेकार्ड, हि रे न 39, फाइल न 1 म्यूटिनी खण्ड II, पृ 272–273 व 298
33 एजेन्सी रेकाड, हि रे न 39, फाइल न 1, म्यूटिनी खण्ड II, पृ 274 व 291
34 एजेन्सी रेकाड, हि रे न 39 फाइल न 1, म्यूटिनी खण्ड II, पृ 286
35 एजेसी रेकाड, हि रे न 39, फाइल न 1, म्यूटिनी खण्ड II पृ 286–287
36 वही ।
37 एजेसी रेकार्ड हि रे न 39, फाइल न 1, म्यूटिनी खण्ड II, पृ 149–153
38 आई टी प्रिचार्ड द म्यूटिनीज इन राजपूताना पृ 219
39 रिपोट आफ द इन्टेलीजेन्स ब्रान्च डिवीजन आर्मी हेड क्वाटर, पृ 62
40 (i) सनद बही न 126, पृ 62–63

(ii) सनद वही न 130, पृ 3
(iii) अर्जी बही न 7, पृ 63

41 एजेंसी रेकार्ड, हि रे न 260, फाइल न 84, जोधपुर (ओल्ड) क्लेक्शन न 1, पृ 12

42 (i) एजेंसी रेकार्ड, हि रे न 260 फाइल न 84 जोधपुर (ओल्ड) क्लेक्शन न 1 पृ 13
(ii) हकीकत बही न 18 पृ 384

43 (i) आई टी प्रिचार्ड द म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 227
(ii) एस एन सेन एटीन फिफ्टी सेवन पृ 308

44 (i) सनद वही न 127, पृ 589
(ii) सनद बही न 128 पृ 320

45 (i) एजेंसी रेकार्ड हि रे न 260 फाइल न 84 जोधपुर (ओल्ड) क्लेक्शन न 1 पृ 6–7
(ii) राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस प्रोसीडिंग्ज वॉल्यूम II, पृ 144

46 (i) एजेंसी रेकार्ड हि रे न 260, फाइल न 84, जोधपुर (ओल्ड) क्लेक्शन न 1 पृ 8–9
(ii) राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस प्रोसीडिंग्ज वाल्यूम II पृ 144

47 (i) एजेंसी रेकार्ड हि रे न 66, फाइल न 34 म्यूटिनी 1858-59, पृ 59
(ii) सनद वही न 138, पृ 110
(iii) मारवाड प्रेसी, पृ 168

48 (i) सनद वही न 126 पृ 546
(ii) सनद बही न 127 पृ 592
(iii) ढोलिया रा कोठार फाइल न 59 व 63 (पृष्ठ नही दिये हैं)

49 वही।

50 (i) ढालिया रा कोठार फाइल न 63
(ii) ख्यात री बही, पृ 97 (बस्ता न 43, पुस्तक न 2)
(iii) मारवाड म सन् सत्तावन की चिंगारी, प 2
(iv) खड्गावत राजस्थान रोल इन द स्ट्रग 1857, प 50

51 (i) खास रुक्का परवाना वही न 8 पृ
(ii) अर्जी वही न 7, पृ 63

52 (i) आई टी प्रिचार्ड द म्यूटिनीज

(ii) राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस, प्रासीडिंग्ज वॉल्यूम II पृ 144 145

53 एजेंसी रेकार्ड, हि र न 260, फाइल न 84, जोधपुर (प्रोल्ड) कलेक्शन न 1 पृ 14

54 (i) फो पा कन्सलटेशन (सीक्रेट), 30 अक्टूबर 1857 न 489
(ii) हकीकत बही न 18, पृ 384 व 409

55 एजेंसी रेकार्ड हि रे न 260, फाइल न 84, जोधपुर (प्राल्ड) कलेक्शन न 1 पृ 14

56 रिपोर्ट ग्राफ द इन्टलीजेंस ब्रान्च, ग्रार्मी हेड क्वाटर, पृ 62

57 (i) फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर, 1858 न 3146-3147
(ii) एजेंसी रेकार्ड, हि रे न 40 फाइल न 1, म्यूटिनी खण्ड III, पृ 65-74
(iii) हकीकत बही न 18, पृ 384
(iv) मुशी ज्वालासहाय लॉयल राजपूताना, पृ 263-64

58 (i) फो पा कन्सलटेशन 31 दिसम्बर 1858 न 3146-3147
(ii) एजेंसी रेकार्ड, हि र न 53, फाइल न 10, म्यूटिनी खण्ड II पृ 78
(iii) हकीकत बही न 18 पृ 387
(iv) सी एल शॉवर्स ए मिसिंग चेप्टर ग्राफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 107

59 (i) एजेंसी रेकार्ड, हि रे न 53, फाइल न 10, म्यूटिनी खण्ड II, पृ 78
(ii) रिपोट ग्राफ द इन्टलीजेंस ब्रान्च, ग्रार्मी हेड क्वाटर, पृ 193

60 (i) फो पा कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146-3147
(ii) हकीकत बही न 18 पृ 387 व 409
(iii) हकीकत खाता बही न 4, पृ 131
(iv) सी एल शावर्स ए मिसिंग चेप्टर ग्राफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 108
(v) ग्राई टी प्रिचार्ड द म्यूटिनीज इन राजपूताना पृ 240-41

61 (i) फो पा कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 3147
(ii) एजेंसी रेकार्ड हि र न 260, फाइल न 84 जोधपुर *(प्रोल्ड) कलेक्शन न 1*, पृ 73-74
(iii) मारवाड म सन सत्तावन की चिंगारी पृ 3

(v) सी एल शावर्स ए मिसिंग चेप्टर ग्राफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 107–108

62 (1) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 30 अक्टूबर 1857 न 494
(ii) एजेन्सी रेकार्ड, हि र न 260 फाइल न 84, जोधपुर (ग्रोल्ड) क्लेक्शन न 1 पृ 46–47 व 72–73

63 आई टी प्रिचार्ड द म्यूटिनीज इन राजपूताना पृ 245 246

64 (1) फो पा कन्सलटेशन, 27 दिसम्बर 1857 न 249 51
(ii) खडगावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल ग्राफ 1857, पृ 152

65 फो पा कन्सलटेशन (सीक्रेट), 18 दिसम्बर 1857 न 214 15

66 (1) एजेन्सी रेकार्ड हि रे न 39 फाइल न 1 म्यूटिनी खण्ड II पृ 49
(ii) हकीकत बही न 18 पृ 389

67 एजेंसी रेकार्ड, हि रे न 39, फाइल न 1 म्यूटिनी खण्ड II, पृ 49

68 फो पा कन्सलटेशन (सीक्रेट), 27 नवम्बर 1857 न 347

69 (1) फो पा कन्सलटेशन (सीक्रेट) 18 दिसम्बर 1857 न 215
(ii) हकीकत बही न 18 पृ 403

70 केई व मेलीसन हिस्ट्री ग्राफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 387

71 (1) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 29 जनवरी 1858 न 292
(ii) हकीकत बही न 18, पृ 403
(iii) टी ग्रार होम्स ए हिस्ट्री ग्राफ इण्डियन म्यूटिनी, पृ 396–397

72 (1) पार्लियामेन्ट्री पेपर्स, खण्ड XLIV 1857–58 भाग 4, पृ 9–14
(ii) टी ग्रार होम्स ए हिस्ट्री ग्राफ इण्डियन म्यूटिनी, पृ 396-397

73 एजेंसी रेकार्ड, हि रे न 260, फाइल न 84, जोधपुर (ग्रोल्ड) क्लेक्शन न 1 पृ 101

74 एजेंसी रेकार्ड, हि रे न 53, फाइल न 10, म्यूटिनी खण्ड II पृ 78

75 (1) एजेंसी रेकार्ड, हि रे न 260, फाइल न 84, जोधपुर (ग्रोल्ड) क्लेक्शन न 1, पृ 82–83

(ii) हकीकत बही न 18, पृ 411

इस ब्रिटिश सेना मे नीबाज व रास के ठाकुर भी अपनी सेनाओ सहित सम्मिलित थे।

76 फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 28 मई 1858 न 333

77 (i) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 28 मई 1858 न 333

(ii) एजेन्सी रेकाड, हि रे न 66, फाइल न 34 म्यूटिनी 1858 59, पृ 14

(iii) एजेन्सी रेकाड, हि रे न 260, फाइल न 84, जोधपुर (ओल्ड) कलेक्शन न 1, पृ 101–102

(iv) ख्यात री बही, पृ 106-107 (बस्ता न 43 बुक न 2)

हकीकत बही न 18 के विवरण के अनुसार कनल होम्स की सहायताथ जोधपुर राज्य की ओर से माधोसिंह व अन्य प्रतिष्ठित सामन्तो की सेना भेजी गई थी और तत्पश्चात् विजयमल के नेतृत्व मे एक और सेना भेजी गई थी (हकीकत बही न 18, पृ 424) इससे स्पष्ट होता है कि 1800 ब्रिटिश सेना के समक्ष 700 सैनिको की आउवा की फौज अधिक शक्तिशाली सिद्ध हो रही थी। ऐसा भी कहा जाता है कि ठाकुर कुशालसिंह अपनी प्राण रक्षा हेतु नही भागा था, बल्कि वह मेवाड से सैनिक सहायता प्राप्त करने हेतु गया था।

78 (i) हकीकत बही न 18 पृ 409

(ii) ढोलिया रे कोठार फाइल न 59 (पृष्ठ नही दिये हैं)

79 (i) हकीकत बही न 18 पृ 409

(ii) मारवाड मे सन सत्तावन की चिगारी, पृ 3

80 एजेन्सी रेकाड, हि रे न 260, फाइल न 84, जोधपुर (ओल्ड) कलेक्शन न 1, पृ 84–85

81 ब्रिटिश सरकार ने स्पष्ट आदेश दिया कि आउवा के किले की बची हुई दीवारो को नष्ट कर दिया जाय तथा गाव के सभी मकान ध्वस्त कर दिये जांय ताकि भविष्य मे फिर कभी उनका प्रयोग अतिक्रमण के लिये न किया जा सके।

[फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 28 मई 1858 न 382]

2 (i) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 28 मई 1858 न 333

(ii) मारवाड प्रेमी पृ 171

83 एजेंसी रेकाड हि रे न 260, फाइल न 84, जोधपुर (ग्रोल्ड) कलेक्शन न. 1, पृ 84

84 वही।

85 (i) एजेंसी रेकाड, हि रे न 66 फाइल न 34, म्यूटिनी 1858 59, पृ 28
(ii) हकीकत वही न 18, पृ 403
(iii) ख्यात री बही, पृ 101–104 (बस्ता न 43 बुक न 2)

86 (i) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 28 मई 1858 न 333
(ii) हकीकत बही न 18, पृ 403
(iii) सनद वही न 127, पृ 345
(iv) सनद वही न 128, पृ 328

87 (i) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 28 मई 1858 न 333
(ii) एजेंसी रेकाड हि रे न 66, फाइल न 34, म्यूटिनी, पृ 3
(iii) सनद वही न 126 पृ 716

88 (i) फो पो क सलटेशन (सीक्रेट) 28 मई 1858 न 333
(ii) राजस्थान हिस्ट्री काग्रेस प्रोसीडिंग्ज वॉल्यूम VI पृ 94
अन्य ठाकुरो को भी अनेक प्रकार से दण्डित किया गया। द्रष्टव्य डॉ आर पी व्यास रोल आफ नोबिलिटी इन मारवाड, पृ 140

89 (i) एजेंसी रेकाड हि रे लिस्ट न 1, फाइल न 84, खण्ड II पृ 27
(ii) एन आर खड्गावत् राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल ऑफ 1857 पृ 46 व 53

90 विलियम केई ए हिस्ट्री आफ द सिपाई वार इन इण्डिया भाग 2, पृ 274–75

91 फो पो कन्सलटेशन 31 दिसम्बर 1858 नं 1190–1196

92 डिसपच ऑफ द इण्डियन फॉरेन डिपाटमट न 27, दिनाक 27 दिसम्बर 1859

93 डिसपच आफ द इण्डियन फॉरेन डिपाटमट न 43 ए दिनाक 30 अप्रेल 1860

94 सी यू एचिसन ट्रीटीज एन्गेजमेंट्स एण्ड सनद्स भाग 3 पृ 117

95 एजेसी रेकाड, हि रे न 52, फाइल न 10, म्यूटिनी 1858 59 पृ 143–146

96 एजे सी रेकाड हि रे न 260, फाइल न 84, जोधपुर (ग्रोल्ड) कलेक्शन न 1 पृ 115–116

97 फा पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 18 दिसम्बर 1857 न 214–215

98 प बिश्वेश्वरनाथ रेउ मारवाड का इतिहास, भाग 2, पृ 450

99 (i) हकीकत बही न 18 पृ 409
(ii) मु शी ज्वाला सहाय लॉयल राजपूताना पृ 281 282

100 (i) सी एल शॉवस ए मिसिंग चेप्टर ग्रॉफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 108
(ii) मु शी ज्वाला सहाय लॉयल राजपूताना, पृ 285

101 भरोसे खुशाल सक्ति भिडए सभियो सगला साथ रै
ग्राजाद हिंद करवा उमग निडर ग्राउवा नाथ रै।

कोटा मे मुक्ति सग्राम

राजस्थान मे हुए 1857 के विप्लव मे कोटा का विप्लव सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। ए जी जी जाज लारेस की रिपोट के अनुसार कोटा के विप्लव का कारण यह था कि ब्रिटिश अधिकारियो ने कोटा के महाराव रामसिंह को जो गुप्त परामश दिया था, वह कोटा के सैनिको को मालूम हो गया, इससे क्रुद्ध होकर कोटा के सनिको ने विद्रोह कर दिया था[1]। लेकिन जाज लारेस की इस रिपोट मे केवल आशिक सत्यता है। कोटा के विप्लव का एक मात्र कारण यह नही था, बल्कि राजस्थान के अन्य राज्यो की भाति कोटा मे भी ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध तीव्र आक्रोश था और पोलीटिकल एजेन्ट की महाराव को दी गई सलाह ने बारूद के ढेर म एक चिगारी का काय किया था। कोटा मे विप्लव फूट पडने के काफी समय पूव कोटा की राजकीय सेना मे अग्रेजो के विरुद्ध आक्रोश था और स्वय कोटा के महाराव को भी अपनी सेना पर विश्वास नही रह गया था। इसीलिये कोटा के महाराव ने कोटा के ब्रिटिश पोलीटिकल एजेन्ट को कोटा न आने की सलाह दी थी।

1818 ई मे राजपूत राज्यो से हुई सन्धियो के अन्तगत राजपूत राज्यो को अन्य सहायक सन्धि प्रथा मे सम्मिलित राज्यो की भाति अपने यहा अग्रेज सेना रखने तथा उसका खच वहन करने के लिय नही कहा गया था। किन्तु इन राजपूत राज्यो को अपने सरक्षण मे लेन के बाद परिवर्तित राजनतिक वातावरण मे ब्रिटिश सरकार सम्पूर्ण राजस्थान पर अपना नियत्रण रखने तथा अपने आर्थिक हितो की वद्धि के लिये शान्ति एव व्यवस्था को कायम रखने को उत्सुक हो उठी। शान्ति एव व्यवस्था के नाम पर विभिन्न राजपूत राज्यो म ब्रिटिश अधिकारियो के अधीन बटालियनें कायम की गइ, जिनका सम्पूर्ण व्यय सबधित राज्यो पर थोप दिया गया था। उदाहरणाथ मेवाड मे भील कार मारवाड मे जोधपुर लीजियन व जयपुर मे शेखावाटी ब्रिगेड की स्थापना की गई थी[2]। इसी नीति के अन्तगत 1838 ई म कोटा के लिये कोटा कन्टीन्जेंट की स्थापना की गई थी[3]। कोटा के शासक स इस

बटालियन का पूरा खच न लिया जाकर केवल दो लाख रुपये वार्षिक ही लिया गया,[4] जबकि अन्य राज्यो से पूरा खर्चा लिया गया था। नवनिर्मित बटालियनो की सम्पूर्ण व्यवस्था ब्रिटिश अधिकारियो के अधीन होने से अग्रेजो को इन बटालियनो के सैनिको से पूर्ण स्वामीभक्ति की आशा थी। लेकिन आगे चलकर अग्रेजो की यह आशा पूरी नही हुई, जसाकि पिछले अध्याय मे बताया जा चुका है कि मारवाड की जोधपुर लीजियन ने विद्रोह कर दिया था।

जब नीमच के विद्रोह की सूचना कोटा पहुची, तब जून 1857 म कोटा का पोलीटिकल एजेन्ट मेजर बटन कोटा कन्टोन्मेंट को लेकर नीमच के विप्लव को दबाने के लिये नीमच गया। लेकिन मेजर बर्टन के नीमच पहुचने से पूव ही नीमच के विद्रोही नीमच से पलायन कर चुके थे। अत बिना किसी प्रतिरोध के नीमच पर ब्रिटिश अधिकारियो का अधिकार हो गया। उधर कोटा म कोटा की राजकीय सेना मे ब्रिटिश विरोधी भावना प्रबल हो रही थी, अत ए जी जी का विचार था कि मेजर बटन का नीमच से लौटकर कोटा जाना सुरक्षित नही होगा। इसलिये मेजर बटन अपने परिवार सहित नीमच मे ही रुक गया। लेकिन जब उसने जोधपुर के पोलीटिकल एजेन्ट माक मेसन की हत्या तथा ए जी जी जाज लारेन्स के आउवा से पलायन के समाचार सुने तब वह पुन कोटा लौटने को तैयार हुआ, क्योकि उसका विचार था कि कोटा मे उसकी उपस्थिति, कोटा के महाराव के मनोबल को बनाये रखेगी। लेकिन कोटा महाराव की सूचना के अनुसार कोटा महाराव के वकील नन्दकिशोर ने मेजर बटन से कहा कि उसका कोटा लौटने का यह उचित समय नही है, क्योकि कोटा की राजकीय सेना मे ब्रिटिश विरोधी भावनाएँ अत्यधिक प्रबल हो रही हैं। इस पर मेजर बटन ने कोटा लौटने का विचार स्थगित कर दिया लेकिन उसक मन म कोटा लौटने की लालसा बनी रही[5]। कुछ समय बाद कोटा के महाराव ने नन्दकिशोर को सूचित किया कि राजकीय सेना की ब्रिटिश विरोधी प्रवृत्ति को काफी अशो तक समाप्त कर दिया गया है तथा सेनानायको ने यह आश्वासन दिया है कि पोलीटिकल एजेन्ट बिना किसी भय के कोटा आ सकता है[6]। नन्दकिशोर ने इसकी सूचना पोलीटिकल एजेन्ट को दे दी। अत मेजर बटन कोटा जाने को तयार हुआ। मेजर बटन ने अपनी पत्नी, एक पुत्री व तीन पुत्रो को नीमच म ही छोड दिया तथा दो पुत्रो का, जिसमे एक की आयु 21 वष थी तथा दूसरे की 16 वष थी, अपने साथ लेकर कोटा के लिये रवाना हुआ। माग मे चम्बल नदी पार करने के बाद नन्दकिशोर पुन कुछ हताश हुआ और मेजर बटन को यहा कुछ दिन रुकने का परामश दिया। लेकिन मेजर बटन के पुत्र न नन्दकिशोर की

इस आपत्ति को गम्भीरता से नही लिया तथा मेजर बटन ने नन्दकिशोर से कहा कि यदि कोटा मे उसकी आवश्यकता नही है तो वह बूंदी चला जायेगा। नन्दकिशोर ने देखा कि मेजर बटन ने कोटा जाने का निश्चय ही कर लिया है तब उसने आगे कोई आपत्ति नही उठाई। अत मेजर बटन, अपने दोनो पुत्रो व नन्दकिशोर के साथ 12 अक्टूबर 1857 को कोटा पहुचा[7]।

मेजर बटन के कोटा पहुचने से पूर्व ही कोटा की स्थिति विस्फोटक बन चुकी थी। कोटा की जनता एव सेना मे ब्रिटिश विरोधी भावनाओ का प्रसार करने का दायित्व मुख्य रूप से दो व्यक्तियो पर था-लाला जयदयाल और मेहराबखान। लाला जयदयाल 35 वर्षीय नौजवान था और मूल रूप से गोकुल (मथुरा जिला) का रहने वाला था। कोटा के महाराव ने उसे हाडौती एजेसी के लिये अपना वकील नियुक्त किया था। अत वह कोटा राज्य व हाडौती एजेसी के माध्यम से ब्रिटिश सरकार के बीच कडी का काम करता था। लेकिन कुछ समय पूर्व उसे राजकीय सेवा से पदमुक्त कर दिया गया था और इस समय वह बेरोजगार था[8]। मेहराबखान मूल रूप से करौली का रहने वाला था तथा कोटा की राजकीय सेना 'कोटा राज पलटन' की एक टुकडी 'पायगा पलटन' मे रिसालदार के पद पर कार्य कर रहा था। मेजर बटन के कोटा पहुचने से पूर्व लाला जयदयाल और रिसालदार मेहराबखान ने एक परिपत्र जारी किया[9] जिसमे कहा गया था कि अग्रेज, आटे व अन्य खाद्य पदार्थो मे मानव-हड्डियो का चूरा मिलाकर तथा कारतूसों पर गाय व सूअर की चर्बी लगाकर हमारे धर्म को नष्ट करना चाहते हैं। इस परिपत्र मे जन साधारण से तथा सैनिको से अपील की गई थी कि इन ईसाइयों को नष्ट कर दिया जाय। यद्यपि यह कार्यवाही गुप्त रूप से की गई थी, लेकिन जनसाधारण व सैनिको को इसकी जानकारी हो गई। फलस्वरूप कोटा के लोगो व सेना मे भारी उत्तेजना फैल गई। ऐसे वातावरण मे 12 अक्टूबर 1857 को मेजर बटन कोटा पहुचा और उसी दिन शाम को कोटा के महाराव ने दिल्ली पर अग्रेजो की विजय के उपलक्ष मे तोपें दाग कर इस विजय का स्वागत किया[10]। दूसरे दिन 13 अक्टूबर को कोटा का महाराव मेजर बटन से मिलने गया और 14 अक्टूबर की दोपहर मेजर बटन अपने दोनो पुत्रो को लेकर महाराव से मिलने गया। मेजर बटन कुछ देर तक महाराव से सार्वजनिक रूप से बातचीत की, तत्पश्चात दोनो मे गुप्त मत्रणा हुई। इस गुप्त मत्रणा के अवसर पर नन्दकिशोर के अतिरिक्त कोई व्यक्ति उपस्थित नही था। इस अवसर पर मेजर बटन ने महाराव को सुझाव दिया कि वह (महाराव) अपने पाच-सात अधिकारियो को पदच्युत कर ब्रिटिश अधिकारियो को सौंप दे ताकि

उन्ह दण्डित किया जा सके, क्योंकि उनका रवय्र ब्रिटिश विरोधी है[11]। मेजर बटन ने महाराव को उन पांच-सात अधिकारियो के नाम भी बताये, जिनका रवैया ब्रिटिश विरोधी था। लेकिन महाराव ने मेजर बटन को बताया कि जिनके अधिकारियो पर उसका कोई नियन्त्रण नही है[12]। मेलीसन के अनुसार मेजर बटन ने जिन अधिकारियो के नाम का उल्लेख किया था, महाराव न उन अधिकारियो को यह बात बता दी कि मेजर बटन ने उसे इस प्रकार की सलाह दी है, जिससे लोगो मे मेजर बटन के विरुद्ध आक्रोश फैल गया[13]। किन्तु श्री खडगावत न लिखा है कि सभवत नन्दकिशोर ने मेजर बटन व महाराव के बीच हुई गुप्त बातचीत का ब्योरा उन अधिकारियो को दे दिया था,[14] फलस्वरूप सारे सनिक क्रोध स उन्मत्त हो उठे और उन्होने मेजर बटन से बदला लेने का निश्चय कर लिया। मेजर बटन और महाराव के बीच हुई गुप्त बातचीत का ब्योरा चाहे किसी ने दिया हो या न दिया हो, लेकिन यह सत्य है कि मेजर बटन द्वारा दी गई सलाह की जानकारी सभी को हो गई।

नसीराबाद और नीमच के विप्लव की सूचना कोटा पहुच चुकी थी। कोटा कन्टीजेंट, जिसे नीमच भेजा गया था और वहां स आगरा भेजा गया था, वह भी सितम्बर 1857 मे विद्रोही हो गयी थी[15]। अत कोटा की राजकीय सेना मे भी उत्तेजना फल रही थी और जब मेजर बटन और कोटा महाराव के बीच हुई गुप्त मत्रणा का ब्योरा प्राप्त हुआ तो कोटा राजपलटन म भी विप्लव का विस्फोट हो गया। 15 अक्टूबर 1857 का कोटा राजपलटन की सेना, जिसम 'नारायण पलटन' के सभी सनिक एव 'भवानी पलटन' के अधिकाश सैनिक थे, छावनी से तोपें, तलवारें आदि लेकर रेजीडन्सी (मेजर बटन का निवास) की तरफ रवाना हुई और रेजीडेन्सी का घेर लिया[16]। इस विद्रोही सेना का नेतृत्व रिसालदार मेहराबखान और लाला जयदयाल कर रहे थे। मेहराबखान सेना का मुख्य अधिकारी था और लाला जयदयाल एक भूतपूर्व असनिक अधिकारी था। इस विद्रोही सेना का निर्देशन ये दोनो अधिकारी कर रहे थे। ये विद्रोही सनिक सख्या मे लगभग तीन हजार थे। ये सभी विद्रोही सनिक प्रात लगभग साढे दस बजे एजेन्सी बगले पर पहुचे और पहुचते ही उन्होने गोलाबारी आरम्भ कर दी[17]। बगले के सुरक्षा गार्ड ने कोई विशेष प्रतिरोध नही किया। विद्रोहियो ने सवप्रथम रजीडेन्सी के सजन डाक्टर सेल्डर तथा कोटा डिस्पेन्सरी के डाक्टर काण्टम की हत्या कर दी। यद्यपि बाद मे मेहराबखान पर चले मुकदमे के दौरान मेहराबखान ने इस बात से इन्कार किया था कि उसने डॉक्टर काण्टम की हत्या की लेकिन डॉक्टर काण्टम की पत्नी, श्रीमती लूसा काण्टम ने, जो इस घटना की प्रत्यक्षदर्शी थी

बयान मे मेहराबखान को ही इस हत्या के लिये उत्तरदायी बताया था[18]। कोटा महाराव को जब मालुम हुआ ता वह रेजीडेन्सी की तरफ जाने को तयार हुआ लेकिन उसके सुरक्षा गाड ने उसे न जाने की सलाह देते हुए उसे महल मे ही रोक लिया। अत महाराव ने देवीलाल नामक अपने प्रतिनिधि को, विद्रोही सेना को समझाने के लिये भेजा कि वह पालीटिकल एजेन्ट को कोई क्षति न पहुचाये। लेकिन देवीलाल के प्रयत्न विफल रहे और विद्रोहिया ने देवीलाल को गोली से उडा दिया[19]। तत्पश्चात विद्रोहियो न एजेन्सी बगले म आग लगादी और बगले की दीवार पर लकडी की सीढी लगा कर बगले की छत पर चढ गये। बगले मे मेजर बटन और उसके दोनो पुत्र थे, किन्तु उनकी रक्षा करने वाला कोई नही था। अत उन तीनो ने विद्राहियो का मुकाबला किया, किन्तु अत मे मेजर बटन और उसके दोनो पुत्र मारे गये। विद्राहिया ने मेजर बटन का सिर धड से अलग कर दिया[20] और उसे लेकर बगले के नीचे आ गये तथा अन्य सनिको के साथ सम्मिलित हो गये। विद्रोही सैनिको को कोटा राज्य के अधिकाश अधिकारियो यहा तक कि विभिन्न जिलो म तैनात जिला अधिकारियो एव विभिन्न किलो मे तनात किलेदारो का भी सहयोग व समथन प्राप्त हो गया। विद्राहिया ने राज्य के भण्डारो, राजकीय बगलो, दुकानो, अस्त्र शस्त्र के शस्त्रागारो, शहर की कोतवाली आदि पर अधिकार कर लिया। यहा तक कि उन्होने जिले के कोषागारो पर भी आक्रमण किया तथा कुछ क्षेत्र के किल्लेदार भी विद्राहियो के साथ हो गये[21]। कोटा राज पलटन की एक सनिक टुकडी, जो शेरगढ मे तनात थी, उसने भी विद्रोह कर दिया। विद्रोहियो ने मेजर बटन का सिर लेकर सारे शहर म घुमाया तथा कोटा महाराव के महल को घेर लिया। विद्रोहिया का पूरे शहर पर अधिकार हो गया तथा कोटा महाराव की स्थिति इतनी असहाय हो गयी कि वह एक प्रकार से अपने महल म कद हो गया[22]। लाला जयदयाल और मेहराबखान ने समस्त प्रशासन अपने नियन्त्रण मे ले लिया और जिला अधिकारिया को राजस्व वसूली के सम्बन्ध मे आदेश देने लगे।

कोटा मे विद्रोह इतना भीषण हो गया कि कोटा महाराव का अधिकार और प्रभाव केवल अपने महल तक सीमित रह गया। कोटा महाराव ने मेजर बटन की हत्या तथा समस्त घटना का विवरण देत हुए एक पत्र दिल्ली भेजने का प्रयत्न किया किन्तु विद्राहियो ने उस पत्र-वाहक को पकड कर कद कर लिया[23]। रात्रि के समय शन शन महाराव के स्वामीभक्त राजपूत महल की रक्षा हेतु पहुचने लगे। कविराज भवानीदास की सलाह से महाराव ने समस्त घटना का विवरण देत हुए ए जी जी को एक पत्र भेजा और करौली के

नामक राजा मदनपाल, जो कोटा महाराव के रिश्तेदार थे, से भी सहायता भेजने की प्रार्थना की। लेकिन कोटा महाराव की इन गतिविधियों की जानकारी विद्रोहियों को हो गयी। अत उन्होंने महल पर आक्रमण कर दिया। तब महाराव के स्वामीभक्त राजपूतों ने भी अपनी सेना को दो भागों म बाट कर विद्रोहियो पर जवाबी हमला किया, किन्तु विद्रोहियों की सख्या अधिक थी और वे अधिक शक्तिशाली थ, अत स्वामीभक्त राजपूतों को कोई सफलता नही मिली। अत महाराव ने मथुराधीश के मन्दिर के महन्त गुसाईंजी महाराज, जो कोटा राज्य के धर्मगुरु थे तथा जिनका सभी लोग सम्मान करते थे, को मध्यस्थ बनाकर विद्रोहियों के पास सुलह का स देश भेजा। दोनो पक्षो के प्रतिनिधि मथुराधीश के मन्दिर मे मिले। दूसरे दिन गुसाईंजी, लाला जयदयाल और मेहराबखांर महाराव से बातचीत करने महल म पहुचे। मेहराबखान और जयदयाल न महाराव को एक परवाने पर हस्ताक्षर करने के लिये विवश किया। इस परवाने में नौ शर्तें अथवा बातो का उल्लेख था, जिसमे एक बात यह भी थी कि मेजर बर्टन और उसके पुत्रो की हत्या महाराव के आदेश से की गई है और लाला जयदयाल को महाराव न अपना मुख्य प्रशासनिक अधिकारी नियुक्त किया है। इसके बदले म लाला जयदयाल और मेहराबखान ने लड़ाई बन्द करने का आश्वासन दिया। स्थिति की गम्भीरता को देखत हुए महाराव ने उस परवाने पर हस्ताक्षर कर दिये[24]। महाराव ने जब तक करौली स सनिक सहायता प्राप्त नहीं हो गयी, विद्रोहियों स समयानुकूल व्यवहार किया।

लगभग छ महीने तक कोटा महाराव का अपने राज्य के प्रशासन पर कोई अधिकार नही रहा[25]। लाला जयदयाल व मेहराबखान ने राज्य प्रशासन के समस्त अधिकार अपने हाथ मे ले लिये। यद्यपि विद्रोहियों ने लाला जयदयाल को अपना मुख्य कमाण्डर चुन लिया था, लेकिन विद्रोहियो ने बिना जयदयाल के निर्देशों के भी जसा चाहा, वसा किया[26]। मेजर बर्टन की हत्या के तीन चार महीने बाद जयदयाल और मेहराबखान न दयाराम नामक एक व्यक्ति को जो भाई साहब सेठ के नाम स विख्यात था, कैद कर लिया और उसे 20 दिन तक हिरासत म रखा[27]। जयदयाल और मेहराबखान ने भाई साहब सेठ स तीन लाख रुपया की मांग की। लेकिन अत मे महाराव के स्वामी भक्त सनिकों ने भाई साहब सेठ को मुक्त करवा लिया। मेहराबखान ने एजेन्सी कार्यालय के एक कर्मचारी अहमद बख्श को भी कद कर लिया और उससे सरकारी कोष के स्थान की जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया। विद्रोहियों ने धियोला महाराज के निवास पर भी आक्रमण किया, जिसमे लगभग

15 व्यक्ति मारे गये। तत्पश्चात विद्रोहियो ने अपनी तोपो के मुह पाटन के महलो की तरफ कर दिये तथा शहर को बुरी तरह से लूटा। राज्य के पाच प्रमुख कर्मचारियो रतनलाल, ठाकुर धनरूप कायस्थ, लालजीराम धाभाई, देवीलाल फौजबख्शी और लाला चतुर्भुज मुशी को तोपो से उड़ा दिया [8] क्योकि उन्होने विद्रोहियो का साथ देने से इन्कार कर दिया था। यह समस्त कार्यवाही लाला जयदयाल और मेहराबखान के निर्देशानुसार हो रही थी।

उपर्युक्त घटनाओ का सूक्ष्मता से विश्लेषण करने से प्रतीत होता है कि विद्रोहियो की समस्त कार्यवाही सुनियोजित एव सुसगठित थी। वे न केवल मेजर बर्टन की हत्या करने म सफल हुए बल्कि कोटा राज्य के अधिकाश अधिकारियो का समर्थन प्राप्त करने म भी सफल हो गये। वे अपने प्रत्येक अभियान मे सफल हो रहे थे। मेजर बर्टन की हत्या के कारण दण्डित होने के भय से वे महाराव के, एक परवाने पर हस्ताक्षर कराने मे भी सफल हो गये जिसम मेजर बर्टन की हत्या का दायित्व महाराव ने अपने ऊपर ले लिया। विद्रोहियो का पक्ष इतना प्रबल एव शक्तिशाली हो चुका था कि उन्हे ब्रिटिश सहायता के बिना खदेडना असम्भव हो गया। विद्रोहियो को मिली सफलता से प्रतीत होता है कि कोटा की सामान्य जनता ने भी विद्रोहियो को अपना सहयोग एव समर्थन दिया था। सभवत महाराव का काफी समय पहले लोगो की ब्रिटिश विरोधी भावनाओ की जानकारी मिल गई थी। इसीलिये महाराव ने पहले पालीटिकल एजेन्ट मेजर बर्टन को नीमच से न आने की सलाह दी थी। कोटा महाराव सभवत कोटा मे होने वाले विप्लव के प्रति सचेत था। इसीलिये जब पोलीटिकल एजेन्ट मेजर बर्टन ने महाराव को अपने कुछ अधिकारियो के विरुद्ध कार्यवाही करने की सलाह दी तब महाराव भावी खतरे से परिचित होने के कारण ही अपने अधिकारियो के विरुद्ध कार्यवाही करने मे अपनी असमर्थता व्यक्त की थी। कोटा के जन-सामान्य मे भी अग्रेजो के विरुद्ध तीव्र आक्रोश था। इसीलिय जब कोटा राज पलटन एजेन्सी बगले पर आक्रमण करने जा रही थी तब शहर के अनेक लोग इस सेना के साथ हो गये थे[29]। विभिन्न जिलो के तालुकेदारो ने भी विद्रोहियो को अपना समर्थन और सहयोग सभवत जन सामान्य के दबाव के कारण ही दिया था। अत कोटा म हुए विप्लव को केवल मेजर बर्टन की महाराव को दी गई सलाह से उत्पन्न आकस्मिक विप्लव स्वीकार नही किया जा सकता।

विद्रोहियो के दबाव के कारण कोटा का महाराव इतना असहाय हो चुका था कि उसने उदयपुर के महाराणा से प्रार्थना की कि वह (उदयपुर महाराणा) उसकी रानियो को कोटा की जनानी ड्योढी से हटवा कर उदयपुर

बुलाले क्योंकि कोटा की जनानी ड्योढी की एकान्तता खतरे मे है[30]। इसी प्रकार कोटा महाराव ने 6 मार्च 1858 को ए जी जी जार्ज लारेंस को एक पत्र भेजा, जिसमे कोटा के विप्लव का विवरण देते हुए लिखा कि सारा शहर विद्रोहियो के अधिकार मे है, उन्होने शहर के लोगो तथा सेठ साहूकारो को लूटा है और सारा राज्य उनके अधीन है। वे राज्य के राजस्व और लोगो की सम्पत्ति का अपहरण कर रहे हैं। मुझे मेरी जान बचाने का कोई रास्ता दिखाई नही दे रहा है। यद्यपि मैं ब्रिटिश सेना के आगमन की आशा रखता हू तथा मैंने अन्य मित्र शासको से भी सहायता मागी है, लेकिन मुझे दुख है कि अभी तक कही से भी सहायता प्राप्त नही हुई है[31]। महाराव के इस पत्र से उसकी असहाय एव दयनीय स्थिति का सही अनुमान किया जा सकता है। महाराव अपनी असहाय स्थिति से तभी छुटकारा पा सका जबकि करौली के शासक मदनपाल ने महाराव की सहायता के लिये 1500 सनिक भेजे। करौली से सनिक सहायता प्राप्त होने पर महाराव के स्वामीभक्त राजपूतो ने विद्रोहियो को पीछे खदेड दिया,[32] लेकिन कोटा शहर का एक भाग अभी भी विद्रोहियो के अधिकार मे था और वहा पर विद्रोहियो ने भीषण लूटमार कर आतक फैला दिया था[33]।

कोटा महाराव को करौली से सनिक सहायता प्राप्त हो गई थी और वह ए जी जी जार्ज लारेंस को भी कोटा विद्रोहियो से मुक्त कराने की प्रार्थना की थी। लाला जयदयाल और मेहराबखान को महाराव की इस प्रकार की कार्यवाही से खतरा अनुभव होने लगा। अत उन्होने ग्वालियर के सभलगढ के राजा गोविन्दराव विट्ठल से सहायता प्राप्त करने की आशा मे उसे एक पत्र लिखा,[34] जिसमे उन्होने कोटा के विप्लव का अत्यन्त ही रोचक वर्णन किया था। इस पत्र मे लिखा गया कि जब अग्रेजो की सेना विद्रोही हो गई और विद्रोहियो की विशाल सेना दिल्ली मे एकत्रित हो गयी तब कोटा के महाराव ने सोचा कि अग्रेजो की सत्ता समाप्त हो रही है, अत उसने अपनी सेना से कहा कि पोलीटिकल एजेन्ट की हत्या करदे ताकि वह 4 लाख रुपये के वार्षिक खिराज व सेना (कोटा कन्टीजेंट) के खर्चे देने से मुक्ति पा सके। उस समय पोलीटिकल एजेन्ट नीमच मे ठहरा हुआ था। महाराव ने अपना वकील भेजकर पोलीटिकल एजेन्ट को कोटा बुलवा लिया। दूसरे दिन सेना ने पोलीटिकल एजेन्ट मेजर बर्टन की हत्या करदी तथा उसके दोनो पुत्रो को भी मार डाला। सेना की इस कार्यवाही के उपलक्ष मे महाराव ने अपनी सेना के प्रत्येक सिपाही का वेतन एक रुपया बढा दिया तथा स्वय के हस्ताक्षर एव मुद्रा से अकित एक परवाना लिखकर हमे दिया जिसमे सनिको के वेतन मे की गई

वृद्धि का उल्लेख किया गया और सेना द्वारा की गई कार्यवाही (मेजर बर्टन की हत्या) पर संतोष व्यक्त किया गया है। यह परवाना अभी भी हमारे पास है। जब दिल्ली से विद्रोही सेना भाग खडी हुई और दिल्ली पर अंग्रेजों का पुन अधिकार हो गया तब महाराव ने दण्डित होने के भय से पोलीटिकल एजेन्ट की हत्या का सारा दोष सेना पर लगा दिया। जब सेना को महाराव की इस प्रकार की कार्यवाही की जानकारी मिली तब सेना ने विद्रोह कर दिया। सुबह से शाम तक लडाई चलती रही। करौली के राजा ने 4,000 सैनिकों की सहायता महाराव के लिये भेजी है तथा आस पास के अनेक राजपूत भी एकत्रित हो गये हैं। शिवपुर (ग्वालियर मे) का राजा, जो कोटा महाराव का साला है तथा ग्वालियर के महाराजा सिंधिया का विद्रोही है, भागकर कोटा की तरफ आया है और इस समय मांगरोल म रुका हुआ है, क्या आप उसे पकडने के लिये सेना भेजेंगे ? हम मे से कोई उसकी सहायता नही करेगा बल्कि हम भी उसे पकडने का प्रयत्न करेंगे और उसे ग्वालियर के दरबार मे हाजिर करेंगे। लेकिन इसके लिये महाराजा सिंधिया हमे लिखित आदेश भिजवाय और हमे सुरक्षा का आश्वासन दे व अंग्रेजो से दण्डित होने से बचाये। हम तो राज्य के साधारण कर्मचारी हैं और हमने तो केवल अपने शासक के आदेश (मेजर बर्टन की हत्या करने के संबध मे) का पालन किया है। इसके अतिरिक्त हमारी कोई गल्ती नही है। यदि आप इस तरफ सैनिक सहायता भेज देंगे तो हम आपको यह आश्वासन देते हैं कि कोटा राज्य का कुछ भू भाग आपको दे देंगे। महाराजा सिंधिया को इस पत्र का प्रत्युत्तर दीनदयालसिंह और मेहराबखान को व्यक्तिगत रूप से लिखना है। इस पत्र पर कोटा राज पलटन के मुख्तार दीन दयालसिंह व रिसालदार मेहराबखान के हस्ताक्षर थे। हस्ताक्षर के नीचे लिखा हुआ है कि यदि हमे सुरक्षा प्रदान की गई तो हम 20-25 तोपें, हाथी घोडों सहित दरबार मे उपस्थित हो जायेंगे और ग्वालियर महाराजा अपनी सेवा (चाकरी) हेतु हमे जहां भी भेजना चाहेंगे, हम वहां जाकर महाराजा की सेवा करने को तयार रहेंगे।

उपर्युक्त पत्र से स्पष्ट हो जाता है कि महराबखान एक अद्वितीय सेना नायक ही नही था बल्कि कुशल कूटनीतिज्ञ भी था। पत्र मे विप्लव की समस्त घटनाओं को इस प्रकार तोड मरोड कर पेश किया जिससे कि पढने वाला उन्हे सर्वथा दोष मुक्त समझे। इतना ही नहीं, मेजर बर्टन और उसके पुत्रों की हत्या का दायित्व भी बडी सफाई से महाराव पर डाल दिया। ग्वालियर महाराजा से सैनिक सहायता प्राप्त करने के लिये भी उसी के विद्रोही शिवपुर के राजा को पकडने का आधार बनाया अर्थात् सम्पूर्ण पत्र मे प्रत्यक्ष रूप

से अपनी कमजोरी या अपनी कोई गल्ती प्रकट भी नही होने दी, फिर भी सहायता भेजने की प्रार्थना भी कर दी। इस सहायता के बदले मे उन्होने न केवल ग्वालियर महाराजा का कोटा राज्य का कुछ भू भाग देने का ही प्रलोभन दिया बल्कि ग्वालियर महाराजा के आदेशानुसार सैनिक सेवा देने का भी आश्वासन दे दिया। यद्यपि मेहरावखान का सभलगढ अथवा ग्वालियर से सैनिक सहायता प्राप्त करने मे कोई सफलता प्राप्त नही हुई, क्योकि सभलगढ के राजा ने यह पत्र ग्वालियर म तैनात पोलीटिकल एजेन्ट मेजर एस सी मेकफसन को दे दिया और मेकफसन ने यह पत्र भारत सरकार के सचिव को भेज दिया,[35] तथापि इस पत्र द्वारा उसने अपनी कुशल कूटनीतिज्ञता का परिचय अवश्य दे दिया।

इस दौरान करौली से प्राप्त सैनिक सहायता से तथा गोटेपुर के ठाकुर द्वारा दी गई सहायता से कोटा के महाराव न अपनी स्थिति दृढ करली[36] तथा गुप्त रूप से ए जी जी को सैनिक सहायता भेजने की प्रार्थना करता रहा। ए जी जी ने भी कोटा की गम्भीर स्थिति को देखते हुए बम्बई से सेना मगवाई, जो मार्च 1858 मे मेजर जनरल एच जी राबर्ट्स के नेतृत्व म नसीराबाद पहुच गई। ए जी जी के आदेशानुसार मेजर जनरल राबर्ट्स नसीराबाद से 5,500 सनिक लेकर कोटा की तरफ आया तथा 22 मार्च 1858 को वह चम्बल नदी के उत्तरी किनारे पर पहुचा[37]। इस समय चबल नदी का दक्षिणी भाग विद्रोहियो के अधिकार म था, जहां उन्होने बडी सख्या मे तोपें लगा रखी थीं। मेजर जनरल राबर्ट्स ने चम्बल नदी के उत्तरी किनारे पर भारी सख्या मे तोपें लगादी तथा विद्रोहियो पर आक्रमण करने की योजना बनायी। 25 मार्च का मेजर जनरल राबर्ट्स को सूचना मिली कि नदी पार करने की बडी नावो को प्राप्त करन के उद्देश्य से विद्रोही राजमहल की तरफ आक्रमण करन वाले हैं। अत राबर्ट्स ने मेजर मीठ के नेतृत्व म 300 सनिक महाराव की सहायता के लिये भेजे। मेजर मीठ ने बडी कठिनाई से विद्रोहियो को पीछे खदेडा। इधर मेजर जनरल राबर्टस न चम्बल के उत्तरी किनारे से विद्रोहियो पर भयानक आक्रमण कर दिया। 27 मार्च को राबर्ट्स अपनी एक छोटी सनिक टुकडी को लेकर नदी पार की और किले मे बडी बडी तोपें ऐसी स्थिति मे तनात करदी कि तोपा के मुह विद्रोहियो के शिविर की तरफ रहें। 29 मार्च को जनरल राबर्ट्स न उन तोपा से गोलाबारी प्रारम्भ करदी। उधर चम्बल के उत्तरी किनार से, राबर्ट्स की शेष सेना भी विद्रोहिया पर गोलाबारी कर रही थी। 30 मार्च को जनरल राबर्ट्स तीन सैनिक टुकडियो को लेकर किले से, चम्बल के दक्षिणी भाग की तरफ रवाना हुआ।

विद्रोहियों पर चम्बल के उत्तरी किनारे से तथा किले की तरफ से निरन्तर गोलाबारी हो रही थी और जनरल राबर्ट्स भी अपनी तीन सैनिक टुकड़ियां के साथ चम्बल के दक्षिणी भाग की तरफ बढ़ रहा था इस प्रकार की मोर्चाबन्दी से विद्रोही घबरा गये और वहां से भाग खड़े हुए। अतः जनरल राबर्ट्स ने बिना किसी विशेष क्षति के चम्बल के दक्षिणी भाग पर अधिकार कर लिया। अंग्रेजों की यह विजय अत्यन्त ही महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। विद्रोहियों का मनोबल टूट गया और वे कोटा से भाग खड़े हुए। 30 मार्च तक सम्पूर्ण कोटा शहर को विद्रोहियों से मुक्त करवा दिया गया तथा जनरल राबर्ट्स ने कोटा शहर पर अपना अधिकार कर लिया[38]। इस भीषण संग्राम में लगभग 120-130 विद्रोही मारे गये। इसमें लाला जयदयाल का भाई हरदयाल मारा गया तथा मेहराबखान के भाई करीमखां को पकड़ कर फांसी पर लटका दिया गया[39]। शेष सभी विद्रोही भाग खड़े हुए, जो थोड़े बहुत पकड़े गये उन्हें गोली से उड़ा दिया गया। लाला जयदयाल और मेहराबखान वहां से भागने में सफल हो गये[40]। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें विद्रोही घोषित कर उन्हें पकड़ने हेतु गुप्तचर लगा दिये।

विद्रोही भाग कर गागरोन पहुंचे, जहां के मेवाती भी विद्रोहियों से आ मिले। कोटा महाराव ने फतहसिंह के नेतृत्व में एक सेना भेजी। इस सेना ने मेवातियों का बड़ी निर्ममता से कत्लेआम किया और जो मेवाती जिन्दा बच गये, उन्हें पकड़ कर कारावास में डाल दिया। तत्पश्चात् विद्रोही भाग कर मवरगढ़ गये, जहां के निवासियों ने उनका भव्य स्वागत किया और उन्हें रसद आदि प्रदान की। हाड़ौती एजेन्सी का पोलीटिकल एजेन्ट विद्रोहियों का पीछा करता हुआ वहां आ पहुंचा लेकिन उसके पहुंचने से पूर्व ही विद्रोही वहां से पलायन कर चुके थे। मवरगढ़ के निवासियों ने पोलीटिकल एजेन्ट का कोई आदर सत्कार नहीं किया। यहां पर जब पोलीटिकल एजेन्ट को सूचना मिली कि मवरगढ़ के दुकानदारों ने विद्रोहियों की बड़ी सहायता की है, तब पोलीटिकल एजेन्ट ने प्रत्येक दुकानदार पर 51 रुपया जुर्माना किया। लेकिन कोई भी दुकानदार यह जुर्माना देने को तैयार नहीं हुआ और वे गांव छोड़कर जाने लगे। इससे विवश होकर पोलीटिकल एजेन्ट को यह जुर्माना रद्द करना पड़ा[41]।

श्री खड़गावत ने कोटा फोर्ट रेकार्ड्स के आधार पर बताया है कि कोटा में विद्रोहियों ने लगभग 22,041 रुपये की सरकारी सम्पत्ति में आग लगादी तथा कोटा सरकार को विप्लव का दमन करने हेतु अतिरिक्त व्यवस्था करने के लिये लगभग 10 लाख रुपये खर्च करने पड़े। केवल करौली की सेना

के खान-पीने और आवास की व्यवस्था पर ही 1,15,087 रुपये खर्च करने पडे। जिला अधिकारी, जिन्हाने विप्लवकारियों का पक्ष ग्रहण कर लिया था, 2,28,205 रुपये का बारूद लेकर भाग गये। इस प्रकार कोटा सरकार को, इस विप्लव के फलस्वरूप, 18,46,454 रुपये की क्षति उठानी पडी थी[42]।

कोटा के विप्लव का दमन करने के बाद ब्रिटिश सेना ने भारतीयो के प्रतिकूल जनता पर जो भीषण अत्याचार किये उससे अग्रेजो के क्रोध और बदले की भावना का पता चलता है। नान्ता नामक गांव म ब्रिटिश सेना ने आम लोगो के मकानो पर आक्रमण किया और जो भी सम्पत्ति और नक्दी प्राप्त हुए उन्ह लूट लिया। यहा तक कि उन्होने गणेशजी की मूर्ति को पहनाये हुए जेवरो को भी नही छोडा। गुमानपुरा के एक कलाल ने विप्लवकारियो को शराब प्रदान की थी, अत उस पर 150 रुपये जुर्माना किया गया। गगाधर नामक एक सुनार ने कोटा के विद्रोही नेता जयदयाल को लगर बेचा था, अत उस पर 450 रुपये जुर्माना किया गया। नन्दगाव के एक व्यक्ति छोटूराम ने विप्लवकारियो के साथ मिलकर विप्लव म भाग लिया था, उस पर 200 रुपये जुर्माना किया। ब्रिटिश सेना विप्लवकारियो का पीछा करती हुई बडी कचेडी नामक गाव म पहुची, जहा के शान्तिप्रिय लोगो पर निमम अत्याचार किये। गांव के प्रत्यक मकान को लूट लिया और यहा तक कि खेता म जो अनाज पडा था, उसे भी उठा कर ले गये। खेतों मे खडी फसल को नष्ट कर दिया। लाला जयदयाल के समथक लोगो को ठोकरें मारी गई उनके मकानो को लूट लिया और उनमे आग लगादी गई। उन लोगो की सारी सम्पत्ति को जब्त कर उसे नीलाम कर दिया। यहाँ तक कि उन लोगो के आश्रितो पर भी निमम अत्याचार किये। गावो मे इतना आतक फला दिया कि लोग अपने मकानो को छोड कर भाग गये। चम्बल नदी के किनारे बसे हुए गाव ददवाडा के मेवातियो के टुकडे टुकडे कर दिये, क्योकि यहा के मेवातियो ने विप्लवकारियो को सहयोग एव समथन दिया था। तात्कालिक साहित्यकार और कवि सूयमल मिश्रण न अपने मित्र पीपल्या के ठाकुर फूलसिह को लिखे पत्र म अग्रेजो के निमम अत्याचारो का बडा ददनाक वणन किया है। सूयमल मिश्रण ने अपने एक अन्य पत्र, जो वडाणा के ठाकुर पवतसिह को लिखा था, उसमे उसने लिखा कि, "पहले कोटा की फौज ने विरुद्ध होकर एजेन्ट को मार डाला था, इस बात पर चत्र के महीने मे अग्रेजों की फौज ने यहा आकर लडाई की थी। चौथे दिन विद्रोही फौज ता यहा स निकल भागी और अग्रेजो ने कोटा का सब तरह से लूटकर खराब किया बहुत से आदमियो का फासी दी

विद्रोहिया पर चम्बल के उत्तरी किनारे से तथा किले की तरफ से निरतर गोलाबारी हो रही थी और जनरल राबट्स भी अपनी तीन सनिक टुकडिया के साथ चम्बल के दक्षिणी भाग की तरफ बढ रहा था इस प्रकार की मोर्चा बन्दी से विद्रोही घबरा गये और वहा से भाग खडे हुए। अत जनरल राबटस न बिना किसी विशेष क्षति के चम्बल के दक्षिणी भाग पर अधिकार कर लिया। अंग्रेजो की यह विजय अत्यन्त ही महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। विद्रोहिया का मनोबल टूट गया और वे कोटा से भाग खडे हुए। 30 माच तक सम्पूर्ण कोटा शहर को विद्रोहिया से मुक्त करवा दिया गया तथा जनरल राबटस ने कोटा शहर पर अपना अधिकार कर लिया[38]। इस भीषण सग्राम म लगभग 120-130 विद्रोही मारे गये। इसमे लाला जयदयाल का भाई हरदयाल मारा गया तथा मेहराबखान के भाई करीमखा को पकड कर फासी पर लटका दिया गया[39]। शेष सभी विद्रोही भाग खडे हुए, जो थोडे बहुत पकडे गये उ ह गोली से उडा दिया गया। लाला जयदयाल और मेहराबखान वहा से भागने म सफल हो गये[40]। ब्रिटिश सरकार ने उन्ह विद्रोही घोषित कर उन्हे पकडने हेतु गुप्तचर लगा दिये।

विद्रोही भाग कर गागरोन पहुचे, जहा के मेवाती भी विद्रोहियो से आ मिले। कोटा महाराव न फतहसिंह के नतृत्व मे एक सेना भेजी। इस सेना ने मेवातियो का बडी निममता से कत्लेआम किया और जो मेवाती जिन्दा बच गये उन्हे पकड कर कारावास मे डाल दिया। तत्पश्चात विद्रोही भाग कर मवरगढ गये, जहा के निवासियो ने उनका भव्य स्वागत किया और उन्ह रसद आदि प्रदान की। हाडौती एजेन्सी का पालीटिकल एजेन्ट विद्रोहियो का पीछा करता हुआ वहा आ पहुचा लेकिन उसके पहुचन से पूव ही विद्रोही वहा से पलायन कर चुके थे। मवरगढ के निवासियो न पोलीटिकल एजे ट का कोई आदर सत्कार नही किया। यहा पर जब पोलीटिकल एजेन्ट को सूचना मिली कि मवरगढ के दुकानदारो ने विद्रोहियो की बडी सहायता की है, तब पाली टिकल एजे ट ने प्रत्येक दुकानदार पर 51 रुपया जुर्माना किया। लेकिन कोई भी दुकानदार यह जुर्माना देने को तैयार नही हुआ और वे गांव छोडकर जान लगे। इससे विवश होकर पोलीटिकल एजेन्टको यह जुर्माना रद्द करना पडा[41]।

श्री खड्गावत ने कोटा फोट रकाड्स के आधार पर बताया है कि कोटा मे विद्रोहियो न लगभग 22,041 रुपये की सरकारी सम्पत्ति म आग लगादी तथा कोटा सरकार को विप्लव का दमन करन हेतु अतिरिक्त व्यवस्था करने के लिये लगभग 10 लाख रुपय खच करन पडे। केवल करौली की सेना

के खाने-पीने और आवास की व्यवस्था पर ही 1,15,687 रुपये खर्च करने पडे। जिला अधिकारी, जिन्होने विप्लवकारियों का पक्ष ग्रहण कर लिया था, 2,28,205 रुपये का बारूद लेकर भाग गये। इस प्रकार कोटा सरकार को, इस विप्लव के फलस्वरूप, 18,46,454 रुपये की क्षति उठानी पडी थी[12]।

कोटा के विप्लव का दमन करने के बाद ब्रिटिश सेना ने भारतीयो के प्रतिकूल जनता पर जो भीषण अत्याचार किये उससे अग्रेजा के क्रोध और बदले की भावना का पता चलता है। नान्ता नामक गाव मे ब्रिटिश सेना ने ग्राम लोगो के मकानो पर आक्रमण किया और जो भी सम्पत्ति और नकदी प्राप्त हुए उन्हें लूट लिया। यहा तक कि उन्होने गणेशजी की मूर्ति को पहनाये हुए जेवरो को भी नही छोडा। गुमानपुरा के एक कलाल ने विप्लवकारियो को शराब प्रदान की थी, अत उस पर 150 रुपये जुर्माना किया गया। गगाधर नामक एक सुनार ने कोटा के विद्रोही नेता जयदयाल को लगर बेचा था, अत उस पर 450 रुपये जुर्माना किया गया। नन्दगाव के एक व्यक्ति छोटूराम ने विप्लवकारियो के साथ मिलकर विप्लव मे भाग लिया था, उस पर 200 रुपये जुर्माना किया। ब्रिटिश सेना विप्लवकारियो का पीछा करती हुई बडी कचेडी नामक गाव मे पहुची, जहा के शान्तिप्रिय लोगो पर निमम अत्याचार किये। गांव के प्रत्येक मकान को लूट लिया और यहा तक कि खेतो म जा अनाज पडा था, उसे भी उठा कर ले गय। खेतो मे खडी फसल को नष्ट कर दिया। लाला जयदयाल के समथक लोगो को ठोकरें मारी गई उनके मकानो को लूट लिया और उनमे आग लगादी गई। उन लोगो की सारी सम्पत्ति को जब्त कर उसे नीलाम कर दिया। यहाँ तक कि उन लोगो के आश्रिता पर भी निमम अत्याचार किये। गावो मे इतना आतक फैला दिया कि लोग अपने मकानो को छोड कर भाग गये। चम्बल नदी के किनारे बसे हुए गाव ददवाडा के मेवातियो के टुकडे टुकडे कर दिये, क्योकि यहा के मेवातियो न विप्लवकारिया को सहयाग एव समथन दिया था। तात्कालिक साहित्यकार और कवि सूयमल मिश्रण ने अपने मित्र पीपल्या के ठाकुर फूलसिह को लिखे पत्र म अग्रेजा के निमम अत्याचारो का बडा ददनाक वणन किया है। सूयमल मिश्रण ने अपने एक अन्य पत्र, जो वडाणा के ठाकुर पवनसिह को लिखा था, उसमे उसने लिखा कि, "पहले कोटा की फौज ने विरुद्ध होकर एजे ट को मार डाला था, इस बात पर चत्र के महीने मे अग्रेजो की फौज ने यहा आकर लडाई की थी। चौथे दिन विद्राही फौज तो यहा से निकल भागी और अग्रेजा ने कोटा को सब तरह से लूटकर खराब किया वहुत से आदमियो को फासी दी

और बहुना को बन्दूक से मार डाला। बहुत सी स्त्रियों की इज्जत खराब की और बहुत सी तोपें फोड डाली तथा बहुत से रुपये लेकर महारावजी को कोटा वापिस दे दिया[43]।"

कुछ ब्रिटिश अधिकारियों का कहना था कि स्वयं कोटा के महाराव ने मेजर बर्टन की हत्या करवाने की योजना बनाई थी और इसी योजना के अनुसार महाराव ने मेजर बर्टन को नीमच से बुलाया था[44]। कप्तान ईडन ने ए जी जी को लिखे पत्र में अपनी निजी सूचना के आधार पर सूचित किया था कि कोटा के महाराव के अधीन दो उद्दण्डी अधिकारी रतनलाल और जियालाल काय पर रहे थे और मेजर बर्टन की उन्हें पदच्युत करने की सलाह के बावजूद महाराव ने उन्हें पदच्युत नहीं किया। कप्तान ईडन का कहना था कि इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि स्वयं महाराव विद्रोहियों से मिला हुआ था[45]। जबकि ए जी जी ने भारत सरकार को जो रिपोर्ट भेजी थी, उसमें उसने लिखा था कि विद्रोहियों ने महाराव से जबरदस्ती एक प्रलेख पर हस्ताक्षर करवाये थे जिसमें मुख्य बात यह थी कि मेजर बर्टन की हत्या उसके (महाराव के) आदेश से की गई थी[46]। अत ब्रिटिश सरकार ने एक जाच आयोग गठित किया जिसे निम्न तीन बिन्दुओं पर जाच करने के आदेश दिये गये —

(i) उन परिस्थितियों की जाच करना जिसमें पोलीटिकल एजेंट मेजर बर्टन और उसके दो पुत्रों की हत्या हुई।

(ii) इन हत्याओं में महाराव के दायित्व की जाच करना अर्थात इन हत्याओं में महाराव का हाथ था या नहीं।

(iii) इन हत्याओं को बचाने में महाराव की सक्षमता की जाच करना अर्थात महाराव इन हत्याओं को बचा सकता था या नहीं।

यद्यपि जाच आयोग ने सर्वसम्मति से इन हत्याओं के लिये महाराव को निर्दोष घोषित किया, किन्तु मेजर बर्टन को नीमच से कोटा बुलाने के लिये महाराव को उत्तरदायी ठहराया। ऐसा प्रतीत होता है कि जाच आयोग ने मेजर बर्टन व उसके पुत्रों की हत्या के लिये महाराव को अपराधी बताया था[47] इसीलिये ए जी जी ने महाराव पर 15 लाख रुपये जुर्माना लगाने का सुझाव, भारत सरकार को भेजा था। किन्तु भारत सरकार ने महाराव को सर्वथा दोषमुक्त घोषित कर दिया[48]। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत सरकार राजस्थान के एक महत्वपूर्ण शासक को विद्रोही घोषित करना उचित नहीं समझती थी। क्योंकि ऐसा करने पर कोटा में पर्याप्त मात्रा में सेना रखना अनिवार्य हो जाता और ऐसी परिस्थितियों में जबकि कोटा का सम्पूर्ण

शहर उत्तेजित था, विद्राहिया को निशस्त्र करना अत्यन्त कठिन हो जाता[49]। स्वय ए जी जी ने इस बात को स्वीकार किया था कि महाराव इतना असहाय और प्रभावहीन हो गया था कि वह मेजर बटन और अन्या को नही बचा सका[50]। स्वय महाराव ने भी ए जी जी को लिखे पत्र म इन घटनाओ पर गहरा दुख प्रकट किया था और हत्याओ के प्रति अपनी अज्ञानता बताते हुए उन्हें बचाने मे अपनी असक्षमता बताई थी[51]। यद्यपि कोटा महाराव के विरुद्ध गठित जाच आयोग ने महाराव को निर्दोष घोषित कर दिया था तथा भारत सरकार ने भी उस दोषमुक्त कर दिया था, फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि मेजर बटन की हत्या के कारण आन्तरिक रूप स ब्रिटिश सरकार महाराव स नाराज थी। इसीलिय कुछ समय बाद ब्रिटिश सरकार न महाराव की सलामी की तोपा की सख्या 17 से घटाकर 15 करदी थी[52] कोटा राज्य स लिये जाने वाले खिराज की रकम म वृद्धि करदी और महाराव की कोटा राज पलटन की सैनिक सख्या म भारी कमी करदी[53]। इतना ही नही, 1875 ई म प्रिन्स आफ वेल्स के भारत आगमन के अवसर पर, राजस्थान के सभी शासको को प्रिन्स ऑफ वेल्स का स्वागत करने हेतु आगरा आने का निमत्रण दिया गया, किन्तु कोटा महाराव को निमत्रण नही भेजा गया। इस पर कोटा महाराव ने वायसराय से प्रार्थना की कि उसे भी आगरा आने की अनुमति प्रदान की जाय[54]। लेकिन चूकि कोटा महाराव को आमन्त्रित न करने का पहले ही निर्णय लिया जा चुका था[55] अत महाराव की प्रार्थना को अस्वीकार करते हुए उसे तार द्वारा सूचित कर दिया गया कि अब काफी देर हो चुकी है, अत महाराव को निमत्रण नही भेजा जा सकता[56]। ब्रिटिश सरकार की यह नाराजगी बिना किसी कारण के थी, ऐसा कोई साक्ष्य या प्रमाण नही है जिसके आधार पर यह कहा जा सके कि महाराव का विद्रोहियो को कोई गुप्त समर्थन भी प्राप्त था। वस्तुत कोटा का विप्लव ही इतना भयकर था कि महाराव चाहते हुए भी विप्लवकारियो के विरुद्ध कार्यवाही न कर सका।

कोटा के सम्पूर्ण विप्लव के मुख्य नेता मेहराबखान और लाला जयदयाल 30 मार्च 1858 को मेजर जनरल एच जी राबर्टस के हाथो पराजित होने के बाद वहा से किसी तरह निकल भाग थे। मेहराबखान कोटा स भाग कर गुडगाव व फिरोजपुर की तरफ गया और इस क्षेत्र मे काफी समय तक अपने आपको छुपाये हुए घूमता रहा[57]। लेकिन अन्त मे उसे पकड लिया गया। मेहराबखान को गिरफ्तार कर देवली लाया गया, जहा 12 दिसम्बर 1859 को उस पर मुकदमा चलाया गया। यह मुकदमा कार्यकारी पालीटिकल एजेन्ट,

मेजर जे सी ब्रुक की अदालत मे चलाया गया। मेहराबखान पर सात आरोप लगाये गये[58] —

(1) 15 अक्टूबर 1857 को जब महाराव की सेना ने एजेंसी बगले पर आक्रमण किया वह (मेहराबखान) विद्रोही सेना के साथ था।

(2) उसने मेजर बर्टन व उसके दोनो पुत्रो की हत्या की है।

(3) उसने मेजर जनरल एच जी रावर्टस के नेतृत्व मे आई ब्रिटिश सेना से मुकाबला किया।

(4) एजेन्सी बगले पर आक्रमण करने तथा मेजर बर्टन व उसके दोनो पुत्रो की हत्या के समय वह विद्रोही सेना का मुख्य सैनिक अधिकारी था और उस विद्रोही सेना का नेतृत्व किया था।

(5) उसने कोटा डिस्पेन्सरी के डॉक्टर काण्टम की हत्या की है।

(6) उसने एजेंसी के सर्जन, डॉक्टर सेल्डर की हत्या की है।

(7) एच जी रावर्टस के नेतृत्व मे ब्रिटिश सेना का जिस विद्रोही सेना ने मुकाबला किया उस विद्रोही सेना का उसने नेतृत्व प्रदान किया।

मेहराबखान ने प्रथम व तीसरे आरोप को छोडकर किसी भी आरोप को स्वीकार नही किया। मेहराबखान ने 17 दिसम्बर 1859 को अपने बयान मे कहा कि जब मेजर बर्टन की हत्या के बाद सेना वापिस छावनी की तरफ लौट रही थी, तब राज्य का हरकारा एक पत्र लेकर आया, जिस पर राजकीय मुद्रा अंकित थी। उस पत्र मे महारावजी ने सेना से कहा कि 'तुम लोगो ने फिरगी बर्टन साहब की हत्या करदी है, तुम छावनी मे चले जाओ और अपने कर्त्तव्य का पालन करो, जो कुछ तुम लोगो ने किया है, ऐसा सभी जगह किया गया है।" दूसरे दिन जयदयाल, साबिरअली, लक्ष्मण और राधाकिशन महारावजी के पास गये और महारावजी के प्रति आदर व्यक्त किया। ऐसा भी सुना गया था कि इस अवसर पर महारावजी ने साबिरअली को बहुमूल्य उप हार भी दिया था। साबिरअली अपने साथ महारावजी का एक पत्र भी लाया, जिसमे महारावजी ने कहा था कि जो कुछ तुम लोगो ने किया है वह मैंने किया है (अर्थात मेरे आदेश से हुआ है) यदि ब्रिटिश सेना तुम पर आक्रमण करेगी तो इस अपराध के लिये तुम्हे कोई दण्डित नही करेगा।' इस पत्र को सभी सेना को पढ़कर सुनाया गया और सभी सैनिक अपना कर्त्तव्यपालन करने को तैयार हो गये। बाद मे मुझे अपनी पायगा पलटन के साथ जिले मे जाने का आदेश दिया गया। जब मैं महल के पास था कुछ सदेशवाहक सेना के पास

आये थे। इस समय तक सेना मेरे नियत्रण मे थी, लेकिन रात म उसने मेरे विरुद्ध विद्रोह कर दिया और सुबह छावनी लौटने के लिये मुझ पर दबाव डाला। जब हम छावनी गये तो हमने देखा कि नारायण पलटन भी विद्रोही हो गयी है। काफी लम्बे समय तक बात चीत व विचार विमश के बाद यह निणय हुआ कि सभी मामला का मुख्य अधिकारी जयदयाल होगा तथा मोहम्मद रोशन तोपखाने का मुख्य अधिकारी होगा और प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी रेजीमेट के लिये उत्तरदायी होगा[59]।

मेहराबखान व अन्य गवाहो के बयानो का परीक्षण करन के बाद उस पर लगाये गये सभी आरोपो म केवल आरोप सख्या 2 और 6 को छोडकर, उसे अपराधी घोपित किया गया। आरोप सख्या 2 के सबध मे कहा गया कि चाहे उसने स्वय न मेजर बटन की हत्या न की हो लेकिन मेजर बटन व उसके पुत्रो की हत्या करने वाले विद्रोहियो का वह मुखिया अवश्य था। आरोप सख्या 6, अर्थात डाक्टर सेल्डर की हत्या के सम्बध मे उसे निर्दोष पाया गया। अत 31 दिसम्बर 1859 को मेजर जे सी ब्रुक ने सिफारिश की कि मेहराबखान को मौत की सजा दी जाय तथा इस सजा की कार्यावित उसी स्थान पर की जाय जहा उसन निमम एव शमनाक हत्याए (मेजर बटन व उसके पुत्रो की) की थी और जिसके लिये उसे दोषी पाया गया है। जुलाई 1860 म भारत सरकार ने मेजर जे सी ब्रुक की सिफारिश स्वीकार करते हुए इस सजा की पुष्टि करदी[60]। तत्पश्चात मेहराबखान को एजेन्सी बगले के निकट, फासी पर लटका दिया गया[61]।

महराबखान की भाति लाला जयदयाल भी कोटा से भाग निकला था। जयदयाल, अपने कुछ साथियो के साथ, पारण के शासक मानसिह के पास गया जहा दो तीन महीने रुकने के बाद वह कल्पी की ओर चला गया। माग मे वह ग्वालियर से 60 मील की दूरी पर स्थित उन्दरकी के ठाकुर दौलतसिह के यहा भी दो महीने तक ठहरा। उन्दरकी से वह जयपुर व शेखावटी क्षेत्रो से होता हुआ बीकानेर की तरफ गया। लगभग छ सात महीने तक वह बीकानेर के दक्षिण म 80 मील की दूरी पर स्थित हुआलजी नामक स्थान पर ठहरा। लेकिन जब ब्रिटिश सेना उसका पीछा करती हुई यहा भी आ पहुची, तब वह भाग कर ग्वालियर मे ईसागढ की तरफ आ गया। यहा पर उसकी टौंक के सरदार नासिर मोहम्मदखा के भतीजे से मुलाकात हुई, जिसने उसे लाड कनिग की आम माफी के घोषणा पत्र की प्रति प्रदान की[62]। इसके बाद जयदयाल अलवर राज्य मे फकीर का वश बनाकर रहने लगा। कोटा व बूदी के शासको ने जयदयाल को पकडने के लिये 12,000 रुपये ईनाम की

घोषणा की तथा इस घोषणा का राजपूताना, मध्यभारत, ग्वालियर आदि में प्रचारित करवाया गया। जयपुर के शासक ने भी जयदयाल को पकड़ने के लिये ईनाम की घोषणा की[63]। इस घोषणा के बाद जयपुर के फौजदार ठाकुर रणजीतसिंह ने जयपुर महाराजा को सूचना दी कि लीलिया नामक एक व्यक्ति जयदयाल के बारे में सूचना देने को तैयार है, यदि उसे 9,000 रुपये का इनाम दे दिया जाय। फलस्वरूप लीलिये को 2,500 रुपये इनाम की अग्रिम राशि के रूप में दिये गये। तत्पश्चात लीलिये ने स्वयं फकीर का वेश धारण किया और जयदयाल से उसका चेला बनने के बहाने मिला। लीलिये ने, जयदयाल का चेला बनकर उसका विश्वास प्राप्त कर लिया और उसे जयपुर के पास बाणगंगा में नन्दकुण्ड पर ध्यान के लिये तैयार कर लिया। इधर लीलिये ने जयदयाल को पकड़ने के लिये आठ आदमी तैयार कर लिये और स्वयं जयदयाल से मिलने नन्दकुण्ड की तरफ गया। वे आठ आदमी भी लीलिये के पीछे पीछे रवाना हुए। किन्तु जयदयाल को लीलिये की समस्त कार्यवाही का पता चल गया, अतः लीलिये के नन्दकुण्ड पर पहुंचने से पूर्व ही वह नन्दकुण्ड से चलकर पास के गांव में आ गया। लीलिये ने तथा उसके आठ आदमियों ने जयदयाल का पीछा किया और उसे उस समय अचानक पकड़ लिया जबकि वह कुएं पर स्नान कर रहा था। अपनी गिरफ्तारी के समय उसने अपने पेट में चाकू घुसेड़ कर आत्महत्या करने का भी प्रयास किया लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। उसके पेट के घाव पर टांके लगा दिये गये और 15 अप्रेल 1860 को उसे जयपुर लाया गया। सात दिन तक वह कुछ भी खाने से इंकार करता रहा। जयपुर से उसे देवली लाया गया, जहां हाड़ौती के पोलीटिकल एजेंट डब्ल्यू एच बेनन की अदालत में मुकदमा चलाया गया। इस मुकदमे की कार्यवाही 14 मई 1860 को आरम्भ हुई[64]।

लाला जयदयाल पर पांच आरोप लगाये गये[65] —

(1) 15 अक्टूबर 1857 को वह कोटा में उपस्थित था और एजेन्सी के बंगले पर आक्रमण करने में सक्रिय भाग लिया था।

(2) वह मेजर बर्टन व उसके पुत्रों की हत्या करने वालों का सहयोगी था।

(3) उसने मेहराबखान के साथ मिलकर मेजर जनरल एच जी राबर्ट्स के नेतृत्व में आई ब्रिटिश सेना के विरुद्ध शस्त्र उठाये थे।

(4) उसने महराबखान से मिलकर अपनी सेना को एजेंसी बंगले पर तोपें दागने का आदेश दिया और उस स्थान की ओर संकेत किया जहां मेजर बर्टन व उसके दोनों पुत्र छुपे हुए थे।

(5) उस समय वह राजकीय सेना पर पूर्ण प्रभाव रखता था और इस प्रभाव का प्रयोग कर सेना को आक्रमण करने से रोक सकता था, लेकिन उसने आक्रमण रोकने की बजाय सेना को एजेंसी बगले पर आक्रमण करने के लिये प्रोत्साहित किया था।

जयदयाल के विरुद्ध चलाये गये इस मुकदमे मे 15 गवाहो के बयान लिये गये। अधिकांश गवाहो के बयान से यह सिद्ध पाया गया कि कोटा के विप्लव मे जयदयाल का सक्रिय सहयोग था, हालांकि स्वयं जयदयाल ने अपने को निर्दोष बताया। अपने बचाव मे दिये गये सम्पूर्ण बयान मे जयदयाल इसी बात को दोहराता रहा कि उसने जो कुछ किया महारावजी के आदेश से किया, जबकि महाराव के विरुद्ध बठाये गये जांच आयोग ने महाराव को पहले ही निर्दोष घोषित कर दिया था। इस मुकदमे मे उस पर लगाये गये सभी आरोप सत्य पाये गये। केवल पाचवें आरोप के एक अंश का स्वीकार नही किया गया कि वह अपने प्रभाव से, सेना को एजेंसी बगले पर आक्रमण करने से रोक सकता था। 28 जुलाई 1860 को कप्तान बेनन ने उसे मौत की सजा देने की सिफारिश करदी। बेनन ने अपनी सिफारिश मे यह भी कहा कि सजा की कार्यान्विति उसी प्रकार की जाय जसाकि मेहराबखान व एबजखान[66] के सम्बन्ध मे निर्देशित की गई है अर्थात उसे भी उसी स्थान पर फासी दी जाय जहा उसने निमम हत्याए की थी। भारत सरकार ने कप्तान बेनन की सिफारिश स्वीकार करते हुए इस सजा की पुष्टि करदी। 17 सितम्बर 1860 को कोटा के एजेंसी बगले के पास जयदयाल को फासी पर लटका दिया गया[67]।

श्री एन आर खड्गावत ने कोटा कोट रिकार्ड स के आधार पर लिखा है कि जयदयाल को गिरफ्तार कर तोप से उडा दिया गया[68]। लेकिन राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली मे उपलब्ध साक्ष्यो से प्रमाणित होता है कि जयदयाल को फांसी पर लटकाया गया था[69]। डॉ मथुरालाल शर्मा ने लिखा है कि मेहराबखान और जयदयाल अपने एक अन्य साथी (अफगान) के साथ गिरफ्तार कर लिये गये उन्हे कोटा लाया गया और पोलीटिकल एजेन्ट की उपस्थिति मे उन तीनो को एजेन्सी बगले के पास नीम के पेड पर फांसी पर लटका दिया गया और इस प्रकार विप्लव का अन्तिम दृश्य समाप्त हुआ[70]। डा शर्मा का यह कहना तो ठीक है कि उनको फांसी पर लटकाया गया, लेकिन डा शर्मा के इस कथन से यह भी ध्वनि निकलती है कि मेहराबखान और जयदयाल को साथ साथ गिरफ्तार किया गया जो ठीक नही है। मेहराबखान व जयदयाल को अलग अलग स्थानो से तथा भिन्न भिन्न परिस्थितियो मे

गिरफ्तार किया गया था तथा महराबखाँ व लवजगीर पर संयुक्त रूप से मुकदमा चलाया गया था, जबकि जयदयाल पर अलग से मुकदमा चलाया गया था। यद्यपि दोनों पर मुकदमे देवली में पोलीटिकल एजेंट की अदालत में चलाये गये थे। किन्तु एक अदालत की अध्यक्षता कप्तान बेनन ने की थी और दूसरी अदालत की अध्यक्षता मेजर ब्रुक ने की थी।

लगभग सभी ब्रिटिश लेखकों ने यह मत व्यक्त किया है कि कोटा में विद्रोह कोटा की राजकीय सेना के कुछ अधिकारियों द्वारा ही किया गया था। लेकिन विप्लव की घटनाओं का अध्ययन करने पर प्रतीत होता है कि इस क्षेत्र की स्थानीय जनता के सक्रिय सहयोग के बिना इतना विशाल एवं भीषण विप्लव कभी सफलतापूर्वक संचालित नहीं हो सकता था। कुछ विद्रोही नेता कोटा के ही रहने वाले थे और सामान्य जनता पर उनका बड़ा प्रभाव था। इन स्थानीय लोगों के निर्देशन में ही कोटा का विप्लव संगठित एवं संचालित हुआ था। घटनाओं से यह भी स्पष्ट होता है कि प्रारम्भ में विद्रोही महाराव के विरुद्ध नहीं थे तथा उनका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध विद्रोह संगठित करना था। लेकिन जब विद्रोहियों को यह मालूम हुआ कि महाराव अंग्रेजों से सैनिक सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा है, तब सारे विद्रोही महाराव के विरुद्ध हो गये थे। विद्रोहियों ने महल पर आक्रमण उस समय तुरन्त बन्द कर दिया था जबकि गुसाईंजी की मध्यस्थता में महाराव व विद्रोहियों के बीच समझौता हो गया। लेकिन जब महाराव करौली से प्राप्त सैनिक सहायता से विद्रोहियों के विरुद्ध कार्यवाही करने लगा, तब विद्रोहियों ने पुनः महल पर आक्रमण आरम्भ किया था। इससे स्पष्ट है कि विद्रोही महाराव के विरुद्ध नहीं थे। यदि महाराव अंग्रेजों के विरुद्ध उनके साथ आ जाता तो विद्रोही, महाराव के नेतृत्व को भी स्वीकार करने को तैयार थे[71]। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि महाराव अत्यन्त ही दुर्बल चित्त का व्यक्ति था और इतना असहाय हो चुका था कि कोई निश्चित निर्णय नहीं ले सका। उसकी इस असहाय स्थिति ने न केवल विद्रोहियों को प्रोत्साहित किया बल्कि महाराव के प्रति उनकी निष्ठा को भी समाप्त कर दिया। महाराव न तो विद्रोहियों का नेतृत्व प्रदान कर सका और न विद्रोह का प्रतिरोध कर सका। घटनाओं से यह भी स्पष्ट होता है कि विद्रोहियों ने कुछ अपवादों को छोड़कर, किसी निजी भवन या दुकान पर न आक्रमण किया और न उन्हें लूटा। उनका लक्ष्य तो सरकारी बंगले और सरकारी सम्पत्ति था, न कि सामान्य जनता को कोई कष्ट पहुँचाना।

राजस्थान म हुए 1857 के विप्लव मे सर्वाधिक भीषण एव व्यापक विप्लव कोटा मे हुआ था। इसका प्रमुख कारण यह था कि कोटा और कोटा के आस पास के क्षेत्रो के नागरिक ब्रिटिश सत्ता के घोर विरोधी थे। अत उनकी सहानुभूति ने ब्रिटिश विरोधी शक्तियो को सबल बना दिया था[72]। तात्कालिक साहित्यकार एव कवि सूयमल मिश्रण के पत्रो मे जिस ब्रिटिश विरोधी भावनाओ का प्रदशन हुआ है, उससे कोटा की सामान्य जनता की भावनाओ और विचारो का ज्ञान हो जाता है। श्री सूयमल मिश्रण ने भारत पर अग्रेजो की सर्वोच्चता का भारतीय सस्कृति के लिये घातक बताया, विद्रोहियो पर ब्रिटिश सेना की विजय को भारतीयो के लिये विध्वशकारी बताया और राजस्थानी शासको की गुलामी की प्रवृति की कटु शब्दो मे निन्दा की[73]। कोटा के विप्लव काल की घटनाओ का जिक्र करते हुए श्री सूयमल मिश्रण ने नीमली ठाकुर को लिखा था कि अग्रेजो पर भारतीय सेनाओ की विजय से उसे हार्दिक प्रसन्नता हुई है[74]। यदि एक साहित्यकार अपने चारो ओर घटित होने वाली घटनाओ को विदेशी सत्ता को समाप्त करने का प्रयत्न मान सकता है तो उस क्षेत्र के तात्कालिक वातावरण का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। कोटा म व्याप्त ब्रिटिश विरोधी भावना ने ही जन-सामान्य को विद्रोहियो का समथन एव सहयोग करने हेतु प्रोत्साहित किया था। रिसालदार मेहराबखान और लाला जयदयाल न इन्ही जन भावनाओ का प्रतिनिधित्व किया था और अपनी मातृभूमि को विदेशी सत्ता स मुक्त कराने के लिये अपने प्राणो का बलिदान कर दिया। यदि मेहराबखान व जयदयाल तथा उनके अनुयायियो को जन-सामान्य का सक्रिय सहयोग प्राप्त न होता तो कोटा का विप्लव इतना विकराल रूप धारण नही कर सकता था, जिसने राजस्थान म ब्रिटिश सत्ता के अस्तित्व को ही खतरे मे डाल दिया था। अत कोटा के विप्लव को मुट्ठी भर असन्तुष्ट सनिको द्वारा आरम्भ किया गया आकस्मिक विप्लव नही माना जा सकता। वस्तुत इस विप्लव की जडें बहुत गहरी थी।

सदर्भ टिप्पणी

1 फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 347

2 (i) फो पो कन्सलटेशन 30 जनवरी 1839 न 39

(ii) फो पो कन्सलटेशन, 8 फरवरी 1836 न 64 66

गिरफ्तार किया गया था तथा मेहरावखान व एवजखान पर संयुक्त रूप से मुकद्मा चलाया गया था, जबकि जयदयाल पर अलग से मुकद्मा चलाया गया था। यद्यपि दोनों पर मुकद्में देवली में पोलीटिकल एजेंट की अदालत में चलाये गये थे। किन्तु एक अदालत की अध्यक्षता कप्तान ब्रेनन ने की थी और दूसरी अदालत की अध्यक्षता मेजर ब्रुक ने की थी।

लगभग सभी ब्रिटिश लेखकों ने यह मत व्यक्त किया है कि कोटा में विद्रोह कोटा की राजकीय सेना व कुछ अधिकारियों द्वारा ही किया गया था। लेकिन विप्लव की घटनाओं का अध्ययन करने पर प्रतीत होता है कि इस क्षेत्र की स्थानीय जनता के सक्रिय सहयोग के बिना इतना विशाल एवं भीषण विप्लव कभी सफलतापूर्वक संचालित नहीं हो सकता था। कुछ विद्रोही नेता कोटा के ही रहने वाले थे और सामान्य जनता पर उनका बड़ा प्रभाव था। इन स्थानीय लोगों के निर्देशन में ही कोटा का विप्लव संगठित एवं संचालित हुआ था। घटनाओं से यह भी स्पष्ट होता है कि प्रारम्भ में विद्रोही महाराव के विरुद्ध नहीं थे तथा उनका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध विद्रोह संगठित करना था। लेकिन जब विद्रोहियों को यह मालूम हुआ कि महाराव अंग्रेजों से सैनिक सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा है, तब सारे विद्रोही महाराव के विरुद्ध हो गये थे। विद्रोहियों ने महल पर आक्रमण उस समय तुरंत बन्द कर दिया था जबकि गुसाईंजी की मध्यस्थता में महाराव व विद्रोहियों के बीच समझौता हो गया। लेकिन जब महाराव करौली से प्राप्त सैनिक सहायता से विद्रोहियों के विरुद्ध कार्यवाही करने लगा, तब विद्रोहियों ने पुनः महल पर आक्रमण आरम्भ किया था। इससे स्पष्ट है कि विद्रोही महाराव के विरुद्ध नहीं थे। यदि महाराव अंग्रेजों के विरुद्ध उनके साथ आ जाता तो विद्रोही, महाराव के नेतृत्व को भी स्वीकार करने को तैयार थे[71]। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि महाराव अत्यन्त ही दुर्बल चित्त का व्यक्ति था और इतना असहाय हो चुका था कि कोई निश्चित निर्णय नहीं ले सका। उसकी इस असहाय स्थिति ने न केवल विद्रोहियों को प्रोत्साहित किया, बल्कि महाराव के प्रति उनकी निष्ठा को भी समाप्त कर दिया। महाराव न तो विद्रोहियों को नेतृत्व प्रदान कर सका और न विद्रोह का प्रतिरोध कर सका। घटनाओं से यह भी स्पष्ट होता है कि विद्रोहियों ने कुछ अपवादों को छोड़कर किसी निजी भवन या दुकान पर न आक्रमण किया और न उन्हें लूटा। उनका लक्ष्य तो सरकारी बंगले और सरकारी सम्पत्ति था, न कि सामान्य जनता को कोई कष्ट पहुंचाना।

राजस्थान मे हुए 1857 के विप्लव मे सर्वाधिक भीषण एव व्यापक विप्लव कोटा मे हुआ था। इसका प्रमुख कारण यह था कि कोटा और कोटा के आस पास के क्षेत्रो के नागरिक ब्रिटिश सत्ता के घोर विरोधी थे। अत उनकी सहानुभूति ने ब्रिटिश विरोधी शक्तियो को सबल बना दिया था[72]। तात्कालिक साहित्यकार एव कवि सूयमल मिश्रण के पत्रो मे जिस ब्रिटिश विरोधी भावनाओ का प्रदशन हुआ है उससे कोटा की सामान्य जनता की भावनाओ और विचारो का ज्ञान हो जाता है। श्री सूयमल मिश्रण ने भारत पर अग्रेजो की सर्वोच्चता को भारतीय संस्कृति के लिये घातक बताया, विद्रोहियो पर ब्रिटिश सेना की विजय को भारतीयो के लिय विध्वशकारी बताया और राज स्थानी शासको की गुलामी की प्रवृति की कटु शब्दो म निन्दा की[73]। कोटा के विप्लव काल की घटनाओ का जिक्र करते हुए श्री सूयमल मिश्रण ने नीमली ठाकुर को लिखा था कि अग्रेजो पर भारतीय सेनाओ की विजय से उसे हार्दिक प्रसन्नता हुई है[74]। यदि एक साहित्यकार अपने चारो ओर घटित होने वाली घटनाओ को विदेशी सत्ता को समाप्त करने का प्रयत्न मान सकता है तो उस क्षेत्र के तात्कालिक वातावरण का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। कोटा मे व्याप्त ब्रिटिश विरोधी भावना ने ही जन सामान्य का विद्रोहियो का समथन एव सहयोग करन हेतु प्रोत्साहित किया था। रिसालदार मेहराबखान और लाला जयदयाल ने इन्ही जन भावनाओ का प्रतिनिधित्व किया था और अपनी मातृभूमि को विदेशी सत्ता मे मुक्त कराने के लिये अपने प्राणो का बलिदान कर दिया। यदि मेहराबखान व जयदयाल तथा उनके अनुयायियो को जन-सामान्य का सक्रिय सहयोग प्राप्त न होता तो कोटा का विप्लव इतना विकराल रूप धारण नही कर सकता था, जिसने राजस्थान म ब्रिटिश सत्ता के अस्तित्व को ही खतरे म डाल दिया था। अत कोटा के विप्लव को मुट्ठी भर असन्तुष्ट सनिको द्वारा आरम्भ किया गया आकस्मिक विप्लव नही माना जा सकता। वस्तुत इस विप्लव की जडें बहुत गहरी थी।

सदर्भ टिप्पणी

1 फो पो क सलटेशन 31 दिसम्बर 1858 न 3146 347

2 (i) फो पो कन्सलटेशन 30 जनवरी 1839 न 39

(ii) फो पा कन्सलटेशन, 8 फरवरी 1836 न 64 66

(iii) फो पो कन्सलटेशन, 26 फरवरी 1836 न 15
3 फा पो कन्सलटेशन, 29 अगस्त 1839 न 51
4 फो पो कन्सलटेशा, 15 मई 1839 न 3
5 (i) जी बी मलीसन हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी भाग 2 पृ 568 69
(ii) एस एन सेन एटीन फिफ्टी सेवन, पृ 320
6 (i) फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146-3147
(ii) फो पो कन्सलटेशन, 5 अगस्त 1859 न 324 327
(iii) एस एन सेन एटीन फिफ्टी सेवन, पृ 320
7 (i) फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर, 1858 न 3146 3147
(ii) जी बी मेलीसन हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, भाग 2, पृ 568 69
8 फा पो कन्सलटेशन (सीक्रेट) 25 सितम्बर 1857 न 96
9 फो पो कन्सलटेशन, 3 सितम्बर 1858 न 1 2
10 फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 3147
11 (i) फो पो कन्सलटशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 3147
(ii) राजस्थान हिस्ट्री काग्रेस, प्रोसीडिंग्ज वाल्यूम XI, पृ 96
(iii) राजस्थान हिस्ट्री काग्रेस, प्रोसीडिंग्ज वाल्यूम XIII, पृ 205
12 (i) वीर सतसई (सहल द्वारा सम्पादित), पृ 72
(ii) खड्गावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 58-59
13 जी बी मेलीसन हिस्ट्री आफ द इण्डियन म्यूटिनी भाग 2, पृ 569
14 खडगावत राजस्थान्स राल इन द स्ट्रगल ऑफ 1857, पृ 58
15 (i) फा पा कन्सलटेशन (सीक्रेट), 25 सितम्बर 1857 न 96
(ii) विलियम केई ए हिस्ट्री आफ द सिपाही वार इन इण्डिया भाग, पृ 380 81
16 (i) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट, 18 दिसम्बर 1857 न 37
(ii) वीर सतसई (सहल द्वारा सम्पादित) पृ 72
17 फा पोलीटिकल 'ए सितम्बर 1860 न 428 436
18 फो पो कन्सलटेशन, 24 फरवरी 1860 न 195 197
19 (i) फो पो कन्सलटेशन 5 अगस्त 1859 न 324 327
(ii) एस एन सेन एटीन फिफ्टी सवन पृ 321

20 सहगावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल ग्राफ 1857, पृ 60 61
21 (i) जी एच ट्रेवर ए चेप्टर ग्रॉफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 12
(ii) राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस प्रोसीडिंग्ज वाल्यूम XIII, पृ 206
22 डॉ मथुरालाल शर्मा कोटा राज्य का इतिहास, भाग 2, पृ 607
23 (i) फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146-3147
(ii) डॉ मथुरालाल शर्मा कोटा राज्य का इतिहास, भाग 2, पृ 610 616
(iii) राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस प्रोसीडिंग्ज वाल्यूम XIII, पृ 206
24 फो पो कन्सलटशन, 5 ग्रगस्त 1859 न 324-37
25 फो पोलीटिकल 'ए', सितम्बर 1860 न 428-436
26 विप्लव की समाप्ति के बाद जयदयाल पर चले मुकदमे के दौरान जयदयाल ने अपने बयान म कहा कि महाराव न सेना को वेतन देना बन्द कर दिया था, इसलिये सेना विद्रोही हो गई तथा शहर के द्वार बन्द कर दिये । भाई साहब सेठ कोटा महाराव की तरफ से ग्राया ग्रौर सेना को वेतन देन के सम्बन्ध म एक लिखित नोट दिया, लेकिन फिर भी जब सेना का वेतन नहीं मिला तब सेना ने भाई साहब सेठ को कद कर लिया । लेकिन बाद मे उसे छोड दिया था ।
(फो पोलीटिकल 'ए', सितम्बर 1860 न 428 36)
27 (i) फो पो कन्सलटेशन, 24 फरवरी 1860 न 195 197
(ii) गवनर जनरल का सीक्रेट कमेटी को डिस्पेच, 1858 न 28
28 (i) जी एच ट्रेवर ए चेप्टर ग्रॉफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 12
(ii) खडगावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल ग्राफ 1857, पृ 62
29 मुशी ज्वालासहाय लॉयल राजपूताना, पृ 324
30 फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 28 मई 1858 न 342 43
31 (i) फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
(ii) गवनर जनरल का सीक्रेट कमेटी को डिस्पेच, 1858 न 14
32 मुशी ज्वालासहाय लायल राजपूताना, पृ 324
33 फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 28 मई 1858 न 136 139
34 फो पो कन्सलटशन (सीक्रेट), 28 मई 1858 न 136
35 गवनर जनरल का सीक्रेट कमेटी का डिस्पेच, 1858 न 14
36 (i) फो पो कन्सलटेशन 31 दिसम्बर 1858 न 3146 3147
(ii) मुशी ज्वालासहाय लायल राजपूताना, पृ 324 25
(iii) राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस, प्रोसीडिंग्ज वाल्यूम XIII, पृ 208

37 (i) फो पा कन्सलटशन, 24 फरवरी 1860 न 195-197
(ii) मुशी ज्वालासहाय लॉयल्स राजपूताना, पृ 324 25
38 (i) राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस, प्रोसीडिंग्ज वाल्यूम XI, पृ 97
(ii) राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस, प्रोसीडिंग्ज वाल्यूम XIII पृ 208
39 फो पो कन्सलटेशन, 5 अगस्त 1859 न 324 27
40 खड्गावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 65 66
41 खड्गावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 66
42 (i) वीर सतसई (सहल द्वारा सम्पादित) पृ 77 78
(ii) खड्गावत राजस्थान्स राल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 66 68
43 फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 28 मई 1858 न 137
44 एजेन्सी रेकार्ड, फाईल न 2 म्यूटिनी 1857 58, खण्ड I, कप्तान ब्रुक का पत्र संख्या 80, दिनांक 28 अक्टूबर 1857
45 फो पो कन्सलटेशन 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
46 फो पो कन्सलटेशन 5 अगस्त 1859 न 324-27
47 फा पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 5 अगस्त 1859 न 328
48 फो पो कन्सलटेशन, 5 अगस्त 1859 न 328
49 फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट),5 अगस्त 1859 न 325
50 फा पो कन्सलटशन (सीक्रेट), 28 मई 1858 न 342 43
51 फा पा क सलटशन 'ए', माच 1865 न 46 47
52 एजेन्सी रिकाड, हि रे न 45 फाईल न 2 म्यूटिनी 1859 62, खण्ड II
53 फो पोलीटिकल 'बी , माच 1877 न 117 120
54 वही।
55 वही।
56 फो पालीटिकल ए' सितम्बर 1861 न 515 518
57 फो पो कन्सलटेशन, 24 फरवरी 1860 न 195 197
58 वही।
59 फा पोलीटिकल ए जुलाई 1860 न 6 9
60 फो पोलीटिकल बी' अगस्त 1860 न 324
61 फा पोलीटिकल ए सितम्बर 1860 न 428 436
62 फो पोलीटिकल 'ए' मई 1860 न 6 7

63 फो पोलीटिकल 'ए' सितम्बर 1860 न 428 436

64 वही।

65 एवजखान, मेहराबखान का कट्टर अनुयायी था। मेहराबखान व एवज खान पर सयुक्त रूप से मुकदमा चलाया गया था, जिसमे मेहराब खान के साथ साथ एवजखान को भी फासी पर लटकाया गया था।

66 (i) फो पोलीटिक्ल 'ए' सितम्बर 1860 न 428 436
(ii) राजस्थान हिस्ट्री काग्रेस, प्रोसीडिग्ज वाल्यूम XI पृ 99 100

67 खड्गावत् राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 68

68 फो पोलीटिक्ल 'ए' सितम्बर 1860 न 428 436

69 डा मथुरालाल शर्मा कोटा राज्य का इतिहास, भाग 2, पृ 629

70 खड्गावत् राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 65

71 खड्गावत् उपरोक्त पृ 68

72 वीर सतसई (सहल द्वारा सम्पादित), पृ 76-78

73 वीर सतसई (सहल द्वारा सम्पादित), पृ 72-73

मेवाड मे अप्रत्यक्ष सघर्ष

भारतव्यापी विप्लव प्रारम्भ होने के समय मेवाड के महाराणा स्वरूपसिंह के सम्बध न तो अपन सामन्तो से अच्छे थे और न कम्पनी सरकार से। ब्रिटिश सरकार का सरक्षण प्राप्त होन के बाद अन्य राज्यो की तरह मेवाड के महाराणाओ न भी अपने सामन्ता को महत्वहीन करन हेतु उनके परम्परागत विशेषाधिकारो को समाप्त करने का प्रयास करन लग थे। सामन्तो की सेवाओ (चाकरी) को रकम की अदायगी म बदलने का प्रयास किया जा रहा था। सलूम्बर के रावत के वशानुगत भाजगढ (महाराणा का प्रमुख सलाहकार) के अधिकार को पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया गया था। अनेक सामन्त जो अपनी गद्दीनशीनी के समय तलवार बन्धाई (उत्तराधिकार शुल्क) देने से मुक्त थे उन्हे तलवार बन्धाई की रकम देने को बाध्य किया जा रहा था[1]। इससे मेवाडी सामन्तो का क्रोधित होना स्वाभाविक था। इसके अतिरिक्त 1857 ई का विप्लव प्रारम्भ होने के समय आमेट व बिजौलिया के उत्तराधिकार के प्रश्न को लेकर झगडा चल रहा था तथा इन विवादो मे मेवाड के सामन्त दो गुटो म विभक्त हो चुके थे और दोनो पक्षो म सशस्त्र सघर्ष अवश्यभावी प्रतीत हो रहा था[2]। आमेट के उत्तराधिकार के मामले म तो सामन्ता के एक पक्ष ने खैरवाडा के असिस्टेन्ट पालीटिकल एजेन्ट कनल ब्रुक से यहाँ तक कह दिया था कि यदि आमेट की गद्दी पर उनके द्वारा समर्थित व्यक्ति के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति को बैठाया गया तो सम्पूर्ण मेवाड म विद्रोह प्रारम्भ हो जायेगा[3]। मेवाड मे इन विरोधी परिस्थितियो को देखते हुए तात्कालिक ए जी जी सर हेनरी लारेन्स न ता भारत सरकार को यहा तक लिख दिया था कि मेवाड म दो शक्तिशाली सनिक दस्त भेजकर उद्दण्डी सलूम्बर व भीण्डर के सामन्तो को बेदखल कर दिया जाय[4]। यह ब्रिटिश अधिकारियो व मेवाड के सामन्तो के बीच कटु सम्बन्धो की पराकाष्ठा थी। मवाडी सामन्ता के इस उद्दण्डतापूर्ण रवैये के कारण स्वय पोलीटिकल एजेन्ट इस बात स भयभीत था कि कही विरोधी सामन्त इस सकट काल का लाभ उठा कर मेवाड म भी विद्रोह की अग्नि प्रज्ज्वलित न कर दें।

इधर महाराणा स्वरूपसिंह तथा ब्रिटिश पोलीटिकल एजेन्ट के बीच सम्बध अच्छे नही थे क्योकि महाराणा व सामन्तों के बीच चल रहे झगडे म अनेक बार महाराणा ने ब्रिटिश पोलीटिकल एजेन्ट तथा ए जी जी के आदेशो की अवहेलना की थी तथा उनके परामश को ठुकरा दिया था। जाज पैट्रिक लारेन्स, जब मेवाड का पोलीटिकल एजेन्ट था, उस समय उसके व महाराणा के बीच सम्बध इतने कटु हो चुके थे कि उसने तो यहा तक कह दिया था कि महाराणा का नाम उसकी 'काली किताब' म दज है[5]। विप्लव आरम्भ होने के समय जाज पैट्रिक लारेन्स, जो पहले मेवाड का पोलीटिकल एजेन्ट रह चुका था अब वह कायवाहक ए जी जी के पद पर नियुक्त हो चुका था और उसके स्थान पर कप्तान शावस को मेवाड म पोलीटिकल एजेन्ट नियुक्त किया गया था। ए जी जी जाज पट्रिक लारेन्स महाराणा की अग्रेज विरोधी भावना से पूर्णतया परिचित था, अत उसे भय था कि कहीं वह विप्लवकारियो को सहयोग न दे दे।

जैसाकि बताया जा चुका है, मेरठ मे हुए विद्रोह की सूचना ए जी जी को 19 मई 1857 को आबू मे प्राप्त हुई थी। आबू से ए जी जी ने अपना एक निजी पत्र महाराणा के नाम भेजा[6], जिसमे मेवाड के पूव दिनो की याद दिलाते हुए कहा कि वह कम्पनी सरकार की मित्रता से अत्यधिक लाभान्वित हुआ है। ए जी जी ने यह भी लिखा कि वह अपनी सेना को तयार रखे, ताकि आवश्यकता पडने पर वह ब्रिटिश सेना की सहायता कर सके। इसके साथ ही ए जी जी ने मेवाड के पोलीटिकल एजेन्ट को आदेश दिया कि वह तुरन्त उदयपुर पहुच जाय। ए जी जी जाज लारेन्स का निजी पत्र प्राप्त होन पर महाराणा ने 27 मई 1857 का अपन सभी सामन्तो के नाम खास रुक्का भेजकर कहा कि वे ब्रिटिश सनिक कायवाही मे सहायता दें तथा कप्तान शावस के आदेशो को उसकी (महाराणा की) आज्ञा समझ कर उसका पालन करें[7]। महाराणा ने जून 1857 मे नीमच जिले के दारू बावल, बागरा सेवलूर बीनोता, सरवानिया तथा आठाणा के सरदारो के नाम रुक्का भेजकर, उन्हे ब्रिटिश अधिकारियो का सहायता देने को कहा[8]। मेवाड की भील कोर का मुख्यालय खरवाडा म था। खरवाडा मे भी विप्लव होने का भय था। अत महाराणा ने अक्टूबर 1857 ई मे ओगणा, पानरवा जवास भादडी, झाडौल व चानी के सरदारो के नाम परवाना भेजकर आदेश दिया कि खरवाडा और कोटडा म ब्रिटिश दल की सुरक्षा हेतु दृढ कायवाही की जाय तथा वे इस बात का ध्यान रखे कि पहाडी क्षेत्र म काई उपद्रव नही होन पाय[9]।

पोलीटिकल एजेंट कप्तान शावर्स महाराणा से विचार विमर्श हेतु 29 मई 1857 को उदयपुर आया[10]। मेरठ, दिल्ली और नसीराबाद में आरम्भ हुए विप्लव की सूचना यहा पहुच चुकी थी। अत यहाँ फिरंगियो के विरुद्ध भावना सर्वत्र व्याप्त थी[11]। कप्तान शावर्स महाराणा से बातचीत करने के लिये जब उदयपुर शहर के मार्ग से गुजर रहा था तब रास्ते मे जनता ने उसे कर्कश शब्दो मे सम्बोधित कर ब्रिटिश विरोधी भावना का प्रदर्शन किया[12]। अत ऐसे तनावपूर्ण वातावरण के कारण महाराणा ने बातचीत का स्थान पिछोला झील म स्थित जग मन्दिर निश्चित किया। इस समय महाराणा व ब्रिटिश कम्पनी दोनो को ही मेवाड के सामन्तो से भय था, अत दोनों का एक दूसरे के साथ सहयोग वाछनीय था। बातचीत के दौरान महाराणा ने कप्तान शावर्स को बताया कि बिजोलिया व आमेट के उत्तराधिकार के मामले को लेकर सभव है मेवाड के उपद्रवी सामन्त इस सकट का लाभ उठाते हुए उसे उद्दीच्युत करने का प्रयत्न करेंगे। इस पर कप्तान शावर्स ने महाराणा को तसल्ली देते हुए कहा कि आमेट व बिजोलिया के उत्तराधिकार का प्रश्न फिलहाल स्थगित रखा जाय[13]। बातचीत के पश्चात कप्तान शावर्स ने उपद्रवी सामन्तो के नाम एक परिपत्र जारी किया[14] जिसमे कहा गया कि वह उनकी शिकायतो की व्यक्तिगत रूप से जाँच करेगा तथा महाराणा ने वादा किया है कि वह उसकी सलाह को स्वीकार करेगा। साथ ही उसने सामन्तो को चेतावनी देते हुए कहा कि जो भी व्यक्ति शान्ति भग करेगा या भग करने का प्रयास करेगा, वह ब्रिटिश सरकार का विद्रोही समझा जायेगा।

3 जून 1857 को रात्रि के 11 बजे नीमच म विप्लव फूट पडने के बाद लगभग 40 अग्रेज, औरतें व बच्चे भयभीत होकर वहा से भाग खडे हुए जिन्हें डूगला गाव के एक किसान रूगाराम ने शरण प्रदान की। कप्तान शॉवर्स को नीमच मे हुए सैनिक विप्लव की सूचना नीमच छावनी के एक पदाधिकारी कप्तान मेक्डानल्ड ने भेजी तथा उसने डूगला मे फसे हुए अग्रेजो को सहायता भेजने के लिये लिखा। महाराणा ने बेदला के राव बख्तसिंह के नेतृत्व मे एक सेना कप्तान शॉवर्स की सहायता हेतु दी तथा 7 जून 1857 को कप्तान शॉवर्स इस सेना को लेकर वहा से रवाना हुआ[15]। इस सेना के पहुचते ही विद्रोही डूगला से भाग खडे हुए और इस प्रकार डूगला म फसे अग्रेजो को बचा लिया गया। बेदला के राव बख्तसिंह ने उन अग्रेज, औरतो व बच्चो को सुरक्षित उदयपुर पहुचा दिया। महाराणा ने उन अग्रेज औरतो व बच्चो को पिछोला झील म बने जग मन्दिर म ठहराया तथा मेहता गोकुलचन्द को उनकी देखरेख हेतु नियुक्त किया[16]। महाराणा द्वारा किये गये उत्तम

पबन्ध की, मेवाड के असिस्टेन्ट पोलीटिकल एजेन्ट कप्तान एन्सले ने बडी प्रशसा की[17] तथा महाराणा की ब्रिटिश सरकार के प्रति भक्ति प्रदर्शित करने के उपलक्ष मे, विद्रोह की समाप्ति पर, स्वय गवनर जनरल ने महाराणा का प्रशसा पत्र भेजा[18]।

नीमच मे विप्लव आरम्भ होने पर जब कुछ अग्रेज अधिकारी औरतें व बच्चे वहा से भाग खडे हुए थे, तब इन भागे हुए अग्रेज अधिकारियो मे डा मरे व डॉ गेन अपने साथियो से बिछुड गये तथा रास्ता भूल गये। वे पदल चलते चलते थक चुके थे तथा भूख प्यास से अत्यधिक व्याकुल हो उठे थे। ऐसी स्थिति मे वे सादडो के केसुन्दा गाव मे पहुचे। केसुन्दा गाव के पडित यदुराम, पटेल रामसिह, पटेल केसरीसिह तथा ओकारसिह ने इन दोना को शरण प्रदान की[19] तथा उनके लिय भोजन आदि की व्यवस्था की[20]। इसी दौरान विद्रोही भी इन अग्रेजो का पीछा करते हुए गाव म आ पहुचे तथा शरणार्थी अग्रेजो को सौंपने की माग की और माग पूरी न करन पर गोली मारने की धमकी दी, लेकिन गाव वालो न अग्रेजा को सुपुद नही किया। इतन मे बेंगू के रावत की तथा सादडी के हाकिम की ओर से सनिक महायता आ पहुचने से विद्रोही उद्देश्य की पूर्ति न कर सके[21]। रात के अन्धेरे म इन दोना अग्रेजा को छोटी सादडी लाया गया और वहा से डूगला गाव ले जाया गया, जहा वे अपने अन्य साथियो से आ मिले। केसुन्दा गाव वालो की इस सहायता तथा ब्रिटिश अधिकारियो के प्रति प्रदर्शित सहानुभूति के उपलक्ष मे विद्राह की समाप्ति पर यदुराम, केसरीसिह व ओकारसिह का ब्रिटिश सरकार की ओर से पुरस्कृत किया गया[22]।

नीमच के विद्रोही छावनी मे आग लगाने के बाद वहा से रवाना हुए तथा रास्ते म चित्तौड, हमीरगढ व बनडा म सरकारी बगला को लूटते हुए व उनम आग लगाते हुए शाहपुरा पहुचे, जहा के राजाधिराज ने उन्ह दो दिन तक अपने यहा रखा[23]। शाहपुरा के राजाधिराज न विद्राहियो के लिये रमद आदि की व्यवस्था की। तत्पश्चात विद्रोही वहा से रवाना हुए और देवली पहुचे। देवली मे उन्होने सनिक छावनी मे आग लगा दी तथा गोला-बारूद आदि लूटकर आगरा की ओर रवाना हुए। देवली का एक सार्जेन्ट दस औरतें व बच्चे वहा की प्रलयकारी स्थिति से भयभीत होकर भाग खडे हुए, जिन्ह जहाजपुर मे तनात मेवाड के मनिका ने बचा लिया तथा उन्हें पोलीटिकल एजेन्ट के कैम्प म ले आये वहा से उन्ह सुरक्षित उदयपुर पहुचा दिया जहा महाराणा ने उनका हार्दिक स्वागत किया[24]।

जब कप्तान शॉवर्स को इस बात की सूचना मिली कि विद्रोही चित्तौड़ आदि स्थानों पर लूटमार करते हुए जा रहे हैं तब उसने मेवाड़ की एक सैनिक टुकड़ी को विद्रोहियों का पीछा करने के लिए चित्तौड़ की ओर जाने की आज्ञा दी तथा स्वयं नीमच गया। वहाँ से वह मेहता शेरसिंह को साथ लेकर आगे बढ़ा तथा 12 जून को आगे भेजी हुई सेना से आ मिला[25]। तभी विद्रोही दिल्ली की ओर जा रहे थे, अतः कप्तान शॉवर्स ने उन्हें मार्ग में ही ककड़ी नामक गाँव में रोकना चाहा। इसलिए उसने ए. जी. जी. जार्ज लारेन्स से सहायता भेजने की प्रार्थना की किन्तु जार्ज के लिए अजमेर की सुरक्षा का प्रबन्ध करना आवश्यक था अतः उसने सहायता भेजने में अपनी असमर्थता प्रकट की। इस पर शॉवर्स अपने साथ जितने भी सैनिक थे उन्हें लेकर विद्रोहियों का पीछा करता हुआ शाहपुरा आ पहुँचा जहाँ के राजाधिराज ने विद्रोहियों को दो दिन तक शरण दी थी तथा उन्हें रसद आदि प्रदान की थी। शॉवर्स के पहुँचने पर राजाधिराज ने कायदे की रस्म के मुताबिक पेशवाई करना तथा रसद आदि पहुँचाना तो दूर रहा अपना किले का दरवाजा तक नहीं खोला[26]। वहाँ से शॉवर्स जहाजपुर गया और जहाजपुर से पुनः नीमच की ओर रवाना हुआ। लौटते समय वह रास्ते में बेंगू में ठहरा, जहाँ के रावत महासिंह ने उसका स्वागत किया। बेंगू के रावत महासिंह अपने ठिकाने में विद्रोहियों का प्रवेश रोकने के लिए अपनी सीमा की रक्षा करते हुए अंग्रेज शरणार्थियों को, जो मालवा में विद्रोह हो जाने पर मन्दसौर की ओर से आये थे अपने ठिकाने में शरण दी तथा उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध किया[27]। बेंगू के रावत द्वारा की गई इस सेवा के लिए विद्रोह समाप्त होने पर, ब्रिटिश सरकार की ओर से उसे दो हजार रुपये मूल्य की खिलअत प्रदान की[28]। बेंगू से रवाना होकर शॉवर्स नीमच पहुँचा तथा वहाँ से महाराणा को लिखा कि राज्य की सुरक्षा हेतु सभी आवश्यक कदम उठाये जायें[29]। इसके प्रत्युत्तर में महाराणा ने लिखा कि यद्यपि उसने राज्य की सुरक्षा का पूरा बन्दोबस्त कर लिया है तथापि इन दिनों में सामन्त वगैरा दंगा फसाद करने की सोच रहे हैं[30]।

नीमच में हुए विद्रोह की सूचना प्राप्त होने पर ए. जी. जी. ने कोटा व बूंदी से राजकीय फौजों को वहाँ के विद्रोह को दबाने हेतु भेजने का आदेश दिया था तथा इधर शॉवर्स भी मेवाड़ की राजकीय फौज लेकर आ पहुँचा। किन्तु इन राजकीय फौजों के पहुँचने के पूर्व ही विद्रोही नीमच से पलायन कर चुके थे। अब नीमच पर पुनः कम्पनी सरकार का आधिपत्य स्थापित हो गया। इस समय नीमच में मेवाड़, कोटा व बूंदी की सेनाएँ तैनात थी तथा

चल पड़े[38]। ये विद्रोही जैसे ही पाली के निकट पहुँचे, आउवा ठाकुर कुशाल सिंह ने उन्हें अपनी सेवा मे ले लिया और उन्हें आउवा ले आया, जहा मारवाड के अन्य विद्रोही जागीरदार भी अपने अपने सैनिकों के साथ आ पहुँचे। इस पर जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह ने सिंघवी कुशलराज के नेतृत्व मे एक सेना, जिसमे बम्बई की 12 वी रेजीमेंट का अंग्रेज पदाधिकारी लेफ्टिनेन्ट हेथकोट भी सम्मिलित थे, आउवा की ओर आये। 8 सितम्बर 1857 को विद्रोहियो व आउवा के ठाकुर कुशालसिंह की संयुक्त सेना व जोधपुर की राजकीय सेना के बीच आउवा से तीन मील दूर बिथौरा नामक स्थान पर युद्ध हुआ, जिसमे जोधपुर की राजकीय सेना पराजित हुई। ए जी जी जार्ज लारेन्स स्वयं सेना लेकर आउवा पर आ पहुचा, किन्तु उसे भी 18 सितम्बर को अपमानजनक पराजय देखनी पडी[39]।

इसी बीच 13 सितम्बर 1857 को डीसा के विद्रोहियों के नेता रिसालदार अब्दुल अली अब्बास, शेख मोहम्मद बख्श सूबेदार, जमादार तथा सभी हिन्दू व मुसलमान सिपाहियो के नाम से मारवाड व मेवाड की जनता के नाम अपील प्रसारित की, जिसमे उन्हें शरण व सहायता देने को कहा गया था। इस अपील से इस बात का संकेत मिलता है कि मेवाड और मारवाड के सामन्त विद्रोहियों के साथ थे[40]। आउवा के ठाकुर कुशालसिंह द्वारा विद्रोहियो को दी गई सहायता ने मेवाड के सामन्तो को भी प्रोत्साहित किया। ठाकुर कुशालसिंह ने सलूम्बर के रावत केसरीसिंह को लिखा कि विद्रोहियों को सहायता दे तथा उसे यह भी आश्वासन दिया कि दिल्ली के बादशाह की ओर से तुरन्त सहायता आने वाली है[41]। इस प्रकार के अनेक पत्र ठाकुर कुशाल सिंह ने सलूम्बर रावत केसरीसिंह को लिखे, जिन्हें देवगढ के रावत रणजीत सिंह ने बीच मे पकड कर ब्रिटिश अधिकारियो को सौंप दिये थे[4]।

आउवा की पराजय का बदला लेने के लिये ए जी जी ने कर्नल होम्स के नेतृत्व मे एक सेना भेजी, जिसने 20 जनवरी 1858 को आउवा पर आक्रमण कर दिया। इसी लड़ाई के दौरान ठाकुर कुशालसिंह ने सलूम्बर रावत केसरीसिंह को पत्र लिखकर सूचित किया कि वह शरण के लिये सलूम्बर आ रहा है[41]। अत जब ठाकुर कुशालसिंह को विजय की कोई आशा नही रही तब 23 जनवरी 1858 की रात को वह वहा से भाग खड़ा हुआ और उसने मेवाड की सीमा मे प्रवेश किया। ऐसी स्थिति मे अंग्रेज अधिकारियों को भय हुआ कि यदि ठाकुर कुशालसिंह को मेवाड के सामन्तो से सैनिक सहयोग मिल गया तो वह ब्रिटिश सत्ता के लिये अत्यन्त ही घातक सिद्ध हो

सकता है। अत ब्रिटिश अधिकारियों के निर्देशानुसार महाराणा ने अपन सामन्तो को आदेश दिया कि मारवाड के विद्रोहियों को सहायता व शरण न दी जाय[44]। अंग्रेजो को इस बात की भी जानकारी थी कि जनता की सहानुभूति विद्रोहियों के साथ है। अत जनता को धन का प्रलोभन देते हुए महाराणा की ओर से एक और आदेश प्रसारित करवाया जिसमे लिखा गया कि सशस्त्र विद्रोही को पकडने वाले को 50 रुपये तथा शस्त्रहीन विद्रोही को पकडने वाले को 30 रुपये इनाम दिये जायेंगे[45]।

पोलीटिकल एजेन्ट को जब इस बात की सूचना मिली कि विद्रोहियो की एक सैनिक टुकडी सलूम्बर म ठहरी हुई है तब उसने रावत केसरीसिह को लिखा कि वह उस सैनिक टुकडी को अपने यहा रोक ले तथा उसके कमाण्डर को गिरफ्तार कर उसके पास भेज दे, किन्तु रावत केसरीसिह ने न तो इस आज्ञा का पालन ही किया और न इस पत्र का प्रत्युत्तर ही दिया। जब कुछ दिन पश्चात यह सैनिक टुकडी बिना रोकटोक के सलूम्बर से रवाना हो गयी, तब पोलीटिकल एजेन्ट ने रावत केसरीसिह से इसका स्पष्टीकरण मांगा। इस पर रावत केसरीसिह ने स्वीकार किया कि विद्रोही सैनिकों की धमकी" के कारण उसने उस सैनिक टुकडी को बिना रोकटोक के जाने दिया था[46]।

इधर विद्रोही सैनिको का एक रिसालदार बनेडा म आया जहा उसे शरण दी गई। इस पर पोलीटिकल एजेन्ट ने धीरा नामक जमादार के साथ एक चपरासी को बनेडा की ओर भेजा, किन्तु इसी बीच विद्रोही रिसालदार बनेडा स कोठारिया चला गया। त उसका पीछा करते हुए जमादार व चपरासी कोठारिया पहुचे तथा कोठारिया के रावत जोधसिह को कहा कि वह उस विद्रोही को गिरफ्तार कर उन्हें सौप दे। रावत जोधसिह ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया तथा विद्रोही को सुरक्षित रूप स वहा स रवाना कर दिया[47]। इसी प्रकार कोठारिया के रावत ने भीमजी चारण को जो गगापुर मे तैनात ब्रिटिश अधिकारियो की सम्पत्ति को लूटकर कोठारिया चला आया था शरण प्रदान की। इसकी सूचना प्राप्त होते ही जहाजपुर के ब्रिटिश अधिकारियो ने रावत जोधसिह को कई बार लिखा कि वह अपराधी को उनके हवाले करदे किन्तु रावत जोधसिह ने इसकी कोई परवाह नही की[48] तथा भीमजी चारण काफी समय तक कोठारिया मे रहा। आउवा ठाकुर कुशालसिह सलूम्बर म शरण लिये हुए था, किन्तु सलूम्बर रावत केसरीसिह पर ब्रिटिश अधिकारियो का अत्यधिक दबाव देखकर वह कोठारिया आ गया, जहा कोठारिया के रावत जोधसिह ने उसे अपने यहा शरण प्रदान की[49]। इसकी सूचना

मिलते ही ब्रिटिश सेना जोधपुर के महाराजा की फौज सहित 8 जून 1858 को कोठारिया आ पहुंची तथा कोठारिया के किले की तलाशी ली गई, लेकिन वहां ठाकुर कुशालसिंह का कोई पता नहीं चला[50]।

इधर मन्दसौर में विद्रोहियों का अत्यधिक दवाव होने के कारण नीमच की स्थिति पुनः खतरे में पड़ गई। मन्दसौर में फिरोजशाह नामक व्यक्ति ने अपने आपको बादशाह घोषित कर, पड़ौसी शासकों व सामन्तों से उसकी अधीनता स्वीकार करने तथा ब्रिटिश सैनिक ठिकानों पर आक्रमण करने को लिखा[51]। उसने सलूम्बर रावत को भी खेरवाड़ा में तैनात ब्रिटिश सैनिक टुकड़ी पर आक्रमण करने के लिये लिखा[52]। धीरे धीरे फिरोजशाह के अनुयायियों की संख्या बढ़ने लगी। इन विद्रोहियों ने टोंक रियासत के अन्तर्गत निम्बाहेड़ा के विद्रोहियों से साठ-गांठ करली थी। चूंकि निम्बाहेड़ा, नीमच नसीराबाद सड़क पर स्थित था, अतः नीमच की स्थिति खतरे में थी। मेवाड़ के पोलीटिकल एजेन्ट कप्तान शॉवर्स ने इन विद्रोहियों का दमन करने के लिये, महाराणा से कुछ अतिरिक्त सेना भेजने को कहा। महाराणा ने दो तोपों सहित 50 सवारों को सादड़ी की ओर भेजा तथा उन्हें यह निर्देश दिया कि जब शॉवर्स द्वारा उनसे सहायता मांगी जाय तब उसे सहायता दी जाय। महाराणा ने सादड़ी कानोड़, बानसी, बेगूं, भदेसर, अठाणा आदि के सामन्तों को भी इस निम्बाहेड़ा अभियान में सहयोग देने को कहा तथा महाराणा ने उन्हें यह भी आश्वासन दिया कि जो इस अभियान में सहायता देंगे उन्हें भूमि आदि इनाम के रूप में दी जायेगी[53]। इधर कप्तान शावर्स नीमच में मेवाड़ की विश्वसनीय सेना तैनात कर स्वयं 18 सितम्बर 1857 को दो तोपें तथा 600 सवारों को लेकर निम्बाहेड़ा की ओर बढ़ा। दूसरे दिन महाराणा द्वारा भेजी गई सेना तथा अठाणा, दारू व सादड़ी के सामन्तों की सेनाएं भी उससे आ मिली। इस प्रकार निम्बाहेड़ा के विद्रोहियों पर प्रहार करते समय शॉवर्स के पास 3,000 सेना तैयार हो गई[54]। ब्रिटिश अधिकारियों के वहां पहुंचते ही विद्रोहियों ने किले से गोलाबारी प्रारम्भ करदी, फलतः 8 वीं रेजीमेंट के कुछ अंग्रेज व मेवाड़ की राजकीय फौज का एक चपरासी मारा गया, किन्तु शावर्स को किले पर अधिकार करने में सफलता प्राप्त हुई। विद्रोहियों के पास इतनी शक्ति नहीं थी कि वे शॉवर्स की सेना से मुकाबला कर सकें अतः रात के अन्धेरे में विद्रोही किला खाली कर मन्दसौर के विद्रोहियों से आ मिले। फलस्वरूप दूसरे दिन प्रातः किले पर मेवाड़ी सेना का अधिकार हो गया[55]। दुर्ग का पटेल विद्रोहियों से मिला हुआ था, अतः उसने विद्रोहियों को वहां से भागने में सहायता पहुंचाई, फलतः उसे गोली से उड़ा दिया

गया[56]। अंग्रेजो को इस वात का पूरा भय था कि कही विद्रोहियो को मेवाडी जनता को सहायता व सहयोग प्राप्त न हो जाय, अत महाराणा की ओर से एक आदेश प्रसारित करवा कर सामन्तो को हिदायत दी गई कि वे विद्रोहियो को अपने इलाके मे न घुसने दें तथा उन्हे आर्थिक प्रलोभन देते हुए कहा गया कि जो विद्रोही को जिन्दा पकड कर लायेगा उसे 40 रुपये तथा सिर काट कर लायेगा उसे 30 रुपये इनाम दिया जायेगा[57]।

मराठा आगमन के पूव निम्बाहेडा मेवाड के अधीन था, किन्तु मराठा-प्रमुत्व काल मे अहिल्या बाई होल्कर ने इसे अपने अधिकार मे ले लिया था तथा बाद मे पिंडारी नेता अमीरखा को जब टाक का परगना दिया गया तब ब्रिटिश अधिकारियो ने निम्बाहेडा का टोक मे मिला दिया। मेवाड के महाराणा, ब्रिटिश सरकार के साथ हुई सन्धि (1818 ई) की धारा 7 के आधार पर निरन्तर निम्बाहेडा की माग कर रहा था, किन्तु ब्रिटिश सरकार ने इस माग पर कभी ध्यान नही दिया। अत इस समय जब निम्बाहेडा पर मेवाडी सना का अधिकार हो गया, तब कप्तान शॉवस ने सहीवाला अर्जुनसिह को कहा कि निम्बाहेडा अब मेवाड के अधीन ही रहेगा[58]। तत्पश्चात किले की सुरक्षा का भार मेहता शेरसिह को सौंपा गया। जिन सामन्तो न इस अभियान मे भाग लिया था उन्ह रोकड रुपयो के रूप मे इनाम दिया गया किन्तु उन्हें भूमि देने का आश्वासन पूरा नही किया गया।

निम्बाहेडा व मन्दसौर के विद्रोहियो के आपस मे मिल जाने से उनकी शक्ति काफी बढ गई थी। अत 22 जून 1857 को इन विद्रोहियो न नीमच के निकट जीरण नामक स्थान पर आक्रमण कर दिया, जिसमे दो अंग्रेज मारे गये[59]। इस सफलता से प्रोत्साहित होकर विद्रोहियो न फिरोजशाह के नेतृत्व मे नीमच की ओर बढना आरम्भ किया। इस पर ब्रिटिश सेनानायक कप्तान बेनिस्टर अपन 250 सनिकों के साथ तथा कप्तान शॉवस मेवाड के 300 सवारो के साथ, उनसे मुकाबला करने आगे बढे। किन्तु विद्रोहियो की सख्या अधिक होने के कारण ब्रिटिश फौज किले म भाग गई और किले का दरवाजा बन्द कर दिया। उसी रात को कप्तान शावस, कप्तान जकसन, सहीवाला अर्जुनसिह तथा मेवाड राज्य के अन्य अधिकारियो न भाग कर दारु नामक गाव म शरण ली तथा दूसरे सनिक अठाणा पीपल्या जावद व चित्तौड की ओर भाग खडे हुए[60]। विद्रोहियो ने नीमच छावनी पर आक्रमण कर किले का घेर लिया। इसी समय मऊ से कनल ड्यूरण्ड अपनी फौज लेकर आया और विद्रोहियो को करारा पराजय दी[61]। विद्रोही वहा से भाग खडे हुए

जिसे नीमच का किला बना लिया गया। इसी समय दाग में विद्रोहियों के पहुंचने की सूचना से कारण नीमच अपने साथियों सहित बेगुन्दा गांव चला गया तथा वहां से वह सगारवा गांव की ओर गया, जहां उसे सूचना मिली कि नीमच से विद्रोही चले गये हैं तब वह वापिस नीमच लौट आया[62]।

इधर मध्य भारत में ग्वालियर के विद्रोही नेता तात्या टोपे तथा राव साहब 22 जून 1858 को जावरा अलीपुर नामक स्थान पर पराजित होने के बाद भाग कर राजपूताने की ओर आये। इन विद्रोहियों को मारवाड़ व मेवाड़ के सामन्तों की विद्रोही कार्यवाहियों की सूचना थी। अतः सम्भवतः वे इन विद्रोही सामन्तों के सहयोग की आकांक्षा लेकर आये थे। तात्या टोप ने अपने 9 000 सैनिकों के साथ मेवाड़ की सीमा में प्रवेश किया तथा वह माण्डलगढ़ पहुंचा[63]। मेहता स्वरूपचन्द व मेहता गोकुलचन्द ने तीन हजार राजपूतों को एकत्रित कर किले की सुरक्षा का प्रबन्ध किया। तात्या रतनगढ़, सिंगोली होता हुआ नीमच जाना चाहता था[64]। अतः जब वह बिजौलिया से लगभग 6 मील की दूरी पर था[65] उसी समय मेजर टेलर ने उसका मार्ग रोक लिया। इस पर विद्रोही अपना मार्ग बदल कर भीलवाड़ा की ओर चल पड़े। रास्ते में उन्होंने मसराहगढ़ के कुम्भालेड़ा नामक गांव को लूटा। फिर वह चामलाऊ गांव पर चढ़ आये, यहां पर चार-पांच राजपूत व दूक लेकर उनके सामने खड़े हुए और विद्रोहियों को चेतावनी दी कि आगे बढ़ने पर गोली चला दी जायगी[66]। विद्रोहियों का इरादा ब्रिटिश सत्ता से लोहा लेना था, न कि साधारण जनता से और वे इस बात का भी ध्यान रखते थे कि जनसाधारण को अपना विरोधी न बनाया जाय। अतः चामलाऊ गांव के इन राजपूतों ने जब उन्हें चेतावनी दी तो वे वहां से झालरापाटन की ओर बढ़ गये[67] तथा 8 अगस्त 1858 को भीलवाड़ा पहुंचे। किन्तु दूसरे ही दिन विद्रोहियों का पीछा करता हुआ जनरल रॉबर्ट वहां आ पहुंचा तथा सागानेर (भीलवाड़ा व शाहपुरा के बीच स्थित मेवाड़ का एक गांव) के निकट विद्रोहियों को पराजित किया[68]। विद्रोही यहां से भाग कर नाथद्वारा पहुंचे तथा कोठारिया के रावत से सम्पर्क स्थापित किया। कोठारिया के रावत जोधसिंह ने जो पहले से ही ब्रिटिश सत्ता का विरोधी था तात्या टोप को रसद आदि की सहायता दी[69]। विद्रोहियों का पीछा करता हुआ जनरल रॉबर्ट यहां भी आ पहुंचा और 13 अगस्त 1858 को कोठारिया के निकट रूपगढ़ के छापर में तात्या की फौज से उसका युद्ध हुआ जिसमें तात्या की फौज पराजित हुई[70]। तात्या भाग कर चित्तौड़ के दक्षिण में आकोला की ओर चला गया और वहां से सिंगोली आदि को लूटता हुआ बुन्देलखण्ड की ओर

चला गया। 3 दिसम्बर को वह पुन मेवाड की तरफ आँधा तथा कुम्भलगढ होता हुआ, वह सलूम्बर, गिगली व भीण्डर की ओर गया। सलूम्बर [illegible] केसरीसिंह ने तात्या को रसद आदि से सहायता दी[71]। 29 दिसम्बर [illegible] ब्रिटिश सेनानायक कप्तान म्यूटर अपनी सेना लेकर विद्रोहियो का पीछा करता हुआ सलूम्बर आ पहुचा। किन्तु इससे पूर्व ही तात्या पर्याप्त सामग्री एकत्रित कर उदयपुर की ओर रवाना हो चुका था। कप्तान म्यूटर के वहा पहुचने पर उसे मालूम हुआ कि यहा के रावत ने विद्रोहियो को सहायता दी है तथा कुछ घायल विद्रोहियो का किले मे शरण दे रखी है। कप्तान म्यूटर इस बात का पता लगाने हेतु किले की ओर गया, किन्तु किले के द्वार बन्द थे। कप्तान को किले म प्रवेश की अनुमति दे दी गई किन्तु उस कहा गया कि वह केवल रावत केसरीसिंह से ही मिल सकता है और किले म अपने साथ केवल 15 सिपाही ले जा सकता है। रावत केसरीसिंह ने बातचीत के दौरान स्वीकार किया कि उसने 'विद्रोहिया की धमकी' के कारण उन्हे सामग्री आदि प्रदान की थी।[72] कप्तान म्यूटर न भी रसद आदि की माग की, किन्तु रावत ने रसद देना तब तक स्वीकार नहीं किया, जब तक कि म्यूटर ने गोलाबारी करने की धमकी न दे दी[73]।

तात्या टोपे को उदयपुर की ओर आता हुआ देखकर महाराणा ने उदयपुर की रक्षा हेतु नीमच से सनिक सहायता मगवाली तथा उदयपुर की सुरक्षा का प्रबन्ध कर लिया[74]। इस प्रबन्ध के कारण तात्या उदयपुर न आ सका और वह गिगली व भीण्डर होता हुआ प्रतापगढ पहुचा। 23 दिसम्बर 1858 का मेजर राक अपनी सेना लेकर वहा आ पहुचा जिसने तात्या को करारी पराजय दी। अत तात्या वहा स मन्दसौर होता हुआ जीरापुर चला गया[75]। फरवरी 1859 में वह तीसरी बार मेवाड की ओर आया, किन्तु इस बार भी उसे कोई सफलता नही मिली[76]। धीरे धीरे तात्या की शक्ति क्षीण होने लगी और उसके सहयोगी भी उससे बिछुड गये। अन्त मे 7 अप्रेल 1859 को नरवर के राजपूत जागीरदार मानसिंह की दगाबाजी के कारण वह गिरफ्तार कर लिया गया तथा उसे फासी दे दी गई[77]।

1857 के विप्लव का अध्ययन करने से स्पष्ट हो जाता है कि मेवाड के कुछ सामन्तो ने, यद्यपि खुले रूप से विद्रोह नही किया था, तथापि ब्रिटिश अधिकारियो एव महाराणा के आदेशो की अवहेलना करते हुए विद्रोहियो को शरण व सहायता दी थी। सलूम्बर, भीण्डर, कोठारिया आदि के सामन्त महाराणा स्वरूपसिंह से, पहले से ही नाराज थ तथा ब्रिटिश सरकार भी महाराणा का

समर्थन करते हुए उनके परम्परागत विशेषाधिकारो को निरन्तर कुचलने का प्रयास किया था। अत इन सामन्तो का महाराणा व ब्रिटिश अधिकारियो का विरोध करना स्वाभाविक ही था। इसके अतिरिक्त विद्रोहियो ने इन असन्तुष्ट सामन्तो को यह भी आश्वासन दिया था कि ब्रिटिश आधिपत्य स मुक्ति प्राप्त होने पर मुगल सम्राट बहादुरशाह पुन शक्तिसम्पन्न हो जायेगा और तब वह उनकी शिकायतो पर सहानुभूतिपूर्ण विचार कर निर्णय दे देगा। इसलिये मेवाड के अनेक सामन्ता ने विद्रोहियो को, जब भी वे उनकी जागीर से होकर गुजरे, उन्हे सहायता दी। ऐसा भी कहा जाता है कि जब जनरल लारेन्स ने आउवा पर आक्रमण किया था, उस समय मेवाड के सलूम्बर, रूपनगर, रहासाणी आदि सामन्तो की सेनाओ ने आउवा के ठाकुर कुशालसिह के साथ विद्रोहियो की ओर से ब्रिटिश फौजो से युद्ध किया था[78]। इतना ही नही जब मध्य भारत का विद्रोही नेता राव साहब मेवाड की ओर आया तब सलूम्बर, भीण्डर, बदनोर व आसीद के सामन्ता ने उसकी सहायता की[79]। मेवाड के विद्रोही सामन्त मुख्य रूप से सलूम्बर का रावत केसरीसिह अनेक विद्रोहियो से सम्पर्क स्थापित किये हुए था। लूनावाडा (गुजरात) की गद्दी का दावेदार सूरजमल, जो ब्रिटिश सत्ता का विरोधी था जब भागकर सलूम्बर आया तब रावत ने उसे एक रात तक अपने यहा ठहराया तथा दूसरे दिन उसे अपने गावो की ओर भेज दिया। इस पर कप्तान शावर्स ने रावत केसरीसिह को लिखा कि वह सूरजमल को अपने यहा शरण न दे किन्तु रावत केसरीसिह ने कप्तान शावर्स के पत्र की कोई परवाह नही की[80]। ब्रिटिश सरकार के खुफिया विभाग की रिपोर्ट ने भी इस बात की पुष्टि की थी कि सूरजमल के साथ अनेक विद्रोहियो को सलूम्बर के रावत ने शरण दी थी[81]। सलूम्बर के रावत की इन ब्रिटिश विरोधी गतिविधियो के कारण ब्रिटिश सरकार ने महाराणा को लिखा भी था कि वह रावत केसरीसिह के विरुद्ध कार्यवाही करे किन्तु महाराणा का कहना था कि वह ब्रिटिश सरकार की सहायता के बिना सलूम्बर के रावत के विरुद्ध कोई कार्यवाही नही कर सकता[82]।

इसी प्रकार कोठारिया के रावत जोधसिह ने भी, जो ब्रिटिश विरोधी कार्यवाहियो के लिये प्रसिद्ध था, आउवा के ठाकुर कुशालसिह को शरण दी थी। ऐसा भी कहा जाता है कि विद्रोही नेता नाना साहब जब बिठुर से भाग कर अपने साथियो सहित कोठारिया की ओर आया तब कोठारिया के रावत जोधसिह ने उसे शरण दी तथा नाना साहब ने तो अपना शेष जीवन भी कोठारिया मे ही व्यतीत किया जिसे रावत ने हर सम्भव सहायता प्रदान की थी[83]। दक्षिण भारत के विद्रोही नेता पेशवा पाडुरग ने भी कोठारिया रावत

तरह-तरह की अफवाह फल रही थीं। वातावरण अत्यन्त ही तनावपूर्ण था। ऐसे संकटमय क्षणों म नीमच म केवल नौ ब्रिटिश अधिकारी उपस्थित थे तथा राज्यों की सेनाओं मे नीमच म केवल मेवाड की सेना ही अधिक विश्वसनीय थी[31]। इसी समय मेवाड के सनिकों मे यह अफवाह फली कि अंग्रेज उनके धम को नष्ट करने पर तुले हुए हैं तथा सैनिकों को जो आटा दिया जाता है, उसम मानव हड्डियों का चूरा मिलाया जाता है। इस खबर से मेवाड के सनिक अशान्त हो उठे तथा वे लगभग विद्रोह करने का निश्चय कर चुके थे[3]। ऐसी स्थिति मे शावस न सनिकों को शान्त करने के लिय मेवाडी सेनानायक सहीवाला अजुनसिंह को भेजा। अजुनसिंह ने उस आटे की रोटी बनवा कर स्वय ने अशान्त सनिकों के सामने खाई[33] जिससे सनिकों का सन्देह दूर हो गया और वे शान्त हो गय।

इस समय जबकि ब्रिटिश सरकार विद्रोह को शान्त करने मे लगी हुई थी तथा मेवाड की राजकीय सेना नीमच में अंग्रेजो की सहायता कर रही थी तब सलूम्बर के रावत केसरीसिंह ने अवसर का लाभ उठाते हुए, महाराणा को लिखा कि यदि आठ दिन म उसकी परम्परागत अधिकारों सम्बधी मागो को पूरा नही किया गया तो वह मेवाड की प्राचीन राजधानी चित्तौड मे मेवाड की गद्दी पर उसका (महाराणा का) प्रतिद्वन्दी बैठा देगा[31]। महाराणा ने इस पत्र की सूचना शावस को नीमच भेज दी। इधर खरवाडा म स्थित मेवाड भील कोर के सुपरिटेन्डेंट कनल ब्रुक ने भी शॉवस को लिखा कि सलूम्बर का रावत खरवाडा की सनिक छावनी पर आक्रमण करने हेतु अन्य सामन्तो को प्रोत्साहित कर रहा है[35]। इस पर कप्तान शावस न रावत केसरीसिंह को लिखा कि यदि वह महाराणा के विरुद्ध किसी भी कायवाही म भाग लेगा तो उसके विरुद्ध सर हेनरी लॉरेंस की रिपोट के अनुसार जिसम सलूम्बर व भीण्डर के सामन्तो को उनके ठिकाना से अपदस्थ कर, उन्हें राजपूताना से निष्कासित करने को लिखा था, कायवाही का जायेगी[36]। इसके प्रत्युत्तर म रावत केसरीसिंह ने लिखा कि उसको (शावस को) जो सूचना मिली है वह उसके शत्रुओ द्वारा प्रसारित की गई झूठी अफवाह है, वह महाराणा के विरुद्ध कोई कायवाही नही कर रहा है[37]।

21 अगस्त 1857 को जोधपुर लीजियन की एक सनिक टुकडी ने विद्रोह कर दिया। तत्पश्चात यह सैनिक टुकडी अपने मुख्यावास एरिनपुरा पहुची, जहा जोधपुर लीजियन के सभी सनिक विद्रोही हो चुके थे। उन्होने एरिनपुरा छावनी केन्द्र को लूटा और मारवाड के रास्ते से दिल्ली की ओर

चल पडे[38]। ये विद्राही जसे ही पाली के निकट पहुँचे, आउवा ठाकुर कुशाल सिंह ने उन्हे अपनी सेवा मे ले लिया और उन्हे आउवा ले आया, जहा मारवाड के अन्य विद्रोही जागीरदार भी अपने अपने सैनिको के साथ आ पहुँचे। इस पर जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह ने सिंघवी कुशलराज के नेतृत्व म एक सेना, जिसम बम्बई की 12 वी रेजीमेट का अग्रेज पदाधिकारी लेफ्टिनेन्ट हथकोट भी सम्मिलित थ, आउवा की ओर आये। 8 सितम्बर 1857 को विद्रोहिया व आउवा के ठाकुर कुशालसिंह की सयुक्त सेना व जोधपुर की राजकीय सेना के बीच आउवा से तीन मील दूर बिथौरा नामक स्थान पर युद्ध हुआ, जिसम जोधपुर की राजकीय सेना पराजित हुई। ए जी जी जाज लारेन्स स्वय सेना लेकर आउवा पर आ पहुचा, किन्तु उसे भी 18 सितम्बर को अपमानजनक पराजय देखनी पडी[39]।

इसी बीच 13 सितम्बर 1857 का डीसा के विद्रोहियो के नेता रिसालदार अब्दुल अली अब्बास, शेख मोहम्मद बख्श, सूबेदार, जमादार तथा सभी हिन्दू व मुसलमान सिपाहियो के नाम से मारवाड व मेवाड की जनता के नाम अपील प्रसारित की जिसमे उन्ह शरण व सहायता देन को कहा गया था। इस अपील स इस बात का सकेत मिलता है कि मेवाड और मारवाड के सामन्त विद्रोहियो के साथ थ[40]। आउवा के ठाकुर कुशालसिंह द्वारा विद्रोहियो को दी गई सहायता न मेवाड के सामन्तो को भी प्रोत्साहित किया। ठाकुर कुशालसिंह ने सलूम्बर के रावत केसरीसिंह को लिखा कि विद्राहियो को सहायता दे तथा उस यह भी आश्वासन दिया कि दिल्ली के बादशाह की ओर से तुरन्त सहायता आने वाली है[41]। इस प्रकार के अनेक पत्र ठाकुर कुशालसिंह ने सलूम्बर रावत केसरीसिंह को लिखे, जिन्ह देवगढ के रावत रणजीत सिंह ने बीच म पकड कर ब्रिटिश अधिकारियो को सौंप दिये थे[4]।

आउवा की पराजय का बदला लेने के लिये ए जी जी ने कनल होम्स के नेतृत्व मे एक सेना भेजी जिसन 20 जनवरी 1858 का आउवा पर आक्रमण कर दिया। इसी लडाई के दौरान ठाकुर कुशालसिंह ने सलूम्बर रावत केसरीसिंह को पत्र लिखकर सूचित किया कि वह शरण क लिय सलूम्बर आ रहा है[4]। अत जब ठाकुर कुशालसिंह को विजय की कोई आशा नहीं रही तब 23 जनवरी 1858 की रात का वह वहा से भाग खडा हुआ और उसने मेवाड की सीमा मे प्रवश किया। ऐसी स्थिति म अग्रेज अधिकारिया को भय हुआ कि यदि ठाकुर कुशालसिंह को मेवाड के सामन्तो से सनिक सहयोग मिल गया तो वह ब्रिटिश सत्ता के लिय अत्यन्त ही घातक सिद्ध हा

सकता है। अत ब्रिटिश अधिकारियो के निर्देशानुसार महाराणा न अपने सामन्तो को आदेश दिया कि मारवाड के विद्रोहियो को सहायता व शरण न दी जाय[44]। अग्रेजो को इस बात की भी जानकारी थी कि जनता की सहानुभूति विद्रोहियो के साथ है। अत जनता को धन का प्रलोभन देते हुए महाराणा की ओर से एक और आदेश प्रसारित करवाया जिसमे लिखा गया कि सशस्त्र विद्रोही को पकडने वाले को 50 रुपये तथा शस्त्रहीन विद्रोही को पकडने वाले को 30 रुपये इनाम दिये जायेंगे[45]।

पोलीटिकल एजेन्ट का जब इस बात की सूचना मिली कि विद्रोहियो की एक सनिक टुकडी सलूम्बर म ठहरी हुई है तब उसन रावत केसरीसिह को लिखा कि वह उस सनिक टुकडी को अपने यहा रोक ले तथा उसके कमाण्डर को गिरफ्तार कर उसके पास भेज दे, किन्तु रावत केसरीसिह ने न तो इस आज्ञा का पालन ही किया और न इस पत्र का प्रत्युत्तर ही दिया। जब कुछ दिन पश्चात यह सैनिक टुकडी बिना रोकटोक के सलूम्बर से रवाना हो गयी, तब पोलीटिकल एजेन्ट न रावत केसरीसिह से इसका स्पष्टीकरण मागा। इस पर रावत केसरीसिह ने स्वीकार किया कि विद्रोही सनिको की धमकी" के कारण उसने उस सैनिक टुकडी को बिना रोकटोक के जाने दिया था[46]।

इधर विद्रोही सनिको का एक रिसालदार बनेडा म आया जहा उसे शरण दी गई। इस पर पोलीटिकल एजे ट न घीरा नामक जमादार के साथ एक चपरासी को बनेडा की ओर भेजा, कि तु इसी बीच विद्राही रिसालदार बनेडा स कोठारिया चला गया। त उसका पीछा करते हुए जमादार व चपरासी कोठारिया पहुचे तथा कोठारिया के रावत जोधसिह को कहा कि वह उस विद्रोही को गिरफ्तार कर उन्हे सौप द। रावत जोधसिह ने उसकी बात पर कोई ध्यान नही किया तथा विद्रोही को सुरक्षित रूप से वहा से रवाना कर दिया[47]। इसी प्रकार कोठारिया के रावत ने भीमजी चारण को, जो गगापुर म तनात ब्रिटिश अधिकारियो की सम्पत्ति को लूटकर कोठारिया चला आया था, शरण प्रदान की। इसकी सूचना प्राप्त होते ही जहाजपुर के ब्रिटिश अधिकारिया न रावत जोधसिह को कई बार लिखा कि वह अपराधी को उनके हवाले करदे किन्तु रावत जोधसिह ने इसकी कोई परवाह नही की[48] तथा भीमजी चारण काफी समय तक कोठारिया म रहा। आउवा ठाकुर कुशालसिह सलूम्बर म शरण लिये हुए था, किन्तु सलूम्बर रावत केसरीसिह पर ब्रिटिश अधिकारियो का अत्यधिक दवाव देखकर वह कोठारिया आ गया, जहा कोठारिया के रावत जोधसिह ने उसे अपने यहा शरण प्रदान की[49]। इसकी सूचना

मिलते ही ब्रिटिश सेना जोधपुर के महाराजा की फौज सहित 8 जून 1858 को कोठारिया आ पहुची तथा कोठारिया के किले की तलाशी ली गई, लेकिन वहा ठाकुर कुशालसिंह का कोई पता नही चला[50]।

इधर मन्दसौर मे विद्रोहियो का अत्यधिक दबाव होने के कारण नीमच की स्थिति पुन खतरे मे पड गई। मन्दसौर म फिरोजशाह नामक व्यक्ति न अपन आपको बादशाह घोषित कर, पडौसी शासको व सामन्तो स उसकी अधीनता स्वीकार करने तथा ब्रिटिश सनिक ठिकानो पर आक्रमण करने को लिखा[51]। उसने सलूम्बर रावत को भी खरवाडा मे तनात ब्रिटिश सनिक टुकडी पर आक्रमण करने के लिये लिखा[52]। धीरे धीरे फिरोजशाह के अनुयायियो की सख्या बढन लगी। इन विद्रोहियो ने टोक रियासत के अन्तगत निम्बाहेडा के विद्रोहिया से साठ गाठ करली थी। चू कि निम्बाहेडा नीमच नसीराबाद सडक पर स्थित था, अत नीमच की स्थिति खतरे मे थी। मेवाड के पोलीटिकल एजेन्ट कप्तान शॉवस ने इन विद्रोहिया का दमन करन के लिये, महाराणा से कुछ अतिरिक्त सेना भेजने को कहा। महाराणा न दो तोपा सहित 50 सवारो को सादडी की ओर भेजा तथा उन्हें यह निर्देश दिया कि जब शावस द्वारा उनसे सहायता मागी जाय तब उसे सहायता दी जाय। महाराणा न सादडी कानोड, बानसी, बेगू, भदेसर अठाणा आदि के साम तो को भी इस निम्बाहेडा अभियान मे सहयोग देने को कहा तथा महाराणा ने उन्हे यह भी आश्वासन दिया कि जो इस अभियान म सहायता देंगे, उन्हे भूमि आदि इनाम के रूप मे दी जायेगी[53]। इधर कप्तान शॉवस नीमच म मेवाड की विश्वसनीय सेना तनात कर स्वय 18 सितम्बर 1857 को दो तोपें तथा 600 सवारो को लेकर निम्बाहेडा की ओर बढा। दूसरे दिन महाराणा द्वारा भेजी गई सना तथा अठाणा, ...र व सादडी के साम‍न्तो की सेनाए भी उससे आ मिली। इस प्रकार निम्बाहेडा के विद्रोहिया पर प्रहार करत समय शावस के पास 3 000 सेना तयार हो गई[54]। ब्रिटिश अधिकारिया के वहा पहुचते ही विद्रोहियो ने किले से गोलाबारी आरम्भ करदी, फलत 8 वीं रेजीमेंट के कुछ अग्रेज व मेवाड की राजकीय फौज का एक चपरासी मारा गया, किन्तु शॉवस को किले पर अधिकार करन म सफलता प्राप्त हुई। विद्रोहिया के पास इतनी शक्ति नही थी कि वे शॉवस की सेना से मुकाबला कर सके अत रात के अन्धेरे म विद्रोहियो किला खाली कर मन्दसौर के विद्रोहिया से आ मिले। फलस्वरूप दूसरे दिन प्रात किले पर मेवाडी सेना का अधिकार हो गया[55]। दुग का पटेल विद्रोहियो से मिला हुआ था अत उसने विद्रोहिया को वहां स भागन म सहायता पहुचाई फलत उस गोली से उडा दिया

गया[56]। अंग्रेजो को इस बात का पूरा भय था कि कहीं विद्रोहियो को मेवाड़ी जनता का सहायता व सहयोग प्राप्त न हो जाय, अत महाराणा की ओर से एक आदेश प्रसारित करवा कर सामन्तों को हिदायत दी गई कि वे विद्रोहियो को अपने इलाके म न घुसने दें तथा उन्ह आर्थिक प्रलोभन देत हुए कहा गया कि जो विद्रोही को जिन्दा पकड कर लायेगा उसे 40 रुपये तथा सिर काट कर लायेगा उसे 30 रुपये इनाम दिया जायेगा[57]।

मराठा आगमन के पूर्व निम्बाहेड़ा मेवाड के अधीन था किन्तु मराठा-प्रमुत्व काल मे अहिल्या बाई होल्कर ने इसे अपने अधिकार म ले लिया था तथा बाद मे पिंडारी नेता अमीरखां को जब टोंक का परगना दिया गया तब ब्रिटिश अधिकारियो ने निम्बाहेड़ा का टोंक मे मिला दिया। मेवाड के महाराणा, ब्रिटिश सरकार के साथ हुई सन्धि (1818 ई) की धारा 7 के आधार पर निरन्तर निम्बाहेड़ा की माग कर रहा था, किन्तु ब्रिटिश सरकार ने इस माग पर कभी ध्यान नही दिया। अत इस समय जब निम्बाहेड़ा पर मेवाड़ी सेना का अधिकार हो गया, तब कप्तान शॉवस ने सहीवाला अर्जुनसिंह को कहा कि निम्बाहेड़ा अब मेवाड के अधीन ही रहेगा[58]। तत्पश्चात किले की सुरक्षा का भार मेहता शेरसिंह को सौंपा गया। जिन सामन्तो ने इस अभियान मे भाग लिया था उन्ह रोकड रुपयो के रूप म इनाम दिया गया किन्तु उन्हे भूमि देने का आश्वासन पूरा नहीं किया गया।

निम्बाहेड़ा व मन्दसौर के विद्रोहियो के आपस मे मिल जाने से उनकी शक्ति काफी बढ गई थी। अत 22 जून 1857 को इन विद्रोहियो न नीमच के निकट जीरण नामक स्थान पर आक्रमण कर दिया, जिसम दो अंग्रेज मारे गये[59]। इस सफलता से प्रोत्साहित होकर विद्रोहियो ने फिरोजशाह के नेतृत्व मे नीमच की ओर बढना आरम्भ किया। इस पर ब्रिटिश सेनानायक कप्तान ग्रेनिस्टर अपने 250 सैनिकों के साथ तथा कप्तान शॉवस मेवाड के 300 सवारो के साथ, उनसे मुकाबला करने आगे बढे। किन्तु विद्रोहियो की सख्या अधिक होने के कारण ब्रिटिश फौज किले मे भाग गई और किले का दरवाजा बन्द कर दिया। उसी रात को कप्तान शावस कप्तान जक्सन, सहीवाला अर्जुनसिंह तथा मेवाड राज्य के अन्य अधिकारिया न भाग कर दारु नामक गाव मे शरण ली तथा दूसरे सनिक अठाणा पीपल्या जावद व चित्तौड की ओर भाग खडे हुए[60]। विद्रोहियो ने नीमच छावनी पर आक्रमण कर किले का घेर लिया। इसी समय मऊ से कनल ड्यूरण्ड अपनी फौज लेकर आया और विद्रोहिया का करारी पराजय दी[61]। विद्रोही यहा स भाग खडे हुए

जिससे नीमच का किला बचा लिया गया । इसी समय दारु म विद्रोहियो के पहुचने की आशका के कारण शावस अपने अन्य साथियो सहित केसुन्दा गाव चला गया तथा वहा से वह लमारवा गाँव की ओर गया जहां उसे सूचना मिली कि नीमच से विद्रोही चले गये हैं, तब वह वापिस नीमच लौट आया[62]।

इधर मध्य भारत म ग्वालियर के विद्रोही नेता तात्या टोपे तथा राव साहब 22 जून 1858 को जावरा अलीपुर नामक स्थान पर पराजित होने के बाद भाग कर राजपूताने की ओर आये। इन विद्रोहियो को मारवाड व मेवाड के सामन्तो की विद्रोही कार्यवाहियो की सूचना थी । अत सम्भवत वे इन विद्रोही सामन्तो के सहयोग की आकाक्षा लेकर आये थे । तात्या टोपे न अपने 9 000 सनिको के साथ मवाड की सीमा म प्रवेश किया तथा वह माडलगढ पहुचा[63]। मेहता स्वरूपचद व मेहता गोकुलचन्द न दो तीन हजार राजपूतो को एकत्रित कर किले की सुरक्षा का प्रबन्ध किया। तात्या रतनगढ, सिंगोली होता हुआ नीमच जाना चाहता था[64]। अत जब वह बिजौलिया से लगभग 6 मील की दूरी पर था[65] उसी समय मेजर टेलर ने उसका माग रोक लिया । इस पर विद्रोही अपना माग बदल कर भीलवाडा की ओर चल पडे। रास्ते म उन्होने मसरोडगढ के कुआखेडा नामक गाव को लूटा। फिर वह चामलाऊ गाव पर चढ आये यहां पर चार-पाँच राजपूत व दूक लकर उनके सामने खडे हुए और विद्रोहियो को चेतावनी दी कि आगे बढने पर गोली चला दी जायेगी[66]। विद्रोहियो का इरादा ब्रिटिश सत्ता से लोहा लेना था, न कि साधारण जनता स और वे इस बात का भी ध्यान रखते थे कि जनसाधारण को अपना विरोधी न बनाया जाय । अत चामलाऊ गाव के इन राजपूतो न जब उन्हें चेतावनी दी तो वे वहा स झालरापाटन की ओर बढ गये[67] तथा 8 अगस्त 1858 को भीलवाडा पहुचे। किन्तु दूसरे ही दिन विद्रोहियो का पीछा करता हुआ जनरल राबट वहा आ पहुचा तथा सागानेर (भीलवाडा व शाहपुरा के बीच स्थित मेवाड का एक गाव) के निकट विद्रोहियो को पराजित किया[68]। विद्रोही वहा स भाग कर नाथ-द्वारा पहुँचे तथा कोठारिया के रावत स सम्पर्क स्थापित किया । कोठारिया के रावत जोधसिह ने जो पहले से ही ब्रिटिश सत्ता का विरोधी था तात्या टोपे को रसद आदि की सहायता दी[69]। विद्रोहियो का पीछा करता हुआ जनरल राबट यहा भी आ पहुचा और 13 अगस्त 1858 को कोठारिया के निकट रूपमगढ के छापर म तांत्या की फौज से उसका युद्ध हुआ जिसम तात्या की फौज पराजित हुई[70]। तांत्या भाग कर चित्तौड के दक्षिण म आकोला की ओर चला गया और वहा से सिंगोली आदि को लूटता हुआ बुन्देलखण्ड की ओर

चला गया । 3 दिसम्बर को वह पुन मेवाड की तरफ आया तथा कुशालगढ होता हुआ, वह सलूम्बर, गिगली व भीण्डर की ओर गया। सलूम्बर के रावत केसरीसिह ने तात्या को रसद आदि मे सहायता दी[71] । 29 दिसम्बर को एक ब्रिटिश सेनानायक कप्तान म्यूटर अपनी सेना लेकर विद्रोहियो का पीछा करता हुआ सलूम्बर आ पहुचा । किन्तु इससे पूव ही तात्या पर्याप्त सामग्री एकत्रित कर उदयपुर की ओर रवाना हो चुका था । कप्तान म्यूटर के वहा पहुचने पर उसे मालूम हुआ कि यहा के रावत ने विद्रोहियो को सहायता दी है तथा कुछ घायल विद्रोहियो को किले मे शरण दे रखी है । कप्तान म्यूटर इस बात का पता लगाने हेतु किले की ओर गया, किन्तु किले के द्वार बन्द थे । कप्तान को किले मे प्रवेश की अनुमति दे दी गई किन्तु उसे कहा गया कि वह केवल रावत केसरीसिह से ही मिल सकता है और किले मे अपने साथ केवल 15 सिपाही ले जा सकता है । रावत केसरीसिह न बातचीत के दौरान स्वीकार किया कि उसने विद्रोहियो की धमकी' के कारण उन्हें सामग्री आदि प्रदान की थी ।[72] कप्तान म्यूटर ने भी रसद आदि की माग की, किन्तु रावत ने रसद देना तब तक स्वीकार नही किया, जब तक कि म्यूटर ने गोलाबारी करने की धमकी न दे दी[73] ।

तात्या टापे को उदयपुर की ओर आता हुआ देखकर महाराणा ने उदयपुर की रक्षा हेतु नीमच से सैनिक सहायता मगवाली तथा उदयपुर की सुरक्षा का प्रबन्ध कर लिया[74] । इस प्रबन्ध के कारण तात्या उदयपुर न आ सका और वह गिगली व भीण्डर होता हुआ प्रतापगढ पहुचा । 23 दिसम्बर 1858 को मेजर रॉक अपनी सेना लेकर वहा आ पहुचा जिसने तात्या को करारी पराजय दी । अत तात्या वहा स मन्दसौर होता हुआ जीरापुर चला गया[75] । फरवरी 1859 मे वह तीसरी बार मेवाड की ओर आया, किन्तु इस बार भी उसे कोई सफलता नही मिली[76] । धीरे-धीरे तात्या की शक्ति क्षीण होने लगी और उसके सहयोगी भी उससे बिछुड गये । अन्त मे 7 अप्रेल 1859 को नरवर के राजपूत जागीरदार मानसिह की दगाबाजी के कारण वह गिरफ्तार कर लिया गया तथा उसे फासी दे दी गई[77] ।

1857 के विप्लव का अध्ययन करन से स्पष्ट हो जाता है कि मेवाड के कुछ सामन्ता ने, यद्यपि खुले रूप स विद्रोह नही किया था, तथापि ब्रिटिश अधिकारियो एव महाराणा के आदेशो की अवहेलना करते हुए विद्रोहियो को शरण व सहायता दी थी । सलूम्बर, भीण्डर, कोठारिया आदि के सामन्त महाराणा स्वरूपसिह से, पहले से ही नाराज थे तथा ब्रिटिश सरकार भी महाराणा का

समर्थन करते हुए उनके परम्परागत विशेषाधिकारों का निरन्तर कुचलन का प्रयास किया था। अतः इन सामन्तों का महाराणा व ब्रिटिश अधिकारियों का विरोध करना स्वाभाविक ही था। इसके अतिरिक्त विद्रोहियों ने इन असन्तुष्ट सामन्तों को यह भी आश्वासन दिया था कि ब्रिटिश आधिपत्य से मुक्ति प्राप्त होने पर मुगल सम्राट बहादुरशाह पुनः शक्तिसम्पन्न हो जायेगा और तब वह उनकी शिकायतों पर सहानुभूतिपूर्ण विचार कर निर्णय दे देगा। इसलिये मेवाड़ के अनेक सामन्तों ने विद्रोहियों का, जब भी वे उनकी जागीर से होकर गुजरे, उन्हें सहायता दी। ऐसा भी कहा जाता है कि जब जनरल लारेन्स ने आउवा पर आक्रमण किया था, उस समय मेवाड़ के सलूम्बर रूपनगर, ल्हासाणी आदि सामन्तों की सेनाओं ने आउवा के ठाकुर कुशालसिंह के साथ विद्रोहियों की ओर से ब्रिटिश फौजों से युद्ध किया था[78]। इतना ही नहीं, जब मध्य भारत का विद्रोही नेता राव साहब मेवाड़ की ओर आया तब सलूम्बर, भीण्डर, बदनौर व आमेट के सामन्तों ने उसकी सहायता की[79]। मेवाड़ के विद्रोही सामन्त मुख्य रूप से सलूम्बर का रावत केसरीसिंह अनेक विद्रोहियों से सम्पर्क स्थापित किये हुए था। लूनावाड़ा (गुजरात) की गद्दी का दावेदार सूरजमल जो ब्रिटिश सत्ता का विरोधी था जब भागकर सलूम्बर आया तब रावत ने उसे एक रात तक अपने यहां ठहराया तथा दूसरे दिन उसे अपने गांवों की ओर भेज दिया। इस पर कप्तान शावर्स ने रावत केसरीसिंह को लिखा कि वह सूरजमल को अपने यहां शरण न दे किन्तु रावत केसरीसिंह ने कप्तान शावर्स के पत्र की कोई परवाह नहीं की[80]। ब्रिटिश सरकार के खुफिया विभाग की रिपोर्ट ने भी इस बात की पुष्टि की थी कि सूरजमल के साथ अनेक विद्रोहियों को सलूम्बर के रावत ने शरण दी थी[81]। सलूम्बर के रावत की इन ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों के कारण ब्रिटिश सरकार ने महाराणा को लिखा भी था कि वह रावत केसरीसिंह के विरुद्ध कार्यवाही करे किन्तु महाराणा का कहना था कि वह ब्रिटिश सरकार की सहायता के बिना सलूम्बर के रावत के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं कर सकता[82]।

इसी प्रकार कोठारिया के रावत जोधसिंह ने भी जो ब्रिटिश विरोधी कार्यवाहियों के लिये प्रसिद्ध था आउवा के ठाकुर कुशालसिंह को शरण दी थी। ऐसा भी कहा जाता है कि विद्रोही नेता नाना साहब जब बिठूर से भाग कर अपने साथियों सहित कोठारिया की ओर आया, तब कोठारिया के रावत जोधसिंह ने उसे शरण दी तथा नाना साहब ने तो अपना शेष जीवन भी कोठारिया में ही व्यतीत किया जिसे रावत ने हर सम्भव सहायता प्रदान की थी[83]। दक्षिण भारत के विद्रोही नेता पेशवा पांडुरंग ने भी कोठारिया रावत

को लिखा था कि वह विद्रोहियो को सहायता प्रदान करे[84]। इस पत्र से स्पष्ट हो जाता है कि कोठारिया का रावत विद्रोहियो से गुप्त रूप से मिला हुआ था तथा उन्हें हर प्रकार की सहायता देने को तत्पर था। कोठारिया रावत के अतिरिक्त भीण्डर का सामन्त भी विद्रोहियो से मिला हुआ था। आउवा ठाकुर कुशालसिंह ने सलूम्बर के रावत केसरीसिंह को जो पत्र लिखे थे, उन्ह सलूम्बर के रावत तक पहुचाने के लिये ठाकुर कुशालसिंह का प्रतिनिधि तथा उसके साथ 8 सवार थे। इन सवारो मे एक भीण्डर का गोस्वामी भी था, जिसके पास ठाकुर कुशालसिंह के पत्र थे[85]। इन पत्रवाहको को देवगढ के के आदमियो ने वछावालिया की नाल पर रोक लिया था तथा कुछ समय तक दोनो पक्षो मे लडाई होने के बाद देवगढ के आदमियो ने उन 8 सवारो मे से दो को गिरफ्तार कर लिया, जिसमे भीण्डर का गोस्वामी भी था तथा उसकी तलाशी लेने पर उसके पास उक्त पत्र पाये गये। इस घटना से यह पता लगता है कि भीण्डर का सामन्त भी विद्रोहियो से मिला हुआ था। जसाकि पूव पृष्ठो मे बताया जा चुका है कि शाहपुरा का राजा भी विद्रोहियो को सहायता व शरण देने मे तत्पर रहा था।

सम्पूण विप्लव-काल मे यह अफवाह चलती रही कि मध्य भारत का विद्रोही नेता राव साहब सलूम्बर मे शरण लिये हुए है तथा इस सम्बध मे ए जी जी ने महाराणा को लिखा कि विद्रोही को पकडने की कायवाही की जाय किन्तु महाराणा ने ए जी जी को प्रत्युत्तर दिया कि वह ब्रिटिश सरकार की सहायता के अभाव मे कुछ भी कायवाही करने मे असमथ है, क्योकि उसके द्वारा की जाने वाली कायवाही का विरोध न केवल रावत केसरीसिंह ही करेगा, अपितु उसे राव साहब और उसके सहयोगियो का समथन व सहयोग भी प्राप्त हो जायेगा। महाराणा न यह भी लिखा कि सलूम्बर का रावत पिछले कई वर्षों से सर्वोच्च सत्ता को चुनौती दे रहा है और इस बार यदि उसे कोई सजा नही दी गई तो वह भविष्य मे भी निभय होकर विद्रोहियो का शरण देना रहेगा और इस प्रकार सलूम्बर विद्रोहियो का शरण स्थल बन जायेगा[86]। लेकिन गवनर जनरल ने मामले को मात्र टालते हुए सलूम्बर रावत के विरुद्ध किसी प्रकार की कायवाही न करने हेतु ए जी जी को आवश्यक निर्देश दिया[87]। वस्तुत विप्लव काल मे ब्रिटिश सरकार ऐसा कोई कदम उठाने को तयार नहीं थी जिससे कि ब्रिटिश विरोधी भावनाए और अधिक तीव्र हो उठें। ब्रिटिश अधिकारी इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि किसी विद्रोही सामन्त के विरुद्ध सनिक कायवाही करने से सभी सामन्त एकजुट हो जायेंगे और उन शक्तिशाली सामन्तो का सयुक्त सगठन ब्रिटिश सत्ता से लोहा लेने पर उतारु हो

जायगा, जिससे ब्रिटिश सत्ता को खतरा उत्पन्न हो सकता है। इसके अतिरिक्त महाराणा व ब्रिटिश अधिकारियों के बीच भी सम्बध मधुर नही थे अत ब्रिटिश अधिकारी सामन्ता की शक्ति को पूर्णत कुचल कर महाराणा की सर्वोच्चता स्थापित करन के पक्ष म भी नहीं थे।

आउवा ठाकुर कुशालसिंह और सलूम्बर रावत केसरीसिंह के बीच हुए पत्र व्यवहारा का, जिन्हे देवगढ रावत ने बीच मे ही पकड कर ब्रिटिश अधिकारिया का सौंप दिया था, देखन से पता चलता है कि वे दोना अक्टूबर 1857 म जोधपुर लीजियन के विद्रोहिया से सम्पक स्थापित कर सभी सामन्तो को विद्रोह के लिय प्रोत्साहित कर रहे थे तथा दिल्ली से एक सेना बुलाकर राजपूताने म ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध एक विशाल सैनिक मोर्चा बनाना चाहते थे[88]। इसी प्रकार विद्रोहियो का एक अन्य नेता नवाब रहमत अलीखा न सलूम्बर रावत केसरीसिंह का लिखा था कि, मेवाड मे सभी मामले तुम्हारी सलाह से निश्चित किये जायेंगे, तुम हमारे साथ आ जाओ, कुशालसिंह पहले से ही हमारे साथ आ चुका है।"[89]

विद्रोह की समाप्ति पर देवगढ के रावत रणजीतसिंह द्वारा बीच मे पकडे गये आउवा ठाकुर कुशालसिंह व सलूम्बर रावत केसरीसिंह के पत्र व्यवहारो पर टिप्पणी करते हुए पोलीटिकल एजेन्ट न इन पत्रो की वास्तविकता पर सन्देह प्रकट करते हुए कहा था कि सम्भवत यह विद्रोहियो की चाल थी। विद्राही ब्रिटिश सरकार को इस बात के लिये उत्तेजित करना चाहते थे कि वे महाराणा के विरोधी सामन्तो के विरुद्ध कार्यवाही करें ताकि विरोधी सामन्त ब्रिटिश सत्ता से क्रुद्ध होकर विद्रोह करने के लिये बाध्य हो जाय। पोलीटिकल एजेन्ट के विचार मे ये सभी पत्र जाली थे तथा इन जाली पत्रो का तयार करने मे स्वय महाराणा का हाथ हो सकता है क्योंकि स्वय महाराणा ब्रिटिश सरकार को उत्तेजित कर विरोधी सामन्तो का दमन करवाना चाहता था[90]। पोलीटिकल एजेन्ट के इन विचारो मे कोई सत्यता प्रतीत नही होती। सलूम्बर भीण्डर व कोठारिया के सामन्ता ने विद्रोहियो को शरण व सहायता दी थी इस बात की पुष्टि स्वय ब्रिटिश सरकार के गुप्तचर प्रतिवेदन से होती है[91]। यह भी निर्विवाद रूप से सत्य है कि मेवाड के ये विद्रोही सामन्त अन्य विद्रोहियो से सम्पक स्थापित किये हुए थे और इसी सम्पक के कारण जब मारवाड के विद्रोही सामन्त मेवाड म आये थे, तो मेवाड के सामन्तो ने उन्हे शरण दी थी। इसके अतिरिक्त आउवा के ठाकुर कुशालसिंह

सूचित किया था कि वह आधी रात के समय यहा से (आउवा से) रवाना होकर उसके पास पहुच रहा है[91]। बाद मे जब कनल होम्स ने आउवा पर आक्रमण किया था तब आउवा ठाकुर अपने किले से आधी रात के समय ही भाग निकला था और वहा से वह सीधा सलूम्बर गया था। अत ठाकुर कुशालसिह के इस पत्र की सत्यता बाद मे घटित हुई घटना से पुष्ट हो जाती है। अत पालीटिकल एजेन्ट के इस विचार मे, कि ये पत्र जाली थे, आशिक सत्यता भी नही है। पोलीटिकल एजेन्ट द्वारा इस प्रकार का मत प्रकट करने का कारण यह हो सकता है कि विद्रोह की समाप्ति पर भारत के गवनर जनरल लाड केनिंग ने विद्रोहियो के प्रति 'क्षमा नीति' का पालन किया था, ताकि विद्रोह-कालीन ब्रिटिश विरोधी भावनाओ को समाप्त किया जा सके। इस नीति के कारण पोलीटिकल एजेन्ट किसी विद्रोही सामन्त को दण्ड देने के पक्ष मे नही था, इसलिये पत्रो की सत्यता पर सन्देह प्रकट करके उसने विद्रोही सामन्तो के विरुद्ध कोई कायवाही नही की थी। पोलीटिकल एजेन्ट का यह कहना कि इन जाली पत्रो को तयार करवाने मे स्वय महाराणा का हाथ था, महाराणा द्वारा विद्रोह काल मे ब्रिटिश अधिकारियो को निष्ठापूवक दी गई सहायता पर गहरा प्रहार था। इसका एक मात्र कारण यह था कि अपने कटु सम्बधो के कारण ब्रिटिश अधिकारी महाराणा की सेवाओ एव सहायता को कोई महत्व देना नही चाहते थे तथा उसे नीचा दिखाने पर तुले हुए थे।

अगस्त 1858 तक समस्त भारत मे विद्राह को लगभग कुचल दिया गया था। 1 नवम्बर 1858 को ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत का शासन ब्रिटिश ताज को सौप दिया तथा भारत के गवनर जनरल को वायसराय की उपाधि से विभूपित किया। वायसराय लाड केनिंग ने इगलड की महारानी विक्टोरिया की ओर से भारत के सभी देशी राज्या के शासको के नाम एक घोषणा पत्र जारी किया, जिसमे मुख्य रूप से उनके अधिकारो व विशेषाधिकारो को सुरक्षित रखने का आश्वासन दिया गया[93]। महाराणा ने इस घोषणा का हार्दिक स्वागत किया। उदयपुर मे रोशनी की गई आतिशबाजी की गई, यूरोपियन सनिको को दावत दी गई तथा राजकीय सैनिको मे मिठाई वितरित की गई[94]। इस प्रकार अग्रेजो की विजय से हर्षोल्लासित होकर महाराणा ने महारानी विक्टोरिया के नाम एक बधाई पत्र भेजा[95]।

ब्रिटिश सरकार ने महाराणा व उसके अधिकारियो को सकट काल मे अग्रेजो की सहायता करने के उपलक्ष्य म पुरस्कृत किया। महाराणा को 20,000 रुपये की खिलअत दी गई[96] किन्तु अन्य शासको को दिये गये

पुरस्कारों की तुलना मे यह पुरस्कार अत्यन्त ही अपर्याप्त था[97]। इसका एक मात्र कारण यह प्रतीत होता है कि विद्रोह प्रारम्भ होने के समय महाराणा व ब्रिटिश अधिकारियो के बीच सम्बंध अत्यन्त ही कटु थे तथा ब्रिटिश अधिकारी महाराणा को शंका की दृष्टि से देखते थे। यह बात स्वयं महाराणा भी जानता था। ब्रिटिश अधिकारी विप्लव काल मे किसी शासक को नाराज करना नही चाहते थे, अत ए जी जी जार्ज लॉरेंस ने महाराणा को स्वयं पत्र लिखकर ब्रिटिश सरकार को सहायता देने की प्रार्थना की थी तथा पोलीटिकल एजेंट कप्तान शॉवर्स ने स्वयं महाराणा से भेंट कर उसे तसल्ली देकर उसके भय को दूर किया था किन्तु यह सब विद्रोह काल मे महाराणा का सहयोग प्राप्त करने के लिये किया गया था। अत महाराणा को पुरस्कृत करते समय ब्रिटिश अधिकारी महाराणा के प्रति अपने कटु सम्बंधो को भूल नही सके यद्यपि महाराणा ने अंग्रेजो को अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान की थी।

महाराणा के कर्मचारियो मे मेहता शेरसिंह, मेहता गोकुलदास और सहीवाला अर्जुनसिंह को उनकी राजभक्तिपूर्ण सेवाओ के लिये स्वयं गवर्नर जनरल ने धन्यवाद पत्र भेजा तथा महाराणा को इन्हे उचित पुरस्कार देने की सिफारिश की[98]। बेदला के राव बख्तसिंह को ससम्मान तलवार भेंट की गई। केसून्दा के यदुराम केसरीसिंह व ओंकारसिंह को, जिन्होने डॉ मरे की जान बचाई थी, 1200–1200 रुपये की खिलअत भेंट की गई। डूंगला के रगुराम को 300 रुपये तथा सम्मान की पोशाक दी गई। एजेंसी के कार्यालय मे फारसी लिखने वाले इन्दरजी भीमजी तथा गोपालसिंह चोबदार को 200–200 रुपये नकद दिये गये। बेंगू के रावत महासिंह को 2,000 रुपये की खिलअत तथा भारत सरकार के सचिव की ओर से धन्यवाद का पत्र दिया गया[99]।

विद्रोह काल मे मेवाड भील कोर ने ब्रिटिश सत्ता की अत्यन्त उत्तम सेवा की थी। नीमच के विप्लव को कुचलने मे तथा तात्या को खदेडने मे इसने सराहनीय कार्य किया था। अत कप्तान शावर्स ने भील कोर के सिपाहियो को सेवा निवृत्ति का लाभ देने की सिफारिश की[100]। प्रारम्भ मे तो भारत सरकार ने इस सिफारिश पर आपत्ति की क्योकि विद्रोह काल मे मेवाड भील कोर ने जो कुछ किया वह केवल अपने कर्त्तव्य का पालन था इसके अतिरिक्त मात्र विद्रोह मे भाग न लेने के लिये एक मात्र भील कोर को पुर-

कारियो द्वारा लिखने पर भारत सरकार ने मेवाड भील कोर के सिपाहियो को सेवा निवृति देना स्वीकार कर लिया[102]।

इस प्रकार ब्रिटिश अधिकारियो की सूझबूझ और सैन्य शक्ति से तथा मेवाड के निष्ठावान एव राजभक्त पदाधिकारियो की सहायता से मेवाड मे खुला विद्रोह नही होने दिया, यद्यपि मेवाड मे भी ब्रिटिश सत्ता के प्रति तीव्र आक्रोश था।

संदर्भ टिप्पणी

1 (i) एजेंसी रेकार्ड, लेटर बुक न 11 पृ 134–37
(ii) मेहता सग्रामसिह कलेक्शन हवाला न 27 और 1039

2 (i) एजेंसी रेकार्ड लेटर बुक न 13, पृ 46–47
(ii) सी एल शॉवस ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 15

3 (i) बख्शीखाना उदयपुर, बही न 216 कप्तान ब्रुक का पत्र महाराणा के नाम श्रावण वदि 8 सवत 1914 (10 जुलाई 1857)
(ii) श्यामलदास कलेक्शन न 217, कप्तान ब्रुक का पत्र महाराणा के नाम श्रावण वदि 3 सवत 1914 (10 जुलाई 1857)
(iii) श्यामलदास वीर विनोद पृ 1964

4 (i) फो पो कन्सलटेशन 9 अप्रेल 1858 न 252 71
(ii) एजेंसी रेकार्ड, मेवाड 1857 न 173 (ए जी जी का पत्र भारत सरकार के सचिव के नाम 5 फरवरी 1857)

5 (i) एजेंसी रेकार्ड मेवाड 1857 न 173 (जाज पट्रिक लारेन्स का महाराणा के नाम पत्र 29 दिसम्बर 1856)
(ii) सी एल शावस ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 184

6 फो पो कन्सलटेशन, 26 जून 1857 न 113–116

7 सी एल शावस ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 13–14

8 एजेन्सी रेकार्ड अप्रैल 1860 न 556–60, नीमच जिले के ये ठिकाने पहले मेवाड के अधीन थे किन्तु मराठा प्रभुत्व काल मे ये ठिकाने मेवाड से अलग हो गये थे। फिर भी इन ठिकानो के सरदारो पर महाराणा का परम्परागत प्रभाव तब भी था।

9 एजेन्सी रेकार्ड, अप्रैल 1860 न 556 60

10 (i) एजेन्सी रेकार्ड, लेटर बुक न 13, पृ 43
(ii) सी एल शॉवर्स ए *मिसिंग* चेप्टर *आफ द इण्डियन म्यूटिनी* पृ 9
(iii) श्यामलदास वीर विनोद पृ 1965

11 सी एल शावर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 10–11

12 (i) एजेन्सी रेकार्ड, लेटर बुक न 13, पृ 44
(ii) सी एल शावर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 10–11

13 (i) एजेन्सी रेकार्ड, लेटर बुक न 13 पृ 46–47
(ii) सी एल शॉवर्स ए मिसिंग चेप्टर ऑफ इण्डियन म्यूटिनी, पृ 14–15

14 (i) एजेन्सी रेकार्ड, लेटर बुक न 13, पृ 46
(ii) सी एल शावर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 15

15 (i) सी एल शावर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 19–20
(ii) सहीवाला अर्जुनसिंह का जीवन चरित्र भाग 1, पृ 56 57

16 (i) एजेन्सी रेकार्ड लेटर बुक न 13 पृ 55
(ii) श्यामलदास वीर विनोद, पृ *1966*

17 *(i) फो पो कन्सलटेशन 30 दिसम्बर 1859 न 1652–54*
(ii) सी एल शॉवर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 23–24

18 (i) फो पो कन्सलटेशन 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
(ii) बख्शीखाना, उदयपुर बही न 216 मेजर जार्ज लारेन्स की मेम साहब का महाराणा के नाम पत्र 8 जुलाई 1857

19 (i) फो पो कन्सलटेशन, पोली ए' अप्रेल 1860 न 602 605
(ii) एजेन्सी रेकार्ड, लेटर बुक न 13 पृ 49
(iii) बख्शीखाना, उदयपुर बही न 216 कप्तान शावर्स का पत्र महाराणा के नाम 18 अगस्त 1857

20 (i) एजेन्सी रेकाड लेटर बुक न 13, पृ 49
(ii) सी एल शॉवर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 29

21 (i) सी एल शावर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 30
(ii) सहीवाला अर्जुनसिंह का जीवन चरित्र, भाग 1, पृ 57

22 (i) एजेन्सी रेकाड, लेटर बुक न 13 पृ 50
(ii) बख्शीखाना, उदयपुर बही न 216, कप्तान शॉवर्स का पत्र महाराणा के नाम, 18 अगस्त 1857

23 (i) एजेन्सी रेकाड, लेटर बुक न 13, पृ 51
(ii) शोध पत्रिका, खण्ड 14, अक 2, पृ 157–158

24 (i) बख्शीखाना उदयपुर बही न 216 कप्तान शावर्स का पत्र महाराणा के नाम, 30 जून 1857
(ii) सी एल शावर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 41

25 इसी समय जनरल लारेन्स की सम्पत्ति की रक्षा हेतु तैनात मेवाड एजेन्सी के दो चपरासी जनरल लारेन्स की सम्पत्ति को लूटकर विद्रोहियो से मिल गये।
(i) एजेन्सी रेकार्ड, लेटर बुक न 13, पृ 50
(ii) सी एल शावर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 33

26 (i) एजेन्सी रेकाड, लेटर बुक न 13, पृ 51
(ii) सी एल शावर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 39–40

27 (i) फो पोलीटिकल 'ए' अप्रेल 1860 न 607-52
(ii) एजेन्सी रेकाड, लेटर बुक न 13, पृ 54
(iii) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 1967

28 वही।
29 बख्शीखाना, उदयपुर बही न 216, कप्तान शॉवस का महाराणा के नाम पत्र, 5 जुलाई 1857
30 बख्शीखाना, उदयपुर बही न 216, महाराणा का कप्तान शॉवस के नाम पत्र श्रावण वदि 9 सवत 1914 (16 जुलाई 1857)
31 (i) एजेंसी रेकार्ड लेटर बुक न 13, पृ 60
(ii) बख्शीखाना, उदयपुर बही न 216 कप्तान शॉवस का महाराणा के नाम पत्र 13 जुलाई 1857
32 खड्गावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल ग्रॉफ 1857, पृ 75
33 (i) फा पा कन्सलटेशन, पोली 'ए' अप्रेल 1860 न 607 52
(ii) सहीवाला अर्जुनसिंह का जीवन चरित्र, भाग 1 पृ 59
34 (i) एजेंसी रेकार्ड, लेटर बुक न 13, पृ 54
(ii) सी एल शॉवस ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 47–48 व 51
35 (i) सी एल शावस ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 67
(ii) खड्गावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 76
36 बख्शीखाना उदयपुर बही न 216 कप्तान शॉवस का पत्र रावत केसरीसिंह के नाम, 12 जुलाई 1857
37 सी एल शॉवस ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 67
38 (i) एस एन सेन एटीन फिफ्टी सेवन, पृ 318
(ii) डा आर पी व्यास रोल आफ नोबिलिटी इन मारवाड पृ 135
39 (i) फो पो कन्सलटेशन 30 अक्टूबर 1857 न 489
(ii) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट) 18 दिसम्बर 1857 न 626
40 (i) फो पो कन्सलटेशन, 27 दिसम्बर 1857 न 249–51
(ii) खड्गावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 152
41 (i) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट) 18 दिसम्बर 1857 न 214–15
(ii) एजेंसी रेकार्ड, मेवाड 1857 न 88 (कप्तान शावस का पत्र ए जी जी के नाम, दिनाक 25 मार्च 1858)

42 (i) वही।
(ii) खड्गावत राजस्थानूस रौल इन द स्ट्रगल ऑफ 1857, पृ 155–60

43 (i) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट) 18 दिसम्बर, 1857 न 214–15
(ii) एजेन्सी रेकाड, मेवाड 1857, न 88

44 डॉ के एस गुप्ता कलेक्शन, उदयपुर, मेहता गोकुलचन्द का बनेडा के राजा गोविन्दसिंह के नाम पत्र भाद्रपद सुदि 4 सवत 1914 (23 अगस्त 1857) 'कोई मारवाड का बारोठ्या सरदारा ने तथा वारा मनख कबीलो आवेज तो राखे न्ही वा मदल देव न्ही वा लडाई का सामान भेजे न्ही कोई वाके लार ससत्र बद जावे न्ही जा कोई जावेगा अर ससत्र बद पकड्यो जावेगा तो बीने तेहकीकात सजया मिलेगा

45 डा के एस गुप्ता कलेक्शन, उदयपुर मेहता गोकल चन्द का बनेडा के राजा गोविन्दसिंह के फौजदार और कामदार के नाम पत्र आसोज वदि 14 स 1914 (17 सितम्बर 1857) "सीरकार कपनी का बदलया ह वा सीपाई तथा दूसरा नै बेंकाया वाला ने तथा भागा हुवा न पक्डा वेगा जीन ई माफक ईताम मलेगा के समत्तर समेत पकडेगा जी ने तो रु ५०) पचास अर वना ससत्तर वाला ने पकडेगा जीने रु ३०) मलेगा"।

46 एजेन्सी रेकाड, मेवाड 1857 न 88 (कायवाहक पोलीटिकल एजेन्ट का कायवाहक ए जी जी के नाम पत्र सख्या 90 दिनाक 25 माच 1858

47 एजेन्सी रेकाड मेवाड 1857 न 88 (मेवाड दरबार के वकील का पोलीटिकल एजेन्ट के नाम पत्र, दिनाक 21 अप्रेल 1859)

48 (i) एजेन्सी रेकाड, मेवाड 1857 न 88 (मेवड दरबार के वकील का पोलीटिकल एजेन्ट के नाम पत्र दिनाक 21 अप्रेल 1859)
(ii) शोध पत्रिका वर्ष 17 अक 1–2, पृ 47

49 परम्परा 'गोरा हट जा' वप 1, अक 2 पृ 72

मारे फिर दोय अजट, खून मरुधर रो कीनो
फिर फौजा बहु ओर, जार अगरेजा दीनो,
मगरा बिच फिर तो, सहर सलूम्बर आयो
मवणा रावत सुण, कथन नरावारा के वायो।

पलटिया देव दूजी दसा, सगा सरब ही पलटिया
कमधज खुशाल चांपा तिलक, रावत जोधे राखिया

50 श्यामलदास वीर विनोद पृ 1991–92

51 (i) एजेंसी रेकाड, लेटर बुक न 13, 62–63
(ii) एस एस सेन एटीन फिफ्टी सेवन, पृ 311

52 सी एल शावस ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 97

53 (i) सी एल शावस ए मिसिंग चेप्टर ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 97
(ii) सहीवाला अजु नसिंह का जीवन चरित्र, भाग 1, पृ 59

54 (i) बरशीखाना, उदयपुर बही न 216, कप्तान शावस का पत्र महाराणा के नाम, दिनाक 17 सितम्बर 1857
(ii) एजेंसी रेकाड, लेटर बुक न 13, पृ 64–65
(iii) सी एल शॉवस ए मिसिंग चेप्टर ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 102

55 डॉ के एस गुप्ता कलेक्शन उदयपुर, मेहता शेरसिंह का बनेडा के राजा गोविन्दसिंह के नाम पत्र, मागशीष 10 स 1914 (26 नवम्बर 1857)

'मेवाती मुकराणी बलाएती मदसोर का बुद आढा छावणी पर आया अर सदर लूठी बाली अर गढ रै गेरो दीदो अर नसरण्या लगाई सूझे ७ र पाछली रात सो माहीने सु गोली सु तो बसुहलो मारो जीये आदमी २०० मेवात रा ठूटो अर गढ रो जो कइी वगडो ही अर नसरण्या मेलर लोग भाग नीसरा सुद ५ अर अब जा मदसोर अगरेजी फौज हजार १०००० तोपा २० तथा २५ आई है सो अ भाग नीसरेगा' ।

56 (i) एजेन्सी रेकाड, लेटर बुक न 13, पृ 66
(ii) सी एल शावस ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 62

57 डॉ के एस गुप्ता कलेक्शन उदयपुर मेहता शेरसिंह का राजा गोविन्दसिंह के नाम पत्र मागशीष 10 स 1914 (26 नवम्बर 1857)

"वढई गड मकानु मे आए घसे ही अर आ मेला मेवाती बलाएती मुकराणी भाग र आवगा सो बज न स पकडेगा जीने तो रुपया ४० अनाम रा मलेगा अर मार मातो काट लावेगा जीने रुपया ३० अनाम रा मलेगा"

58 (i) फो पो कन्सलटेशन पोली 'ए' जुलाई 1861 न 448 52
(ii) एजेन्सी रेकाड, लेटर बुक न 13 पृ 69

59 (i) एजेन्सी रेकाड, लेटर बुक न 13 पृ 66
(ii) सी एल शॉवस ए मिसिंग चेप्टर ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 116

60 सहीवाला अजुनसिंह का जोवन चरित्र, भाग 1, पृ 65

61 सी एल शॉवर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 128

62 (i) सी एल शॉवर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 133
(ii) सहीवाला अजुनसिंह का जोवन चरित्र, भाग 1, पृ 65

63 (i) बख्शीखाना, उदयपुर बही न 219, वेंगू के रावत का पत्र महाराणा के नाम, सावण वदि 5 सवत 1915 (31 जुलाई 1858)
(ii) एजेन्सी रेकाड लेटर बुक न 13 पृ 76

64 बख्शीखाना उदयपुर, बही न 219 भसरोडगढ रावत अमरसिंह का महाराणा के नाम पत्र, भाद्रपद वदि 4 स 1915 (28 अगस्त 1858)

65 बख्शीखाना उदयपुर, बही न 219, भसरोडगढ रावत अमरसिंह का महाराणा के नाम पत्र सावण वदि 11 स 1915 (5 अगस्त 1858)

66 बख्शीखाना, उदयपुर, बही न 219 भसरोडगढ रावत अमरसिंह का पत्र महाराणा के नाम (तारीख नहीं दी है)

67 बख्शीखाना, उदयपुर बही न 219 भसरोडगढ रावत अमरसिंह का पत्र महाराणा के नाम (तारीख नहीं दी है)

68 (i) एजेन्सी रेकाड, लेटर बुक न 13 पृ 76
(ii) सी एल शावस ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 97

69 (i) खड्गावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल ऑफ 1857, पृ 78

(ii) शोध पत्रिका, वर्ष 16, अक 2 पृ 47

70 (i) एजेंसी रेकार्ड, लेटर बुक न 13, पृ 76

(ii) सी एल शॉवर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 136

71 (i) एजेंसी रेकार्ड लेटर बुक न 13, पृ 76–77

(ii) सी एल शावर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 136 व 138

72 (i) एजेन्सी रेकार्ड लेटर बुक न 13, पृ 77–78

(ii) सी एल शॉवर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 138

73 वही

74 (i) एजेंसी रेकार्ड लेटर बुक न 13, पृ 78

(ii) सी एल शॉवर्स ए मिसिंग चेप्टर ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 199

75 (i) सी एल शावर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 140–141

(ii) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 1978

76 सी एल शॉवर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 144

77 (i) एजेंसी रेकार्ड लेटर बुक न 13, पृ 79

(ii) सी एल शॉवर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 147

आज कल यह भी कहा जा रहा है कि तात्या कहे जाने वाले जिस व्यक्ति को फासी दी गई थी वह वस्तुत तात्या नही था।

78 खडगावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857 पृ 50 व 83

79 एजेंसी रेकार्ड, म्यूटिनी 1863 न 20 (जाज लारेंस का पत्र भारत सरकार के सचिव के नाम, न 740 दिनाक 29 जून 1863)

80 (i) एजेन्सी रेकाड, मेवाड 1857 न 88 (रेवाकण्ठा के पोलीटिकल एजेन्ट का ए जी जी राजपूताना के नाम पत्र, न 918 दिनाक 21 सितम्बर 1859)
(ii) खड्गावत राजस्थानूस रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 77

81 (i) एजेन्सी रेकाड, लेटर बुक न 13 पृ 102
(ii) खड्गावत राजस्थानूस रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857 पृ 77

82. एजेन्सी रेकाड, मेवाड 1857 न 88 (महाराणा का कायवाहक ए जी जी कनल ईडन के नाम पत्र, दिनाक 24 सितम्बर 1859)

83 खड्गावत राजस्थानूस रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 78

84 वही

85 (i) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 18 दिसम्बर 1857 न 214–15
(ii) एजेन्सी रेकाड मेवाड 1857 न 88 (रावत रणजीतसिंह का मेहता शेरसिंह के नाम पत्र, कार्तिक वदि 13 स 1914, 15 अक्टूबर 1857)

86 एजेन्सी रेकाड मेवाड 1857 न 8 (महाराणा स्वरूपसिंह का कायवाहक ए जी जी कनल ईडन के नाम पत्र दिनाक 24 सितम्बर 1859)

87 एजेन्सी रेकाड, मेवाड 1857 न 88 (भारत सरकार के सचिव का ए जी जी के नाम पत्र न 751, दिनांक 21 दिसम्बर 1859)

88 (i) एजेन्सी रेकाड मेवाड 1857 न 81
(ii) खडगावत राजस्थानूस रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 157

89 (i) एजेन्सी रेकाड, मेवाड 1857 न 88 (कप्तान शॉवस का ए जी जी के नाम पत्र दिनांक 8 अगस्त 1858)
(ii) खड्गावत राजस्थानूस रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 158

90 (i) एजेन्सी रेकाड मेवाड 1857 न 81
(ii) डॉ डी एल पालीवाल मेवाड एण्ड द ब्रिटिश पृ 56

91 एजेन्सी रेकाड, लेटर बुक न 13, पृ 102

92 (i) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 18 दिसम्बर 1857 न 214 15
(ii) एजेन्सी रेकाड, मेवाड 1857 न 88 (ठाकुर कुशालसिंह का पत्र रावत केसरीसिंह के नाम, दिनाक 10 अक्टूबर 1857)

93 (i) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 1979–88
(ii) डा डी एल पालीवाल मेवाड एण्ड द् ब्रिटिश, पृ 49–50
94 फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर, 1858 न 3143–45
95 (i) फो पो कन्सलटेशन 31 दिसम्बर 1858 न 3143–45
(ii) सी एल शॉवस ए मिसिंग चेप्टर ग्राफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 158–60
(iii) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 1989–90
96 फो पो कन्सलटेशन, पोली 'ए' अप्रेल 1860 न 602 605 व 607–52
97 (i) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 1990 91
(ii) गो ही ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग 2 पृ 776
98 फो पो कन्सलटेशन, पोली 'ए' अप्रेल 1860 न 602-605 व 607-52
99 वही
100 फो पो कन्सलटेशन, 30 दिसम्बर 1859 न 803
101 फो पो कन्सलटेशन, 30 दिसम्बर 1859 न 804
102 फो पो कन्सलटेशन, 30 दिसम्बर 1859 न 805 809
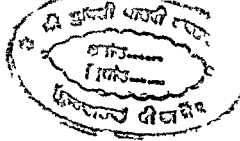
राजस्थान मे सघर्ष की गूज और उसकी असफलता

1857 ई मे ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध विद्रोह आधुनिक भारत के इतिहास की सर्वाधिक महत्वपूण एव अभूतपूव घटना है। *10 मई 1857* को मेरठ मे विप्लव का बिगुल गूज उठा जिसकी आवाज ने सम्पूएा उत्तर भारत को प्रभावित किया। बगाल, लखनऊ, दिल्ली, लाहोर, ग्वालियर, झासी, काल्पी आदि की सेनाओ ने ब्रिटिश सत्ता के विरद्ध जमकर मोर्चा लिया। राजस्थान भी इस विद्रोहाग्नि से अछूता नही रह सका। राजस्थान म भी नसीराबाद, नीमच, देवली, एरिनपुरा आदि सनिक छावनियो मे विप्लव की अग्नि प्रज्ज्वलित हो उठी। मारवाड, कोटा, उदयपुर आदि की देशी पलटनो ने अथवा स्थानीय साम ता ने अपनी जनता के सहयोग एव समथन से ब्रिटिश महाशक्ति को प्रबल चुनौती दी। राजस्थान मे यह विप्लव केवल मारवाड, कोटा व मेवाड तक ही सीमित नही रहा, बल्कि विप्लव की आग राजस्थान के विभिन भागा म भी फल गई। ब्रिटिश अधिकारी इस बात की कल्पना ही नही कर सके थे कि राजस्थान मे भी उ हे इतने व्यापक विरोध का सामना करना पड सकता है। वस्तुत विप्लव के इस भीषण भूकम्प न ब्रिटिश सत्ता की नीव ही हिला दी थी।

जयपुर मे, विप्लव काल मे दो परस्पर विरोधी विचारधारा चल रही थी। एक विचारधारा का नेतृत्व महाराजा रामसिह कर रहे थे, जो अग्रेजा को पूएा सहयोग देने के पक्ष मे थे और दूसरी विचारधारा का नेतृत्व राज्य का दीवान कर रहा था, जो ब्रिटिश सत्ता का घोर विरोधी था। महाराजा रामसिह की अल्प वयस्कता के काल मे जो सरदार राज्य प्रशासन की देखभाल कर रहे थे उनकी अग्रेजो के प्रति कोई सहानुभूति नही थी, जबकि महाराजा रामसिह आरम्भ से ही ब्रिटिश सत्ता के प्रति वफादारी एव भक्ति भावना रखते थे। राजस्थान मे विप्लव का सूत्रपात होने के समय जयपुर रियासत मे ब्रिटिश

विरोधी वातावरण व्याप्त था। विप्लव का सूत्रपात होने के बाद दिल्ली के बादशाह के कुछ एजेन्ट और विप्लवकारी जयपुर में भी विद्रोह कराने का षड्यन्त्र रच रहे थे[1]। राज्य का एक भूतपूर्व मन्त्री रावल शिवसिंह स्वयं दिल्ली गया था और वहां से लौट कर आने के बाद उसने महाराजा रामसिंह को सलाह दी कि वर्तमान परिस्थितियों में वह (महाराजा) दोहरी नीति का पालन करे अर्थात वह अंग्रेजों के प्रति पूर्ण वफादारी प्रदर्शित करता रहे तथा दिल्ली के बादशाह के प्रति भी मित्रता बनाये रखे[2]। लेकिन महाराजा ने इस सलाह को स्वीकार नहीं किया और विप्लव काल में ब्रिटिश सत्ता के प्रति पूर्ण वफादारी का परिचय दिया। विप्लव की गम्भीरता को देखते हुए महाराजा ने कप्तान ईडन की पत्नी को अपने महल में सुरक्षित रखा और स्वयं महाराजा ने सुझाव दिया कि राज्य के सिक्कों को बदल दिया जाय जिन पर दिल्ली के बादशाहों की सर्वोच्चता प्रदर्शित होती है[3]। इससे महाराजा का ब्रिटिश सत्ता के प्रति प्रेम प्रदर्शित होता है। यद्यपि महाराजा ने रावल शिवसिंह की सलाह को अस्वीकार कर दिया था, तथापि रावल शिवसिंह, नवाब विलायतअलीखां, मियां उस्मानखां तथा शहर के फौजदार सादुल्लाखां विप्लव काल में दिल्ली गये तथा जयपुर में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध भड़काने हेतु षड्यन्त्र करते रहे[4]। जयपुर के पोलीटिकल एजेन्ट को उनकी गतिविधियों की सूचना मिल चुकी थी। अतः उसकी सतर्कता के कारण उस्मानखां और सादुल्लाखां व मुगल सम्राट बहादुरशाह के बीच हुए गुप्त पत्र व्यवहार को पकड़ लिया गया और ज्योंही वे दिल्ली से लौट कर आये उन्हें बन्दी बना लिया गया। उस्मानखां के मकान की तलाशी ली गई, जहां लगभग 200 शस्त्र पकड़े गये[5]। उस्मानखां और सादुल्लाखां व मुगल सम्राट के बीच हुए गुप्त पत्र व्यवहार की जानकारी महाराजा को दी गई तथा राज्य की विशेष अदालत में उन पर मुकदमा चलाया गया। विशेष अदालत में चले मुकदमे में षड्यन्त्रकारियों का अपराध प्रमाणित हो गया। फलस्वरूप उस्मानखां व विलायतखां को किले में अलग दुर्ग में बन्दी बनाकर रखा गया तथा सादुल्लाखां को राज्य से निष्कासित कर दिया गया[6]।

अभिलेखागार में ऐसा भी विवरण मिलता है कि विप्लव काल में जयपुर की सेनाओं ने ब्रिटिश अधिकारियों के साथ पूर्ण सहयोग नहीं किया था[7]। वस्तुतः कप्तान ईडन व कप्तान हाडकेसल के बीच इस सम्बन्ध में विवाद भी था। कप्तान हाडकेसल ने कप्तान ईडन को सूचित किया था कि जयपुर दरबार द्वारा ब्रिटिश सरकार को दी जाने वाली सहायता से ब्रिटिश सरकार सन्तुष्ट नहीं है जबकि कप्तान ईडन ने कप्तान हाडकेसल के इस कथन का

जोरदार खण्डन करते हुए जयपुर महाराजा व जयपुर की सेनाओ की प्रशंसा की थी[8]। लेकिन इस तथ्य पर विश्वास करने के अनेक कारण हैं कि जयपुर की सेनाओ ने विप्लव को दबाने मे ब्रिटिश सत्ता से हार्दिक सहयोग नही किया था। यद्यपि जयपुर मे विप्लव की पूर्व भूमिका बन चुकी थी, लेकिन जयपुर के महाराजा की ब्रिटिश सत्ता के प्रति अंधभक्ति तथा पोलीटिकल एजेन्ट कप्तान इडन की सतर्कता एवं सूझ बूझ के कारण राज्य मे विप्लव की कोई महत्वपूर्ण घटना घटित नही हुई।

अलवर राज्य को विप्लवकारियो से भारी क्षति उठानी पडी थी। अलवर के महाराजा बन्नेसिंह की दीर्घकालीन बीमारी के बाद जुलाई 1857 मे मृत्यु हो गई और उसका अल्पवयस्क 13 वर्षीय पुत्र शिवदानसिंह 30 जुलाई को गद्दी पर बैठा। जिस समय महाराजा बन्नेसिंह बीमार थे उस समय दिल्ली के कुछ विद्रोही अलवर पहुचे, जिन्होने 11 जुलाई को राज्य मे विप्लव का बिगुल बजा दिया, जिससे राज्य को अत्यधिक क्षति उठानी पडी। अलवर के गावो की गूजर जनता ने अपनी ब्रिटिश विरोधी भावना का खुल कर प्रदर्शन किया तथा अपनी विद्रोही कार्यवाहियो से राज्य प्रशासन के समक्ष अनेक कठिनाइया प्रस्तुत की। लेकिन कुछ ही समय बाद दिल्ली के विद्रोही अलवर राज्य मे स्थानीय अधिकारियो द्वारा पकड लिये गये और उन्हे ब्रिटिश अधिकारियो के सुपुर्द कर दिया गया[9]।

भरतपुर, आगरा के निकट स्थित होने के कारण, यद्यपि विप्लवकारी गतिविधियो से दूर रहने का प्रयास किया, फिर भी सम्पूर्ण विप्लव काल मे भरतपुर पूर्णत अशान्त रहा। 28 मई 1857 को मेजर मॉरीशन ने कप्तान निक्सन से रेजीडेन्सी का कार्यभार ग्रहण कर लिया और कप्तान निक्सन कार्यभार से मुक्त होकर आगरा चला गया। भरतपुर के निकट मथुरा मे विप्लव फूट पडने के बाद हुडल नामक स्थान पर तैनात भरतपुर की सेना ने 31 मई 1857 को विद्रोह कर दिया, जिससे भरतपुर के अनेक सरदार व पदाधिकारी चिंतित हो उठे। भरतपुर के प्रमुख सरदारो ने मेजर मॉरीशन को सलाह दी कि वह भरतपुर छोड कर चला जाय, क्योकि भरतपुर की सेना, जिसमे अधिकांशत मुसलमान व पूर्बिया सैनिक हैं, कभी भी रेजीडेन्सी पर आक्रमण कर सकते हैं। इन सरदारो ने मेजर मारीशन को यह भी स्पष्ट कह दिया कि भरतपुर मे ब्रिटिश अधिकारियो की उपस्थिति देखकर नीमच के विद्रोहियो का ध्यान भरतपुर की ओर आकर्षित हो सकता है और वे भरतपुर पर आक्रमण कर सकते है[10]। लेकिन मेजर मारीशन ने भरतपुर के सरदारो की इस सलाह को मानने से इन्कार कर दिया और 8 जुलाई 1857 तक अपना कर्त्तव्यपालन करता रहा। लेकिन जब 5 जुलाई को आगरा के निकट

शाहगंज नामक स्थान पर विद्रोहियो से हुई मुठभेड मे ब्रिटिश सेनाए पराजित होकर आगरे के दुग म भाग गई और दुग के दरवाजे ब द कर लिये तब स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए कनल कालिन ने मेजर मॉरीशन को तुरन्त आगरा पहुचने का आदेश दिया। अत मेजर मॉरीशन, महाराजा के धाऊ' (परिचारक) गुलाबसिंह का रेजीड सी का चाज देकर, आगरा चला गया[11]। सम्पूर्ण विद्रोहकाल म भरतपुर का वातावरण अत्यधिक तनावपूर्ण रहा। विद्रोही सनिको के अनेक दस्ते भरतपुर की सीमा से होकर गुजरे। भरतपुर की गूजर और मेवाती जनता ने खुलकर विद्रोह म भाग लिया। विप्लव की व्यापकता को देखते हुए भरतपुर की जनता को तो यह विश्वास हो गया था कि अब भारत मे ब्रिटिश शासन समाप्त होने जा रहा है[12]।

धौलपुर के शासक भगवतसिंह ने विप्लवकाल मे अग्रेजो को अपनी शक्ति सगठित करने मे पूर्ण सहयोग दिया। धौलपुर राज्य पर विप्लवकारियो का काफी दबाव रहा। करौली की सीमा पर स्थित धौलपुर के मथुरा परगने मे विप्लव होना अवश्यभावी प्रतीत हो रहा था। अत धौलपुर के शासक ने वहा अपनी सेनाएँ भेजी[13]। ग्वालियर मे विप्लव फूट पडने के बाद वहा स ब्रिटिश अधिकारी भाग कर आगरा जाने हेतु धौलपुर आय तब धौलपुर के शासक न उ ह अपने राज्य मे शरण दी तथा अपने आदमियो का उनके साथ भेजा, जिनकी सुरक्षा मे वे ब्रिटिश अधिकारी आगरा पहुचे थ[14]। धौलपुर के शासक द्वारा उत्तम प्रब ध किये जाने के बावजूद अक्टूबर 1857 म ग्वालियर और इ दौर के विप्लवकारियो की सयुक्त टुकडी धौलपुर मे प्रविष्ट हो गई। इस अवसर पर धौलपुर रियासत की अधिकाश सेना तथा अनेक पदाधिकारी विप्लवकारियो से मिल गये, जिससे धौलपुर के शासक की सत्ता को ही खतरा उत्पन्न हो गया[15]। विद्रोहियो ने धौलपुर मे भीषण लूटमार की तथा धौलपुर के शासक को घेर लिया। विद्रोहियो ने धौलपुर के शासक को जान से मार डालने की धमकी दी। अत विवश होकर धौलपुर के शासक को विद्रोहियो की मागें स्वीकार करनी पडीं। राव रामच द्र और हीरालाल के नेतृत्व मे लगभग 1 000 विप्लवकारी धौलपुर के शासक की अधिकाश तोपें लेकर आगरा की तरफ रवाना हो गये और आगरा पहुच कर ब्रिटिश सेनाओ पर आक्रमण कर दिया[16]। दिसम्बर 1857 तक धौलपुर का शासक एक प्रकार से शक्तिहीन एव अधिकारविहीन रहा। अत म स्वय धौलपुर के शासक की प्राथना पर पटियाला के शासक न, जिसका धौलपुर रियासत से ववाहिक सब ध था तथा पजाब व उत्तर पश्चिमी सीमा प्रा त के मुख्य आयुक्त ने 2 000 सिक्खो की एक सेना और चार तोपें धौलपुर के शासक की सहायता के लिये भेजी तब

वहीं जाकर धौलपुर में व्यवस्था स्थापित हो सकी[17] सभी विप्लवकारियो को पकड़ लिया गया और उनसे शस्त्र आदि छीन लिये गये। भविष्य म ऐसी अव्यवस्था पुन उत्पन्न न हो, इस दृष्टि से धौलपुर के शासक को सलाह दी गई कि वह अपनी सेना मे अब अधिक छटनी नही करे, क्योंकि ऐसा करन से न केवल सेना मे असन्तोष उत्पन्न होता है, बल्कि विप्लवकारियो की सख्या मे भी वृद्धि होती है[18]।

करौली के शासक महाराजा मदनपाल ने भी भारत मे ब्रिटिश सत्ता के अस्तित्व की रक्षा के लिये ब्रिटिश अधिकारियो को पूर्ण सहयाग दिया। मई 1857 म ज्योंही भारतव्यापी विप्लव फूट पड़ा महाराजा मदनपाल न अपनी सभी उपलब्ध सेनाओ को आगरा की तरफ भेज दिया और जितनी सभव हो सकी नई सेना तयार की। इसके साथ ही महाराजा ने अपनी प्रजा के नाम एक घोषणा पत्र प्रसारित किया जिसमे सेनाओ की राज्य विराधी गतिविधियो की तीव्र निन्दा की गई और जनता से अपील की गई कि वह विप्लवकारियो से सहयोग न करे तथा विप्लवकारियो से लडने मे सरकार के साथ सहयोग करे[19]। महाराजा मदनपाल ने कोटा के महाराव की सहायता के लिय भी करौली राज्य की सेनाए भेजी थी[20]।

एरिनपुरा स्थित जोधपुर लीजियन के सनिको द्वारा विद्रोह कर दिये जाने से सिरोही राज्य पर विल्लवकारियो का निरन्तर दवाव बना रहा। जोधपुर लीजियन के विद्रोह की सूचना जव 20 अगस्त 1857 का अनादरा पहुची तो वहां राउवा के ठाकुर के नेतृत्व मे विद्रोह हा गया। भटाणा का ठाकुर नाथूसिह भी इस विद्रोह की अग्रिम पक्ति म था। राज्य के भील व मीणा जाति के लोगो ने, जो अपनी ब्रिटिश विरोधी गतिविधियो के लिये विख्यात थे, विद्रोही ठाकुरो को पूर्ण सहयोग दिया। इसके अतिरिक्त कुछ स्थानीय जनता की भी विप्लवकारिया के प्रति सहानुभूति थी। लेकिन सिरोही के शासक की ब्रिटिश सत्ता के प्रति वफादारी तथा उसके द्वारा अग्रेजो को दी गई सहायता के फलस्वरूप राज्य मे विप्लव व्यापक रूप न ले सका[21]। सिरोही रियासत की सेनाए भी अपने शासक और ब्रिटिश सत्ता के प्रति पूर्ण वफादार रही। सिरोही की भाति झालावाड के शासक ने भी विप्लव का दमन करने मे ब्रिटिश अधिकारियो को पूर्ण सहयोग दिया था। झालावाड के शासक ने 28 नवम्बर 1857 को एक घोषणा पत्र प्रसारित किया, जिसमे अपनी प्रजा से कहा गया था कि वह नीमच के विख्यात विद्रोही हीरासिह को पकडने में सरकार की मदद करे तथा हीरासिह को पकडवाने वाले को एक हजार रुपये ईनाम देने की भी घोषणा की गई। घोषणा पत्र मे यह भी कहा गया कि

विद्रोही सवार को पकडवाने वाले को 25 रुपये तथा साधारण विद्रोही सनिक को पकडवाने वाले को 10 रुपया ईनाम दिया जायेगा[22]। विप्लव की समाप्ति पर अन्य शासकों की भांति झालावाड के शासक ने भी राजपूताना के ए जी जी को विप्लव का सफलतापूर्वक दमन करने के उपलक्ष मे हार्दिक बधाई दी।[23]

राजपूताना मे टोंक ही एक मात्र एसी रियासत थी, जो मुस्लिम शासक द्वारा शासित थी। राजपूताना के ए जी जी ने जब आबू से 23 मई 1857 को सभी शासको के नाम, ब्रिटिश सरकार का सहायता एव सहयोग देने हेतु परिपत्र भेजा, तब टौंक के नवाब वजीरखा न ब्रिटिश सत्ता के प्रति पूर्ण वफादारी प्रदर्शित करत हुए पूर्ण सहयोग व सहायता देने का आश्वासन दिया। लेकिन स्वय नवाब की सनाओ ने ही विद्राह कर दिया। नवाब की सेना की एक टुकडी, जो जयपुर की तरफ भेजी जा रही थी विद्रोही सनिका ने उसे टौंक म ही रोक लिया। इतना ही नहीं, टौंक के विद्रोही सनिको ने, नीमच के विद्रोहियो को, जा आगरा की तरफ जा रहे थे टौंक आने का निमत्रण दिया। तत्पश्चात नीमच के विद्रोहियो से मिलकर, टौंक के विद्रोहियो ने नवाब वजीरखा को किले म घेर लिया। वस्तुत नवाब एक प्रकार से विद्रोहियो का बन्दी बन गया तथा ब्रिटिश अधिकारियो को सहायता पहुचाने मे पूर्णत असफल रहा[24]। नवाब वजीरखा कई दिनो तक विद्रोहियो से घिरा रहा। यद्यपि उसन अपने उत्तेजित सनिका को शान्त करने का प्रयास किया किन्तु उस अपने प्रयासो मे सफलता नही मिली। अनक विद्राही सनिक नवाब से अपनी वकाया वेतन राशि वसूल करके मुगल सम्राट से सलाह करने हेतु दिल्ली की तरफ रवाना हो गये। अन्त मे 25 अगस्त 1857 को नवाब ने ए जी जी को सूचित किया कि राज्य के विद्रोही सनिक दिल्ली की तरफ रवाना हो गये हैं, फिर भी राज्य म तनावपूर्ण स्थिति को दखते हुए उसके राज्य से किसी यूरोपियन अधिकारी को गुजरन की अनुमति न दी जाय, क्योकि उनकी सुरक्षा करना सम्भव नही होगा[25]।

टौंक की साधारण जनता नवाब की ब्रिटिश भक्ति स अत्यधिक क्रुद्ध थी और उसे 'ईसाई' कह कर सम्बोधित करती थी। यही कारण है कि टौंक की साधारण जनता न विप्लवकारियो को खुला समथन एव सहयोग दिया था। यद्यपि टौंक के नवाब ने ब्रिटिश सत्ता के प्रति पूर्ण वफादारी प्रदर्शित की थी लेकिन ब्रिटिश अधिकारी उसकी निष्ठा और वफादारी से सन्तुष्ट नही थे। चू कि टौंक राज्य की सेनाओ ने तथा राज्य की सामान्य जनता न विप्लव म खुल रूप से भाग लिया था और सेनाओ न तो दिल्ली म ब्रिटिश सनाओ के

विरुद्ध युद्ध में भाग लिया था, अत ब्रिटिश अधिकारियो का अनुमान था कि इन विप्लवकारियो के प्रति नवाब की महानुभूति थी। इसीलिए ब्रिटिश सरकार ने नवाब का दिए जान वाले 12 500 रुपये के मासिक भत्ते का बन्द कर दिया था[6] और टोंक रियासत का निम्बाहेडा परगना काफी समय तक मेवाड के अधिकार म रहने दिया[27]। नवाब न जिस प्रकार विद्रोहियो की मागें स्वीकार की थीं और उन्हें राज्य की तापें आदि प्रदान की, उसस भी अग्रेजा के सन्देह की पुष्टि हाती है।

विप्लव काल म बीकानेर के महाराजा सरदारसिंह न भी ब्रिटिश सत्ता को पूर्ण सहयाग एव समथन दत हुए अपनी वफादारी प्रदर्शित की। ए जी जी जाज लारेन्स न लेफ्टिनेन्ट माइल्डमे का बीकानर की सेना का नेतृत्व करने तथा सिरसा व हाँसी के विद्रोही जिला म जनरल वानकाटलैंड द्वारा की जान वाली कायवाही म सहायता देने के लिय भेजा। बीकानेरी सेना म अनेक सामन्त, मन्त्री व पदाधिकारी थे, जिनका नतृत्व स्वय महाराजा सरदारसिंह कर रहा था[8]। लेफ्टिनेन्ट वानकोटलड ने लेफ्टिनेन्ट पियस की अधीनता म 500 बीकानेरी सैनिका का हिसार पर अधिकार करने भेजा, जहा विद्रोहिया का अधिकार हो चुका था। इन सनिका की सख्या बाद म बढाकर 1700 करदी गई। लफ्टिनन्ट पियस के नेतृत्व म बीकानेरी सना ने हिसार पर आक्रमण कर दिया। इस लडाई म लगभग 400 विद्रोही मार गये और कुछ बदी बना लिय गये। हिसार पर बीकानेरी सेना का अधिकार हो गया[9]। 21 जुलाई 1857 का 1000 सनिक और दो तापें हाँसी की ओर भेजी गई, जिसन हासी पर भी अधिकार कर लिया। 8 अगस्त 1857 का लेफ्टिनेन्ट वानकाट लड भी वहां पहुच गया। हरियाणा म बीकानेरी सेना का विद्रोहिया से छ बार मुकाबला हुआ और प्रत्येक बार विद्रोहिया का दण्ड दिया गया। बाढूल के घेर के समय शामपुरा के सतसिंह राठौड ने विद्रोहिया की ओर से होने वाली गोलाबारी म अपन प्राणो की परवाह न करत हुए शहरपनाह पर चढ कर अद्भुत साहस का परिचय दिया। मगली व तोशाम पर आक्रमण करने के लिय भी दो बीकानेरी तापें भेजी गई। लेकिन वहा के स्थानीय मुसलमान विप्लवकारियों स मिल हुए थे। अन उन मुसलमाना ने धोखे स बीकानेरी सेना को बुरी तरह फसा लिया, जिससे विप्लवकारियो को वहा काफी सफलता प्राप्त हुई। यहा विप्लवकारियो स हुई मुठभेड म नीमराणा का मोहकमसिंह कूजला का मिट्ठूसिंह और बिरकाली का खुमाणसिंह मारे गये[30]। मगली और तोशाम म शान्ति व्यवस्था स्थापित करदी गई और तत्पश्चात बीकानेर की सेना जमालपुर की तरफ भेजी गई। जमालपुर और उमराव के बीच बीका

नेरी सेना व विप्लवकारियो के बीच मुठभेड हुई, जिसमे विप्लवी परास्त होकर भाग खडे हुए[31]।

विप्लव काल मे बीकानेर के महाराजा ने जो ब्रिटिश अधिकारियो की सहायता की उसकी बडी प्रशसा की गई। 21 दिसम्बर 1860 का ए जी जी ने भारत सरकार को लिखा कि विद्रोह के आरम्भ से महाराजा बीकानेर न अग्रेज सरकार के प्रति अत्यधिक राजभक्ति और मित्रता का प्रदशन किया तथा अग्रेजो को हार्दिक सहयोग दिया। महाराजा ने अनेक यूरोपियनो को शरण दी तथा उन्हे सुरक्षा प्रदान की। जब पजाब के सनिक, जनरल वानकोटलैंड की अधीनता म, हासी और हिसार मे रखे गय तब महाराजा स्वय अपनी सेना का नेतृत्व करते हुए बीकानेर की सीमा तक गया। उसने समस्त राजपूताना प्रान्त के समक्ष एक उल्लेखनीय उदाहरण प्रस्तुत किया[32]। बीकानेर के महाराजा की उत्तम सेवा के उपलक्ष मे उसे खिलअत आदि पुरस्कारो के साथ साथ हिसार जिले के 41 गाव, जिनकी वार्षिक आय 14,291 रुपय वार्षिक थी, दे दिये[33] जिसके लिये बीकानेर न पहले ही दावा कर रखा था।

यद्यपि बीकानेर के महाराजा सरदारसिंह ने ब्रिटिश सत्ता को पूरा सहयोग देते हुए अपने राज्य की सीमाओ की नाकेबदी कर किसी भी विद्रोही को अपने राज्य मे प्रविष्ट नही होने दिया। लेकिन बीकानेर की सामान्य जनता मे ब्रिटिश सत्ता के प्रति तीव्र आक्रोश था तथा महाराजा की ब्रिटिश भक्ति के कारण उनमे काफी उत्तेजना थी। अत जनमत के दबाव के कारण ही विप्लव काल म महाराजा ने विद्रोही नेता नाना साहब को सहायता प्रदान की थी। इसी प्रकार विख्यात क्रान्तिकारी तात्या टोपे जब बीकानेर गया तब महाराजा ने उसे दस घुडसवार सनिको की सहायता प्रदान की। इतना ही नही जनमत के जबरदस्त दबाव के कारण ही महाराजा ने ए जी जी से कुछ विप्लवकारियो को मुक्त करन की प्राथना की थी[34]।

उपयु क्त शासको के अतिरिक्त डूगरपुर, बासवाडा, प्रतापगढ आदि के शासको ने भी विप्लव की आधी को रोकने के लिय, ब्रिटिश सत्ता क लिये बलवधक प्रमाणित हुए। डूगरपुर का महारावल उदयसिंह भी, नीमच के विप्लव की सूचना मिलने पर अपनी तथा अपने सरदारो की सेना लेकर खरवाडा की सनिक छावनी म गया और लगभग चार महीने तक वहां ठहरा। वहा उसने विप्लवकारियो की सेना को रोकने मे कप्तान ब्रुक को हार्दिक सहायता दी। कहा जाता है कि महारावल उदयसिंह के समझाने के कारण ही खरवाडा की भील कोर, अग्रेज अधिकारियो की वफादार रही जिससे उस क्षेत्र मे विप्लवकारियो का कोई उपद्रव नही हुआ[35]।

राजस्थान मे तात्या टोपे की गतिविधिया

मध्य भारत मे ग्वालियर का विद्रोही नेता तात्या टोपे 22 जून 1858 का अलीपुर नामक स्थान पर चार्ल्स नेपियर के हाथो पराजित होने के बाद राजस्थान की ओर आया। ऐसा विश्वास किया जाता है कि तात्या की सेना मे 5,000 ग्वालियर के विद्रोही और 4,000 भील थे[36]। सभवत तात्या को राजस्थान के ब्रिटिश विरोधी लोगो की गतिविधियो की जानकारी थी, अत ऐसे लोगो से सहयोग प्राप्त करने की आकाक्षा लेकर वह राजस्थान की ओर आया था। ब्रिटिश इतिहासकार मेलीसन ने लिखा है कि तात्या सर्वप्रथम जयपुर जाने को बडा उत्सुक था, लेकिन ब्रिटिश सेनानायक राबर्ट्स ने उसके प्रयासो को विफल कर दिया[37]। कर्नल होम्स ने लिखा है कि तात्या सर्वप्रथम अपने कुछ प्रतिनिधि जयपुर भेजना चाहता था क्योकि उसे आशा थी कि जयपुर म ब्रिटिश विरोधी लोगो का विशाल समूह उसके साथ हो जायेगा[38]। लेकिन जयपुर मे ऐसे लोगो का समूह तात्या का साथ देने को तयार था या नही, इस सबध मे निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। ए जी जी जार्ज लारेंस न 27 जुलाई 1858 को भारत सरकार को भेजी गई अपनी रिपोर्ट मे लिखा था कि जयपुर के एक भूतपूर्व मत्री ने कप्तान ईडन की सेना को, कप्तान ईडन की हत्या करने हेतु प्रोत्साहित किया था[39]। इस बात के भी निश्चित प्रमाण मिलते हैं कि जयपुर म कुछ लोग महाराजा रामसिंह की ब्रिटिश सत्ता के प्रति निष्ठा स नाराज थे। लेकिन तात्या को सहयोग देने हेतु वहा कोई समूह तयार था, इसमे कुछ सदेह उत्पन्न होता है। जयपुर में ब्रिटिश विरोधी लागो के होते हुए भी, यदि तात्या जयपुर जाता, तो सम्भवत उसे निराश ही होना पडता, क्योकि कप्तान ईडन की ऐसे लोगो पर कडी दृष्टि थी और वह पूर्णत सतर्क था। परन्तु एक बात निश्चित तौर पर कही जा सकती है कि राजस्थान मे तात्या की गतिविधियो के कारण सनसनी फैल गई थी ग्वालियर के विद्रोहियो की गतिविधियो के कारण भरतपुर मे उत्तेजना व्याप्त हो गयी थी, क्योकि ग्वालियर के विद्रोही कुछ दिनो तक भरतपुर की दक्षिणी सीमा पर घूमते रहे। तत्पश्चात 25 जून 1858 को वे हिण्डोन पहुचे और वहा से 27 जून 1858 को जयपुर के लिये रवाना हो गये[40]। इन विद्रोहियो के कारण सम्पूर्ण राजस्थान मे उत्तेजना फल गई थी। मेवाड के महाराणा स्वरूपसिंह ने जयपुर के महाराजा मानसिंह को जो पत्र लिखा, उससे पता लगता है कि राजस्थान का शासक वर्ग भी विद्रोहियो की प्रगति जानने को उत्कठित था और विद्रोहियो के प्रति प्रत्येक शासक का क्या दृष्टिकोण था, यह जानने को भी उत्सुक थे[41]।

मेजर जनरल रावट स की 21 जुलाई 1858 की रिपोट से पता चलता है कि जनरल रावट स न तात्या का जब जयपुर जाने का माग राक लिया तथा कनल होम्स द्वारा तात्या का पीछा करत रहन के कारण, तात्या ने अपने जाने की दिशा बदल दी और सीधा लालसोट पहुचा, जहा से वह दौलतपुर की तरफ रवाना हो गया। चू कि कनल होम्स तात्या का पीछा कर रहा था, अत तात्या जयपुर के दक्षिण पूव की ओर भाग गया। जब तात्या को सूचना मिली कि टोंक की सना विद्राहिया के साथ मिलन को तयार है तब तात्या अपने विद्रोही साथियों के साथ टोंक पहुचा[4]। जयपुर के पोलीटिकल एजे ट कनल ईडन की रिपोट स ज्ञात हाता है कि विद्रोही जब जयपुर की सीमा से हाकर गुजरे और जिन गावा मे ठहर, वहा ग्रामवासिया से उ ह रसद आदि प्राप्त हुई। कनल ईडन न यह भी लिखा है कि विद्रोही प्राय एक अग्रगामी दल भेजत थे, जो गाव वाला का यह बतात थे कि विद्राहिया का इरादा गाव को बर्बाद करना नही है, बल्कि वे केवल रसद प्राप्त करना चाहते है, जिसके लिय वे रसद की दुगनी कीमत देन को तयार हैं[43]। ज्योंही तात्या टोंक पहुचा टोंक के नवाब न उसे कोई सहयोग नही दिया और अपने किले मे जाकर किले के द्वार ब द करवा दिये, लेकिन नवाब ने अपनी जो सेना तात्या के विरुद्ध भेजी, वह विद्रोहिया से मिल गई[44]। तात्या ने टोंक शहर पर अधिकार कर लिया और टोंक म तात्या को पर्याप्त सहायता प्राप्त हुई। तात्या जनसाधारण को लूटने के पक्ष मे नही था और जब भी वह ब्रिटिश सेना स सघपरत होता था उसका प्रयास यही रहता कि वह जनसाधारण का विश्वास प्राप्त कर। तात्या का इरादा टोंक स इ द्रगढ जाने का था, कि तु एक तरफ से भारी वर्षा हो रही थी और दूसरी ओर ब्रिटिश सना उसका पीछा कर रही थी, इसलिय वह इ द्रगढ की ओर न जा सका और वह बू दी की तरफ मुडा। अग्रेजो के खुफिया विभाग न सूचना दी कि तात्या खटकड नामक गाव म है पर तु जब ब्रिटिश कमाण्डर वहा पहुचा तब तक विद्रोही बू दी जाने हेतु नदी पार कर चुके थ[45]। तात्या माधोपुर होता हुआ बू दी आ पहुचा लेकिन बू दी के महाराव रामसिंह ने भयभीत होकर बू दी शहर का दरवाजा ब द करवा दिया। इधर कनल होम्स भी तात्या का पीछा करता हुआ यहा आ पहुचा अत तात्या, नसीराबाद और नीमच के बीच उपजाऊ क्षेत्र म पहुच गया। जनरल रावट् स भी अपनी सेना लेकर यहा आ पहुचा, जिससे तात्या अपनी स्थिति सुदृढ न कर सका। मेवाड के पोलीटिकल एजे ट की रिपाट से ज्ञात होता है कि विद्रोहिया ने बगोदा नामक स्थान मे बनास नदी को पार करके बुरलियावास नामक स्थान पर पहुचे और जब उ हें मालुम

हुआ कि ब्रिटिश सेना उनका पीछा करती हुई आ रही है तब उन्होंने चित्तौड की तरफ जाने का अपना विचार त्याग दिया[46]। कप्तान शावर्स ने अपने एक पत्र में यह भी लिखा है कि विद्रोही भीलवाडा में रुके जहां जनरल रावर्ट्स ने उन्हें भारी शिकस्त दी। कप्तान शॉवर्स ने यह भी लिखा है कि तात्या को मेवाड़ के अनेक ब्रिटिश विरोधी सामन्तों ने उसे रसद आदि से सहायता पहुंचाई। मेजर टेलर कर्नल होम्स, जनरल पार्क और जनरल रावर्ट्स तात्या की गति को रोकने में व्यस्त थे, क्योंकि उनका भय था कि कहीं तात्या उज्जन पर आक्रमण कर लूटमार प्रारम्भ न करदे[47]।

जनरल रावर्ट्स कर्नल हाम्स की सेना के साथ विद्रोहियों का पीछा करता हुआ कांकरोली आ पहुंचा। तात्या ने अपनी स्थिति काफी सुदृढ करली थी। अत यहां दोनों सेनाओं में पुन मुठभेड हुई जिसमें ब्रिटिश सेनाओं को भारी क्षति उठानी पड़ी और तात्या वहा से भागने में सफल हो गया। इसी समय नरवर के राजा का छोटा भाई मानसिंह तात्या के साथ हो गया[48]। तत्पश्चात तात्या ने चम्बल नदी को पार कर झालरापाटन (झालावाड की राजधानी) पहुंचा। झालरापाटन की सेना तात्या के साथ हो गई। तात्या ने झालरापाटन के राजा पृथ्वीसिंह के महल को घेर लिया और उससे रुपया की माग की[49]। राजा पृथ्वीसिंह ने तात्या को 5 लाख रुपये दिये, लेकिन तात्या ने 20 लाख रुपये की माग की। राजा पृथ्वीसिंह ने उसे 15 लाख रुपये देने का आश्वासन दिया, लेकिन उसी रात राजा पृथ्वीसिंह मोऊ की तरफ भाग गया[50]। ए जी जी जार्ज लारेंस ने जनरल रावर्ट्स को सूचित किया कि तात्या ने झालरापाटन जीत लिया है और वहा उसे पर्याप्त युद्ध सामग्री प्राप्त हो गयी है तथा उसने वहा के अनेक लोगों को अपनी सेना में भर्ती कर लिया है[51]। इसी समय कप्तान शावर्स ने ए जी जी को सूचित किया कि जोधपुर के महाराजा की सेना का एक भाग, जो ब्रिटिश सत्ता से असन्तुष्ट है, तात्या की सेना से मिल गया है जिससे तात्या की स्थिति बडी सुदृढ हो गयी है[52]। तात्या ने झालावाड पर अधिकार कर अपने का वहा का शासक घोषित कर दिया। तात्या को झालावाड की स्थानीय जनता से भी सहायता प्राप्त हुई, जिससे उसकी स्थिति और अधिक सुदृढ हो गयी[53]। तात्या की गतिविधियों से यह स्पष्ट होता है कि वह योजनाबद्ध तरीके से केवल उन क्षेत्रों की ओर जा रहा था जहां से उसे सहायता प्राप्त होने की आशा थी। झालरापाटन से तात्या इन्दौर की तरफ रवाना हुआ, लेकिन बीजापुर नामक स्थान पर ब्रिटिश सेनानायक हेमिल्टन ने और बाद में माइकेल ने उसे पराजित किया। अत तात्या नर्वदा नदी पार कर नागपुर से 87 मील दूर मोलताली नामक

स्थान पर पहुच गया[54]। तात्या लगभग दो महीने तक मध्य भारत मे इधर उधर भागता रहा और ब्रिटिश सनाए उसका पीछा करती रही। अत म छोटा उदयपुर म वह ब्रिगेडियर पाक के हाथो पराजित होकर पुन राजस्थान की ओर आया।

9 दिसम्बर 1858 को तात्या दूसरी बार राजस्थान मे आया और बासवाडा पहुचा[55] लेकिन ब्रिटिश सेनानायक लीम माउथ के हाथो पराजित होकर वह मेवाड मे सलूम्बर की ओर गया, जहा उसे सभी आवश्यक रसद आदि प्राप्त हुई[56]। सलूम्बर के निकट जगल म तात्या को घेर लिया गया और ब्रिटिश सनिक टुकडी से पराजित होकर वह प्रतापगढ की ओर चला गया, लेकिन 23 दिसम्बर 1858 को मेजर राक अपनी सना लेकर वहा आ पहुचा, जिसन तात्या को करारी शिकस्त दी। तात्या यहा से भी भाग खडा हुआ[57]। तात्या राजस्थान म इस उद्देश्य से आया था कि यहा से सहायता प्राप्त कर अपनी स्थिति सुदृढ कर सके। यद्यपि सलूम्बर काठारिया, शाहपुरा, टोंक आदि अनेक स्थानो पर उसका भव्य स्वागत हुआ तथा उसे रसद आदि भी प्राप्त हुई लेकिन ब्रिटिश सना की निरन्तर चौकसी एव उत्तम सुरक्षा का प्रबध होने क कारण उसे अपन उद्देश्य म पूण सफलता प्राप्त नही हुई[58]। प्रतापगढ म पराजित होने के बाद तात्या इन्दौर जाने का निश्चय किया, जहा वह स्थानीय जनता का प्रात्साहित कर अपनी ओर मिला सके। तात्या तूफान की तरह एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर गया। ब्रिटिश सनानायको ने उसे पकडने का लाख प्रयत्न किया, लेकिन तात्या उनका सफलतापूवक प्रतिरोध करता रहा[59]। ब्रिटिश अधिकारी उसे मध्य भारत म प्रविष्ट होन से रोकना चाहत थे क्योंकि उ ह इस बात का भय था कि कही तात्या इ दौर पहुचकर वहा की सना को प्रोत्साहित कर अपनी ओर न मिला ले तथा बम्बई और राजपूताना के बीच सचार साधना का नष्ट न करदे। यद्यपि मेजर सदरलैंड ने उसका विभिन्न स्थानो पर पीछा किया लेकिन विद्रोही बिना कोई क्षति उठाये भीलवाडा की तरफ चल गये[60]। यहा पर तात्या को मालुम हुआ कि विद्रोही नता फिरोजशाह और मानसिंह उसकी सहायता के लिय आ रहे हैं तब उसने पुन एक बार ब्रिटिश सेना से लोहा लेन का निणय लिया लेकिन उस अपने प्रयत्नो म कोई सफलता नही मिली और वह विवश होकर मन्दसौर होता हुआ कोटा म नाहरगढ की ओर गया जहा विद्रोही नेता मानसिंह उसके साथ आ मिला[61]। तात्या और मानसिह अपनी सेना लेकर इन्द्रगढ आगये, जहां फिराजशाह अपनी सेना लेकर उसकी सहायता के लिय वहां आ पहुचा। वहा ब्रिटिश सना न उन्ह घर कर उन पर आक्रमण कर दिया। तात्या वहीं

कठिनाई से इस घेरे को तोड कर निकल भागा और दौसा आ पहुचा, जहा कप्तान शावस एव होनस की सयुक्त सेना ने उसे पराजित किया। यहा से पराजित होकर तात्या नीम का थाना और बराठ होता हुआ सीकर पहुचा। इसी समय कनल होम्स भी तात्या का पीछा करता हुआ यहा आ पहुचा और तात्या की सेना पर आक्रमण कर दिया। सीकर मे कनल होम्स ने तात्या की शक्ति को पूरी तरह कुचल दिया[62]। तात्या के लगभग छ सौ सहयोगियो न बीकानेर के महाराजा के समक्ष आत्मसमपण कर दिया। बीकानेर के महाराजा ने ब्रिटिश सरकार से अनुरोध कर उनको क्षमा दिलवा दी[63]।

तात्या अब पूणत शक्तिहीन हो गया। अब केवल राव साहब उसका एक मात्र सहयोगी रह गया था। मानसिंह ने भी आत्म समपण कर दिया था। तात्या काटा के निकट पाडोन के जगल म असहाय अवस्था म भटकता रहा। 2 अप्रेल 1859 को मानसिंह कप्तान मेडे के केम्प म गया और तात्या को पकडवाने का वादा किया। तत्पश्चात मानसिंह के विश्वासघात के कारण 7 अप्रेल को तात्या को जगल म गहरी नीद म सोते हुए पकड लिया गया और उसे बन्दी बनाकर उसका कोट माशल किया गया। राजद्रोह के अपराध म तात्या को मृत्यु दण्ड दे दिया गया और 18 अप्रेल 1859 को उस फासी द दी गई[64]। बाद मे पजाब के जगलो म राव साहब को भी पकड लिया गया और 20 अगस्त 1859 को उसे भी फासी दे दी गई। कहा जाता है कि तात्या टोपे समझ कर जिस व्यक्ति को फासी दी गई थी वह वास्तव मे तात्या नही था बल्कि तात्या तो लगभग आठ दस वष बाद स्वाभाविक मृत्यु स मरा था। श्रीमती निमला गुप्ता ने अपने शोध प्रबन्ध मे लिखा है कि राजस्थान हिस्ट्री काग्रेस के नवें अधिवशन म एक शोध पत्र पढा गया था, जिसम 1857 ई के एक पत्र के आधार पर यह प्रमाणित किया गया है कि जिस व्यक्ति को फासी दी गई थी वह तात्या नही था[65]। लेकिन इस अधिवेशन मे ऐसा कोई शोध पत्र नही पढा गया था और न ही ऐसे शोध पत्र का उल्लेख इस अधिवेशन के प्रोसीडिग्ज मे ही मिलता है।

इस प्रकार घोर उत्तेजना समाप्त हुई और ब्रिटिश अधिकारियो की चिंता भी समाप्त हुई। एक महान क्रान्तिकारी तात्या टोपे को राजस्थान के ही एक जागीरदार ने बन्दी बनवा दिया जबकि वह गहरी नीद मे सोया हुआ था। आश्चय की बात है कि एक ओर तो राजस्थान के प्रमुख जागीरदार ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दे रहे थे ताकि विदेशी सत्ता से मुक्त हो सकें तो दूसरी ओर राजस्थान का ही एक जागीरदार विदेशियो के तलुए चाटत हुए

देश के महान् क्रान्तिकारी की आहुति द दी। महान् क्रान्तिकारी तांत्या, जिसम असीम साहस और शक्ति थी, 1857 के महान् क्रान्तिकारियो म सदा याद किया जायेगा। तांत्या पर किसी की हत्या का आरोप नही लगाया जा सका और उस पर लगाये गय आरोपो का उसने बडी निर्भयता से प्रतिवाद किया। वह तो पेशवा बाजीराव के उत्तराधिकारी नाना साहब का स्वामीभक्त सेवक था और नाना साहब के साथ जब ब्रिटिश अधिकारियो न अन्याय किया तो तात्या न भी अपन स्वामी के साथ अंग्रेजो क विरुद्ध शस्त्र उठा लिय। तांत्या न तो केवल अपन स्वामी के प्रति अपना कत्तव्य पालन किया था। शाही घोषणा के आधार पर उन सभी विद्रोहियो को माफ कर दिया गया था, जिन्होन अंग्रेजो की हत्या करने मे भाग नही लिया था। तात्या पर इस प्रकार का कोई आरोप नही लगाया गया था फिर भी उसे फासी पर लटका दिया गया। कप्तान शावस न तात्या को दी गई सजा की तीव्र आलोचना की है। कप्तान शॉवस ने, जिसन स्वय न तात्या से कई बार युद्ध किया था, लिखा है कि तात्या ब्रिटिश भारत का नागरिक या प्रजा नही था, अत उसको विरोध राजद्रोह की सजा नहीं दी जा सकती[66]। कप्तान शॉवस न यह भी लिखा है कि तात्या को दी गई मौत की सजा सदव एक अपराध रहेगी और इतिहास पूछेगा कि इस सजा का किसने अनुमोदन किया एव किसने इसकी पुष्टि की[67]। शावस न यह स्पष्ट लिखा है कि इस प्रकार की कार्यवाही अंग्रेजो के लिये शोभनीय नही थी। यह एक दुर्भाग्य की बात है कि तात्या जसे महान् क्रान्तिकारी के साथ देश के एक गद्दार ने विश्वासघात किया। राजस्थान मे एक मानसिंह तो वह था जिसने ब्रिटिश सरकार के आदेशो की अवहेलना कर अप्पा साहब भासले, जसवन्तराव होल्कर और सिंध के अमीरो को अपने यहा शरण दी तथा विप्लव काल मे दूसरा मानसिंह वह हुआ, जिस पर तात्या ने असीम विश्वास किया, उसी विश्वास का निलज्ज हनन कर भारत के महान् क्रान्तिकारी को बन्दी बनवा कर उसे फासी पर लटकवा दिया। हमारे देश मे जयचद और मीर जाफर तो हर युग मे हुए हैं जिनकी काली करतूतो से देश सदियो तक दासता के बन्धन म जकडा रहा।

विप्लव की असफलता

अंग्रेजो ने अपने समस्त साधनो एव शक्ति के बल पर 1857 की महान् क्रान्ति का निममता पूवक कुचल दिया। क्रान्ति का दमन करने म ब्रिटिश अधिकारियो ने अपनी पाशविक प्रवत्ति का परिचय दिया और जन सामान्य पर ऐस अमानवीय अत्याचार किय जिसका अध्ययन मात्र ही दिल दहला देता है। आश्चय की बात तो यह है कि निम्न सामान्य लोगो का क्रान्ति म

प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष कोई योगदान नही था, उन पर भी भीषण अत्याचार किये गये। ब्रिटिश इतिहासकार सर जॉन विलियम केई ने स्वय लिखा है कि 'मेरे पास यद्यपि ऐसे अनेक पत्र हैं जिनमे हमारे अधिकारियो द्वारा किये गये ददनाक एव निमम अत्याचारो का वणन है, लेकिन मैं उनके बारे में एक शब्द भी नही लिख रहा हू ताकि विश्व के समक्ष यह विषय कभी न आ सके[68]। नसीराबाद, नीमच, आउवा और कोटा के विप्लव का दमन करने के लिये जो निमम उपाय काम म लिये गये, उससे स्पष्ट हो जाता है कि किस प्रकार ब्रिटिश अधिकारियो ने सामान्य लोगो की सम्पत्ति लटकर तथा उसे नष्ट कर लोगो पर भीषण अत्याचार किये गये। सर्वाधिक आश्चय की बात तो यह है कि जिन ब्रिटिश अधिकारिया न सावजनिक एव निजी सम्पत्ति को लूटा उन्हे पुरस्कृत किया गया और इसके लिये एक समिति का गठन किया गया[69]।

इस प्रकार राजस्थान का प्रथम स्वाधीनता सघष समाप्त हुआ। ब्रिटिश प्रशासन इस बात पर गव कर सकता था कि राजस्थान म यह सघष केवल नियमित सेना और कुछ राज्यो तक ही सीमित रहा तथा राजस्थानी नरेश एव सामा य जनता इससे अप्रभावित रही। उनको इस बात से भी सताप था कि राजस्थान का सम्पन्न एव प्रभावशाली वग उनके पक्ष म रहा। राज स्थानी नरेशो की तो ब्रिटिश अधिकारियो ने मुक्त कठ से प्रशसा की थी जिन्होने विप्लव का दमन करने म उन्हे हर सम्भव सहायता दी और अपने अपने राज्यो म शान्ति और व्यवस्था बनाये रखन का प्रयास किया। लेकिन जिन राज स्थानी सामन्तो ने ब्रिटिश सत्ता और सेना को चुनौती दी उनके प्रति अग्रेजो का तीव्र आक्रोश था। इसीलिये विप्लव के बाद राजस्थानी सामन्तो को सवथा महत्वहीन और प्रभावहीन करना, ब्रिटिश नीति का प्रमुख अग बन गया था।

राजस्थानी नरेशो द्वारा दी गई सहायता के प्रति अग्रेजो का मानना था कि विभिन्न राजस्थानी नरेशो के प्रति उनकी न्यायपूर्ण नीति के कारण देशी रियासतो के शासक ब्रिटिश सर्वोच्चता बनाये रखना चाहते है। लेकिन वास्तव म तथ्य कुछ दूसरा ही था। वास्तव म मुगल सत्ता के पतन के बाद मराठा प्रभुत्व काल मे राजस्थान को अत्यधिक हानि उठानी पड़ी थी तथा राजपूत शासक मराठो की निरन्तर लूटमार और उनकी कभी शान्त न होने वाली धन लिप्सा से तग आ चुके थ। ब्रिटिश सत्ता न उन्हे ऐसी विषम स्थिति से मुक्ति दिलवाई थी। अत अपने अस्तित्व को बनाय रखने हेतु वे ब्रिटिश सत्ता के सरक्षण म रहने मे ही अपना हित समझते थे। लेकिन राजस्थानी शासको म राजनैतिक दूरदर्शिता का तो सवथा अभाव था और वे इतने शक्ति

हीन हो चुके थे कि उनमें कोई ठोस निर्णय लेने की तो योग्यता रह ही नहीं गई थी। पिछली अर्द्ध शताब्दी से वे अपने असन्तुष्ट और अनुशासनहीन सामंतों के विद्रोह से भयभीत एवं आतंकित थे। विप्लव काल में ऐसे सामन्तों की सफलता से शासकों के राजनैतिक अस्तित्व का खतरा उत्पन्न हो सकता था। इसीलिये वे सर्वोच्च सत्ता के प्रति वफादार बने रहे। लेकिन वास्तव में वे स्वार्थी और अवसरवादी थे तथा ब्रिटिश सत्ता के प्रति उनकी वफादारी भी संदिग्ध और अनिश्चित सी रही। ऐसा कहा जाता है कि राजस्थान में यदि ब्रिटिश सेनाएं सहायता के लिये दो महीने देर से आती तो राजपूत शासक भी विप्लवकारियों में मिल जाते[70]।

राजस्थान का सामन्त वर्ग, यद्यपि ब्रिटिश सत्ता से रुष्ट था, तथापि उनका उद्देश्य देशभक्तिपूर्ण होते हुए भी स्वार्थरहित नहीं था। उनमें कूटनीतिज्ञता एवं नेतृत्व का सर्वथा अभाव था। राजस्थान की जनता ने जिनमें ब्रिटिश विरोधी भावना अत्यधिक तीव्र थी नेतृत्व के लिये अपने शासकों की ओर देखा जो सर्वथा शक्तिहीन हो चुके थे लेकिन ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध अपने जागीरदारों से पूर्ण सहयोग करने में असफल रही। यद्यपि राजस्थान में अंग्रेजों के प्रति पर्याप्त रोष था, कप्तान हार्डकेसल विद्रोहियों का पीछा करता हुआ जहां भी गया और जिस रास्ते से भी गुजरा, स्थानीय लोगों ने उसे गालियां दीं। कप्तान शावर्स जब मेवाड़ के महाराणा से मिलने राजमहल की ओर जा रहा था तब रास्ते में स्थानीय जनता ने उसे कर्कश शब्दों में धिक्कारा। जोधपुर राज्य की सेना ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रतीक कप्तान सदरलैंड के स्मारक पर पत्थर फेंके, जोधपुर राज्य की सेनाएं यद्यपि विद्रोहियों का पीछा कर रही थी लेकिन उसने विद्रोहियों से मुठभेड़ करने का प्रयास नहीं किया क्योंकि उनकी सहानुभूति विद्रोहियों के साथ थी न कि अंग्रेजों के साथ जो कि उनके धर्म को नष्ट कर उन्हें ईसाई बनाने पर तुले हुए थे। इतना ही नहीं, आउवा, कोटा, भरतपुर, अलवर और टौंक की जनता विप्लव काल में मात्र मूक दर्शक ही नहीं बनी रही, बल्कि विप्लवकारियों को सक्रिय सहयोग भी दिया था। लेकिन राजस्थान में उसके गौरवपूर्ण इतिहास और परम्पराओं के बावजूद योग्य नेतृत्व उभर कर नहीं आया जो ब्रिटिश विरोधी भावनाओं को मूर्त रूप देकर विप्लवकारियों को सही दिशा निर्देश दे सकता और ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध समन्वयपूर्ण कार्यवाही कर पाता।

यद्यपि सम्पूर्ण राजस्थान में अंग्रेजों के विरुद्ध व्यापक रोष था, फिर भी नसीराबाद में विप्लव का सूत्रपात हो जाने के काफी समय बाद जनता ने विप्लवकारियों का सक्रिय सहयोग करना आरम्भ किया। जनता ने इनके

समय बाद सहयोग क्या दिया, इसका उत्तर देना सभव नही है। फिर भी जनसमथन मे हुई देरी तथा व्यापक पैमाने पर जनसमथन का अभाव, विप्लव की असफलता के महत्वपूण कारण सिद्ध हुए। इसके अतिरिक्त राजस्थान, 18 विभिन्न रियासतो मे विभाजित था, उनमे सगठन एव एकता का अभाव था तथा राजनतिक दूरदर्शिता का भी अभाव था। कुछ राजपूत शासको ने नेतृत्व के लिये उदयपुर के महाराणा से सपक किया, क्योकि मेवाड के महाराणा 'हिन्दुआ सूरज' की उपाधि से विख्यात थे अत हिन्दू धम की रक्षा के लिये मेवाड के महाराणा की ओर देखना स्वाभाविक ही था। लेकिन महाराणा न नेतृत्व प्रदान करने की बजाय उन शासको के पत्र व्यवहार के सभी कागजात ब्रिटिश अधिकारियो को सौंप दिये। ऐसा था राजस्थानी नरेशो का राष्ट्रीय चरित्र। राजस्थान के विद्रोही जागीरदारो मे तुरन्त निणय लेने की क्षमता नही थी और उनम दृढ सकल्प का भी अभाव था। ब्रिटिश विरोधी रवये के कारण वे काफी लम्बे समय से समुचित अवसर की प्रतीक्षा म थे और जब उन्ह अवसर हाथ लगा तो उन्होने अपने आप को नतृत्वहीन स्थिति मे पाया। सवथा असहाय स्थिति म उन्होने नेतृत्व के लिये मुगल सम्राट बहादुरशाह की ओर देखा, लेकिन उनके सैन्य नारनौल पहुचने के बहुत पहले वह अग्रेजो से पराजित हो चुका था। उन्होने यह निणय लेने मे व्यथ ही समय बर्बाद किया कि पहले दिल्ली जाकर मुगल सम्राट से फरमान प्राप्त करे और फिर अजमेर पर आक्रमण कर या पहले मेवाडी साम तो का सहयोग प्राप्त किया जाय। फिर उनके अपने अपने स्वाथ थे और उनम पारस्परिक शत्रुता भी थी। केवल ब्रिटिश विरोधी भावना उन्हें एकताबद्ध किये हुए थी, लेकिन अग्रेजो द्वारा दिल्ली पर अधिकार करते ही उनकी नाम मात्र की एकता भी भग हो गयी। इसके अतिरिक्त राजस्थान के बडे दो विद्रोही केन्द्रो—नसीराबाद और नीमच के बीच किसी प्रकार का सम्पक साधन भी नही था। अत राजस्थान के विद्रोही ब्रिटिश सत्ता पर उस समय प्रहार करने म असफल रहे जबकि ब्रिटिश सत्ता की स्थिति डावाडोल थी। दुर्भाग्य की बात तो यह थी कि उनका स्वय का शासक वग मृत प्राय हो चुका था। यही कारण है कि जब वे लाभप्रद स्थिति मे थे उस समय ब्रिटिश सत्ता पर प्रहार करने म असफल रहे। फलस्वरूप अग्रेजो ने अपनी स्थिति सुदृढ कर उन्हें लाभप्रद स्थिति से वचित कर दिया। समस्त विद्रोहियो म न तो पारस्परिक समन्वय था और न उनकी समान नीति थी। इसके अलावा कोटा के विप्लवकारियो का आउवा के विप्लवकारियो से कोई सम्बध नही था। इस बात मे कोई स देह नही कि राजस्थान के जागीरदारो म ब्रिटिश सत्ता के प्रति तीव्र आक्रोश था ब्रिटिश विरोधी तत्वो के प्रति

सहानुभूति थी और उन्हे भय था कि ब्रिटिश सर्वोच्चता बनी रहने पर उनके अधिकार और प्रतिष्ठा समाप्त हो जायेगी। उन्हे इस बात से भी भय था कि ब्रिटिश सत्ता द्वारा किये गये सुधारो से उनका धर्म एव सस्कृति खतरे मे पड सकती है। वस्तुत वे समाज के सामन्तीय ढाचे को बनाये रखने हेतु, हिन्दू धर्म की पवित्रता बनाये रखने हेतु और अपने विशेषाधिकारो को बनाये रखने हेतु ब्रिटिश सत्ता से सघर्ष कर रहे थे। लेकिन उनमे अखिल भारतीय दृष्टिकोण का सर्वथा अभाव था तथा उनके पास राष्ट्रीय महत्व की कोई योजना भी नही थी। फलस्वरूप ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध उनका सघर्ष केवल स्थानीय एव एकाकी रहा। उनके पास ब्रिटिश सत्ता को उखाड फेंकने हेतु कोई निश्चित योजना भी नही थी और न कोई केन्द्रीय सगठन था।

इन सब बातो के अलावा राजस्थान के विद्रोहियो मे त्याग और बलिदान की भावना तो थी, लेकिन रणकौशल अग्रेजो जैसा नही था। अग्रेजो के पास यूरोपीय ढग से प्रशिक्षित सैनिक थे और रणनीति एव कूटनीति मे दक्ष सेनानायक थे जबकि विद्रोही केवल मरना जानते थे लडना नही। विद्रोहियो को धन, रसद और हथियारो की कमी का भी सामना करना पडा, जबकि अग्रेजो को राजस्थान के प्राय सभी शासको ने भरपूर सहायता और सहयोग प्रदान किया। यदि राजस्थान का शासक वर्ग विद्रोहियो की आशाओ के अनुरूप ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध खडा हो जाता तो इस क्रान्ति का इतिहास ही दूसरा होता। लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि राजस्थान का शासक वर्ग मात्र मूक दर्शक बना रहा, जो भारतीय स्वाधीनता के लिये घातक सिद्ध हुआ। जिन लोगो ने ब्रिटिश विरोधी सघर्ष मे भाग लिया वे मात्र पतनोन्मुख नायक थे और पतनोन्मुख समाज मे विचरण कर रहे थे। जिस ब्रिटिश विरोधी भावना से प्रेरित होकर उन्होने सघर्ष मे भाग लिया था, उसके पीछे न तो क्रान्ति की भावना थी और न रचनात्मक आदर्श था जिससे कि वे भावी नवीन भारत का निर्माण कर पाते। वे ऐसे सामाजिक मूल्यो के लिये सघर्ष कर रहे थे जो तत्कालीन समाज मे पहले से ही महत्वहीन और अर्थहीन होते जा रहे थे। इन सभी बातो के अतिरिक्त अग्रेजो के अमानवीय अत्याचारो से विद्रोहियो का मनोबल भी गिर गया जिसके फलस्वरूप वे लम्बे समय तक अपना सघर्ष जारी न रख सके। ऐसे सघर्ष की असफलता तो स्वाभाविक ही थी।

राजस्थान मे 1857 के विप्लव की असफलता के बावजूद विप्लवकारियो का बलिदान व्यर्थ नही गया। जिन क्रान्तिकारियो ने फिरगियो से

जूझते हुए अपने जीवन का बलिदान किया, वे आज भी हमारे लोकगीतों में अद्वितीय नायक के रूप में याद किये जाते हैं। यद्यपि ब्रिटिश सत्ता ने अपनी सैनिक शक्ति के बल पर क्रांति का दमन कर दिया था, लेकिन लोगों की ब्रिटिश विरोधी भावना का दमन नहीं किया जा सका। फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध जन आक्रोश बाधा प्राप्त प्रबल स्रोत की तरह बढ़ता गया। विप्लव की समाप्ति के बाद राजस्थान के विभिन्न राज्यों में तैनात ब्रिटिश पोलीटिकल एजन्टों के द्वारा राजस्थानी नरेशों को अपने अपने राज्य में प्रशासनिक, सामाजिक और आर्थिक सुधार लागू करने का परामर्श दिया और इन सुधारों के नाम पर राज्यों के आन्तरिक मामलों में ब्रिटिश सरकार का हस्तक्षेप बढ़ता गया, जिसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई। अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार के कारण भी लोगों में राष्ट्रीय जागृति का प्रादुर्भाव हुआ। इस राष्ट्रीय जागृति के विकास में स्वामी दयानन्द सरस्वती का योगदान अविस्मरणीय रहा। 1865 ई में स्वामीजी ने राजस्थान की यात्रा की और यहां के लोगों को स्वधर्म स्वदेशी, स्वराज्य और स्वभाषा का उपदेश दिया। फलस्वरूप लोगों में क्रान्ति की भावना पुन पल्लवित हुई। राजस्थान में इस क्रान्तिकारी भावना को बल प्रदान करने वालों में अर्जुनलाल सेठी, केसरीसिंह बारहठ, गोपालसिंह खरवा आदि अग्रणीय माने जाते हैं। निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि 1857 की क्रांति की असफलता ने भावी संगठित आन्दोलन की भूमिका तैयार करदी।

सन्दर्भ टिप्पणी

1 पार्लियामेन्ट्री पेपर्स, 1860, हाउस आफ कामन्स, पेपर न 77, म्यूटिनी कोरसपोन्डेन्स, पृ 130

2 फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47

3 वही।

4 पार्लियामेन्ट्री पेपर्स, 1860, हाउस ऑफ कामन्स, पेपर न 77, म्यूटिनी कोरसपोन्डेन्स, पृ 130

5 (i) वही।

(ii) फा पो कन्सलटेशन 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47

6 (i) फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
(ii) खडगावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल ऑफ 1857, पृ 76
7 फो पा कन्सलटेशन, 30 दिसम्बर, 1859 न 777
8 वही।
9 पार्लियामेन्ट्री पेपर्स 1860, हाउस ऑफ कामन्स, पेपर न 77, म्यूटिनी कारसपोन्डेन्स, पृ 127
(ii) फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
10 फो पो कन्सलटेशन, 30 अक्टूबर 1857 न 11 14
11 फो पो कन्सलटेशन, 25 सितम्बर 1857 न 436 40
12 पार्लियामेन्ट्री पेपर्स 1860, हाऊस आफ कामन्स, पेपर न 77, म्यूटिनी कोरसपोन्डेन्स पृ 126 27
13 फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
14 फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 28 मई 1858 न 324
15 वही।
16 (i) पार्लियामेन्ट्री पेपर्स 1860 हाऊस ऑफ कामन्स, पेपर न 77, म्यूटिनी कोरसपोन्डेन्स, पृ 127
(ii) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 28 मई 1858 न 324
17 (i) पार्लियामेन्ट्री पेपर्स, 1860 हाउस ऑफ कामन्स, पेपर न 77, म्यूटिनी कोरसपोन्डेन्स, पृ 127
(ii) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 28 मई 1858 न 324
(iii) फो पा कन्सलटेशन 31 दिसम्बर 1858 न 3146 3147
18 फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 3147
19 फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146-3147
20 (i) जी डब्ल्यू फॉरेस्ट हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी भाग 3 पृ 555 56
(ii) डा मथुरालाल शर्मा कोटा राज्य का इतिहास, भाग 2 पृ 607
21 (i) फो पो कन्सलटेशन 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
(ii) राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस प्रोसीडिंग्ज, खण्ड 12 पृ 148
22 फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट) 29 जनवरी 1858 न 249 50
23 फो पो कन्सलटेशन, 5 फरवरी 1858 न 154
24 (i) पार्लियामेन्ट्री पेपर्स 1860 हाउस आफ कामन्स, पेपर न 77 म्यूटिनी कोरसपोन्डेन्स, पृ 130

(ii) फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
25 फो पो कन्सलटेशन 31 दिसम्बर 1858 न 3146 3147
26 फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
27 (i) फो पो कन्सलटेशन पोली 'ए' जुलाई 1861 न 448 52
(ii) बख्शीखाना, उदयपुर बही न 291 कनल ईडन का मेवाड के महाराणा के नाम पत्र, दिनाक 27 माच 1860
सितम्बर 1857 से माच 1860 तक निम्बाहेडा का परगना मेवाड के अधिकार मे रहा था। 24 फरवरी 1860 को लाड केनिंग ने आदेश दिया कि निम्बाहेडा पुन टोंक को सौंप दिया जाय तथा 2½ वष की आय जो मेवाड का इस परगने से प्राप्त हुई है उसम से साढे पाच लाख रुपया मेवाड राज्य से टोंक राज्य को दिलाया जाय।
28 (i) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 18 दिसम्बर 1857 न 35 36
(ii) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग 2, पृ 445
29 फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 18 दिसम्बर 1857 न 35 36
30 (i) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 18 दिसम्बर 1857 न 35-36
(ii) फो पो कन्सलटेशन, 29 जनवरी 1858 न 289 90
31 फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146-47
32 ए जी जी जाज लारेन्स का भारत सरकार के विदेश विभाग के सचिव के नाम पत्र, दिनांक 21 दिसम्बर 1860 (डा करणीसिंह कृत बीकानेर राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सबध' के पृष्ठ 441-44 पर उद्धृत)
33 (i) फो पो कन्सलटेशन 29 जनवरी 1858 न 289 90
(ii) सी यू एचिसन ट्रीटीज, एन्गेजमेंट्स एण्ड सनद्स, भाग 3, पृ 290 91 ओझाजी ने सिरसा जिले के 41 गाव का टीबी परगना देने का उल्लेख किया है। (ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग 2, पृ 453)
34 (i) फो पो कन्सलटेशन, 29 जनवरी 1858 न 289 90
(ii) एजेन्सी रेकाड, फाईल न 20-म्यूटिनी 1863, ए जी जी जाज लारेन्स की रिपोट, पत्र सख्या 740, दिनाक 29 जून 1863
(iii) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग 2, पृ 451
35 ओझा डूगरपुर राज्य का इतिहास, पृ 162
36 सी एल शॉवस ए मिसिंग चेप्टर ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 133 47

37 जी बी मेलीसन द इण्डियन म्यूटिनी ग्राफ 1857, पृ 395
38 टी ग्रार होम्स ए हिस्ट्री ग्रॉफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 341 42
39 फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47
40 एजेंसी रेकाड, फाईल न 32 म्यूटिनी 1857, खण्ड I, जनरल रावर्ट्स का पत्र ए जी जी जाज लारेंस के नाम दिनाक 21 जुलाई 1858
41 खड्गावत राजस्थानृस रोल इन द स्ट्रगल ग्राफ 1857, पृ 80
42 (i) फो पो कन्सलटेशन, 27 ग्रगस्त 1858 न 155
(ii) एजेंसी रेकाड, फाईल न 32 म्यूटिनी 1858, खण्ड I जनरल रावर्टस का पत्र जाज लारेंस के नाम दिनाक 21 जुलाई 1858
43 एजेंसी रेकाड, फाईल न 32 म्यूटिनी 1858, खण्ड I कर्नल ईडन का पत्र जाज लारेंस के नाम दिनाक 24 जुलाई 1858
44 जी डब्ल्यू फारेस्ट ए हिस्ट्री ग्रॉफ इण्डियन म्यूटिनी, भाग 3 पृ 570
45 वही।
46 एजेंसी रेकाड, फाइल न 32 म्यूटिनी 1858 खण्ड I कप्तान शावर्स का पत्र जाज लारेंस के नाम, दिनाक 4 ग्रगस्त 1858
47 एजेंसी रेकाड, फाइल न 32-म्यूटिनी 1858, खण्ड I, कप्तान शावर्स का पत्र जाज लारेंस के नाम, दिनाक 8 ग्रगस्त 1858
48 जी डब्ल्यू फॉरेस्ट ए हिस्ट्री ग्राफ इण्डियन म्यूटिनी, भाग 3, पृ 576 78
49 फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 24 सितम्बर, 1859 न 56 57
50 (i) फो पो कन्सलटेशन 4 मार्च 1859 न 471
(ii) जी डब्ल्यू फॉरेस्ट ए हिस्ट्री ग्राफ इण्डियन म्यूटिनी, भाग 3, पृ 586
51 एजेंसी रेकाड, फाइल न 32 म्यूटिनी 1858, खण्ड I, जाज लारेन्स का पत्र जनरल रावर्ट्स के नाम दिनाक 3 सितम्बर 1858
52 एजेंसी रेकाड, फाइल न 32-म्यूटिनी 1858, खण्ड I, कप्तान शॉवर्स का पत्र जाज लारेंस के नाम दिनांक 9 सितम्बर 1858
53 खड्गावत राजस्थानृस रोल इन द स्ट्रगल ग्राफ 1857, पृ 82
54 (i) एजेंसी रेकाड, फाइल न 32 म्यूटिनी 1858 खण्ड I कप्तान डेनी का पत्र हेमिल्टन के नाम, दिनाक 15 दिसम्बर, 1858

(ii) जी डब्ल्यू फॉरेस्ट ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन म्यूटिनी भाग 3, पृ 590 98

55 जी डब्ल्यू फारेस्ट ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन म्यूटिनी भाग 3, पृ 607

56 (i) एजेन्सी रेकाड, लेटर बुक न 13, पृ 76 77

(ii) सी एल शॉवस ए मिसिंग चेप्टर अ फ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 136 व 138

57 (i) सी एल शॉवस ए मिसिंग चेप्टर ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 140 41

(ii) श्यामलदास वीर विनोद पृ 1978

58 (i) मुशी ज्वालासहाय लायल राजपूताना, पृ 180

(ii) श्यामलदास वीर विनोद पृ 1978

59 (i) जी डब्ल्यू फॉरेस्ट ए हिस्ट्री आफ इण्डियन म्यूटिनी भाग 3, पृ 612

(ii) खडगावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 83

60 (i) सी एल शॉवस ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 144

(ii) मुशी ज्वालासहाय लायल राजपूताना, पृ 181-84

श्री खड्गावत न यहा तात्या का छोटा उदयपुर जान ब्रिगेडियर पाक से पराजित होने, फिर बासवाडा व सलूम्बर जान का उल्लेख किया है जो ठीक नही है। छोटा उदयपुर म तात्या के पराजित होन की तिथि 1 दिसम्बर दी है। चू कि 7 अप्रेल 1859 को तो तात्या पकड लिया गया था, अत श्री खड्गावत ने सभवत दिसम्बर 1858 की घटना का उल्लेख कर दिया है जबकि तात्या दूसरी बार राजस्थान म 9 दिसम्बर 1858 को आया था।

61 (i) जी डब्ल्यू फारेस्ट ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, भाग 3 पृ 612

(ii) मुशी ज्वालासहाय लायल राजपूताना, पृ 183

62 (i) मुशी ज्वालासहाय लायल राजपूताना पृ 184

(ii) खड्गावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 84

63 (i) फो पा कन्सलटेशन, 28 जनवरी 1858 न 289 90

(ii) फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3146 47

(iii) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग 2 पृ 451

64 (i) जी डब्ल्यू फॉरेस्ट ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, भाग 3, पृ 621 22

(ii) एजेंसी रेकार्ड, लेटर बुक न 13, पृ 79

65 डॉ (श्रीमती) निमला गुप्त 1790 1862 अराजकता से व्यवस्था की ओर, पृ 192

66 सी एल शावस ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 147-50

67 वही।

68 जॉन विलियम केई ए हिस्ट्री आफ द सिपाही वार इन इण्डिया, भाग 1, पृ 279

69 फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858, न 3146 47

70 खड्गावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 88

———

विप्लव का स्वरूप और परिणाम

प्रारम्भ म ब्रिटिश अधिकारी भारतव्यापी विप्लव की भीषणता का अनुमान नही लगा सके। मेरठ मे हुए विप्लव क बाद भी लार्ड कैनिंग तथा सेनाध्यक्ष जाज एनसन ने इस विप्लव को कोई विशेष महत्व नहीं दिया। लेकिन जब विप्लव की आग समस्त उत्तर भारत मे फलने लगी, तब अगस्त–सितम्बर मे विप्लवकारियो के विरुद्ध कायवाही प्रारम्भ की गई। 20 सितम्बर 1857 तक दिल्ली के विभिन्न स्थानो पर अधिकार कर लिया गया तथा 21 सितम्बर को मुगल सम्राट बहादुरशाह, बेगम जीनत महल और उसके पुत्र को बन्दी बना लिया गया[1]। तत्पश्चात दिल्ली म बेगुनाहो के कत्ल से खून की होली खेली गई। यह रक्तपात प्रतिशोध की भावना से किया गया था, ताकि भारतीयो को एक सबक सिखाया जा सके। दिल्ली मे अग्रेजो द्वारा की गई लूटमार इतनी भीषण थी कि नादिरशाह की लूट और कत्लेआम भी उसके सामने फीका था[2]। माच 1858 तक अग्रेजो का लखनऊ पर अधिकार हो गया। यद्यपि मध्य भारत मे अपना नियत्रण स्थापित करने मे अग्रेजो को कुछ कठिनाई का सामना करना पडा, लेकिन जून 1858 तक अधिकाश क्षेत्रो पर अग्रेजो का अधिकार होगया। किन्तु तात्या टोपे ने सघष जारी रखा। अग्रेजा ने उसे पकडने मे अपनी समस्त शक्ति लगा दी और अन्त मे उसे पकड लिया गया। तात्या को फांसी लगने के बाद अग्रेजों ने राहत की सांस ली[3]।

भारतव्यापी 1857 के विप्लव का स्वरूप क्या था, इस प्रश्न पर विद्वान एकमत नहीं हैं। अत राजस्थान मे हुए 1857 क विप्लव का स्वरूप निर्धारित करना अत्यन्त कठिन है। अधिकाश ब्रिटिश लेखको ने इसे मात्र सनिक विद्राह की सज्ञा दी है। कप्तान प्रिचार्ड न लिखा है कि यद्यपि यह विप्लव एक सनिक विद्रोह के रूप में प्रारम्भ हुआ था किन्तु विभिन्न भागो मे फैलते हुए इसन अपना स्वरूप बदल लिया था[4]। इससे स्पष्ट होता है कि नसीराबाद और नीमच मे यह सैनिक विप्लव के रूप म फूट पड़ा था, लेकिन यह पूर्ण रूप से सेना से ही सम्बधित नहीं रहा। श्री नाथूराम

खड्गावत ने राजस्थान म हुए विप्लव पर प्रकाश डालत हुए बताया है कि विप्लव म सामान्य जनता ने भी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से भाग लिया था[5]। ऐसी स्थिति मे इसे केवल सनिक विप्लव का स्वरूप प्रदान करना अनुचित होगा। किन्तु प्रश्न उत्पन्न होता है कि यदि यह केवल सनिक विप्लव नही था, तो इससे अधिक क्या था ? डा ताराचद ने लिखा है कि अशक्त वर्गों का अपनी खोयी हुई सत्ता को पुन प्राप्त करने का अन्तिम प्रयास था। यह वग ब्रिटिश नियत्रण से मुक्ति पाना चाहता था, क्योकि अग्रेजो की नीतियो से इस वग के लोगो के हितो को हानि पहुच रही थी[6]। ब्रिटिश इतिहासकार मेलीसन ने इसे *जागीरदारो द्वारा अपने शासको क विरुद्ध सामन्ती प्रतिक्रिया* कहा है[7]। मेलीसन ने लिखा है कि जिन जागीरदारो ने विप्लव म भाग लिया उनका झगडा अपने शासको स था तथा उन्ह ब्रिटिश सरकार से किसी प्रकार की कोई शिकायत नही थी। मेलीसन के इस कथन को समग्र रूप मे स्वीकार नही किया जा सकता। यह निर्विवाद है कि जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह की सामन्त विरोधी नीति के कारण मारवाड के जागीरदारो म व्यापक असतोष था। इसी प्रकार उदयपुर के महाराणा स्वरूपसिंह न भी अपने सामन्तो से उचित व अनुचित तरीको से धन वसूल करने तथा उन्हे अपने परम्परागत अधिकारो से वचित करने का प्रयास किया। अत जागीरदार वग का अपने शासको से नाराज होना स्वाभाविक था। किन्तु इसका अथ यह कदापि नही लगाना चाहिये कि जागीरदार वग म अग्रेजो के विरुद्ध किसी प्रकार का असतोष नही था। ब्रिटिश सरक्षण के पूव राजपूताना का सामन्त वग सर्वाधिक प्रभावशाली एव शक्ति सम्पन्न वग था और अपन परम्परागत अधिकारो एव विशेषाधिकारो की रक्षा हेतु अपने शासको की मात्र अवहेलना ही नही कर बठता था वरन् अपन शासको का अपमान भी कर देता था[8]। लेकिन ब्रिटिश सरक्षण के बाद राजपूत शासक ब्रिटिश सहायता के प्रति आश्वस्त हो गये और उन्होने जागीरदारो के परम्परागत अधिकारों पर प्रहार करना आरम्भ कर दिया। सामन्त वग इस तथ्य को भलीभाति समझता था कि उनके विरुद्ध की जाने वाली कायवाही मे अप्रत्यक्ष रूप स किसका हाथ है। मेवाड मे सलूम्बर रावत केसरीसिंह ने तो स्पष्ट रूप से यह आरोप लगाया था कि अग्रेजो के कारण ही राज्य म झगडे-फसाद बढे हैं[9]। जयपुर म भी ब्रिटिश विरोधी सामन्तो के विरुद्ध कायवाही की गई थी। बीकानेर मे तो सामन्तो से उनकी जागीरो के कई गाव तक जब्त कर लिये थे। अत राजस्थान का सामन्त वग न केवल अपने शासको से बल्कि ब्रिटिश सत्ता मे भी क्रुद्ध था। यद्यपि विप्लव काल मे सामन्तो का दृष्टिकोण स्वार्थो से प्रेरित था लेकिन देश भक्ति से रहित भी नहीं था[10]।

उपर्युक्त मत–मतान्तरो से स्पष्ट है कि विप्लव के स्वरूप के सम्बध मे विभिन्न परस्पर विरोधी मत हैं। अत किसी एक मत को ज्यों का त्यों स्वीकार नही किया जा सकता। किसी विप्लव का स्वरूप समझने के लिये हमे मूल रूप से दो प्रश्नो का समाधान ढूंढना होगा। प्रथम तो यह कि विप्लव मे भाग लेने वालो का दृष्टिकोण क्या था? दूसरा यह कि उस समय जन भावना क्या थी? विप्लव मे भाग लेने वालो का दृष्टिकोण स्पष्टतया अग्रेज विरोधी था। मेरठ म विप्लव का सूत्रपात होन के बाद अजमेर म एक भारतीय सिपाही ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए अपने अधिकारी से कहा था कि दुर्भाग्य से यह सब अपरिपक्व स्थिति मे हो गया है, इसलिये अग्रेज अपनी कठिनाइयो से मुक्त हो जायेंगे, लेकिन इसकी तयारी तीन वष तक चलती रहती, जसाकि सोचा गया था, तो अग्रेजो को भारत का साम्राज्य खोना पडता[11]। भारतीय सिपाही की इस प्रतिक्रिया से सैनिको का दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाता है। नीमच म हुए विप्लव की घटनाओ से भी स्पष्ट हो जाता है कि यह सब पूव नियोजित था, जसाकि स्वय कप्तान प्रिचाड ने स्वीकार किया है कि यह एक सुसगठित षडयत्र था[12]। चर्बी वाले कारतूस और आटे मे मानव हड्डियो को पीस कर मिलाने की चर्चा ने राजस्थान की सभी छावनियो मे अग्रेजो के विरुद्ध तीव्र आक्रोश उत्पन्न कर दिया था और अग्रेजो को खदेडने के लिये तयारियाँ आरम्भ होगयी। साधू और फकीरो के वेश मे सदेशवाहक सभी छावनियो मे अग्रेजो के विरुद्ध की जाने वाली कायवाही की सूचनाए पहुचाने के साथ साथ अग्रेजो के विरुद्ध प्रचार भी कर रहे थे। अत सिपाहियो का एक ही दृष्टिकोण था कि गोरे लोगो का अपनी मातृभूमि से खदेडना जो उनकी जाति और धम को नष्ट करने पर तुले हुए थे।

मेलीसन ने लिखा है कि राजपूताने के जागीरदारो का झगडा उनके शासको से था, ब्रिटिश सरकार स नही। यदि जागीरदार ब्रिटिश सत्ता से रुष्ट नही थे तो आउवा से विद्रोही जागीरदार दिल्ली की ओर क्या रवाना हुए? यदि उनका झगडा महाराजा तख्तसिंह से था तो उन्ह सेना लेकर जोधपुर की तरफ जाना चाहिये था। लेकिन यह तथ्य निर्विवाद है कि विद्रोही जागीरदार दिल्ली जाकर मुगल सम्राट बहादुरशाह से फरमान प्राप्त करके ब्रिटिश सत्ता से सघष करना चाहते थे[13]। इसी प्रकार मेवाड के विद्रोही जागीरदार भी ब्रिटिश सत्ता से नाराज थे, क्योकि ब्रिटिश अधिकारियो ने मेवाडी सामन्तो के परम्परागत अधिकारो को समाप्त कर उन्ह सवथा प्रभावहीन बनाना चाहते थे। इसीलिये विप्लव काल म मेवाडी सामन्तो ने ब्रिटिश सत्ता के विद्रोहियो को शरण और सहायता दी थी। मेवाड म कोठारिया के रावत जोधसिंह

ने तथा सलूम्बर के रावत केसरीसिंह ने ब्रिटिश सत्ता के विद्रोही तांत्या टोप को शरण व सहायता दी थी[14]। डीसा के विद्रोही नेताओं ने 13 सितम्बर 1857 को सभी हिंदू व मुसलमान सिपाहियों के नाम से मारवाड और मेवाड की जनता के नाम एक अपील जारी की थी, जिसमें इस बात का संकेत मिलता है कि मारवाड और मेवाड के सामन्त विद्रोहियों के साथ थे[15]। आउवा के ठाकुर खुशालसिंह और सलूम्बर के रावत के बीच लम्बे समय तक गुप्त पत्र व्यवहार चलता रहा। ठाकुर खुशालसिंह ने रावत केसरीसिंह को लिखा था कि वह विद्रोहियों को सहायता दे तथा उसने यह भी आश्वासन दिया कि दिल्ली के बादशाह की ओर से सहायता आने वाली है[16]। ठाकुर खुशालसिंह जब आउवा मे ब्रिटिश सेनाओं से पराजित होकर मेवाड की तरफ आया तब सलूम्बर और कोठारिया के सामन्तों ने उसे अपने यहां शरण दी थी[17]। इतना ही नही, जब मध्य भारत का विद्रोही नेता नाना साहब भाग कर मेवाड की तरफ आया तब सलूम्बर, भीण्डर, बदनोर व आसीन्द के सामन्तों ने उसकी सहायता की[18]। विद्रोह काल मे यह अफवाह लम्बे समय तक चलती रही कि मध्य भारत का विद्रोही नेता राव साहब सलूम्बर मे शरण लिये हुए है[19]। वस्तुतः आउवा ठाकुर खुशालसिंह और सलूम्बर रावत केसरीसिंह जोधपुर लीजियन के विद्रोहियों से सम्पर्क स्थापित कर सभी सामन्तों को विद्रोह के लिये प्रोत्साहित कर रहे थे तथा दिल्ली से एक सेना बुलाकर राजपूताने में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध एक विशाल सेना तैयार करना चाहते थे[20]। यदि मेवाड के सामन्तों का विरोध महाराणा स्वरूपसिंह से था तो फिर उन्होंने ब्रिटिश सत्ता के विद्रोहियों को सहायता क्यों दी और ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध दिल्ली से सेना क्यों बुलाई? इन सभी दृष्टान्तों से स्पष्ट है कि इस विप्लव मे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में भाग लेने वाले सामन्तों का दृष्टिकोण भी ब्रिटिश विरोधी था।

उस समय सम्पूर्ण राजस्थान मे जनभावना भी ब्रिटिश विरोधी थी। जोधपुर मे महाराजा मानसिंह द्वारा अंग्रेजों को किला सुपुर्द करते समय राठौड भीमजी द्वारा पोलीटिकल एजेंट लुडलो पर आक्रमण करना तथा जयपुर में कर्नल ब्लैक की हत्या करना स्पष्ट रूप से अंग्रेजों के विरुद्ध आक्रोश प्रदर्शित करता है। डूंगरपुर मे भी अंग्रेजो के विरुद्ध पर्याप्त रोष था क्योंकि अंग्रेजों ने डूंगरपुर के कुछ जागीरदारों से मिलकर महारावल जसवंतसिंह को गद्दीच्युत कर अपने शिविर में कुछ दिन बन्दी बनाकर रखा था और फिर उसे बनारस निर्वासित कर दिया था। जिन जागीरदारों ने अंग्रेजों का साथ देते हुए महारावल जसवंतसिंह को अंग्रेजों के शिविर में पहुंचाया उनकी कटु निन्दा

की गई। एक तात्कालिक कवि दूलजी ने उन अंग्रेज भक्त जागीरदारों पर बड़ा तीखा व्यंग्य किया। दूलजी ने उन पर व्यंग्य करते हुए लिखा कि —

लाणत लूण हराम जसवंत मे कोधी जका,
धुल विदग रो काम सावत तो मे 'सादला'।
हूमके 'अजमल' होत असधारी बागड इला,
गढ छोडे गहलोत जातो नह रावल 'जसो'।
ओढे सिर पर ओढणी सह भड मागी सीख
तूरका रा तावूत ज्यू, मेल चल्या मछरीक।
जसवंत ने गिणगौर' ज्यू मेल तीरथ मझार,
आया सावण गावता, साभरिया सिरदार"[1]।

अंग्रेजों के प्रभाव के कारण सती प्रथा को रोकने शरणे के अधिकार को समाप्त करने, जागीर के निवासियों को अपनी इच्छानुसार दूसरे स्थान पर जाने और बसने का अधिकार देने आदि के सम्बंध मे अनेक आदेश प्रसारित किये गये थे। इन सुधारो से निश्चय ही राजस्थानी समाज को लाभ हुआ था, किन्तु राजस्थान की समसामयिक जनता ने इन सुधारो को अपनी परम्परागत मान्यताओं के विरुद्ध प्रहार समझा। उनकी यह धारणा बन चुकी थी कि अंग्रेज उनकी प्राचीन मान्यताओं को समाप्त कर उन्हे ईसाई बनाना चाहते हैं। अत राजस्थानी समाज म अंग्रेजो के विरुद्ध तीव्र रोष था।

राजस्थानी राज्यो पर ब्रिटिश प्रभुत्व स्थापित होने के बाद अंग्रेजो ने यहाँ का आर्थिक शोषण आरम्भ कर दिया था। फलस्वरूप यहा बेकारी और गरीबी तीव्र गति से बढने लगी उत्पादन मे कमी हो गयी और अनाज तथा घास तक का अभाव दृष्टिगत होने लगा। ऐसी स्थिति के कारण उस समय यह लोकोक्ति प्रचलित हो गई थी— मिनखा निठगी मोठ बाजरी और घोडा निठग्यो घास। ऐसी स्थिति ने भी अंग्रेजा के विरुद्ध जन भावना उत्पन्न की। जयपुर और कम्पनी सरकार के बीच नमक के सम्बंध म हुई संधि के कारण भी जन सामान्य मे अंग्रेजा के प्रति रोष था और इस सम्बंध मे वहा एक लोकोक्ति लोकप्रिय हुई थी कि, 'म्हारो राजा भोलो साभर तो दे दीनी अंगरेज न म्हारा टाबर भूखा रोटी तो माग तीख लूण री। इन लोकोक्तियो मे स्पष्ट रूप से ब्रिटिश विरोधी भावना का परिचय मिलता है। जैसाकि पूर्व म बताया गया है कि तात्कालिक कविया ने डूगजी व जवाहरजी जसे कुख्यात डाकुओ की प्रशसा मे गीता की रचना की जिन्हे जनता बडे चाव से गाती थी और सुनती थी, केवल इसलिये कि इन डाकुओ ने ब्रिटिश छावनिया को लूटा

था और ब्रिटिश क्षेत्रो मे डाके डाले थे। उनके लिये लिखा गया कि, 'छोटा मोटा गांव लूटिया नहीं नाम डूंगजी नाम करो तो लटो डूंगजी अगरेजो री छावणी' और हाथ जोड़ कहै अगरेजा री कामणी छावणी मत लूट भवर साबा'। समाज में अवांछनीय तत्वों की प्रशंसा, अग्रेज विरोधी भावना के अतिरिक्त और क्या हो सकती है? इन डाकुओ द्वारा ब्रिटिश छावनिया लूटना तथा ब्रिटिश क्षेत्रो मे डाके डालन की कार्यवाही को यद्यपि राष्ट्रीय या स्वदेश प्रेम नहीं कहा जा सकता, लेकिन इन्हे जनता की जो सहानुभूति प्राप्त हुई उसका मात्र कारण जनता मे अग्रेजो के विरुद्ध तीव्र आक्रोश था।

साहित्य समाज की भावनाओ का दर्पण होता है। यदि हम तात्कालिक राजस्थानी साहित्य पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट हो जाता है कि उस समय का साहित्य भी अग्रेज विरोधी भावना प्रदर्शित करता है। मारवाड के प्रसिद्ध कविराज बांकीदास ने अपनी निम्न कविता मे तात्कालिक शासको की अग्रेजो की गुलामी करने की मनोवृत्ति को धिक्कारा तथा जनसाधारण का विदेशियो के विरुद्ध शस्त्र धारण करने का आह्वान किया था —

> आयो इगरेज मुलक र ऊपर आहस लीधा खेचि उरा,
> धणिया मर न दीधी धरती धणिया ऊभा गई धरा।
> फौजा देख न कीधी फौजा दोयण किया न खला डला,
> खवा खाच चूड खावद रै उण हिज चूड गई इला।
> महो जाता चीचाता महिला अ दुय मरण तरण अवसाण
> राखो रै किहक रजपूती मरद हिन्दू की मुसलमान।
> पुर जोधाण उदपुर जैपुर यह थाग खूटा परवाण
> आके गई आवसी आके बाके आसल किया वरवाण[2]।

कविराज बाकीदास ने उन राजपूत शासको को धिक्कारा जिन्होने बिना किसी विरोध के अग्रेजो की सर्वोच्चता को स्वीकार किया था जबकि उनके पूवजा न अपने सम्मान की रक्षा के लिये अपने प्राणो की आहुति दी थी[3]। कविराज बाकीदास के अतिरिक्त वश भास्कर जसे ऐतिहासिक ग्रन्थ के रचयिता महाकवि सूर्यमल मिश्रण के अनेक पत्रो से जो उसने अपने मित्र ठाकुरो को लिखे थे उस समय की जन भावना का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। सूर्यमल मिश्रण न पीपल्या के ठाकुर फूलसिंह को एक पत्र म लिखा था कि भारत पर अग्रेजो के प्रभाव से हिन्दुत्व को खतरा उत्पन्न हो गया है और भारतीय सभ्यता के लिये हानिकारक सिद्ध हो रहा है। उसने यह भी लिखा कि ब्रिटिश शासन से भारत को कुछ भी लाभ प्राप्त नहीं हुआ है और

विद्रोहियों पर अंग्रेजों की विजय भारतीयों के लिये विनाशकारी सिद्ध होगी। उसने ठाकुर फूलसिंह को लिखा कि उच्च आदर्शों के लिये वह अपना बलिदान करने को तत्पर रहे[24]। कोटा में हुए विप्लव की घटना का उल्लेख करते हुए सूर्यमल मिश्रण ने नीमली ठाकुर को लिखा कि अंग्रेजी सेना पर भारतीयों की विजय से उनको हार्दिक प्रसन्नता हुई है[25]। पीपल्या के ठाकुर फूलसिंह को लिखे एक पत्र में सूर्यमल मिश्रण ने राजपूत शासकों की गुलामी करने की मनोवृत्ति की कटु निन्दा की थी। सूर्यमल मिश्रण के शब्दों में ' —भर ये राजा लोग देशपति जमीं का ठाकर छै जे सारा ही हिमालय का गल्या ही नीमरया सा चालीस सा लेर साठ सतर बरस तांई पाछ पटक्या छै तो भी गुलामी कर छ परन्तु यो म्हारो वचन राज याद राखोगा कि ज अवक (अंग्रेज) रह यो तो ई का गायो ही पूरा करसी जमी को ठाकर कोई भी न रहसी सब ईसाई हो जासी तीसा दूरदेशा विचारै तो फायदो कांई क भी नहीं परन्तु आपणा भाछो दिन होय तो बिचारै और राज जगा मुहुत म्हारै होय तो बडाई तरीक लिखी जाव तीसू थोडी म बहुत जाण लेसी"[26]। यदि एक दरबारी इतिहासकार और प्रसिद्ध साहित्यकार उस समय घटित होने वाली घटनाओं को ब्रिटिश शासन को समाप्त करने का प्रयास मानता है तो निश्चय ही उस समय का वातावरण व जनभावना ब्रिटिश विरोधी रही होगी।

राजस्थान में विप्लव का सूत्रपात नसीराबाद में हुआ था। यहां पर विप्लव का विस्फोट होने के बाद यहां के ब्रिटिश अधिकारी जब भाग कर ब्यावर की ओर गये तब रास्ते में ग्रामवासी शस्त्र लिये उन पर आक्रमण करने को तयार खड़े थे। कप्तान प्रिचार्ड ने स्वीकार किया है कि यदि बम्बई लॉन्सर के सैनिक उनके साथ न होते तो उनका वहीं कत्ल कर दिया जाता[27]। इतना ही नहीं रास्ते में जितने भी गांव मिले, ग्रामवासियों का ऐसी ही तयारी में पाया गया। जब ये ब्रिटिश अधिकारी भूखे प्यासे अजमेर के कमिश्नर की कोठी के परिसर में पहुंचे तो कोठी के भारतीय नौकरों ने उन्हें बड़ी उपेक्षा की दृष्टि से देखा तथा किसी ने उनकी दयनीय स्थिति के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित नहीं की। अपनी भूख शान्त करने के लिये जब उन्होंने बाजार से ब्रेड मगवाई तो दुकानदार ने उन्हें ब्रेड देने से इन्कार कर दिया। ऐसी स्थिति पर टिप्पणी करते हुए कप्तान प्रिचार्ड ने लिखा है कि चौबीस घंटे पहले कोई भी भारतीय यूरोपियन के प्रति ऐसा व्यवहार करने का साहस नहीं कर सकता था, लेकिन इस समय यूरोपियनों के प्रति वह आदरभाव समाप्त हो चुका था[8]। नसीराबाद से विप्लवकारियों के चले जाने के बाद जब ये ब्रिटिश अधिकारी लौट कर न नसीराबाद आये तो इन अधिकारियों के घरेलू भार

तीय नौकरों ने उनके साथ बड़ा उपेक्षापूर्ण एवं अपमानजनक ढंग से व्यवहार किया[29]। यदि यह कहा जाय कि छावनी के सैनिकों का आक्रोश चर्बी वाले कारतूसों और आटे में मानव हड्डियों का चूरा मिलाने की बात से भड़क उठा था, लेकिन घरेलू भारतीय नौकरों का तो चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग करने के लिये नहीं कहा गया था और न आटे में मानव हड्डियों का चूरा मिलाने की बात से ही वे प्रभावित थे फिर उनका अंग्रेजों के प्रति ऐसा व्यवहार क्यों था ? स्पष्ट है कि उनमें भी 'फिरंगियों' से घोर घृणा थी जिन्होंने उनके धर्म और जाति को नष्ट करने का प्रयत्न किया था। जब ये ब्रिटिश अधिकारी, विप्लवकारियों द्वारा उनकी लूटी हुई सम्पत्ति को ढूंढने पास के एक गांव में गये तो गांव वालों ने उन पर पत्थर फेंके और एक ब्रिटिश अधिकारी ठेकवेल पर तो उसके स्वयं के नौकर ने लोहे की छड़ से प्रहार किया था जिससे वह बेहोश हो गया[30]। इन दृष्टान्तों से यह स्पष्ट हो जाता है कि विदेशी सत्ता के प्रति जन सामान्य में भी तीव्र आक्रोश था।

राजस्थान में विप्लव का सूत्रपात हो जाने के बाद मेवाड़ का पालीटिकल एजेन्ट उदयपुर के महाराणा से विचार विमर्श करने हेतु उदयपुर आया। मेरठ व दिल्ली में आरम्भ हुए विप्लव की सूचना उदयपुर पहुंच चुकी थी तथा नसीराबाद में हुए विप्लव की सूचना भी उदयपुर पहुंच चुकी थी। अतः यहां फिरंगियों के विरुद्ध सर्वत्र भावना फैली हुई थी। मेवाड़ का पोलीटिकल एजेन्ट कप्तान शावर्स जब उदयपुर शहर के मार्ग से गुजरता हुआ राजमहल की ओर जा रहा था तब रास्ते में जनता की भीड़ ने उसे कर्कश शब्दों से धिक्कारा[31]। कप्तान हाडक्सन विद्रोहियों को दबाने के लिये जिस मार्ग से भी गुजरा लोगों ने उसे गालियां दी[3]। इसके विपरीत विप्लवकारी जिस मार्ग से भी गुजरे, लोगों ने उनका हार्दिक स्वागत किया और उन्हें सहायता प्रदान की[33]। मध्य भारत का विद्रोही नेता तात्या टोपे जहां भी गया जनता ने उसका हार्दिक स्वागत किया तथा उसे रसद आदि प्रदान की[34]। यह जनता का विप्लवकारियों को प्रत्यक्ष समर्थन नहीं तो और क्या था ? वस्तुतः इस जन भावना के दबाव के कारण ही बीकानेर के महाराजा ने नाना साहब को सहायता दी थी[35]। यदि यह मान लिया जाय कि राजस्थान के जागीरदारों ने अपने निजी स्वार्थों से प्रेरित होकर ब्रिटिश सत्ता से टक्कर ली थी लेकिन उन जागीरदारों को उनके क्षेत्र के आस पास की जनता का जो सहयोग और समर्थन मिला[36] वह स्पष्टतः जनता की ब्रिटिश विरोधी भावना प्रदर्शित करता है। यदि उन जागीरदारों को जन समर्थन प्राप्त नहीं होता तो मुट्ठी भर जागीरदारों के लिये शक्तिशाली ब्रिटिश सेना से टक्कर लेना प्रायः असम्भव हो जाता। जोधपुर के

दस्तरी रेकार्ड मे यह स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि जब ए जी जी जाज लारेंस ने आउवा पर चढाई की तब पहली बार गाव वालो की तरफ से आक्रमण हुआ था[37]। मारवाड मे ऐसी परम्परा थी कि जब किसी बडे अधिकारी की मृत्यु होती थी तब राजकीय शोक मनाते हुए किले म नौबत बजाना भी बन्द रखा जाता था। लेकिन जब जोधपुर के पोलीटिकल एजेन्ट मॉक मसन की आउवा म हत्या कर दी गई तब राज्य मे जन भावना को देखते हुए महाराजा तख्तसिंह ने राजकीय शोक न मानते हुए नौबत बजाना भी बन्द नही किया[38]। जबकि विप्लवकारियो से सघर्ष करते हुए जब किलेदार अनाडसिंह मारा गया तब किले म नौबत बजाना बन्द रखा गया था[39]। यह जन भावना का दबाव नही तो और क्या था ? आउवा ठाकुर कुशालसिंह द्वारा ब्रिटिश सेनाओ से टक्कर लेने की घटना को तात्कालिक साहित्य म सर्वोच्च स्थान दिया गया जिसमे आउवा ठाकुर कुशालसिंह की प्रशसा इसलिये की गई, क्योकि उसने फिरगियो से युद्ध किया था। इस युद्ध को गोरो और कालो के बीच सघर्ष बताया गया[40]।

10 अगस्त 1857 की रात म जोधपुर के किले की गोपाल पोल के पास बारूद के भण्डार पर बिजली गिर जाने के परिणामस्वरूप भयकर विस्फोट से किले की दीवारो के पत्थर उड कर तीन तीन मील की दूरी पर जा गिरे। इस दुर्घटना से किले के आसपास का शहर नष्ट हो गया और लगभग 400 आदमी दबकर मर गये अथवा घायल हुए[41]। लोगो ने इस दुर्घटना को ईश्वरीय कोप बताया, जो महाराजा तख्तसिंह द्वारा विधर्मी अग्रेजो से सधि करने तथा उनके प्रति वफादारी प्रदर्शित करने के कारण हुआ था[42]। अग्रेज विरोधी भावना की यह चरम सीमा थी। महाराजा तख्तसिंह जनता की अग्रेज विरोधी भावना से भलीभाति परिचित था। इसीलिये विप्लव काल म उसने अग्रेजो की सहायता, जहा तक हो सका गुप्त रूप से की[43]। आउवा के सघर्ष मे कप्तान मेसन की हत्या कर उसके शव को वृक्ष की टहनी पर उलटा लटका दिया गया, किन्तु ऐसा अभद्र व्यवहार किलेदार अनाडसिंह के शव के साथ नही किया[44]। स्पष्ट है जन आक्रोश मात्र विधर्मी अग्रेजो के प्रति था। राजस्थान मे हुए 1857 ई के विप्लव का अध्ययन और विश्लेषण करने से स्पष्ट रूप मे ज्ञात होता है कि राजस्थान म यह विप्लव किसी सयोग का परिणाम नही था और न ही एरिनपुरा डीसा और देवली के विप्लवकारियो के आगमन के फलस्वरूप हुआ था बल्कि यह तो ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध सर्वव्यापी रोष का परिणाम था। यही कारण है कि आउवा से जोधपुर लीजियन के सैनिको व ठाकुर कुशालसिंह के चले जाने के बाद भी आउवा के

लोग 1861 ई तक अंग्रेजो से संघर्ष करते रहे[45]। वस्तुतः विप्लवकारी राजस्थानी समाज मे सामन्ती ढांचे को बनाये रखने तथा हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये संघर्ष कर रहे थे[46]। नसीराबाद, नीमच और एरिनपुरा का विप्लव निःसंदेह भारतव्यापी विप्लव का एक भाग था लेकिन कोटा और आउवा मे विप्लव स्थानीय परिस्थितियो के कारण हुआ था और उसमे ब्रिटिश विरोधी भावना निर्विवाद रूप से विद्यमान थी। टोंक और कोटा की तो साधारण जनता ने विप्लवकारियो से मिलकर संघर्ष मे भाग लिया था। इसीलिये विप्लव काल मे मरने वालो मे जनसाधारण की संख्या अधिक थी।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि संघर्ष मे भाग लेने वालो का दृष्टिकोण क्या था और जन भावना क्या थी? इस बात मे कोई सन्देह नही है कि लोग अंग्रेजो को फिरंगी कहते थे और अपने धर्म के अस्तित्व को बनाये रखने के लिये उनसे मुक्ति चाहते थे। श्री खड्गावत इस बात का स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं कि कुछ स्थानो पर स्थानीय जनता ने इसमे भाग लिया था। यदि कुछ स्थानो पर स्थानीय जनता ने संघर्ष मे भाग लिया था तो अन्य स्थानो पर विप्लवकारियो को जनता का नैतिक समर्थन प्राप्त था। तात्कालिक कवियो ने उन लोगो की प्रशंसा मे गीतो की रचना की जिन्होने अंग्रेजो के विरुद्ध संघर्ष मे भाग लिया या अथवा विप्लवकारियो को शरण व सहायता दी थी[47]। जिन्होने अंग्रेजो का साथ दिया उन्हे कायर और गुलाम कहा गया। इन भावनाओ को राष्ट्रीय न कहा जाय तो और क्या कहा जाय? कुछ विद्वानो का कहना है कि इस विप्लव को राष्ट्रीय स्वरूप इसलिये प्रदान नही किया जा सकता, क्योकि प्रथम तो अधिकांश देशी नरेशो ने विप्लव को दबाने मे अंग्रेजो का साथ दिया था और दूसरा यह कि विप्लव काल मे ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जबकि लोगो ने अपना स्वयं का जीवन खतरे मे डालकर अंग्रेज स्त्रियो पुरुषो व बच्चो की रक्षा की थी[48]। लेकिन प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि क्या हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन के काल मे देशी रियासतो व शासको ने ब्रिटिश सत्ता के प्रति अपनी वफादारी प्रदर्शित नहीं की थी? क्या उस समय अंग्रेज भक्त भारतीय कोई नही था? ये सभी बातें तो हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास मे भी मिलती हैं। किन्तु मूल बात यह है कि विप्लवकारियो का दृष्टिकोण क्या था और जन-भावना क्या थी। निःसंदेह विप्लवकारियो का दृष्टिकोण और जन भावना ब्रिटिश विरोधी थी। अतः 1857 ई का विप्लव विदेशी शासन से मुक्त होने का प्रथम प्रयास था, जिसे स्वयं कप्तान प्रिचार्ड ने स्पष्ट शब्दो मे स्वीकार किया है[49]। इससे बढ़कर स्वतन्त्रता संघर्ष के लिये और लक्ष्य हो भी क्या सकता है। यद्यपि आज के

माप दण्ड के ग्रनुसार तो उस समय राष्ट्रीयता का उद्भव नहीं हुआ था, लेकिन तात्कालीन परिस्थितियो मे विदेशी सत्ता से मुक्ति होने की भावना को निश्चित रूप से राष्ट्रीय ही कहा जा सकता है। इतिहास की घटनाओं का विश्लेषण एव मूल्याकन तात्कालिक परिस्थितियो के परिप्रेक्ष्य मे ही किया जाना चाहिये न कि वर्तमान परिस्थितियो के परिप्रेक्ष्य मे। तात्कालीन परिस्थितियो के परिप्रेक्ष्य मे 1857 ई के विप्लव को यदि राजस्थान का प्रथम स्वाधीनता सग्राम कहा जाय तो कोई ग्रनुचित नही होगा।

यद्यपि 1857 का विप्लव पूर्णत ग्रसफल रहा किन्तु इसके परिणाम बडे व्यापक ग्रौर स्थायी सिद्ध हुए। विप्लव की बाढ के प्रबल प्रवाह को रोकने मे राजस्थानी नरेशो ने बाध का काम किया ग्रौर इस तूफान का सामना करते समय राजस्थानी नरेश ब्रिटिश सत्ता के लिये बलवधक प्रमाणित हुए। ग्रत विप्लव काल मे दी गई उनकी सेवाग्रो ग्रौर सहायता के लिये उन्हें पुरस्कृत किया गया[50]। राजस्थान के सभी राज्यो मे विप्लव की समाप्ति पर ग्रग्रेजो की विजय के उपलक्ष मे उत्सव मनाये गये तथा राजकीय भवनो मे रोशनी की गई[51]।

विप्लव की समाप्ति के बाद भारत मे इस्ट इडिया कम्पनी का शासन समाप्त कर दिया गया ग्रौर ब्रिटिश ताज के नाम पर ब्रिटिश सरकार ने भारत का प्रत्यक्ष शासन भार ग्रहण कर लिया। इस परिवतन की घोषणा 1 नवम्बर 1858 का लाड कनिंग ने इलाहाबाद मे ग्रायोजित एक ग्राम दरबार मे की। यह घोषणा ब्रिटिश साम्राज्ञी महारानी विक्टोरिया के नाम से की गई। इस घोषणा मे यह भी कहा गया कि इस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ देशी शासको से हुई सन्धियो का पालन करते हुए उनके ग्रधिकारो ग्रौर प्रतिष्ठा की रक्षा की जायगी तथा भविष्य मे किसी देशी रियासत को जब्त कर ब्रिटिश साम्राज्य मे नहीं मिलाया जायेगा[52]। यद्यपि इस परिवतन से देशी राज्यो के साथ ग्रग्रेजा के सम्बध मे तत्काल ही काई परिवतन तो नही ग्राया, लेकिन राजनतिक व्यवहार ग्रादि पर परोक्ष रूप से इसका बहुत बडा प्रभाव पडा। देशी शासको की स्वामीभक्ति एव ग्रादर की भावना से लाभ उठाकर ग्रग्रेजो ने धीरे धीरे बडी चतुराई से इन राज्यो को पूर्णतया ब्रिटिश ग्राधिपत्य में ले लिया ग्रौर ग्रब देशी नरेशो के शासन को चिरस्थायी बनाये रखने का निश्चय किया गया। इस नीति के ग्रन्तगत 1862 ई मे राजस्थान के सभी शासको को सनदें दी गई, जिनके द्वारा उन नरेशो तथा उनके उत्तराधिकारियो के नि सतान होने पर गोद लेने का ग्रधिकार मान लिया गया[53]। राजस्थानी नरेशा को इससे

बडी प्रसन्नता हुई, क्योकि अब उनके राज्यो के जब्त होने की कोई आशका नही रही । लेकिन, समवत उन्होने इन सनदो को ध्यानपूर्वक नही देखा होगा या फिर देखकर भी उपेक्षा की होगी कि उनके राज्या को चिरस्थायी रखने की एक मात्र शत यह थी कि उन राज्यो के राजघराने ब्रिटिश ताज के राजभक्त रहे तथा भारत मे अग्रेजी राज्य के प्रति अपनी सन्धि, समझौते आदि के अनुसार अपने कत्तव्य का पालन करे । ब्रिटिश सरकार की इस परिवर्तित नीति के परिणामस्वरूप देशी राज्य तो अक्षुण्ण बने रहे, किन्तु वे भीतर से इतने कमजोर हो गये कि वहा के शासको के पास वस्तुत कोई शक्ति रह ही नही गई थी । सर्वोच्च सत्ता के एजेंट राज्य के आन्तरिक मामला मे हस्तक्षेप कर वास्तविक प्रशासक बन बैठे ।

अब विभिन्न राज्या मे शासन सुधार के नाम पर आवश्यकतानुसार हस्तक्षेप करने की नीति अपनाई गई । यद्यपि विप्लव के पूर्व भी अग्रेजो ने देशी राज्यो के आन्तरिक मामलों मे हस्तक्षेप किया था लेकिन अब तो सुशासन के बहाने अनेक युक्तियो द्वारा राज्यो के तथा शासको के निजी मामलों में भी उन्होने अपना हस्तक्षेप बढा दिया । ऐसे किसी अवसर पर स्थानीय अग्रेज अधिकारी की इच्छा या परामश ही सवमान्य होती थी । धीरे धीरे शासको के साथ उनके राजनतिक व्यवहार अनुकरणीय उदाहरण के रूप मे सवमान्य हो गये, यद्यपि अपने इस प्रकार के राजनतिक व्यवहार से वे देशी शासका के साथ हुई सन्धियो तथा शासकों के अधिकारो पर आघात पहुँचाते रहे । राज्य प्रबन्ध के मामलो मे अब अग्रेजो ने सामन्ता तथा मुत्सद्दियो पर विश्वास करना बन्द कर दिया और उसके स्थान पर ब्रिटिश प्रान्तो के अपने विश्वस्त व स्वामीभक्त लोगो को राज्य के महत्वपूर्ण पदा पर नियुक्त करने की नीति अपनाई गई[54] । ब्रिटिश प्रान्तो से आने वाले इन अधिकारियो को अपने वेतन के अलावा राज्य की किसी बात से लगाव नहीं था, अत वे ब्रिटिश अधिकारियो के प्रति निष्ठावान रहते हुए उनके इशारो से शासन काय करना आरम्भ किया । इतना ही नही, ब्रिटिश प्रान्तो से आने वाले इन अधिकारियों ने अपने सगे सम्बधियो और मित्रो को भी राजकीय सेवाओ म भर्ती करवाया । फलत 19 वी शताब्दी के अन्त तक लगभग सभी राज्यो म इस नये नौकरशाही वग की प्रधानता हो गयी[55] । ऐसे वग की स्वामी भक्ति एव निष्ठा राज्य व शासन के प्रति न होकर ब्रिटिश सत्ता के प्रति थी । लेकिन इस व्यवस्था से शासन सुधारने की बजाय कुशासन का विकास होने लगा क्योकि ब्रिटिश सत्ता द्वारा नियुक्त अधिकारी अपने सेवा-काल म अधिक से अधिक धन अर्जित कर लेना चाहते थे । कोटा म अग्रेजो द्वारा नियुक्त मुख्य प्रशासनाधिकारी नवाब फजअलीखां ने बैंकरो से मिलकर धन का गबन

किया[56]। जयपुर में तो स्वय ब्रिटिश एजेन्ट रिचार्ड रिश्वत लेने के मामले में काफी बदनाम हो चुका था[57]। बीकानेर मे अग्रेजो द्वारा नियुक्त मुख्य मत्री प मनफूल के विरुद्ध भी ए जी जी को काफी शिकायतें मिली थी[58]। लेकिन ऐसे भ्रष्ट अधिकारियों के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार ने कोई कार्यवाही नहीं की, जिससे उन लोगो को मनमानी करने तथा अपने निजी स्वार्थों को पूरा करने का अवसर मिल गया। ऐसी स्थिति में राज्य मे सुशासन की आशा करना ही व्यर्थ था।

ब्रिटिश सरकार ने राजस्थानी नरेशो म स्वामी भक्ति व निष्ठा की भावना विकसित करने के लिये 1861 ई मे ब्रिटेन की साम्राज्ञी के नेतृत्व मे 'स्टार आफ इण्डिया' आर्डर की स्थापना की गई तथा विभिन्न खिताब एव उनके उपयुक्त पदक विभिन्न नरेशा को दिये गये। शासको के सम्मानार्थ दी जाने वाली तोपा की सलामी की सख्या उनके पद मर्यादा की सूचक बन गई[59]। धीरे धीरे तोपो की सलामी की सख्या शासको के प्रति ब्रिटिश सरकार की प्रसन्नता-अप्रसन्नता की सूचना बन गई। ब्रिटिश सरकार की अप्रसन्नता की स्थिति मे तोपों की सलामी की सख्या में कमी करदी जाती थी और प्रसन्नता की स्थिति मे तोपो की सलामी की सख्या म वृद्धि करदी जाती थी[60]। विभिन्न राज्या तथा राजघरानो का सापेक्षिक महत्व निश्चित कर 1867 ई म उनकी बठक का क्रम निर्धारित किया गया, यद्यपि वायसराय के दरबार मे बैठक के क्रम को लेकर राजस्थानी नरेशो मे काफी विवाद चलता रहा[61]।

राजस्थानी नरेशो मे स्वामी भक्ति एव निष्ठा की भावना का विकास करने के साथ साथ राजस्थानी राज्यों मे पाश्चात्यकरण की प्रक्रिया भी तेज हो गयी। सामान्य एव न्याय प्रशासन मे नये अग्रेजी नियमो का समावेश किया गया। विप्लव काल मे ब्रिटिश सत्ता का खुले रूप से विरोध करने वाला तत्व सामन्त वग था। अत विप्लव की समाप्ति के बाद अग्रेजो की नीति इस सामन्त वग को सवथा अस्तित्वहीन करने की रही। अग्रेजों ने शासको एव जागीर क्षेत्र की जनता की दृष्टि में सामन्तो की प्रतिष्ठा एवं पद-मर्यादा को कम करने का प्रयास किया गया। ब्रिटिश सरकार ने राज्य की परम्परागत शासन व्यवस्था को जिस पर सामन्तो का प्रभाव था, समाप्त कर दिया तथा सामन्ता को प्रशासन से सवथा अलग कर दिया[62]। जैसाकि पूव अध्यायो मे बताया जा चुका है कि अग्रेजा ने सामन्तो द्वारा अपने शासकों को दी जाने वाली सैनिक सेवा के बदले नकद रुपये देने को विवश किया था। विप्लव के बाद अग्रेजो की इस नीति मे अधिक कठोरता आ गई तथा 19 वीं शताब्दी के

अत तक मेवाड को छोडकर लगभग सभी राज्यो के साम तो से नकद रकम वसूल की जाने लगी[63]। अत अब सामन्तो के लिये नकद रुपये देने के साथ साथ बडे बडे सैनिक दस्ते रखना कठिन हो गया और विवश होकर उन्हे अपने सैनिक दस्ते भग करने पडे। सामन्तो पर अपना प्रभावी नियत्रण स्थापित करने के लिये पोलीटिकल एजेन्ट ने इस बात का भी प्रयत्न किया कि सामन्तो के वशानुगत उत्तराधिकारी न होने पर वहा अपने कृपापात्र व्यक्तियो को सामन्तो की गद्दी पर बठा दिया जाय[64] ताकि जागीर क्षेत्र पर ब्रिटिश सरकार का प्रभावी नियत्रण स्थापित हो सके। जब उन्हे इस काय मे सफलता नहीं मिली तब उन्होन सामन्तों के अधिकारों एव विशेषाधिकारो पर प्रहार कर उन्हे प्रभावहीन बनाने का प्रयत्न किया। अग्रेजो ने जागीर क्षेत्र के प्रशासन मे भी हस्तक्षेप कर सामन्तो के न्यायिक अधिकारो को सीमित करने का प्रयास किया। उदाहरणाथ, मेवाड के साम तो के न्यायिक अधिकार बहुत बढे चढे थे, लेकिन 1878 ई मे साम तो के साथ एक कलमबन्दी करके उनके न्यायिक अधिकार सीमित कर दिये[65]। अनेक सामन्तो का अपना स्वय का सिक्का ढालने का अधिकार था, लेकिन 1870 ई तक उनकी टकसालें बन्द करदी गई[66]। इसी प्रकार जब सामन्त वायसराय को 'नजर करते थे तब वायसराय प्रथम श्रेणी के सामन्तो मे खडा होकर 'नजर' ग्रहण करता था और सामन्त इसे अपनी प्रतिष्ठा की बात मानते थे लेकिन 1870 ई के बाद वायसराय ने सभी साम तो से बैठे-बैठे 'नजर' ग्रहण करना आरम्भ कर दिया। यद्यपि सामन्तो ने इसका विरोध किया किन्तु वायसराय ने इस विरोध की कोई परवाह नही की[67]। राजस्थान मे अनेक राज्यो के साम त राज्य के न्यायालय मे मुकदमा दज कराते तो वे स्टाम्प शुल्क तथा न्यायालय शुल्क देने से मुक्त थे, लेकिन नये नियमो के अन्तगत सामन्तो को उपलब्ध ये सुविधाए भी समाप्त करदी[68]। जिस ठिकाने मे नमक बनाया जाता था, सामन्तो को वहा से नमक पर महसूल प्राप्त होता था लेकिन ब्रिटिश सरकार ने नमक उत्पादक राज्या से सन्धि करके नमक उत्पादन का एकाधिकार अपने हाथ मे ले लिया और जिन सामन्तो को नमक का महसूल प्राप्त होता था, उन्हें मुआवजा दे दिया[69]। इस प्रकार साम तो के विशेषाधिकार समाप्त हो जाने से तथा न्यायालय के समक्ष सामान्य जनता की भाति उनसे न्यायालय शुल्क वसूल करने से सामन्तो का सावजनिक प्रभाव कम हो गया।

विप्लव काल मे अग्रेजो को अपनी सेनाए एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने मे बडी असुविधा हुई थी क्योंकि अजमेर नसीराबाद और नीमच जसी ब्रिटिश छावनियो को जोडने वाली सडकें नहीं थीं। अत विप्लव के बाद

1865 ई मे आगरा से भरतपुर, जयपुर, किशनगढ़ जोधपुर और सिरोही होते हुए डीसा तक जाने वाली सडक का निर्माण काय आरम्भ हुआ तथा नसीराबाद छावनी से चित्तौड होकर नीमच जाने वाली सडक बनाने का भी काय आरम्भ हुआ। 1875–76 ई मे इन सडको का निर्माण काय पूरा हुआ। इसी अवधि मे नसीराबाद से देवली तक की सडक का भी निर्माण काय पूरा हुआ[70]। राजस्थान मे रेल लाइनें बिछाने का काय भी हाथ में लिया गया और 1881 ई तक राजस्थान मे लगभग 652 मील लम्बे रेल माग का निर्माण हो गया[71]। इन रेल मार्गों मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण दिल्ली अहमदाबाद माग था, जिसकी एक शाखा अजमेर से नीमच की ओर जाती थी। 19 वी सदी के अन्त तक तो राजस्थान मे 1350 मील लम्बा रेल माग तयार हो गया[72]। इसमे काई सदेह नही कि रेल मार्गों के बन जाने क कई लाभप्रद परिणाम भी निकले, किन्तु नये रेल मार्गों के खुल जाने से अनेक जागीरदारो का अपने व्यापारियो पर रहा सहा प्रभाव भी समाप्त हो गया। इन रेल मार्गों के निर्माण के लिये ली गई भूमि के फलस्वरूप हजारो किसानो को अपनी कृषि भूमि से वचित होना पडा और हजारो किसानो की कृषि भूमि पृथक पृथक टुकडो मे विभक्त हो गयी जिसके फलस्वरूप कुछ राज्या मे किसानो व जागीरदारो ने रेल मार्गों के निर्माण का विरोध किया[73]। यातायात के इन नये साधनो के बन जाने से बाजारा म विदेशी माल बहुतायत से आने लगा जिससे स्थानीय उद्योग धधे एक एक करके नष्ट होने लगे और जनता मे बेकारी और गरीबी बढने लगी। पुराने व्यापारिक मार्गों पर स्थित सारी समृद्ध बस्तियो का व्यापारिक महत्व कम हो गया और धीरे धीरे ये समृद्ध बस्तिया उजडने लगी। इस प्रकार प्रान्त मे आर्थिक जीवन का सारा स तुलन ही बिगड गया[74]।

विप्लव के बाद राजस्थान के परम्परागत सामाजिक ढाचे मे परिवतन आया। विप्लव के बाद आधुनिक शिक्षा के प्रसार नये मध्यम वग का अभ्युदय राज्यो की प्रशासनिक सेवाओ मे नियुक्ति सम्बधी नई नीति और सभी राज्या मे अग्रेजी नियमो की कार्यान्विति से राजपूतो और ब्राह्मणो का महत्व कम हो गया। अग्रेजा ने आरम्भ से ही वश्यो का सहयोग एव निष्ठा प्राप्त करने का प्रयत्न किया। इसका मुख्य कारण अग्रेजो के अपने आर्थिक हित थे। अग्रेजो को अपना तयार माल बेचने तथा कच्चा माल प्राप्त करने के लिये थोक व्यापारियो तथा दलालो की आवश्यकता थी। इसलिये अग्रेजों ने वैश्य समुदाय को सरक्षण देने की नीति अपनाई थी[75]। विप्लव के बाद अग्रेजी नियमो के आधार पर धन सम्पत्ति लेन देन, ऋण सम्बधी आदि नये

नियमो को राज्य मे लागू करवा कर अंग्रेजो ने वश्य समुदाय की बडी मन्द की। वस्तुत विप्लव के बाद जब राजस्थानी राज्यो पर ब्रिटिश नियत्रण अधिक प्रभावी हो गया तब इसका सर्वाधिक लाभ वश्य समाज को प्राप्त हुआ। इससे उन्होने राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक को ओर भी अधिक बढाने तथा समाज मे अग्रणी स्थान प्राप्त करने का प्रयत्न किया।

उपयु क्त विवेचन से स्पष्ट है कि विप्लव के बाद अंग्रेजा ने अपनी नवीन नीति द्वारा राजस्थान के भावी नरेशो, जागीरदारो और जन-समुदाय को विद्याबुद्धि तक, शैली, रहन-सहन तथा आचार विचार मे सवथा अंग्रेज बनाने का प्रयास किया। अंग्रेजी राज्य मे अटल विश्वास, ब्रिटिश ताज के प्रति अगाध भक्ति तथा सारी पाश्चात्य बाता म असीम श्रद्धा राजस्थानी समाज म भरी जाने लगी। उन्हे अब मानसिक गुलामी के अदृश्य किन्तु सुदृढ पाशा मे बांधा जाने लगा। विप्लव के बाद राजस्थान के नभ मण्डल मे ब्रिटिश साम्राज्य रूपी सूय पूरे तेज के साथ ददीप्यमान होने लगा। उसकी सत्ता रूपी प्रखर किरणे सहन करने की शक्ति किसी मे नही थी। सवत्र अनात्म विश्वास की गहरी बफ पडी हुई थी। सब साधारण जनता के साथ ही राजस्थानी नरेशो ने भी अंग्रेजा का सफलतापूवक विरोध करने की आशा ही छोड दी थी। विजेताओ का प्रभुत्व तथा उनकी सभ्यता की महत्ता को स्वीकार कर वे उन्ही का अन्धानुकरण करन लगे। अंग्रेजी साम्राज्य की सेवा कर उनसे प्रशसा तथा आदर प्राप्त करने मे ही राजस्थानी नरेश, जागीरदार और जन-सामान्य अब गौरव का अनुभव करने लगे। राजस्थान म पराध नता और राजनतिक विवशता का घना कुहरा सवत्र छाया हुआ था।

1857 का विप्लव, यद्यपि असफल हो गया था, लेकिन अंग्रेजो के आधिपत्य का अन्त कर देश को स्वाधीन बनान की भावना पूर्णतया लुप्त नहीं हो पाई। वस्तुत यह विप्लव भारतीय इतिहास की प्रेरणादायक घटना है, जिसने भावी राष्ट्रीय आन्दोलन का माग प्रशस्त किया। निर्भीक धम प्रचारको एव उग्र राष्ट्रवादी विचार वाले भारतीय नेताओ ने अंग्रेजो के आधिपत्य से पूर्ण स्वाधीनता प्राप्ति की भावना की उस मद चिनगारी को बुझने नहीं दिया। स्वामी दयानन्द के उपदेशा ने राजस्थान के कई नवयुवका के हृदय म जातीय आत्माभिमान पुन जाग्रत कर दिया था और व अपनी शक्ति म आत्म विश्वास का अनुभव करने लगे। ऐसे ही नवयुवका ने 1857 की बुझी हुई मशाल को पुन प्रज्ज्वलित किया, जिसका अतिम परिणाम देश की स्वाधीनता के रूप मे प्रकट हुआ।

सदर्भ टिप्पणी

1 एस एन सेन एटीन फिफ्टी सेवन, पृ 108–110

2 सी जे ग्रिफ्थस सीज आफ देहली, पृ 200–245

3 (i) एजेन्सी रेकार्ड, लेटर बुक न 13, पृ 79
(ii) सी एल शावर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ 147
(iii) जी डब्ल्यू फारेस्ट हिस्ट्री आफ द इण्डियन म्यूटिनी, भाग 3, पृ 622

4 आई टी प्रिचार्ड द म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 277

5 खडगावत राजस्थानुस रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 89 90

6 डॉ ताराचद हिस्ट्री आफ फ्रीडम मूवमेन्ट भाग 2, पृ 43 45 और 107

7 मेलीसन द इण्डियन म्यूटिनी आफ 1857, पृ 265

8 (i) मारवाड प्रेसी, पृ 168
(ii) मेवाड प्रेसी, पृ 157

9 मेहता सग्रामसिंह कलेक्शन हवाला न 2

10 खड्गावत राजस्थानुस रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 88

11 आई टी प्रिचार्ड द म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 38

12 आई टी प्रिचार्ड द म्यूटिनीज इन राजपूताना पृ 118 और 277

13 (i) फो पा कन्सलटेशन (सीक्रेट) 18 दिसम्बर 1857 न 214–15
(ii) एजेन्सी रेकार्ड, मेवाड 1857 न 88

14 (i) एजेन्सी रेकार्ड, लेटर बुक न 13, पृ 77–78
(ii) शॉवर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 138

15 (i) फो पो कन्सलटेशन, 27 दिसम्बर, 1857 न 249–51
(ii) खडगावत राजस्थानुस रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 152

16 (i) फो पो कन्सलटेशन (सीक्रेट), 18 दिसम्बर, 1857 न 214 15
(ii) एजेन्सी रेकार्ड लेटर बुक न 13, पृ 67 68
(iii) खडगावत ' राजस्थानुस रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 155–160

17 (i) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 1991–92
(ii) परम्परा 'गोरा हट जा' वर्ष 1, अंक 2, पृ 72
18 एजेंसी रेकार्ड, म्यूटिनी 1863 न 20, जान लारेन्स का पत्र भारत सचिव के नाम, दिनांक 29 जून 1863
19 एजेंसी रेकार्ड, मेवाड़ 1857 न 88, महाराणा स्वरूपसिंह का कार्यवाहक ए जी जी कर्नल ईडन के नाम पत्र, दिनांक 24 सितम्बर 1859
20 (i) एजेंसी रेकार्ड मेवाड़ 1857 न 81
(ii) खड़गावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 157, पत्र IV
21 (i) परम्परा 'गोरा हट जा' वर्ष 1, अंक 2, पृ 92 93
(ii) खड्गावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 111–112
22 परम्परा 'गोरा हट जा' वर्ष 1, अंक 2, पृ 54
23 राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस प्रोसीडिंग्ज वॉल्यूम VII, पृ 116
24 सूर्यमल मिश्रण वीर सतसई (सहल द्वारा सम्पादित) पृ 76
25 खड़गावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 70 71
'रजपूता म रजपूती कठै कठै लाधे सो देख्या सो तथा सुण्या सो मन वे आनद आजावा को व्यसन छै।"
26 सूर्यमल मिश्रण वीर सतसई (सहल द्वारा सम्पादित), पृ 76
27 आई टी प्रिचार्ड द म्यूटिनीज इन राजपूताना पृ 72 और 104
28 वही, पृ 76 77
29 वही, पृ 90
30 वही, पृ 95 और 97
31 सी एल शावर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी पृ 10 11
32 खड़गावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल ऑफ 1857 पृ 88
33 (i) एजेंसी रेकार्ड फाइल न 1–म्यूटिनी 1857 खण्ड IV
(ii) खड़गावत राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, पृ 80–81

34 एजेंसी रेकार्ड, फाइल न 32–म्यूटिनी 1858, खण्ड I
35 एजेंसी रेकार्ड, फाइल न 20–म्यूटिनी–1863
36 खड्गावत राजस्थान्स रोल इन द् स्ट्रगल आफ 1857, पृ 37
37 (i) एजेंसी रेकार्ड, फाइल न 1 म्यूटिनी 1857, खण्ड III
(ii) मुंशी ज्वाला सहाय लायल राजपूताना, पृ 281 82
38 हकीकत बही न 18 पृ 372
39 हकीकत बही न 18, पृ 387
40 (i) परम्परा 'गोरा हट जा' वर्ष 1 अंक 2 पृ 64
(ii) खड्गावत राजस्थान्स रोल इन द् स्ट्रगल आफ 1857, पृ 53–55
41 बी एन रेउ मारवाड का इतिहास, भाग 2 पृ 449
42 मुंशी ज्वाला सहाय लॉयल राजपूताना पृ 278 279
43 हकीकत बही न 18, पृ 372 387
44 (i) शावर्स ए मिसिंग चेप्टर आफ द् इण्डियन म्यूटिनी, पृ 108
(ii) मुंशी ज्वाला सहाय लायल राजपूताना पृ 285
45 हकीकत बही न 21, पृ 401
46 खड्गावत राजस्थान्स रोल इन द् स्ट्रगल आफ 1857, पृ 90
47 परम्परा 'गोरा हट जा' अंक 1, वर्ष 2, पृ 72
48 एस एन सेन एटीन फिफ्टी सेवन, पृ 411
49 आई टी प्रिचार्ड द् म्यूटिनीज इन राजपूताना, पृ 99–101
50 कन्सलटेशन पोलीटिकल 'ए अप्रेल 1860 न 602–605 व 607–652
51 फो पो कन्सलटेशन, 31 दिसम्बर 1858 न 3143 45
52 (i) मेलीसन हिस्ट्री आफ इण्डियन म्यूटिनी, भाग 5 पृ 275-76
(ii) श्यामलदास वीर विनोद, पृ 1979 88
53 सी यू एचिसन ट्रीटीज एन्गेजमेंट्स एण्ड सनद्स, भाग 3 पृ 35 36
54 ए के मजूमदार व डी के घोष ब्रिटिश पेरामाउन्ट्सी एण्ड इण्डियन रिनशा पृ 965

55 डॉ कालूराम शर्मा उन्नीसवी सदी के राजस्थान का सामाजिक व आर्थिक जीवन, पृ 47–48

56 फो पोलीटिकल 'ए' जनवरी 1878 न 1–20

57 (i) फो पो कन्सलटेशन, 9 जनवरी 1856 नं 154
(ii) फो पो कन्सलटेशन, 19 अगस्त 1856 न 156

58 (i) फो पोलीटिकल 'ए' फरवरी 1871 न 32–37
(ii) फो पोलीटिकल 'ए' मार्च 1872 न 405–431

59 (i) फो पोलीटिकल, मार्च 1865 न 46–47
(ii) फो पोलीटिकल ए', मार्च 1876 न 183–215

60 (i) फो पोलीटिकल, माच 1865 न 46–47
(ii) रेउ मारवाड का इतिहास भाग 2, पृ 459 और 468
(iii) फो पोलीटिकल, जनवरी 1870 न 75–76
(iv) फो पोलीटिकल, फरवरी 1896 न 23–48

61 रेउ मारवाड का इतिहास, भाग 2 पृ 459

62 (i) एजेंसी रेकाड, मेवाड नं 132, भारत सरकार के सचिव का ए जी जी के नाम पत्र, दिनांक 14 अगस्त, 1863
(ii) एजेंसी रेकार्ड, लेटर बुक नं 2 पृ 96

63 मेवाड मे महाराणा भूपालसिंह के समय सामतो की चाकरी का रोकड रकम की अदायगी म परिवर्तित किया गया था।

64 (i) उदयपुर (जागीर) रेजीडेन्सी फाइल न 6 सन् 1862, प्रलेख सख्या 13
(ii) उदयपुर (जागीर) रेजीडेन्सी फाइल न 3 सन् 1857

65 मेवाड एजेन्सी रिपोर्ट (1878–79), पेरा 16

66 (i) टॉड एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज आफ राजस्थान, प्रथम भाग पृ 169 पाद टिप्पणी
(ii) मागीलाल बैंव कृत राजपूताने के सिक्के पृ 22–25

67 एजेन्सी रेकाड, दरबार 261, पृ 11–14

68 (i) एजेन्सी रेकाड, 1858 की फाइल न 8, भाग 1, पृ 81-117
(ii) बीकानेर रेकाड रेजीडेन्सी फाइल न 4 ए

(iii) डॉ कालूराम शर्मा उन्नीसवी सदी राजस्थान का सामाजिक व आर्थिक जीवन, पृ 101–102

69 सी यू एचिसन ट्रीटीज, एंगेजमेंट्स एण्ड सनद्स, भाग 3 मे विभिन्न राज्यो से हुई नमक सम्बधी सन्धिया।

70 (i) फो पो कन्सलटेशन, 27 फरवरी 1857 न 166 68

(ii) इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, भाग 21, पृ 138

71 इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया भाग 21, पृ 133

72 वही

73 एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोट, राजपूताना स्टेट्स (1880–81), मेवाड एजेन्सी पृ 47

74 डॉ कालूराम शर्मा उन्नीसवीं सदी राजस्थान का सामाजिक व आर्थिक जीवन, पृ 203

75 (i) फो पो कन्सलटेशन, 11 माच 1831 न 48

(ii) फा पो कन्सलटेशन 3 माच 1849 न 15–17

———

सन्दर्भिका

(क) मूल अभिलेखीय स्रोत

(1) फॉरेन एण्ड पोलीटिकल कन्सलटेशन्स एण्ड प्रोसीडिंग्ज
(2) फॉरेन एण्ड पोलीटिकल सीक्रेट कन्सलटेशन्स एण्ड प्रोसीडिंग्ज
(3) डिस्पेच फ्रॉम एण्ड टू कोर्ट ग्राफ डायरेक्टर्स
(4) डिस्पेच फ्राम एण्ड टू सेक्रेट्री ऑफ स्टेट लंदन
(5) गवर्नर जनरल डिस्पेच टू सीक्रेट कमेटी लंदन
(6) राजपूताना एजेन्सी रेकार्ड्स की पत्रावलियां
(7) रिपोर्ट ग्राफ द इंटेलीजेंस ब्रांच डिवीजन, आर्मी हेड क्वाटर
(8) पार्लियामेन्ट्री पेपर्स 1860, म्यूटिनी कोरेसपोन्डेन्स
(9) मेवाड़ प्रेसी
(10) मारवाड़ प्रेसी
(11) नेशनल रजिस्टर ग्राफ प्राइवेट रेकार्ड्स, भाग 1 डिस्क्रिप्टिव लिस्ट ऑफ डोक्यूमेंटस इन द कापटद्वारा कलेक्शन, जयपुर

(ख) राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर

(1) बख्शीखाना, उदयपुर की बहिया
(2) मेहता संग्रामसिंह कलेक्शन
(3) श्यामलदास कलेक्शन्स
(4) उदयपुर (जागीर) रेजीडेन्सी की पत्रावलियां
(5) उदयपुर रेकार्डस फौजदारी अपराध बही, सन् 1870
(6) कापटद्वारा रेकार्ड्स लिस्ट 1 से 3
(7) कोटा रेकार्ड्स भण्डार न 3 व 2/2
(8) बीकानेर रेकार्ड्स, रेजीडेन्सी फाइल न 4 ए व 4 बी
(9) जोधपुर रेकार्ड्स-हकीकत बही न 8, 9, 10, 12, 13, 18 और 36

(10) जोधपुर रेकार्ड्स खरीता बही न 9 10,12 और 13
(11) जोधपुर रेकार्ड्स, हकीकत खाता बही न 4,6,9 12 और 13
(12) जोधपुर रेकार्ड्स, अर्जी बही न 6 और 7
(13) जोधपुर रेकार्ड्स खास रुक्का परवाना बही न 8
(14) जोधपुर रेकार्ड्स, सनद बही न 126, 127 128, 130 और 138
(15) जोधपुर रेकार्ड्स ख्यात री बही
(16) जोधपुर रेकार्ड्स, ढोलिया रा कोठार, फाइल न 59 और 63
(17) जोधपुर रेकार्ड्स, अर्जी फाइल न 1/5 वि स 1858
(18) जोधपुर रेकार्ड्स, पोटफोलियो फाइल्स
(19) जोधपुर रेकार्ड्स, ट्रिब्यूट डिपार्टमेन्ट्स फाइल न 4/6 खड 1

(ग) निजी सग्रह

(1) बेदला हाऊस, उदयपुर मे उपलब्ध बेदला रेकार्ड्स ।
(2) डॉ वी एम जावलिया उदयपुर के निजी सग्रहालय म उपलब्ध जागीर सेटलमेंट की पत्रावलियां
(3) डॉ के एस गुप्ता, उदयपुर के निजी सग्रहालय म उपलब्ध बनेडा रेकार्ड स ।
(4) प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर व उदयपुर मे उपलब्ध सामग्री ।
(5) शाहपुरा रेकार्ड्स, चौपासनी शोध सस्थान जोधपुर ।
(6) साहित्य सस्थान, उदयपुर मे उपलब्ध सामग्री ।
(7) सरस्वती भवन लाइब्रेरी, उदयपुर मे उपलब्ध सामग्री ।

(घ) समसामयिक एवं अन्य प्रकाशित ग्रन्थ

(1) एचीसन, सी यू ए कलेक्शन ऑफ ट्रीटीज, एगेजमेंटस एण्ड सनद्स, भाग 3
(2) बाकीदास की ख्यात
(3) कलेण्डर ऑफ पर्सियन कारेसपोन्डेंस
(4) डिस्पेच, मिनटस एण्ड कोरेसपोन्डेंस आफ द मार्क्विस आफ वेलेजली, भाग 1–5 (मार्टिन द्वारा सम्पादित)
(5) सिढायच, दयालदास दयालदास की ख्यात, भाग 2
(6) हिस्टोरीकल पेपर्स रिलेटिंग टू महादजी सिंधिया (सरदेसाई द्वारा सम्पादित)
(7) जोधपुर राज्य की ख्यात, भाग 4

(8) महेश्वर दरबारांचिन वातामी पत्रे भाग 2 (पारसनीस द्वारा सम्पादित)
(9) मारवाड़ की ख्यात, भाग 2 व 3
(10) पूना रेजीडेन्सी कोरेसपोन्डन्स भाग 1, 9 और 14
(11) पोलीटिकल डिपार्टमेंट रेकार्ड स, भाग 15 व 16
(12) मिश्रण, सूयमल वंश भास्कर
(13) मिश्रण सूयमल वीर सतसई (सुहल द्वारा सम्पादित)
(14) आसोपा, रामकरण मारवाड़ का मूल इतिहास
(15) आसोपा, रामकरण आसोप का इतिहास
(16) आसोपा रामकरण इतिहास निमाज
(17) भंडारी, सुखसम्पतिराय ओसवाल जाति का इतिहास
(18) गहलोत, जगदीशसिंह राजपूताना का इतिहास भाग 1–3
(19) गुप्ता डॉ (श्रीमती) निमला राजस्थान अव्यवस्था स व्यवस्था की ओर
(20) मुंशी, देवीप्रसाद स्वप्न राजस्थान
(21) मुंशी, ज्वाला सहाय लायल राजपूताना
(22) मारवाड म सन् सत्तावन की चिंगारी
(23) ओझा गौरीशंकर हीराचंद बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग 2
(24) ,, , डूंगरपुर राज्य का इतिहास
(25) , , जोधपुर राज्य का इतिहास भाग 2
(26) , , उदयपुर राज्य का इतिहास भाग 2
(27) रेऊ बी एन मारवाड का इतिहास, भाग 1–2
(28) शर्मा डा कालूराम उन्नीसवी सदी म राजस्थान का आर्थिक एव सामाजिक जीवन
(29) शर्मा और व्यास राजस्थान का इतिहास
(30) शर्मा डॉ जी एन राजस्थान का इतिहास
(31) शर्मा, हनुमान प्रसाद जयपुर राज्य का इतिहास
(32) सरकार जे एन मुगल साम्राज्य का पतन, भाग 1–4
(33) श्यामलदास वीर विनोद
(34) शर्मा डॉ एम एल कोटा राज्य का इतिहास, भाग 2
(35) सहीवाला अजु नसिंह का जीवन चरित्र, भाग 1
(36) व्यास, डॉ प्रकाश मेवाड़ राज्य का इतिहास
(37) व्यास, डॉ मांगीलाल वैव कृत राजपूतान के सिक्के
(38) बसु, बी डी राइज आफ द क्रिश्चियन पावर इन इण्डिया, भाग 4

(39) टॉड जे सी हिस्ट्री ऑफ मेवाड
(40) „ पोलीटिकल हिस्ट्री आफ द स्टेट आफ जयपुर
(41) बनर्जी ए सी राजपूत स्टडीज
(42) बनर्जी ए सी राजपूत स्टेट्स एण्ड ईस्ट इण्डिया कम्पनी
(43) चंद डॉ तारा हिस्ट्री आफ फ्रीडम मूवमेंट भाग 2
(44) फॉरेस्ट जी डब्ल्यू हिस्ट्री आफ द इण्डियन म्यूटिनी, भाग 3
(45) ग्रिफ्स सी जे सीज आफ देहली
(46) गुप्ता डा के एस मेवाड एण्ड द मराठा रिलेशन्स
(47) होम्स टी आर ए हिस्ट्री आफ द इण्डियन म्यूटिनी
(48) केई जान विलियम लाइफ एण्ड कोरेसपोन्डेंस आफ चार्ल्स लार्ड मेटकॉफ, भाग 1–2
(49) केई, जॉन विलियम ए हिस्ट्री आफ द सिपाही वार इन इण्डिया, भाग 2
(50) केई व मेलीसन हिस्ट्री आफ द इण्डियन म्यूटिनी
(51) खड्गावत एन आर राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857
(52) खान रफाक्त अली द कछवाहाज अण्डर अकबर एण्ड जहांगीर
(53) मेहता डा एम एस लार्ड हेस्टिंग्ज एण्ड द इण्डियन स्टेट्स
(54) मॉल्कम जॉन द पोलीटिकल हिस्ट्री ऑफ इण्डिया भाग 2
(55) मिल व विल्सन हिस्ट्री आफ ब्रिटिश इण्डिया, भाग 8
(56) मेलीसन जी बी द इण्डियन म्यूटिनी आफ 1857
हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, भाग 2, 4 व 5
(57) मजूमदार, ए के व घोष, डी के ' ब्रिटिश पेरामाउन्टसी एण्ड इडियन रनासा
(58) परिहार, डॉ जी आर मारवाड एण्ड मराठाज
(59) प्रिंसिप, एच टी मैमायस ऑफ अमीरखा
(60) पालीवाल, डी एल मेवाड एण्ड द ब्रिटिश
(61) प्रसाद सर सुखदेव मेवाड अण्डर महाराणा भूपालसिंह
(62) प्रिचार्ड आई टी द म्यूटिनीज इन राजपूताना
(63) सरदेसाई, जी एस न्यू हिस्ट्री आफ द मराठाज, भाग 3
(64) शर्मा, डॉ जी एन सोशल लाइफ इन मिडाइवल राजस्थान
(65) शर्मा, डा जी एन राजपूत स्टडीज
(66) सेन एस एन एटीन फिफ्टी सेवन
(67) शावस, सी एल ए मिसिंग चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी

(68) टाड, जेम्स एनाल्स एण्ड एटीक्वीटीज आफ राजस्थान, भाग 1–3 (प्रथम संस्करण)
(69) ट्रेवर, जी एच ए चेप्टर आफ द इण्डियन म्यूटिनी
(70) व्यास, आर पी रोल आफ नॉबिलिटी इन मारवाड़
(71) विलियम, रशब्रुक द ब्रिटिश क्राउन एण्ड द नेटिव स्टेटस
(72) विल्सन, एच एच द हिस्ट्री आफ ब्रिटिश इंडिया, भाग 2
(73) वानर, ली द नेटिव स्टेटस आफ इण्डिया
(74) एन के सिन्हा व ए के दास (सपादक) सलेक्शन फ्राम द ग्रोक्टर लोनी पेपस

(इ) गजेटियस और पत्र पत्रिकाए

(1) एसकाइन, के डी राजपूताना गजेटियर, खण्ड 2 अ, मेवाड रेजाडेंसी
(2) एसकाइन, के डी राजपूताना गजेटियर, खण्ड 3 अ, बीकानेर एजेंसी
(3) एनुअल एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्टस, राजपूताना स्टेट्स (1880-81)
(4) एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोट, जयपुर स्टेट (1925-26)
(5) मेवाड एजेंसी रिपोर्टस
(6) इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया प्रोविंशियल सीरीज, राजपूताना
(7) पाउलेट पी डब्ल्यू गजेटियर आफ बीकानेर
(8) परम्परा, गोरा हट जा' वष 1 अक 2 (चोपासनी शोध सस्थान द्वारा प्रकाशित)
(9) शोध पत्रिका (साहित्य सस्थान, उदयपुर द्वारा प्रकाशित)
(10) राजस्थान हिस्ट्री काग्रेस, प्रोसीडिंग्ज वाल्यूम I–XIII
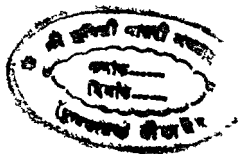
डॉ प्रकाश व्यास का जन्म 7 मार्च 1939 को जोधपुर मे हुआ। जोधपुर विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर (इतिहास) तथा पी एच डी की उपाधियां प्राप्त की। अनेक शैक्षणिक सम्मेलनो एव सेमीनारो मे अपने शोध-पत्रो का वाचन किया। आपके एक दजन से भी अधिक शोध निबन्धो का प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं मे प्रकाशन हो चुका है। आपका शोध प्रबन्ध 'मेवाड राज्य का इतिहास' प्रकाशित हो चुका है तथा स्नातक एव स्नातकोत्तर स्तर की अनेक पाठ्य-पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। आप 1977 से राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस की कार्यकारिणी के सदस्य हैं। सम्प्रति—वनस्थली विद्यापीठ (विश्वविद्यालय) के इतिहास विभाग मे अध्ययन कार्य कर रहे हैं। आधुनिक राजस्थान के इतिहास मे विशेष रुचि।